न्यायाचार्य–न्यायविशारद–महा महोपाध्यायजी श्रीमद्
यशोविजयजी विरचित
१२५–१५०–३५० गाथाओनां

स्तवनो.

संशोधक
महा महोपाध्यायजी श्रीमद् वीरविजयजीना शिष्यरत्न
पंन्यासजी महाराज श्रीमद् दानविजयजी गणी.

न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वर आत्मारामजी
पट्ट प्रभावक श्रीमद् विजयकमलसूरिजीना उपदेशथी
छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता
खंभात अमरचंद प्रेमचंद जैनशालाना प्रमुख
शेठ पोपटभाइ अमरचंद.

विक्रम संवत् १९७५ श्री वीर संवत् २४४५

आवृत्ति पहेली. प्रत ५००).

अमदावाद.
रीचीरोडना पुल नीचे श्री "जैन विद्याविजय" प्रि० प्रेसमां
शा. पोपटलाल अमथाशाए छाप्युं.

कींमत रु. १–०–०.

न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंद सुरीश्वरजी के पट्टधर



साक्षर शिरोमणि आचार्य श्रीमद् विजयकमळसुरीश्वरजी.



प्रसिद्धकर्ता श्री महावीर जैन सभा, खंभात.

लक्ष्मी आर्ट, भायखळा, मुम्बई

साक्षरवर्य महोपाध्याय श्रीमद् वीरविजयजी महाराज.



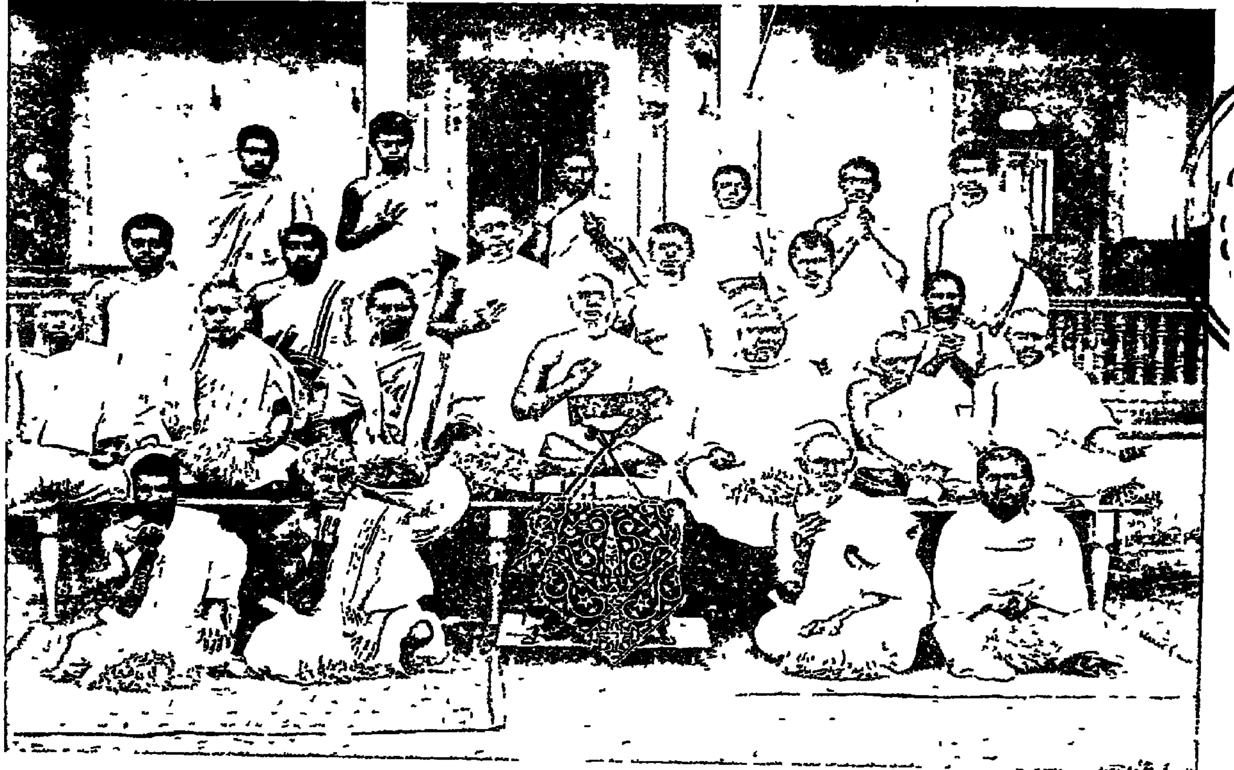
जन्म, विक्रम सं १९०८.
दीक्षा, विक्रम सं. १९३५.

उपाध्याय पद, सं. १९५७.
स्वर्गवास, सं १९७५

प्रसिद्धकर्त्ता श्री महावीर जैन सभा, खंभात.

लक्ष्मी आर्ट, भायखळा, मुम्बई.

खंभातमां महोपाध्याय श्रीमद् वीरविजयजीना मादगीमां
गुरुसेवार्थे पधारेला मुनी महाराजो पैकी.



अनुयोगाचार्य पंन्यास श्रीमद् दानविजयजी आदि ठाणा.
प्रसिद्धकर्ता श्री महावीर जैन सभा, खंभात.

लक्ष्मी आर्ट, भायखला, मुम्बई

प्रस्तावना.

आ संसाररूप गाढ अरण्यमां परिभ्रमण करता आत्माओए पोताना स्वभाविक स्थान संप्राप्त करवानी खातर पण वीतराग परमात्माए अर्थरूप प्रकाशित अने सर्वज्ञकल्प गणधर महाराजाए सूत्रद्वारा निरूपित सन्मार्गनो आश्रय लेवानी अनिवार्य आवश्यकता छे, कारण के तेज सन्मार्गना अवलंबनथी अनेक भव्यात्माओए आ आधि व्याधि अने उपाधिओथी परिपूर्ण संसार रूप अरण्यनुं शांतिपूर्वक उल्लंघन करी पोताना स्वाभाविक स्थानने संप्रात करेल छे. वर्त्तमान समये करे छे. अने आगामि समये करशे. ए वात निर्विवाद सिद्ध छे.

ते सन्मार्गने सुज्ञात करवा माटे परोपकार परायण पुरातन महर्षिओए तेज सूत्रोने अनुसरी अनेक ग्रंथरत्नोनी रचना करी तेना स्वरूपनी साथे तेने संप्राप्त करवानां साधनो आदि विषयोने स्पष्ट रीते सुबोधित करेल छे. ते महात्माओनी परंपरामां प्रसिद्धिने पामेलाज महात्मा आ प्रस्तुत त्रण ग्रंथरत्नोना प्रणेता छे. जेमनुं शुभ नाम महामहोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी हतुं.

यद्यपि आ ग्रंथरत्नोना प्रणेताना अनुकरणीय जीवन चरित्रने अत्रे आलेखवानी जरूर छे, परंतु दुर्भाग्यना प्रभावे तेओश्रीना जीवनचरित्रनी संपूर्ण वातमी मेळववा अमे भाग्यशाळी बन्या नथी अने ते संबंधी भिन्न भिन्न स्थळेथी संप्राप्त थयेली हकीकतोने संकलित करी भावनगर जैनधर्म प्रसारक सभाद्वारा प्रसिद्ध थयेल यशोविजयजी ग्रंथमाला नामना ग्रन्थरत्ननी प्रस्तावनाद्वारा ते सभाना कार्य वाहकोए प्रकाशित करी छे तेथी अत्रे तेनुंज पिष्टपेषण करवानी अमने जरूर जणाती नथी, परंतु पंडित शिरोमणीओना शिरोने पण इषत् कंपावनारी केटलीक बाबतोनो उल्लेखतो जरूर करीशुं

जेओए मात्र पोतानी सात वर्ष जेटली नानी वयमां पोतानी मातुश्री साथे गुरु महाराज पासे एकज वखत श्रवण गोचर करेल भक्तामर स्तोत्र "ते स्तोत्रना श्रवण कर्या बादज अन्न पाणी अंगीकार करवुं" एवा नियमवती पोतानी मातुश्रीने श्रवण करावीने पोतानी अप्रतिम प्रतिभा अने असाधारण स्मरणशक्तिनो सारो चितार आप्यो हतो, तेथीज शासन रसिक महात्मा श्रीमान् नयविजयजी महाराजाए श्री संघनी पासे याचना करावी चारित्र अर्पि अध्ययनने अर्थे जोडती दरेक दरेक सामग्रीओ मेळवी आपवा पाछी पानी करी न हती एवो प्रघोष छे.

यद्यपि आ शासन रसिक महात्मा शासननी उन्नति माटे जेटलुं करे तेटलुं ओछुं छे. तेओए जे कंइ कर्युं छे ते पोतानुं कर्त्तव्यज छे एथी कंइ अधिकता नथी. परंतु काशी निवासी जैनोना प्रतिस्पर्धि पंडितोए पण ते महात्मानी अप्रतिम प्रतिभा अपूर्व ग्रन्थ ग्रथनशक्ति अने प्रतिवादीओने पराजित करवानी स्फुर्ति देखी आश्चर्य थइ "न्यायविशारद" अने "न्यायाचार्य" एवा योग्य बिरुदोने अर्पि आ महात्माने अलंकृत कर्या हता, अर्थात्

ते समये आ महात्मानी अप्रतिम प्रतिभा असाधारण स्मरणशक्ति अद्वितीय विद्वता—अलौकिक—ग्रंथ ग्रथनशक्ति प्रतिवादीओने पराजित करवानी चमत्कारिक स्फुर्ति—धैर्यता—गंभिरता अने शासन रसिकता निरखी निखिल जनसमाज आश्चर्यमां गरकाव थयो हतो.

चमत्कारिक अवधान शक्ति संपन्न आ महात्मानी विद्वत्तानी ख्याती श्रवण गोचर करी गुजरातना अधिपति महमदखानने तेमने मलवानी हुंश थइ आववाथी तेओए नवाबनी सभामां जइ अष्टादश (१८) अवधान करी खानने बहु खुश करी शासननी प्रभावना करी हती. वीस स्थानक तपना आराधक आ महात्माने श्रीमद् विजयप्रभ सूरिराजे १७१८ नी सालमां वाचक पदथी विभूषित कर्या हता तेमज आ महात्माए १९४३ नी सालमां अनशन करी समाधिनी साथे दर्भावती (डभोइ) नगरीमां स्वर्लोकने अलंकृत कर्यो हतो. आ हकीकत मान्य मुनिवर श्रीकांतिविजयजीए बनावेली सुजसवेली भासनो नीचे मुकेली गाथाओथी स्पष्ट जणाइ आवे छे.

" कीरति पसरी दिसिं दिसिं उजलीजी, विबुधतणी असमान । राजसभामां करतां वर्णनाजी, निसुणै महवतखान ॥१॥ गुज्जरपतिनें हुंस हुइ खरीजी, जोवा विद्यावान । तास कथनथी जस साधे वलीजी, अष्टादश अवधान ॥२॥ पेखि ग्यानी खान खुसी थयाजी, बुद्धि वखाणे निवाप । आडंवरस्युं वाजींत्र वाजतेंजी, आवे थानिक आप ॥३॥ ओली तप आराध्युं विधिथकी, तस फल करतलि कीध । वाचक पदवी सत्तर अढारमांजी, विजयप्रभ दीध ॥४॥ सत्तर त्र्यालीं चोमासुं, रह्या पाठक नगर डभ्योई रे । तिहां सुरपदवी अणुसरी, अणसण करी पातक धोई रे ॥५॥ "

आ माहात्माए संस्कृत भाषामां अनेक विषयो उपर अनेक ग्रंथोनी रचना करी छे, अने तेनी साथे गुर्जरभाषामां आ त्रण ग्रंथोनी साथे द्रव्यगुण पर्यायनो रास, आठ दृष्टिनी सझाय, उपशम श्रेणिनी सझाय आदि अनेक ग्रंथोनी रचना करी प्राकृत जनवर्ग उपर पण असीम उपकार करेल छे.

आ त्रण ग्रंथरत्नोमांना प्रथम श्री सीमंधरस्वामीनी विनति रूप सवासो गाथाना स्तवनमां कुगुरुओनुं त्रासदायक स्वरूप अने तेओने हितशिक्षा, शुद्धधर्म अने अधर्मनुं स्वरूप, स्वस्वरूपथी अनभिज्ञने गुणस्थानकनो असद्भाव, आत्माज सामायिक, ज्ञान अने चारित्रनुं स्वरूप, आत्मा अने पुद्गलनी भिन्नता, निश्चयदया अने व्यवहारदयानुं स्वरूप, श्री जिनधर्मना लोपकनुं स्वरूप, शुद्ध व्यवहार अने अशुद्ध व्यवहार, मोक्षना त्रण मार्ग अने संसारना त्रण मार्गनुं स्वरूप, अहिंसाना निमित्तथी श्री जिनपूजाना निषेधकोने सदुपदेश, श्री जिनेश्वर देवनी पूजा उपर ज्ञातासूत्र आदिमां कथन करेल द्रौपदी आदिनां दृष्टांतो, द्रव्यस्तवने योग्य श्रावकोने द्रव्यस्तव संबंधी सदुपदेश आदि विषयोने सारी रीते चर्च्यो छे.

पोताना समान कालमां उत्पन्न थयेला ढुंढकमतिओना मतनुं निराकरण करवा माटे यद्यपि सटीक प्रतिमाशतक आदि ग्रंथो संस्कृत भाषामां लखेल छे, तोपण प्राकृतजनो उपर पण उपकार करवानी शुभ अभिलाषाथी आ त्रण ग्रंथ रत्नोमांना बीजा चरम तीर्थ-

कर भगवान महावीरस्वामीनी स्तुतिद्वारा लुम्पकमत निराकरण रूप दोढसो गाथाना स्तवनमां स्थापना नि ेपानी–आवश्यकसूत्रनी–स्थापना ज्ञान अथवा द्रव्यज्ञान बंभीलिपीनी प्रमाणता, साधुओए चित्रामणस्थ स्त्रीनी मूर्तिनुं अवलोकन न करवुं, जंघाचारण अने विद्याचारण मुनिओए करेल जिनप्रतिमाने वंदननो अधिकार, चैत्यशब्दनो अर्थ ज्ञान नथी, श्री जिनप्रतिमा उपर सूर्याभादि देवोनो अधिकार, पूर्वपच्छा शब्दनो अर्थ, श्रीजिनदाढाओनी पूजा, सम्यग्दृष्टि देवताओनी आशातनानो त्याग, मनुष्योनी अपेक्षाए देवोमां विवेकनी अधिकता, अंबड आणंद आदि सुश्रावकोए करेल श्री जिनप्रतिमाने वंदननो अधिकार, चैत्यशब्दनो अर्थ प्रतिमा, सभेद सत्यनुंस्वरूप दशविध वैयावृत्यनुं स्वरूप. श्रीसिद्धार्थराजा श्रेणीकमहाराजा महाबल द्रौपदी आदि श्रावक श्राविकाओए करेल श्रीजिनप्रतिमाने वंदननो अधिकार, श्री जिनेश्वर देवनी पूजामां हिंसा माननाराओना स्मृतिपथमां मुनिदान मुनिविहार शंख पुष्कली श्रावकना पौषध–थावच्चा पुत्रनी दीक्षा अवसरे "जे दीक्षा ले तेना कुटुम्बनी पालना अमे करीशुं" एवा प्रकारनी श्रीकृष्ण महाराजाए करेली द्वारिका नगरीमां उद्घोषणा–कोणीक–उदायन आदि महाराजाओए करेल भगवान महावीरस्वामीना सामैयां–तुंगीया नगरीना श्रावकोए करेल बलीकर्मनो विधिमां श्री जिनपूजानो पण समकित संवर करणीमां गणना, मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती जीवोने पण दान शील पूजा आदिथी शुभ विपाकनी संप्राप्ति, भगवान ऋषभदेवस्वामीए प्रजाना हितार्थे दर्शावेल शिल्प अने गणित आदि कलाओ आदि विषयोनी उपस्थिति, हेतु हिंसा स्वरूप हिंसा अने अनुबंध हिंसानुं स्वरूप, शाश्वती जिनप्रतिमाओनुं वर्णन, तीर्थेश्वरोना कल्याणक दिवसोमां देवताओए नंदीश्वर द्वीपमां जइ करेला महोत्सवो, साधुओने पण योगोद्वहनपूर्वक सूत्रनुं अध्ययन करवुं, गृहस्थोने सूत्र वांचवानो निषेध, अस्वाध्यायनुं वर्जन आदि विषयोने सारी रीते स्पष्ट करेल छे.

त्रीजा श्रीसीमंधरस्वामिनी विनति रूप साडात्रणसो गाथाना स्तवनमां सूत्र विरुद्ध बोलनारा, सूत्र विरुद्ध वर्तन करनारा, सत्क्रियाओने न करवाना इरादाथी संहननने दूषित करनारा, ओघमार्गनेज सन्मार्ग माननारा, लोचादिक कष्टमांज जैनमार्ग माननारा, मात्र द्रव्यलींगनेज प्रमाण माननारा, सद्गुणोनी प्राप्ति विना पण गुरुओनी सहायथी तरी शकीशुं एम माननारा, निर्गुणोने पण साधु तरीके माननारा, प्रतिक्रमण करी पापथी छुटीशुं एम बोली निरर्थक पापाचारण करनारा, निष्कारण उत्तरगुणनो भंग करी पोतामां चारित्र माननारा, धर्मोपदेश न आपवो, नवीन ग्रंथोनी रचना न करवी इत्यादि बोलनारा दुष्टमतिमंडळने हितोपदेश, गुरुकुळ वासना सेवनथी विनयादि सद्गुणोनो प्राप्ति, ज्ञानी महात्माओनी उपासना द्रव्य–क्षेत्र–काळ–भाव–योग्य–अयोग्य–सचित्त–अचित्त–मिश्र–कल्प–अकल्प आदिना अनभिज्ञ अगीतार्थोने अने आजकाल सिद्धांतना रहस्यथी सुज्ञात सुविहित गीतार्थ कोइपण न होवाथी एकाकी विहार करवामां कोइपण जातनो वांधो नथी एवो प्रलाप करनाराओने पण सद्बोध, पंचमकाळमां गीतार्थोए पण समुदायनी

साथे विचरवुं ए अति उत्तम छे एवी सूचना, मात्र अहिंसामांज धर्म मानी पूजा प्रभावना आदिनो त्याग करनाराओने हेतुअहिंसा, स्वरूपअहिंसा अने अनुबंध अहिंसानुं स्वरूप दर्शावी स्याद्वाद शैलीथी सुबोध, पंचांगीनो त्याग करी मात्र सूत्रनेज प्रमाणभूत मानी प्रतिमा उपधान आदि क्रियाओने नहिं माननाराओने हितोपदेश, द्रव्य श्रावकोना एकवीसगुणोनुं वर्णन, भावश्रावकोनां छ लक्षण अने सत्तरगुणोनुं वर्णन, भावसाधुपणुं पामेला भावश्रावकनां सात लक्षणोनुं वर्णन, पंचमकाळमां गीतार्थोए भूतव्यवहारमां करेल फेरफारनी प्रमाणता, सद्गुणी साधुओनी स्तुति, जीवनी निद्रादि चार दशा, जीव अने पुद्गलनी भिन्नता, शुद्ध व्यवहारनी मुख्यता, तपगच्छनी स्तुति ज्ञाननी साथे क्रियानो आदर करवाथी मोक्षनी संप्राप्ति आदि विषयोनो चितार स्पष्ट रीते आपेलो छे

आ मूळ ग्रन्थो अति गहन होवाथी प्राकृत जनो उपर पण उपकारक नीवडे एवा शुभ आशयथी पंन्यासजी महाराज श्रीमत् पद्मविजयजी गणीए आ त्रणे स्तवनोनो सविस्तर सरळ अने सरस अर्थ करेल छे ते महात्मा कया गच्छना कया महात्माना शिष्य रत्न छे. इत्यादि आ स्तवनोने अंते आपेली प्रशस्तिनुं अवलोकन करवाथी सुज्ञात थइ शके तेम होवाथी ते संबंधी अत्र कंइपण उल्लेख करता नथी. आ महात्माए साडात्रणसो गाथाना स्तवनना अर्थ करवामां ते स्तवन उपर ज्ञानविमळसूरिश्वरजी महाराजाए करेल टबार्थनी पण सहाय लीधी छे ए वात " ए गाथानो अर्थ ज्ञानविमळसूरिना करेला टबा उपरथी लख्यो छे " आ ते महात्मानाज अक्षरोथी स्पष्ट रीते सुज्ञात थइ शके छे.

यद्यपि नीचे लखेली हकीकत अत्रे लखवानी आवश्यकता न हती. परतु भाषाज्ञानथी पण अनभिज्ञ छतां सर्वज्ञाभिमानी–कपोलकल्पीत कल्पनाओ करवामांज पोताना जीवननी सार्थकता माननार–सौराष्ट्र देशोत्पन्न–दंभमूर्ति रायचंद्र नामनी व्यक्तिनी निर्विचार शिरोमणिता, अधमता आदिनो किंचित् चितार आपवा माटेज लखवानी जरुर पडी छे.

ढुंढकमत निराकरणरुप भगवान महावीरस्वामीनो विनतिरुप दोढसो गाथाना स्तवननी बीजी ढाळनी अढारमी गाथा—

" शतक दशमे अंग पांचमे, उद्देशे छठे इंद; लाल रे।
दाढातणी आशातना, टाळे ते विनय अमंद; लाल रे ॥ तु० १८ ॥

आ गाथानो सामान्य अर्थ करी विवेचन करतां नीचे मुजब लखे छे.

"इहां ए स्तवनने विषे तो दशमा शतकना छठा उद्देशानी शाख लखी, अने श्रीभगवती सूत्रमां जोवां तो दशमा शतकना पांचमा उद्देशामां ए पाठ छे. ते माटे जाणीए छीए जे कोइ धुरथीज लखनारनो दोष छे. अन्यथा उपाध्यायजी एम आणे नहीं एहवी प्रतीति छे. अथवा राभसवृत्तिए–अनाभोगे उपाध्यायजीए एम आण्युं छे. यतः–"नहि, नामानाभोगः छद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति। ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥१॥" इत्यादि.

आ विषयमां उपरोक्त निर्विचारक शिरोमणी व्यक्तिए श्रीमद् राजचंद्रनामना पुस्तकना पृष्ठ ५२० ना बीजा फकरामां नीचे मुजब लखेल छे.

" यशोविजयजीए ग्रंथो रचतां एटलो खखंड उपयोग राख्यो हतो के, ते कोइ ठेकाणे चूक्या न होता. तोपण छद्मस्थ अवस्थाने लीधे दोढसो गाथाना स्तवन मध्ये सातमा ठाणांग सूत्रनी शाख आपी छे ते मलती नथी ते श्री भगवतीजीना पांचमा शतकना उद्देशे मालम पडे छे. आ ठेकाणे अर्थकर्त्ताए "रासभवृत्ति" एटले पशुतुल्य गणेल छे; पण तेनो अर्थ तेम नथी रासभवृत्ति एटले के गधेडाने सारी केळवणी आपी होय तोपण जातिस्वभावने लीधे रख्या देखीने लोटो जवानुं मन थाय छे; तेम वर्तमानकाले बोलतां भविष्यकाळमां कहेवानुं बोली जवाय छे."

आ लखाणथीज सर्वज्ञ तरीके प्रसिद्ध थवा माटे करेला दरेक प्रपंचो धुळमां मली जाय छे परंतु पुच्छग्राही-विवेकचक्षुहीन केटलाक तेना अनुयायिओना दृष्टिपथमां आवी एक सामान्य व्यक्तिने पण सुज्ञात बाबतनी उपस्थिति थती नथी एज तेओनी दुर्भव्यतानुं मुख्य चिन्ह छे.

आ सर्वज्ञाभिमानी रायचंद्रने एपण खबर नथी के पांचमु अंग भगवती के ठाणांग अर्थकर्त्ताए उपाध्यायजीनी रासभवृत्ति एटले अनाभोग एवो स्पष्ट उल्लेख करेल छे छतां पण "रासभवृत्ति एटले पशुतुल्य गणेल छे" इत्यादि आज कालना दुर्भाग्य शिरोमणिओए मानेला सर्वज्ञनुं लखाण कया बुद्धिमानने एनी सर्वज्ञता उपर तिरस्कार उत्पन्न न करावे. खरेखर आजकालना भवाभिनंदी प्राणीओने माटे तो आवाज सर्वज्ञनी जरुर छे कारणके तेना विना तेओ पोताना ते आनंदने मेळववा भाग्यशाळी न बने

अधिक शुं लखवुं एकाक्षी मनुष्य पण रासभने रासभ अने भगवतीने भगवती तरीकेज वांचे,परंतु आ अधमात्माने तो छती चक्षुए कोइ एवुंज पडल फरी वळ्युं के रासभने बदले रासभ अने भगवतीने बदले ठाणांग वांचवामां आव्युं खरेखर एवा अधमात्माना चक्षु उपर एवा प्रकारनुं पडल आवे ए वात कंइ आश्चर्यजनक नथी, कारणके जे वचनो एक अधमाधमना मुखथी पण न नीकली शके एवां वचनोने आलेखी केवा प्रकारना कर्मनो निकाचित बंध कर्यो हशे अने ते बंधथी तेनो आत्मा क्यारे मुक्त थशे ते ज्ञानी महाराजा जाणे, जे वचनो श्रीमद् रायचंद्र नामनां पुस्तकना पत्र १४१ मां आ प्रमाणे लखेल छे "भगवान परिपूर्ण सर्वगुणसंपन्न-कहेवाय छे, तथापि एमांय अपलक्षण कांइ ओछां नथी?"

साथे साथे आ वात पण जणाववानी खास जरुरत जणायाथी जणाववामां आवे छे के आज ग्रन्थकर्त्ता महात्माए बनावेल द्वात्रिंशत् द्वात्रिंशिका नामना ग्रन्थमां प्रथमनी दानद्वात्रिंशीकामां हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराज संविज्ञपाक्षिकछे ए वात बोधक "न च खदानपोषार्थमुक्तमेतदपेशलम् । हरिभद्रो ह्यदोऽभाणीद्यतः संविग्नपाक्षिकः ॥१९॥" आ श्लोकने देखी धर्म संग्रहणीनी प्रस्तावनाकार आ प्रमाणे लखे छे "तदिदं प्रमाणविरहितमसंभवप्रायं च नास्मद्बुद्ध्यादर्शे प्रतिफलति ।" अर्थ-'आ वात प्रमाण रहित अने असंभवप्राय छे अने अमारा बुद्धिरूप आदर्शमां प्रतिबिंबित थती नथी.' त्यारबाद पोतानी वातने प्रमाण

सिद्ध बनाववामाटे जरुरतो हती के श्रीहरिभद्रसूरि महाराज संविग्नपाक्षिक नहता एवा आशय वाळा पाठनी परंतु पोतानी वात सिद्ध करवानी अभिलाषाथी ' सम नामथी भ्रमित थयेला केटलाक एम कहे छे के हरिभद्रसूरि चैत्यवासिओथी दीक्षित अने शिक्षित हता ते वात गीतार्थोने मान्य नथी ' आवा प्रकारना अर्थ बोधक जिनदत्तसूरिए गणधर सार्धशतकमां लखेली " जंपइ केई समनामभोलिआ भोऽलिआइं जंपंति । चीया (य) वासिदिक्खिओ सिक्खिओ य गीयाण तं न मयं ॥५७॥" आ गाथा मुकी छे" ते आवी विद्वत्ता भरेली प्रस्तावनाना लेखकने अत्यंत लज्यास्पद छे कारण के आ वात महाप्रामाणिक आ ग्रंथकार महात्माए आज श्रीहरिभद्रसूरिकृत अष्टकना टीकाकार नवांगी वृत्तिकार श्रीमद् अभयदेवसूरि महाराजाए शोधेल तेमना गुरु श्रीमत् जिनेश्वरसूरीश्वरजी महाराजाए करेल सत्तावीसमा अष्टकना विवरणमां लखेल " संविग्नपाक्षिको ह्यसौ " आ वाक्यने अनुसरीनेज लखेल छे माटे ए वातने प्रमाण विरहित अने असंभमाय छे एम लखवुं ए कोइ पण रीते उचित गणी शकाय एम अमारुं मानवुं नथी.

आ महात्माए आ श्लोकथी श्रीहरिभद्रसूरि महाराजानी अवज्ञा करी नथी पण एक रीते स्तुतिज करी छे. आ महात्माने श्रीहरिभद्रसूरि महाराज उपर संपूर्ण राग हतो ए वात आ ग्रन्थकारना ग्रंथो वांचवाथी स्पष्ट रीते जाणी शकाय छे अने तेना नमुना तरीके साडात्रणसो गाथाना स्तवननी पन्नरमी ढालनी अगीआरमी गाथाज बस छे.

" सुविहित गच्छ किरियानो धोरी, श्री हरिभद्र कहाय।
एह भाव धरतो ते कारण, मुझमन तेह सुहाय ॥ ११ ॥"

यद्यपि आ त्रणे स्तवनो प्रकरणरत्नाकर आदि ग्रंथोमां भिन्न भिन्न छपाइ गयेल छे तेने जो एकत्र करवामां आवे तो तेना अभिलाषिओने सानुकुल पडे एवी शुभ अभिलाषाथी न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजो महाराजश्रीना पट्टप्रभावक श्रीमद् विजयकमलसूरीश्वरजीए प्रसंगोपात खंभातनगर निवासी धर्मचुस्त चोकशी अमरचंद मूलचंदने एक पुस्तकमां आ त्रणे स्तवनोनो संग्रह थाय तो सारुं एम कहेवाथी ते सद्गृहस्थे आ पुस्तक छपाववामां जे खर्च लागे ते आपवानी उदारता दर्शावी आ सभाने आभारी बनावी छे आ सभा पण तेमना आ सत्कार्यना अनुमोदवा साथे तेमने धन्यवाद आपेछे.

अमारी नम्रप्रार्थनाथी महोपाध्यायजी श्रीमद् वीरविजयजी महाराजश्रीना शिष्यरत्न पंन्यासजी महाराज साहेबजी श्रीमद् दानविजयजो गणीए अमूल्य समयनो भोग आपी अमने आ ग्रंथ शुद्ध करी आपेल छे. माटे अमे तेओश्रीनो अत्रे उपकार मानी अमारी फरज किंचित् अशे अदा करीए छीए.

भादरवा सुदी १२ संवत १९७५.

लेखक
श्री महावीर जैनसभा अने आत्मकमल जैन लायब्रेरीना सेक्रेटरी.
अंबालाल जेठालाल शाह.

श्री सीमंधर स्वामीनी विनतिरूप सवासो गाथाना स्तवननी स्थूल विषयानुक्रमणिका.

ढाल.	विषय.	पृष्ट.
१	कुगुरुने शीखामण गर्भित श्री सीमंधरस्वामीनी विनति करी छे .	१
२	जीवस्वभाव ते धर्म अने बाह्यभाव ते मिथ्यात्व इत्यादि उपदेश कर्यो छे	४
३	आत्मद्रव्यना अनभिज्ञने गुणस्थानकनो असद्‌भाव, आत्मा तेज सामायिक ज्ञान-चारित्र आदिनुं स्वरूप वर्णन करेल छे ...	७
४	आत्मा परभावनो अकर्त्ता, आत्मा अने पुद्‌गलनी भिन्नता, आत्मज्ञान ते निश्चय दया अने परप्राणीनी दया ते व्यवहार दया आदिनुं वर्णन .	१०
५	क्रियानुं उत्थापन करवाथी मात्र निश्चयनयनुंज अवलंबन करवाथी अने सद्‌व्यवहारनो लोप करवाथी श्री जिनधर्मनो लोप थाय छे	१४
६	अशठ गीतार्थनी आचरणा ते शुद्ध व्यवहार, शिथिलाचारीओनो नियत वासादिक जे आचार ते अशुद्ध व्यवहार, आदिनुं वर्णन	१६
७	सु साधु-सुश्रावक अने संवेगपक्षी ए त्रण मोक्षना मार्गनुं वर्णन .	२०
८	दयानी खातर श्री जिनपूजाना निषेधकोने सदुपदेश .. .	२२
९	श्री जिनेश्वर देवनी द्रव्यपूजा उपर ज्ञातासूत्र आदिमां कथन करेल द्रौपदी आदिनां दृष्टांतोनुं वर्णन	२४
१०	द्रव्यस्तवने योग्य श्रावकोने द्रव्यस्तव संबंधी सदुपदेश	२७
११	श्री सीमंधर जिननी स्तुति अने कर्त्तानुं नाम ...	२९

श्रीमहावीरजिननी स्तुतिरूप (दोढसो गाथा प्रमाण) हुंडीना स्तवननी स्थूल विषयानुक्रमणिका.

ढाल	विषय	पृष्ठ
१	स्थापना निक्षेपानी प्रमाणता, चार प्रकारना तथा दश प्रकारना सत्यनुं स्वरूप,आवश्यकसूत्रनी प्रमाणता, स्थापनाज्ञान अथवा द्रव्यज्ञान बंभीलिपिनी प्रमाणता, चित्रामणस्थ स्त्रीनुं साधुओए अवलोकन न करवुं, जंघाचारण विद्याचारण मुनिओए करेल जिनप्रतिमाने वंदननो अधिकार, चैत्यशब्दनो अर्थ ज्ञान नहीं इत्यादि वर्णन	१
२	श्री जिनप्रतिमानी पूजा उपर सूर्याभ देवादिनो अधिकार, पूर्वपच्छा - शब्दनो अर्थ, श्रीजिनदाढाओनी पूजा, सम्यग्दृष्टि देवताओनी आशातना-	

ओनो त्याग करवो, मनुष्योनी अपेक्षाए देवताओमां विवेकनी अधिकता इत्यादि वर्णन १८

३ आणंद अंबड आदि श्रावकोए करेल जिनप्रतिमा वंदननो अधिकार, चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमा, दशविध वैयावृत्यनुं स्वरूप, सिद्धार्थराजा श्रेणीक महाराजा तथा महाबल तथा द्रौपदी आदि श्रावक श्राविकाओए करेली जिनपूजा आदि विषयोनुं वर्णन .. ३७

४ पूजामां हिंसा माननाराओना स्मृतिपथमां मुनिदान, विहार, प्रतिक्रमण, शंख, पुष्कली श्रावकना पौषध, थावच्चा पुत्रनी दीक्षा अवसरे "जे दीक्षा लेशे तेना घरनो निर्वाह अमे करीशुं" एवा प्रकारनी द्वारिकानगरीमां कृष्णमहाराजाए करावेली उद्घोषणा, कोणीक तथा उदायन आदि महाराजाओए करेल भगवान महावीरस्वामीनां समैयां, तुंगीया नगरीना श्रावकोना बलीकर्म आदि विधानोमां समकित संवरनी करणीनी जेम श्री जिनपूजानी पण समकित संवरकरणीमां गणना ५६

४ मिथ्यात्व गुणस्थाने पण दान शील पूजादिकथी शुभ विपाकनी प्राप्ति, श्रीऋषभदेव भगवाने प्रजाना हितार्थे लिखन शिल्प अने गणित आदि कलाओनुं दर्शावेल दिगदर्शन आदि विषयोनी उपस्थिति हेतुहिंसा स्वरूपहिंसा अनुबंधहिंसा आदि विषयोनुं वर्णन ६५

५ शाश्वती जिनप्रतिमाओनुं वर्णन तीर्थेश्वरोना कल्याणक दिवसोमां नंदीश्वर दीप प्रमुखना जिनबिंबोनी देवताओए करेल पूजानुं वर्णन ७३

६ साधुओए पण योगोद्वहन पूर्वक सूत्राध्ययन करवुं, गृहस्थने सूत्राध्ययननो सर्वथा निषेध, मूळसूत्र टीका भाष्य चूर्णी अने निर्युक्ति रूप पंचांगीनी प्रमाणता, अस्वाध्यायनुं वर्जन अने सिद्धांतोमां नेवुं बोलना पाठांतर ... ८२

ग्रन्थकारनी प्रशस्ति १०९

श्री सीमंधर स्वामीनी विनति रूप साडात्रणसो गाथाना स्तवननी स्थूल विषयानुक्रमणिका.

ढाल विषय पृष्ठ

१ श्री सीमंधरस्वामीनी स्तुति, सूत्र विरुद्ध प्ररुपणा अने वर्तन करनारा, संघयण प्रमुखना दोष कहाडनारा, महाजन चाले तेनेज मार्ग माननारा, लोचादिक कष्टमांज जैनमार्ग माननारा, द्रव्यलिंगनेज प्रमाणभूत माननारा, मंडलने सिद्धांतानुसार सदुपदेश १

२ निर्गुणी छतां गुरुथी तरीशुं एम माननारा, गच्छमां रहेला निर्गुणीने पण साधु माननारा, निष्कारण मूलगुण सेवीने चारित्र माननारा, पाप कीधुं होय ते प्रतिक्रमणथी छुटे एम बोलनारा, मंडलने सदुपदेश २
३ साधुओने नियतवास चैत्यपूजा आर्याए लावेलो आहार कल्पे एम बोलनाराओने विगयना प्रतिबंधकोने हितोपदेश १५
४ आत्मसाक्षीए व्रत पालन करवुं एम बोलनाराओने अने धर्मोपदेश देवानी तथा नवीन ग्रंथो रचवानी मनाइ करवावाळाओने हितशिक्षा २१
५ गुरु कुलवासमांज रहेवाथी विनयादि सद्गुणोनी प्राप्ति २७
६ ज्ञानीओनी उपासना करवी एवी सुचना अने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-प्रतिसेवा-योग्य-अयोग्य-सचित्त-अचित्त-मिश्र-कल्प-अकल्प आदिथी अनभिज्ञ एवा अगीतार्थोने सदुपदेश ३५
७ सिद्धांत रहस्यथी सुज्ञात एवा सुविहित गीतार्थ आजकाल कोइ नथी माटे एकाकी विहार करवामां कोइ जातनो वांधो नथी एम बोलनाराओने उपदेश अने तेनी साथे पंचमकालमां गीतार्थने पण गुरुकुलवास रुडो छे एवी सुचना ४५
८ अहिंसामांज धर्म मानी पूजा प्रभावना आदि सत्क्रियाओनो त्याग करनाराओने हेतु अहिंसा स्वरूप अहिंसा अने अनुबंध अहिंसाना स्वरुपने दर्शावी स्याद्वादशैलीथी सद्बोध. ५३
९ सूत्रने प्रमाणमानी पंचांगीने प्रमाण नहीं माननारा, प्रतिमाने लोपनारा, योग अने उपधाननुं वहन नहि करनारा, अने गुर्वादिक पासे माथा उपर वासक्षेप नही लेनाराओने सुवोध ६३
१० ज्ञान विना मात्र क्रियारुचि जीवोने बहु दोषनी उत्पत्ति थाय छे इत्यादि वर्णन ७३
११ द्रव्य श्रावकना एकवीस गुणोनुं वर्णन ७९
१२ भावश्रावकना छलक्षणनुं सविस्तर वर्णन ८५
१३ भावश्रावकना सत्तर गुणोनुं वर्णन ९१
१४ भावसाधुपणुं पामेला भावश्रावकोना सात लक्षणोनुं वर्णन अने पंचमकालमां गीतार्थोए भूत व्यवहारमां करेल फेरफारनी प्रमाणता आदिनुं वर्णन ९६
१५ सद्गुणी साधुओना सद्गुणोनी स्तुति १०५
१६ जीवनी निद्रादि चार दशा, जीव अने पुद्गलनी भिन्नता, शुद्ध व्यवहारनी मुख्यता, तपगच्छनी स्तुति ज्ञाननी साथे क्रियानो आदर करवाथी मोक्षनी प्राप्ति आदि विषयोनुं वर्णन १११
१७ श्री जिनस्तुति तथा ग्रंथकारनी प्रशस्ति १२२



महावीर जैनसभा तरफथी प्रसिद्ध थयेला पुस्तकोनुं लीस्ट.

१	बारव्रतनी टीप (गुजराती)	रु. ०—१—०
२	पुण्यप्रकाशनुं स्तवन (गुजराती)	रु. ०—१—०
३	लघुशान्तिस्तव वृत्ति सहित	रु. ०—१—०
४	अंगुलसत्तरी मुळ तथा भाषांतर	रु. ०—२—०
५	बारव्रतकी टीप (हिन्दी)	भेट.
६	पुण्यधन नरेंद्र कथा पद्य संस्कृत पत्राकारे	रु. ०—८—०
७	यशोविजयजी कृत १२५–१५०–३५० गाथाओनां स्तवनो.	रु. १—०—०
८	जिनशतक	रु. ०—१२—०
९	दंडकादि द्वार संग्रह	रु. ०—५—०

मळवानुं ठेकाणुं.

श्री महावीर जैनसभा.

खंभात (गुजरात)



॥ अथ श्री सीमंधर स्वामिनी विनतिरूप सवासो गाथानुं स्तवन ॥

॥ अर्थ सहित प्रारंभ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ एक दिन दासी दोडती–ए देशी ॥

स्वामी सीमंधर विनति, सांभलो माहरी देवरे।
ताहरी आण हुं शिर धरुं, आदरुं ताहरी सेवरे॥
स्वामी सीमंधर विनति ॥ १ ॥

व्याख्या–हे श्री सीमंधर स्वामी, तमे माहरी विनति सांभलो. देव के० हे देवाधिदेव हुं ताहरी आज्ञा, शिर धरुं के० मस्तके धरुं छुं. तथा ताहरी सेवाने आदरुं छुं. सेवकनी विनति स्वामीए सांभलवीज. ॥१॥

कुगुरुनी वासना पासमां, हरिण परे जे पडया लोकरे।
तेहने शरण तुज विण नहीं, टलवले बापडा फोकरे ॥ स्वा०॥२॥

व्याख्या–कुगुरुनी वासना के० जूठा उपदेशनी धारणा ते रूपी पास मांहे हरिणनी पेरे जे लोक पडया छे, पोते मोह मूके नहीं एम दृष्टि मोहे मुंझाइ रह्या छे, तेहने के० ते दृष्टिरागी लोकने तुज विना शरण नथी. ताहरो सत्य उपदेश परिणमे तोज ते पास छुटे. ते बापडा दृष्टि रागना बाह्या टलवले छे, कांइ कष्ट क्रिया करे छे ते फोकट जाणवी. पास छुटे तेज लेखे समजवी. ॥ २ ॥

ज्ञान दर्शन चरण गुण विना, जे करावे कुलाचाररे।
लूटे तेणे जन देखतां, किहां करे लोक पोकाररे ॥ स्वा० ॥३॥

व्याख्या–ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण विना एटले तेणे रहित कोइ जे कुगुरु, कुलाचार करावे छे. देश थकी सर्व थकी ज्ञानादिक गुण नथी अने एवी क्रिया करावे छे, शुद्ध अशुद्ध न विचारे, जेम चाल्युं आव्युं तेम करीए, एवी रीते भोलवे छे, तेणे कुगुरु ए जन के० मुग्ध श्रद्धावंत लोक देखतां लूटे छे. खोटुं कहीने लेवुं लुटवुं, एवो अन्याय तो लोको क्यां पोकारे ? तमे स्वामी तो वेगला छो, अने प्रभुता अनेरानी अहींयां छे.

जेह नवि भव तरया निरगुणी, तारशे केणी पेरे तेहरे ।
एम अजाण्या पडे फंदमां, पाप बंधे रह्या जेहरे ॥ स्वा० ॥४॥

व्याख्या—जेह कपटाचारे निर्गुणी थका नवि के० नहींज भव के० संसार तरया, तेह केणी पेरे के० केवे प्रकारे बीजा लोकने तारशे ? कारण जहाज तारे पण शिला न तारे, एम अजाण्या थका दृष्टिरागी मूढ कुगुरुना फंदमां पडे छे. पाप बंधे के० पाप समुदायमां जे रह्या छे आत्मवीर्य उल्लासी थया नथी. ॥ ४ ॥

काम कुंभादिक अधिकनुं, धर्मनुं को नवि मूलरे ।
दोकडे कुगुरु दाखवे, शुं थयुं एह जग सूलरे ॥ स्वा० ॥५॥

व्याख्या—कामकुंभ के० कामकलश आदि शब्दे चिंतामणि रत्न अने कल्पवृक्ष लेइए. ते थकी पण अधिको धर्म छे. जे धर्मनुं कोइ मूल नथी. कारण अमूल्य वस्तुनुं शुं मूल्य होय ? ते धर्म कुगुरु दोकडे देखाडे छे, जे आटले द्रव्ये पाप जाय, आटले साहमी थाय. एह सर्व जगतनो शो सूल थयो जे सर्व आंधळे आंधला चाले छे. ॥ ५ ॥

अर्थनी देशना जे दीए, ओलवे धर्मना ग्रंथरे ।
परम पदनो प्रगट चोरथी, तेहथी केम वहे पंथरे ॥ स्वा० ॥६॥

व्याख्या—जे कुगुरु अर्थनी के० द्रव्योत्पत्तिनीज देशना, कल्पित कथादिके करी दीए छे. धर्मना ग्रंथ जे श्रीदशवैकालिकादिक तेने ओलवे छे. शुद्ध प्ररूपताज नथी. एवा प्रगट चोरथी परम पदनो मारग केम वहे ? अपितु न वहेज. जे माटे वेसणे वेसी शुद्धपरूपे नहीं, ते रखवाल नाम धरावी चोर थाय छे. ए अर्थ छे ॥ ६ ॥

विषयरसमां गृही माचिया, नाचिया कुगुरु मद पूररे ।
धूम धामे धमाधम चली, ज्ञान मारग रह्यो दूररे ॥ स्वा० ॥७॥

व्याख्या—गृही के० गृहस्थ ते विषय रसमांहेज राच्या. अनादि अभ्यास छे. अने सुगुरु काने न लाग्या ते वती अने कुगुरुने मदपूरे माच्या अन्न पान दाताना मान माटे निज उत्कर्षे हर्ष्या, एम करतां बेहुने धर्मनी खटपट टली. ते माटे धूम धामे धमाधम चली, एटले उन्मार्गज चाल्यो इत्यर्थः । इहां धूमधाम के० धकाधक तेणे करी धमाधम के० धींगामस्ती चाली. शुद्ध क्रिया वेगळी रही अने अशुद्ध क्रियाना घणी ढाक ढमाला मांडे मोटाइमां माची आधा पडे केवल धींगाणुं मचव्युं. वली पोते गृहस्थने प्रेरणा करे के, गाममां आवतां विशेषे साहमां आववुं, विशेष सामैयुं करो, विशेष प्रभावना करो, जेम जिनशासननी उन्नति देखाय. ए धूम केमके कुमार्गनुं वचन छे, जे कारणे पोतेज य-

शना अर्थि थया त्यां धर्म गयो. केमके साधुनो मार्ग एवो छे जे कांइपण उन्नति वांछे नहीं; सहेज भावे थाय तो थाओ. ते माटे इहां धूम ते उन्मार्गि पासस्थादिकनुं पराक्रम. अने धाम ते एना रागी भोला गृहस्थ लोकनुं पराक्रम, तथा धमाधम ते ए वंनेनी करणी जाणवी. वली शरीरनी शुश्रुषा राखे, शरीरनो मेल दूर करे, शरीर छुंछे सरस आहार करे, नव कल्पी विहार न करे, श्रावक श्राविकानो घणो परिचय करे, श्रावकने घेर भणाववा जाय, श्रावक साथे घणी मीठासी करे, पोताना आत्मानो अर्थ तो साधेज नहीं, भला चंद्रूआ बंधाय तिहां रहे, रेशमी वस्त्रो पहेरे, साबुए धोयां वस्त्र पहेरे, हृष्टपुष्ट शरीर राखे, वस्त्र पात्रना दूषण धरे, गीतार्थनी आज्ञा न माने, अणजाण्यो मार्ग चलावे, अणजाण्यो कहे, मार्गे हिंडतां वात करे, गृहस्थ साथे घणो आलाप संलाप करे: इत्यादिक एवी करणीए पोते साधुपणु पोता मांहे सर्दहे, अने गृहस्थने पण साधुपणु सर्दहरावे, दर्शननी निंद्या करे, पोतापणु वखाणे, पोतानो आडंबर चलाववो, गृहस्थ पासे पण पोतानी भक्ति प्रमुखनो पण आडंबर चलावराववो, इत्यादिक सर्व ठामे धूम १ धाम २ धमाधम ३ ए त्रण बोल जाणवा. ज्ञानादिक मार्ग पुस्तकादिके हतो ते करवा–जाणवा माटे वेगलो रह्यो. जूठा बोलाज घणा छे. ॥ ७ ॥

कलह कारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोलरे ।
जिन वचन अन्यथा दाखवे, आजतो वाजते ढोलरे ॥ स्वा ॥८॥

व्याख्या–कलह के० कलेशना करणहार: कदाग्रहे करी भर्या छे, मांहोमांहे एकेकनो अवर्णवाद बोले जे जेम बोल्या ते तेम पोतानोज बोल थापता थका श्री जिनवचन के० श्रीवीतराग देवनां वचन आज तो वाजते ढोले अन्यथा के०विपरीत देखाडे छे ॥८॥

केइ निज दोषने गोपवा, रोपवा केइ मत कंदरे ।
धर्मनी देशना पालटे, सत्य भाषे नहीं मंदरे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥

व्याख्या–केटला एक कपट क्रियाए पोताना दोषने गोपवाने माटे अपवाद पद देखाडता अने केटलाएक प्रतिमा प्रमुखना अण माननार लूंपकादिक पोताना मत रूप कंद रोपवाने काजे धर्मनी देशना जे मूल छे ते पालटी नाखे छे, पण जेणे करी जीव धर्मे जोडाय ते धर्म देशना देता नथी. एवा मंद के० मूर्ख पण ते साचुं भाषे नहीं. ॥ ९ ॥

बहु मुखे बोल एम सांभली, नवि धरे लोक विश्वासरे ।
ढुंढता धर्मने ते थया, भ्रमर जेम कमल निवासरे ॥ स्वा०॥१०॥

व्याख्या–एम बहु मुखे के० घणाने मोढे बोल जूदा जूदां सांभलीने लोको विश्वासने धरे नहीं, अने जेम भमरा कमलनी वासनानी इच्छाए भमता फरे पण केरडोय ते

न पामे, तेम ते लोको धर्मने ढुंढता थया. जे कोण साधु पासे धर्म होशे ? एवा संभ्रमे फरे. ॥ १० ॥ एहवी अरदास श्री प्रभुजी आगल कही.

॥ ढाळ बीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ भोलीडा हंसारे विषय न राचीए–ए देशी.

एम ढुंढतांरे धर्म सोहामणो, मिलिओ सद्गुरु एक ।
तेहने साचोरे मारग दाखवे, आणी हृदय विवेक ॥
श्री सीमंधर साहेब सांभलो ॥११॥

व्याख्या–एम बाहेर धर्म ढुंढतां थकां हवे धर्म ते केवो छे ? सोहामणो के० मनोहर छे. एक सद्गुरु ते ज्ञानी गुरु मल्या. ते ते ढुंढणहारने साचो अंतरंग मार्ग देखाडे ते हृदय मांहे एवो विवेक आणीने के० ए बाह्यदृष्टिने ज्ञानमार्ग मांहे अवतारीए तो मूढता टले ए व्यतिकर हे श्री सीमंधर स्वामी, तमे सांभलो, अने सत्यवादीना वचनना साखी थाओ ॥ ११ ॥ हवे ते सद्गुरु जे उपदेश कहे छे, ते देखाडे छे. ॥

पर घरे जोतांरे धर्म तुमे फरो, निज घर न लहोरे धर्म ।
जेम नवि जाणेरे मृग कस्तुरिओ, मृगमद परिमल मर्म ॥श्री०॥

व्याख्या–हे बाह्यदृष्टि लोको ! तमे परघरे धर्मने जोता फरो छो, पण निज घरे के० पोताना घर मांहे धर्म नथी पामता. ते उपर दृष्टांत–" जेम कस्तुरिओ मृग पोतानी नाभि मांहे जे मृगमद के० कस्तूरी उत्पन्न थइ छे, तेना परिमल के० सुगंधना मर्मने जाणे नहीं. तेम तमे पोतानाज घट मांहे धर्म छे तेने नथी पामता ॥ १२ ॥

जेम ते भूलोरे मृग दिशि दिशि फरे, लेवा मृगमद गंध ।
तेम जगे ढुंढेरे बाहिर धर्मने, मिथ्यादृष्टि रे अंध ॥ श्री० ॥१३॥

व्याख्या–जेम कस्तूरीओ मृग मृगमद के० कस्तूरीनी सुगंध लेवा माटे वनमांहे दिशा दिशाने विषे रझलतो फरे, तेम मिथ्यादृष्टि अंध छे ते पण निज आत्मार्थी अन्य ठामे धर्मने ढुंढे छे के० शोधे छे, पण विपर्यासे करी आत्मज्ञान मांहे न रमे ॥ १३ ॥

जाति अंधनोरे दोष न आकरो, जे नवि देखेरे अर्थ ।
मिथ्या दृष्टिरे तेहथी आकरो, माने अर्थ अनर्थ ॥ श्री० ॥१४॥

व्याख्या—जातिअंध के० जन्मनो जे अंध छे तेनो दोष तो आकरो नथी, कारण ते ज्यां अर्थ होय त्यां देखतो नथी पण मिथ्यादृष्टि तो छती आंखे जातिअंधना करतां आकरा छे, कारण ते अर्थने अनर्थ करी माने, अने अनर्थने अर्थ करी माने छे. अहींयां दश मिथ्या छे.—"धम्मे अधम्मसन्ना १ अधम्मे धम्मसन्ना २ उमग्गे मग्गसन्ना ३ मग्गे उमग्गसन्ना ४ साहुसु असाहुसन्ना ५ असाहुसु साहुसन्ना ६ जीवे अजीवसन्ना ७ अजीवे जीवसन्ना ८ मुत्ते अमुत्तसन्ना ९ अमुत्ते मुत्तसन्ना १०" ए दश प्रकारना मिथ्यात्व कह्यां ॥ १४ ॥ मिथ्यादृष्टिनां लक्षण कहे छे.

आप प्रशंसेरे परगुण ओलवे, न धरे गुणनोरे लेश ।
ते जिनवाणीरे श्रवणे नवि सुणे, दिए मिथ्या उपदेश ॥ श्री० ॥

व्याख्या—आप प्रशंसे के० पोताना आत्मानो उत्कर्ष करे अने कांइक दोष काढीने पारका गुणने ओलवे के० लुपावे. पोते तो गुणनो लवलेश मात्र पण धरे नहीं. वली ते मिथ्यादृष्टि जिनवाणी के० श्री वीतराग देवनां वचन ते श्रवणे के० काने नवि सुणे के० सांभले नहीं. जे उपदेश दे ते मिथ्या. के० स्वमतिं कल्पित दिए, थोडो जाणे तो घणो फूलीने कहे उछांछलो होय. ॥ १५ ॥

ज्ञान प्रकाशेरे मोह तिमिर हरे, जेहने सद्गुरु सूर ।
ते निज देखेरे सत्ता धर्मनी, चिदानंद भरपूर ॥ श्री० ॥१५॥

व्याख्या—जीव ! तुज ताहरो मित्र छे, तो शा माटे बाहेर मित्रने वांछे छे ? एटले आत्मा समभावे छे तो सर्वत्र मीत्र छे. जेहने सद्गुरुरूप सूर्य ज्ञान प्रकाशे—"जे पुरिसा तुमंच तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि" इत्यादि आचारांग तृतिय अध्ययने. अर्थ व्याख्यान रूप किरणे करी मोहरूप तिमिर के० मिथ्यात्व रूप जे अंधकार ते हरे, ते पोताना आत्मामांहे निज धर्मनी सत्ता देखे. ते केवी छे ? तो के चिदानंद के० ज्ञान सुख तेणे भरपूर—प्रथम सम्यक्त्व पामे तेहने अतिपे आनंद उपजे. ॥ १६ ॥

जेम निर्मलतारे रतन स्फटिकतणी, तेम जे जीव स्वभाव ।
ते जिन वीरेरे धर्म प्रकाशीओ, प्रबल कषाय अभाव ॥ श्री० ॥१७॥

व्याख्या—जेम स्फटिक रत्ननी निर्मलता ते स्फटिकनो स्वभाव छे. ते उपाधी विरहे प्रगटे, तेम जे जीवनो पण कषायादिकना अभावे प्रकटतो स्वभाव छे ते श्री जिन वीरे के० श्री वर्द्धमान स्वामीए धर्म प्रकाश्यो छे. ते केवो छे ? तो के प्रबल जे कषाय तेनो अभाव एटले नोकषाय प्रबल पदे मंद कषायनो धर्म पण लाध्यो. ॥ १७ ॥

जेम ते रातेरे फूले रातडुं, श्याम फूलथीरे श्याम ।
पाप पुण्यथीरे तेम जग जीवने, राग द्वेष परिणाम ॥ श्री० ॥१८॥

व्याख्या—जेम ते स्फटिक रत्न, रातुं फूल पासे छे तेथी रातुं देखाय छे. श्याम फूल पार्श्ववर्ती थकी श्याम देखाय, तेम जगत्‌ना जीवने पाप पुण्य रूप द्रव्य कर्म उपाधिए राग द्वेष परिणाम थाय छे. रागे रातां फूल अने द्वेषे श्याम फूल थाय एम समजवुं. अने सहज तो ते शुद्ध स्वभाव छे ॥ १८ ॥

धर्म न कहिएरे निश्चे तेहने, जेह विभाव वड व्याधि ।
पहेले अंगेरे एणीपेरे भाषियुं, करमे होए उपाधि ॥ श्री० ॥१९॥

व्याख्या—ते राग द्वेष प्रशस्त परिणाम रूप होय तो कारणे कार्योपचारथी व्यवहारे धर्म कहिए, पण निश्चय नयें धर्म न कहिए. जे राग द्वेष विभाव छे, ते महोटी व्याधिरूप छे. ए प्रमाणे पहेले अंगे एटले श्री आचारांगे भाष्युं छे के, उपाधि सर्व कर्मे होय तो उपाधिने स्वभाव केम कहिए? "अकम्मस्स ववहारो ण विज्जइ कम्मुणा उवाही जायइ" इति सूत्रं ॥ अध्ययन त्रीजे. अकम्म के० ज्यां कर्म जनित विकार नथी त्यां व्यवहार नथी. उपाधि ते कर्मे करी होय छे. ॥ १९

जे जे अंशेरे निरुपाधिकपणुं, ते ते जाणोरे धर्म ।
सम्यक्‌दृष्टिरे गुणठाणाथकी, जाव लहे शिवशर्म ॥ श्री० ॥२०॥

व्याख्या—जेटले अंशे निरुपाधिकपणुं के० उपाधि रहितपणु ते ते अंशे धर्म जाणो. जेम सम्यक् दृष्टिने मिथ्यात्व उपाधि टली तेटलोज धर्म. विरतिने अविरति टले तेहज धर्म. अकषायीने कषाय टल्यो ते धर्म. अयोगीने योग टल्यो ते धर्म. एम सम्यक् धर्म जाणो. जेम सम्यक्‌दृष्टि गुणठाणाथी मांडी ज्यां सुधी शिवशर्म के० मोक्ष सुख पामीए, त्यां सुधी अंशे धर्मवृद्धि पामता पूर्ण धर्म ते चौदमा गुणठाणाने छेल्ले समये होय. ॥ २० ॥

एम जाणीनेरे ज्ञान दशा भजी, रहीए आप स्वरूप ।
पर परिणतिथीरे धर्म न छांडिए, नवि पडिए भव कूप ॥ श्री० ॥ २१॥

व्याख्या—एम जाणीने मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय अने योग—ए पांच आश्रव, तेमनी निवृत्ति ते पांच संवर, एम अंतरंग ज्ञान दशा भजीने आप स्वरूपे रहीए अने शुद्ध परिणामे वर्तीए. पर परिणतिथी पुद्गल परिणामथी कुग्रहे मिथ्यात्वादिक आदरी धर्म न छांडीए. भव कूप के० संसाररूपी कूपे न पडीए. ज्ञान दशा विना बाह्य क्रियाए जमालि प्रमुखने अर्थ न सर्यो. ॥ २१ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

वाहार ढुढवुं मूकी परदोष दृष्टि टाली आत्मानो खोज करे तो धर्म पामे एम बीजी ढाल मांहे कह्युं. हवे ते आत्मज्ञाननो उपाय त्रीजी ढालमां कहे छे. ॥

॥ हवे राणी पदमावती–ए देशी. ॥

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं, लक्षण नवि जाण्युं ।
तिहां लगे गुणठाणुं भलुं, केम आवे ताण्युं ॥
आतमतत्व विचारीए ॥ २२ ॥

व्याख्या–जिहां लगे आतम द्रव्यनुं लक्षण के० शुद्ध स्वरूप ते जाण्युं नहीं, तिहां लगे गुणठाणुं भलुं के० भवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणुं ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे पाम्यानुं होय ते उपयोगे न आवे; ते माटे आत्म तत्व विचारीए. एहज निश्चय लक्षण छे.—" आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यतेः। यत्तदात्मक एवैष शरीरमधितिष्ठति ॥ १ ॥ " अर्थ–अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज यतिना शरीरनो आश्रय करी रहे छे ॥१॥ " आत्मना तमात्मा वेत्ति, मोहत्यागाद्यदात्मनि । तदेव तस्य चारित्रं, तद् ज्ञानं तच्च दर्शनं ॥ २ ॥ " इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीए ।
आतमज्ञाने ते टले, एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥२३॥

व्याख्या–आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आत्म भ्रम धरतां " मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं अट्ठकम्मपयडीओ बंधंति" ए वचनथी, भव दुःख के० संसार भ्रमणनां दुःख लहीए के० पामीए. ते भवदुःख आत्मज्ञानेज टले. पण आत्मज्ञान रहित तप प्रमुखे न टले. जेम हिम विकार दुःख अग्निए टले तेम जाणवुं. ए तत्व मनमां सद्दहिए. " आत्माऽज्ञानं हि विदुषामात्मज्ञानेन हन्यते । तपसाप्यात्मविज्ञानहीनैस्तत्तु न शक्यते ॥ १ ॥ " ॥ २३ ॥

एम जो आत्मज्ञानेज संवर होय तो चारित्रनुं शुं काम ? ते उपर कहे छे.

ज्ञानदशा जे आकरी, तेह चरण विचारो ।
निर्विकल्प उपयोगमां, नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम०॥२४॥

व्याख्या–ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के० चारित्र विचारो. निर्विकल्प शुद्ध ज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चारो नथी, एतावता ति-

वारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे चारित्र कहिए. बाह्य त्याग तो तिर्यंचादिकने पण छे. ॥ २४ ॥

भगवई अंगे भाषिओ, सामायिक अर्थ ॥
सामायिक पण आतमा, धरो सूधो अर्थ ॥आतम०॥२५॥

व्याख्या–श्री भगवती सूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्यो " आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे ॥ " ए वचने आत्मभाव रूपज चारित्र कह्युं. द्रव्यथी त्याग मात्रे जे कह्युं, ते उपचारे कहीए. अने मुख्य अर्थ स्पर्श विना उपचार न संभवे ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्त मांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां, समकित मुनि भावे ।
मुनिभावज समकित कह्युं, निज शुद्ध स्वभावे ॥ आ० ॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–ते मांहे समकित मुनि भावे अने मुनिभावज समकित एवुं अन्योन्य अविना भावे कह्युं छे, ते निज शुद्ध स्वभावे करे, ते माटे शुद्ध स्वभाव उपयोग–तेहज आत्म चरण भणी चारित्र कहीए. ए ज्ञान मांहेज रति करीए. यदुक्तं–" जं सम्मंति पासहा, तं मोणंति पासहा । जं मोणंति पासहा, तं सम्मंति पासहा ॥ " इत्यादि आलावो छे. इति छव्वीशमी गाथार्थ ॥ २६ ॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे छे.

कष्ट करो संजम धरो, गालो निज देह ।
ज्ञानदशा विण जीवने, नहीं दुःखनो छेह ॥आ०॥२७॥

व्याख्या–कष्ट० लोचादि करो, संयम चारित्र क्रिया उग्र धरो, निज देह-के० पोतानुं शरीर-मासखमणादिके गालो पण ज्ञानदशा विना जीवने दुःखनो छेह के० छेडो नथी, ते माटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुखे ज्ञान प्रवर्ती नथी करता ते देखाडे छे.

बाहिर यतना बापडा, करतां दूहवाए ।
अंतर जतना ज्ञाननी, नवि तेणे थाए ॥आतम०॥२८॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शौच बाहेर उग्रविहार यत्ना करतां दूहवाय छे. दुःख मात्र पामे छे, पण तेणे ज्ञान यतना अंतर्मुखे सुख करे छे ते पण नथी थाती. अज्ञान मांहेज जे तुच्छ उपाय करे छे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच–" अज्ञानं खलु कष्टं, क्रोधादिभ्यो पि सर्वपापेभ्यः । अर्थं हितमहितं वा न वेत्ति येनावृतो जीवः ॥ २८ ॥

राग द्वेष मल गालवा, उपशम जल झीलो।
आतम परिणति आदरी, पर परिणति पीलो ॥ आ० ॥२९॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलने विषे झीलो. ते उपशम आतमज्ञाने आवे, ते माटे तत्त्व संवेदने आत्म परिणति आदरीने पर परिणति जे पुद्गल-तृष्णा तेहने पीलो ॥ २९ ॥ तेहनो उपाय भेदज्ञान छे ते कहे छे.

हुं एहनो ए माहरो, ए हुं एणि बुद्धि।
चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धि ॥ आ० ॥ ३० ॥

व्याख्या–हुं एहनो पुत्रादिक, ए माहरा तातादिक, ए शरीर तेहज हुं–इत्यादिक मम-मकार अहंकार बुद्धिए चेतन जडताने अनुभवे छे. शुद्धि विमासतो नथी शुं?

बाहिर दृष्टि देखतां, बाहिर मन धावे।
अंतर दृष्टि देखतां, अक्षय पद पावे ॥ आतम० ॥ ३१ ॥

बाहिरदृष्टि ते, कनक कामीनो संबंध प्रमुख उपादेय देखतां बाहेर मन धावे छे. अंतरदृष्टि ते सर्व पुद्गल संबंध हेय जाणी चित्त चमत्कार मात्र विश्रांत थातां सर्व नाशे अने अक्षयपद पामे छे. ॥ ३१ ॥

चरण होय लज्जादिके, नवि मनने भंगे।
त्रीजे अध्ययने कह्युं, एम पहेले अंगे ॥ आतम० ॥ ३२ ॥

व्याख्या–ते माटे ज्ञानकृत मनःशुद्धि तेज चारित्र लक्षण अने तेज मोक्ष कारण छे, एम सद्दहवुं तेहज इष्ट छे. द्रव्यक्रिया करतां थकां पण मनने भंगे के० मनने असमाधाने चरण के० चारित्र न होय, एवुं पहेले अंगे त्रीजे अध्ययने कह्युं छे. " जमिणं अन्नमन्न-वितिगिच्छाए पडिलेहणाए ण करेइ पावं कम्मं किं तत्थ मुणी कारणं सिया ? ॥ ३२ ॥

अध्यातम विण जे क्रिया, ते तनु मन तोले।
ममकारादिक योगथी, एम ज्ञानी बोले ॥ आतम० ॥ ३३ ॥

व्याख्या–अध्यातमविण के० अपुनर्बंधकादि भावनी आत्मदृष्टि ते विना जे क्रिया छे, ते तनु के० शरीरनो मल तेहने तुल्य छे. ममकारादिक के० ममत्वादिक दोषना योगथी एम ज्ञानी बोले छे. आशयभेदा एते, सर्वेपि हि तत्वतोऽवगंतव्याः। भावो यमनेन विना, चेष्टा द्रव्यक्रिया तुच्छा ॥१॥" इति तृतीय षोडशके ॥ ३३ ॥

हुं करता परभावनो, एम जेम जेम जाणे ।
तेम तेम अज्ञानी पडे, निज कर्मने घाणे ॥ आतम० ॥ ३४ ॥

व्याख्या–हुं परभावनो के० पुद्गलभावनो कर्त्ता छुं, एम जेम जेम जाणे छे, तेम तेम ते अज्ञानी जीव, निज के० पोताना कर्मने घाणे पडे छे. एटले कर्तृत्वाभिमानजनित कर्मे बंधाय छे. ॥ ३४ ॥ ते अज्ञान नय विभागे टळे ते देखाडे छे.

पुद्गल कर्मादिकतणो, करता व्यवहारे ।
करता चेतन करमनो, निश्चय सुविचारे ॥ आतम० ॥ ३५ ॥

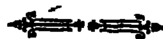
व्याख्या–व्यवहार नयनी अपेक्षाए ज्ञानावरणीयादिक पुद्गल कर्मादिक भावनो कर्ता चेतन छे. तिहां अनुपचरितासद्भूत व्यवहारे कर्मनो कर्ता, अने उपचरितासद्भूत व्यवहारे गृहादिकनो कर्त्ता, ए विशेष. तथा स्वजात्युपचरितासद्भूत व्यवहारे पुत्रादिकनो कर्ता, अने विजात्युपचरितासद्भूत व्यवहारे धनादिकनो, स्वजाति विजात्युपचरितासद्भूत व्यवहारे नगर प्राकारादिकनो, इत्यादिक भेद जाणवो. निश्चय नयने सुविचारे चेतन कर्म जे राग द्वेष तेहनो कर्ता छे. जे माटे अशुद्ध निश्चय नय अशुद्ध स्वभाव कर्ता माने. द्रव्य कर्म ते ए नये अनुषंगे आवे छे. जेम तैलाऽभ्यंग कर्ता पुरुषने रज तैल्याभंगने अनुषंगे आवे छे. उक्तंच–"तैलाभ्यंगे शरीरस्येत्यादि" ॥ ३५ ॥

कर्ता शुद्ध स्वभावनो, नय शुद्धे कहीए ।
कर्ता पर परिणामनो, बेउ किरिया ग्रहीए ॥ आ० ॥३६॥

व्याख्या–शुद्ध निश्चय नये शुद्ध स्वभावनोज कर्ता आत्मा कहीए. परपरिणामनो कर्ता मानतां बे क्रिया ग्रहिए. बे क्रिया आवी जाय, एक जीव क्रिया अने बीजी अजीवक्रिया. एम मानतां तो अपसिद्धांत थाय, ते माटे शुद्ध स्वभावनोज कर्ता मानीए. ॥ ३६ ॥



॥ ढाल चोथी ॥



॥ वीरमतो प्रीति कारणी–ए देशी. ॥

शिष्य कहे जो परभावनो, अकर्त्ता कह्यो प्राणी ।
दान हरणादिक केम घटे, कहे सद्गुरु वाणी ॥
शुद्ध नय अर्थ मन धारीए ॥ ए आंकणी ॥ ३७ ॥

व्याख्या–शिष्य पूछे छे के, जो परभावनो अकर्ता प्राणी कह्यो तो अमुक दाता, अमुक हर्ता, इत्यादिक व्यवहार केम घटे ? तथा दान हरणादिकनुं फल पण केम घटे ? त्यां सद्गुरु वाणी वदे छे. जे शुद्ध निश्चय नयनो अर्थ अमे कह्यो, ते मनमांहे धरो. त्यां केवल व्यवहार बाध थातां दोष नथी. दान हरणादिक फल तो आत्मनिष्ठितज ठेरशे. पर तो निमित्त मात्र छे. तेहज विवरी देखाडे छे. ॥ ३७॥

धर्म नवि दिए न वा सुख दिए, पर जंतुने देतो ॥
आप सत्ता रहे आपमां, एम हृदयमां चेतो ॥ शु० ॥ ३८ ॥

व्याख्या–पर जंतुने देतो थको प्राणी, आपणो धर्म वाके० तथा आपणुं सुख न देइ शके. जे माटे आप सत्ता के० आपणो भाव आपमांज रहे, ते परने केम अपाय ? एम हृदय मांहे चेतो. व्यवहार दृष्टि जीव समजो ॥ ३८ ॥ हवे कोइ कहेशे जे आत्मभावनो परने केम दाता हर्ता न होय अने पुद्गलना भावनोज दाता हर्ता होय? ते उपर कहे छे.

जोग वशे जे पुद्गल ग्रह्या, नवि जीवनां तेह ॥
तेहथी जीव छे जूजूओ, वली जूजूओ देह ॥ शु० ॥ ३९ ॥

व्याख्या–योग वशे के०मन वचन कायबले जे पुद्गल ग्रह्या छे, ते पुद्गल जीवनाज नथी. तेह पुद्गलथी जीव जूजूओ छे, वली जीवथी देह पण जूजूओ छे. कोने कोण ग्रहे? ॥३९॥

भक्त पानादि पुद्गल प्रते, न दिए छति विना पोते ।
दान हरणादि परजंतुने, एम नवि घटे जोते ॥ शु० ॥४०॥

व्याख्या–एम भक्तपानादिक पुद्गल प्रत्ये पोते छति विना परने पर न दिए. त्रिकाले जीवना असंसर्गि पुद्गल छे, ते केम देवाए ? एम सूक्ष्म रीते जोतां परने दान हरणादिक केम घटे ? नज घटे ॥ ४० ॥ तो कर्मबंध केम थाय छे ? ते कहे छे.

दान हरणादिक अवसरे, शुभ अशुभ संकल्पे ।
दिए हरे तुं निज रूपने, मुखे अन्यथा जल्पे ॥ शु० ॥ ४१ ॥

व्याख्या–परने दान देवानो तथा परधन हरणनो अध्यवसाय जे वारे करे छे, ते अवसरे दानरूप शुभ संकल्पे निज हरणरूप अशुभ संकल्पे निज रूपने आत्म धर्मने आत्माने दीए छे, तथा हरे छे, अने मुखे अन्यथा जल्पे छे जे. हुं परने देउं छुं, परनुं चोरुं छुं, परोपकार कर्ता छुं. ए प्रमाणे मन निमित्त कर्म तुं बांधे छे ॥ ४० ॥

अन्यथा वचन अभिमानथी फरी कर्म तुं बांधे ।
ज्ञायक भाव जे एकलो, ग्रहे ते सुख साधे ॥ शु० ॥ ४२ ॥

व्याख्या-ए अन्यथा वचने अभिमाने फरी कर्तृत्वाभिमत्त कर्म तुं बांधे छे. जे कर्तृत्वाभिमान रहित एकलो ज्ञायक स्वभाव ग्रहे ते सुख साधे. कर्मबंध निमित्त दुःखने न जोडाय. उक्तंचान्यत्रापि "-कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान् मनुष्येषु संयुक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥१॥" ॥ ४२ ॥

शुभ अशुभ वस्तु संकल्पथी, धरे जे नट माया।
तेटले सहज सुख अनुभवे, प्रभु आतमराया ॥ शु० ॥ ४३ ॥

व्याख्या-शुभ के० प्रशस्त अशुभ के० अप्रशस्त जे वस्तुनो संकल्प तेहथी नट माया के० विभाव स्वरूप विचित्रता धरे छे. टंकोत्कीर्णज्ञ स्वभाव परिज्ञाने ते टले, ते वारे प्रभु आतमराजा ते सहज सुख अनुभवे छे. सुख ते आत्म स्वभाव छे. उपाधिजनित विभाव कल्पनाए सुख दुःखरूप विचित्र कर्म फल चेतना अनुभवे छे. राग द्वेष रूप कर्म चेतना १ सुख दुःख भोग कर्म फल चेतना २ ए वे विचित्र छे. ज्ञान चेतना ते एक स्वभाव छे. तेहनो अनुभव ते आत्मराजा छे. ॥ ४४ ॥

पर तणी आश विष वेलडी, फले कर्म बहु भांति।
ज्ञान दहने करी ते दहे, होए एक जे जाति ॥ शु० ॥४४॥

व्याख्या-परतणी आशा छे ते विष वेलडी रूप छे, ते बहु भांति के० बहु प्रकारे कर्मने फले छे. संक्लेश विशुद्धांगे शुभाशुभ अनेक कर्मरूप फल प्रसवे छे. ए पर आशा रूप विष वल्लिने ज्ञान रूप दहन के० अग्नि तेणे करी ते दहे, जे जाते एकज ज्ञान स्वभाव रहे. ॥ ४४ ॥

राग दोष रहित एक जे, दया शुद्ध ते पाले।
प्रथम अंगे एम भाषियुं, निज शक्ति अजुआले ॥ शु० ॥४५॥

व्याख्या-राग द्वेषादिक दोषे रहित जे एक थाए ते शुद्ध आत्मदया पाले, एम प्रथम अंगे श्री आचारांग सूत्रे भाख्युं के० कह्युं छे, ते निज शक्ति के० आत्म शक्ति, तेहने अजुआले. " पासइ एगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणे ओए दयं दयंति सूत्र ॥ ४५ ॥

एकता ज्ञान निश्चय दया, सुगुरु तेहने भाखे।
जेहे अविकल्प उपयोगमां, निज प्राणने राखे ॥ शु० ॥४६॥

व्याख्या-आत्माने जे एकता ज्ञान, तेह निश्चय दया जाणवी. ते सुगुरु ते पुरुषने भाषे. जेह अविकल्प उपयोगमां निर्विकल्प समाधिमां रह्या. इंद्रिय बलोत्था सायुः प्रकृतिभूत ज्ञान. वीर्य सदा श्वास नित्य स्थितिरूप निज प्राणने राखे. ॥ ४६ ॥

जेह राखे पर प्राणने, दया तास व्यवहारे ।
निजदया विण कहो परदया, होए कवण प्रकारे ॥ शु० ॥४७॥

व्याख्या–जेह कीटीकादिक पर प्राणने राखे, तास के० तेने पर दया होए, ते व्यवहारे कहीए. ज्ञानरूप आत्म दया विना, कहो बाह्य प्राण रक्षणरूप दया केम होय ? न होय. उक्तंच–" जइयाऽणेण चत्तं, अप्पणयं नाणदंसणचरित्तं । तइआ तस्स परेसुं, अणुकंपा नत्थि जीवेसु ॥ १ ॥ " इति उपदेशमालायां ॥ ४७ ॥

लोकविण जेम नगर मेदनी, जेम जीवविण काया ।
फोक तेम ज्ञानविण परदया, जिसी नटीतणी माया ॥ ४८ ॥

व्याख्या–लोको विना जेम नगरनी मेदिनी के० पृथ्वी उजडरूप, अने जीव विना जेम काया फोक के० अकाजरूप दीसे, तेम ज्ञानरूप आत्म दया विना परदया ते जेहवी नाटकीयानी माया फोकट, तेम फोकट जाणवी. ॥ ४८ ॥

सर्व आचरमय प्रवचने, भण्यो अनुभव योग ।
तेहथी मुनि वमे मोहने, वली अरति रति शोग ॥ शु० ॥४९॥

व्याख्या–श्री प्रवचने सिद्धांते अनुभव योग के० ज्ञान योग सर्व आचारमय भण्यो. यतः–" सव्वेसुवि तेण कयं " इति वचनात्. तेह अनुभव योगथी मुनि, मोहने के० कषाय मोहनीयने वमे. वली अरति रति, अने शोक इत्यादिक नोकषाय मोहनीयने वमे. ते माटे ज्ञान योगनोज दृढ आदर करवो. ॥ ४९ ॥

सूत्र अक्षर परावर्त्तना, सरस शेलडी दाखी ।
तास रस अनुभव चाखीए, जिहां एक छे साखी ॥ शु० ॥५०॥

व्याख्या–सूत्र अक्षरनी परावर्त्तना एटले कर्म योग, ते सरस शेलडी सरखो देखाड्यो. तास के० तेहनो रस ते अनुभव ते चाखीए. जिहां एक आतम साखी छे. स्थान वर्ण २ कर्म योग अर्थ १ आलंबन २ निरालंबन ३ ए ज्ञान योग. ॥ ५० ॥

आतमराम अनुभव भजो, तजो परतणी माया ।
एह छे सार जिन वचननो, वली एह शिवछाया ॥ शु० ॥५१॥

व्याख्या–आत्माने आराम के० रमावे एवो अनुभव तेने भजो के० सेवो. परतणी के० पुद्गलतणी माया तजो–छांडो. एहज जिन वचननो सार छे. वली संसार तापनी टालणहार एवी एहज शिवतरुनी छाया छे. ॥ ५१ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुज वात–ए देशी.

एम निश्चय नय सांभलीजी, बोले एक अजाण ।
आदरशुं अमे ज्ञाननेजी, शुं कीजे पच्चखाण ॥
सोभागी जिन सीमंधर सुणो वात ॥ ५२ ॥

व्याख्या–एम एहवो शुद्ध निश्चय नय सांभली एक अजाण मतना अध्यात्मी बोले छे के, अमे एकला ज्ञाननेज आदरशुं–अंगीकार करशुं, पच्चखाण प्रमुख व्यवहार तो हेठी दशानो छे, तेहने शुं करीए ? हे सोभागी जिन श्री सीमंधरस्वामि ! ए वात भरतक्षेत्र लोकनी सुणो–अवधारो—॥ ५२ ॥

किरिया उथापी करीजी, छांडी तेणे लाज ।
नवि जाणे ते उपजेजी, कारण विण नवि काज ॥ सो० ॥ ५३ ॥

व्याख्या–किरिया अनुष्ठानादिक रूप, तेहने उथापी नाखी ने कुमतिए लाज छोडी, लाजनो धर्म छांड्यो. ते न जाणे जे कारण विना कार्य केम उपजे ? व्यवहार विना निश्चय केम आवे ? अने आव्यो पण केम ठरे ? ॥ ५३ ॥

निश्चय नय अवलंबताजी, नवि जाणे तस मर्म ।
छोडे जे व्यवहारनेजी, लोपे ते जिन धर्म ॥ सो० ॥ ५४ ॥

व्याख्या–निश्चय नये अवलंबतां के० निश्चय नयनो पक्ष ग्रहेतां थकां तस के० तेहनो मर्म नथी जाणता, जे व्यवहारने छोडे छे ते जिन धर्मने लोपे छे. व्यवहार परिणति विना निश्चय आवेज नहिं. उक्तंच ओघनिर्युक्तौ–"निच्छयमवलंबता, णिच्छयओ णिच्छयं अयाणंता । णासंति चरणकरणं, बाहिरकरणालसा केई ॥१॥" इति. ॥ ५४ ॥

निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी, पाले जे व्यवहार ।
पुण्यवंत ते पामशेजी, भवसमुद्रनो पार ॥ सो० ॥ ५५ ॥

व्याख्या–निश्चय नयनी दृष्टि हृदय धरीने एटले तद्धेतु अमृतभाव अवलंबीने जे व्यवहार पाले, ते पुण्यवंत प्राणी भव समुद्रनो पार पामशे. निश्चय दृष्टि व्यवहार क्रिया ते हेतु, निश्चय भाव पक्ष ते स्वरूप, निश्चय आत्मा शुद्ध प्रवृत्ति ते निश्चय अनुबंध जाणवो. ॥ ५५ ॥

तुरंग चढी जेम पामिएजी, वेगे पुरनो पंथ ।
मार्ग तेम शिवना लहेजी, व्यवहारें निग्रंथ ॥ सो० ॥५६॥

व्याख्या—तुरंग के० घोडा उपर आरोहीने जेम वेगे पुरनो पंथ पामीए, तेम व्यवहारे करी निग्रंथ शिवनो मार्ग लहे. एटले हेतु निश्चय ते व्यवहारज ठहेराणो. ॥ ५६ ॥

फलसिद्धि काले साधननी अपेक्षा नथी, ए माटे साधननुं असाधनपणुं न होयें, ते देखाडे छे.

महोल चढतां जेम नहींजी, तेह तुरंगनुं काज ।
सफल नहीं निश्चय लहेजी, तेम तनु किरिया साज ॥ सो० ॥५७॥

व्याख्या—महोल चढतां जेम तेह तुरंगनुं काज नहीं, तेम निश्चय लहे थके तनु क्रियानो साज सफल नहीं. । काव्यम् मालिनी छंदः—"व्यवहरण नयः स्याद्यद्यपि प्राक् पदव्यामिह निहितपदानां हंत हस्तावलंबः । तदपि परममर्थं चिच्चमत्कारमात्रं, परविरहितमंतः पश्यते नैष किंचित् ॥ १ ॥" ॥ ५७ ॥

निश्चय नवि पामी शकेजी, पाले नवि व्यवहार ।
पुण्यरहित जे एहवाजी, तेहनो कुण आधार ॥ सो० ॥५८॥

व्याख्या—निश्चयभाव पामी न शके, अने व्यवहार पाले नहीं, एहवा जे पुण्यरहित जीव, तेहनो कोण आधार ? अर्थात् कोइ नहीं. ए भाव. ॥ ५८ ॥

हेम परिक्षा जेम हुएजी, सहत हुताशन ताप ।
ज्ञान दशा तेम परखीएजी, जिहां बहु किरिया व्याप ॥ सो० ॥

व्याख्या—हेम के० सोवर्णनी परीक्षा जेम हुताशन के० अग्निनो ताप सहेतांज थाय, तेम ज्ञानदशा तिहां परखीए के० ज्यां बहु क्रियानो व्याप होय. ज्ञानीने क्रिया खेदादिक रहित असंग भूषण रूपज छे. ॥ ५९ ॥

आलंबन विण जेम पडेजी, पामी विषमी वाट ।
मुग्ध पडे भवकूपमांजी, तेम विण किरिया घाट ॥ सो० ॥६०॥

व्याख्या—आलंबन विना जेम विषम वाट गर्त्तादिकनी पामी, तेने विषे पुरुष पडे, तेम क्रियाना घाट विना मुग्ध के० अज्ञानी जीवो भवकूपमां पडे, माटे किरिया छे ते मुग्ध भविकजनोने आलंबन आधार भूत छे. ॥ ६० ॥

चरित भणी बहु लोकमांजी, भरतादिकनां जेह ।
लोपें शुभ व्यवहारनेंजी, बोधि हणे निज तेह ॥ सो० ॥६१॥

वच सुरेंद्रश्वामीकर
तस्यच तथास

व्याख्या—घणा लोकमांहे भरतादिकनां चरित्र भणीने के० कहीने एटले भरतादिके शो क्रिया व्यवहार पाल्यो? केवल आत्मशुद्धिएज केवलज्ञान पाम्या, तो व्यवहारनो शो परमार्थ? एवुं प्रकाशी, जे शुभ व्यवहारने लोपे ते निज के० पोतानी बोधीने हणे. "आहच भावकहणे, पंचहिं ठाणेहि पासत्था" इति (आवश्यक निर्युक्ते) वचनात् ॥ ६१॥

बहु दल दीसे जीवनांजी, व्यवहारे शिवयोग।
छींडी ताके पाधरोजी, छोडी पंथ अयोग ॥ सो० ॥६२॥

व्याख्या—बहु दल के० घणां द्रव्य जीवनां व्यवहारे शिवयोग्य दीसे छे, तेणे करी व्यवहार क्रिया ते राज मार्ग छे. ए पाधरो मार्ग छांडीने जे छींडी ताके एटले गली कुंचीनो रस्तो शोधवा जाय ते अयोग्य कहीए. भरत मरुदेव्यादिकनुं आलंबन सामान्ये न करवुं. उक्तंच—"गिहिसंयत्तमहत्तो" इत्यादि. ॥ ६२ ॥

आवश्यकमांहे भाखिओजी, एहज अर्थ विचार।
फल संशय पण जाणतांजी, जाणीजे संसार ॥ सो० ॥६३॥

व्याख्या—एहज अर्थनो विचार आवश्यक मांहे भाख्यो छे के जे, भरतादिक आलंबन लेइ क्रियाने उथापे छे, ते क्रिया अदृष्ट्य मुख छे. क्रिया करतां फल होशे के नहीं होय? ए संशय केम टले? ते उपर कहे छे. जे फल संशय जाणतां पण संसार जाणीए. उक्तंच—श्री आचारांगे (पंचम अध्ययने). "संसयं परिआणओ संसारे परिन्नाए भवति संसयं अपरिआणओ संसारे अपरिन्नाए भवति।" इति. "कृष्यादौ फलसंशयेपि, यथोपायलनिश्चयात्। प्रवृत्तिस्तथा धर्म्मेपि, इति न्यायानुसारिणः ॥ १" ॥ ६३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

मुनि मन सरोवर हंसलो अथवा ऋषभनो वंश रयणायरु—ए देशी.

अवर इस्यो नय सांभली, एक ग्रहे व्यवहारोरे।
मर्म द्विविध तस नवि लहे, शुद्ध अशुद्ध विचारोरे ॥ ६४ ॥
तुज विण गति नहीं जंतुने, तुं जग जंतुनो दीवोरे।
जीवीए तुज अवलंबने, तुं साहेब चीरं जीवोरे ॥ तुज ॥ ६५ ॥

व्याख्या–अवर के० बीजो कोइ एक मतवादी पुरुष, एहवो व्यवहार स्थापक नय सांभलीने एकं व्यवहारनेज ग्रहे, पण तेहना द्विविध मर्म न पामे के० एक शुद्ध व्यवहार छे अने एक अशुद्ध व्यवहार छे. ए बे भेद न भीछे ॥६४॥ हे भगवंत! तमारा विना जीवने गति नथी तुं जगजंतुनो दीवो छे, तुज अवलंबने एटले ताहरी स्याद्वादवाणीने पक्षे जीवीए छीए. श्लाध्यता जीवने वर्ते छे. माटे तुं साहेब अमारे माटे चिरंजीवी वर्ते ॥६५॥

जेह न आगम वारीओ, दीसे अशठ आचारोरे।
तेहज बुध बहु मानिओ, शुध कह्यो व्यवहारोरे ॥ तुज० ॥६६॥

व्याख्या–जेह न आगम के० सिद्धांत मांहे नथी वारयो. अशठ परिणामनो आचार दीसे छे तेहज बुध बहु के० घणा पंडिते मान्यो. शुद्ध व्यवहार कह्यो. उक्तंच–"मग्गो आगमणीई, अहवा संविग्गबहुजणाइन्नं, । उभयाणुसारिणी जा, सा मग्गाणुसारिणी किरिया ॥१॥" इत्यादि तथा "असढेण समाइन्नं, जं कत्थइ केणइ असावज्जं। ण णिवारियमण्णेहिं, बहुमणुमयमेयमायरियं ॥२॥" तथा–"वत्तणुवत्तपवत्तो, गहुसो आसेविओ महाणेण। एसो ओ जियकप्पो, पंचमओ णाम ववहारो ॥३॥" ॥६६॥

जेहमां निज मति कल्पना, जेहथी नवि भव पारोरे।
अंध परंपरा बांधिओ, तेह असुद्ध आचारोरे ॥ तुज० ॥६७॥

व्याख्या–जेहमां निजमतिनी कल्पना अत एव जेहथी भवनो पार न पामीए, तथा जे अंध परंपराए बांध्यो ते अशुद्ध आचार जाणवो. उक्तंच–" जहसढेसु समत्तं सटाइ अशुद्ध उवहिभत्ताइं। णिटिज्झवसाहि तूला, मसूरमाइण परिभोगो ॥१॥ एमाइयसमंजस, मणे महा बुद्द चिट्ठियं लाए बहु एहिं आयरियं णए, पमा शुद्ध चरणाणं ॥२॥" ॥ ६७ ॥

शिथिल विहारीए आचर्यां, आलंबन जे कुडांरे।
नियत वासादिक साधुने, ते नवि जाणीए रूडांरे ॥ तु० ॥६८॥

व्याख्या–शिथिल विहारी पासत्थादिक, तेणे नियत वासादिक जे कुडां आलंबन आचर्यां ते साधुने रूडां न जाणीए. यतः–"नीआवासविहारं, चेइयभत्तिं च अज्जिया लाभं। विगइसु अ पडिबद्धं, णिद्दोसा चोइआ बिन्ती ॥१॥" इत्यादिक आवश्यके, एहना उत्तर सर्व तिहां छे. आलंबन तो कल्पना मात्र छे. उक्तंच–" आलंबणाणलोगो, भरिओ जीवस्स अजऊ कामे। जं जं पासइ लोओ, तं तं अलंबणं कुणह ॥२॥" ॥६८॥

आज न चरण छे आकरुं, संहननादिक दोषेरे।
एम निज अवगुण ओलवी, कुमति कदाग्रह पोषेरे ॥ तु० ॥६९॥

वच सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच तथास

व्याख्या–आज चरण के० चारित्र नथी. संहननादिक रोषे करीने जे माटे चारित्र अति आकरुं छे. ते पांचमे आरे हाथे न आवे. एम निज अवगुण ओलवीने कुमति पासत्थादिक कदाग्रह पोषे छे, पण अमे हिणा छैये अने कालोचित यत्ना अशठपणे जे करे ते साधु पूज्य होय एम कही न शके, पण पोतामां साधु सत्ता थापे छे ॥६९॥

उत्तर गुणमांहे हीणडा, गुरु कालादिक पाखेरे ।
मूल गुणे नही हीणडा, एम पंचाशक भाखेरे ॥तु० ॥७०॥

व्याख्या–कालादिक पाखे० उत्तर गुणमांहे हीणा साधु होय, पण मूलगुणे हीणा न होय, एम पंचाशक शास्त्र भाखे छे. तथाहि–"गुणगणरहिओ वि इहं दठव्वो मूलगुणविउत्तो जो । णउ णाओ गुणमित्तविहूणोत्ति चंडरुद्दो उदाहरणं ॥१॥"–तथा गीतार्थ आज्ञाए साधु व्यवहार करतां आज पण चारित्र अखंड होय. उक्तंच–धर्मरत्न प्रकरणे "गीयत्था पारतंता इइ दुविहं मग्गमणुसरंतस्स । भावजइत्तं जुत्तं, दुप्पसहंतं जओ चरणं ॥१॥" तथ-गुरु आज्ञा पाळे तेहज रत्नत्रय पामे छे. उक्तंच पंचाशक नामा ग्रंथे–" गुरुपारतंतनाणं, सद्दहणं एयसंगयं चेव । इत्तो उ चारित्तीण, मासतुसादीण णिद्दिट्ठं ॥१॥" ते माटे पंचमे आरे कालोचित यतना गुरु आज्ञाए करे तेहने चारित्रीयाज सद्दहवा. तरतम भावना दृष्टांत तो नृप गोपकादि व्यवहारादिक प्रसिद्ध छे. अर्थात् सर्वत्र प्रसिद्धज छे. ॥ ७० ॥

परिग्रह ग्रह वश लिंगीया, लेह कुमति रज माथेरे ।
निज गुण पर अवगुण लवे, इंद्रिय वृषभ नवि नाथेरे ॥तु० ॥७१॥

व्याख्या–परिग्रह ग्रह वश वर्ति जे लिंगी थाय छे. ते कुमतरूप रज माथे लेइने निज के० पोताना गुण अने पर के० पारकाना अवगुण लवे के० लवारो करे छे, पण पोताना इंद्रियरूप वृषभने ते नाथता नथी. तेवारे सम्यक्त्वथी भ्रंश पामे छे ॥ ७१ ॥

नाणरहित हित परिहरी, निज दंसण गुण लूसेरे । मुनिजनना गुण सांभली, तेह अनारज रुसेरे ॥तुज० ७२ ॥

व्याख्या–एम ते पोतानुं हित परिहरी ज्ञानरहित थका निज दर्शनगुणने लूसेछे, अने मुनिजनना के० साधु चारित्रियाना गुण सांभलीने तेह अनार्य रूशे छे. उक्तंच–"गुणहीणो गुणरयणायरेसु जो कुणइ तुल्लमप्पाणं ॥ सुतवस्सिणो अ हीलइ, सम्मत्तं कोमलं तस्स॥१॥" इति उपदेशमाला ग्रंथनेविषे कह्यो छे. ॥ ७२ ॥.

अणुसम दोष जे परतणो, मेरुसमान ते बोलेरे । जेहसुं पापनी गोठडी, तेहसुं हियडलुं खोलेरे ॥तुज० ७३ ॥

व्याख्या–अणुसम के० परमाणु मात्र जे परतणो के० पारकानो दोष होय तेह प्रत्ये

ते अनार्य द्रोह बुद्धिए मेरु समान करीने बोलेछे. जेहवुं पापनोज गोठडी बांधेछे तेहवुं हैडुं खोलेछे. तेहनी साथे अंतर न राखे, अने साधुनी साथे अंतर राखे छे ॥७३॥

सूत्र विरुद्ध जे आचरे, थापे अविधिना चालारे।
ते अति निविड मिथ्यामति । बोले उपदेशमालारे ॥तुज० ७४॥

व्याख्या–इत्यादिक जे दंभी माया मृषावादे पोतानुं पारकु गणवे करी हुं रुडो, ए भुंडो एम ममत्वबुद्धिए करी जे सूत्रविरुद्ध आचरण करे, तथा अविधिना चाला के० सूत्र विरुद्ध उन्मार्गने चलावे. दृष्टिरागीने जूठा उपदेश देइने माया गाली उन्मार्गने थिर करावे ते अति निविड मिथ्यामति कहीए. एम उपदेशमाला बोले छे. यतः–"जो जहवायं न कुणइ, मिच्छदिट्ठी तओ हु को अन्नो। वुड्ढेइ अ मिच्छत्तं,परस्स संकं जणेमाणो॥१॥" ॥७४॥

पामर जन घण नवि कहे, सहसा जूठ सशूकोरे ।
जूठ कहे मुनिवेष जे, ते परमारथ चूकोरे ॥ तुज० ॥७५॥

व्याख्या–धर्मना अजाण एवा अनार्य लोक पण सहसात्कारे जूठु बोले नहि. पामर के० गमार लोक ते पण हैयामां नास्तिक होय नहि. अने साधुवेश लइने जे जूठुं बोले तेहने परमार्थ मुंगो जाणवो. ते तो अणगोल्योज भलो. ॥७५॥

निर्दय हृदय छ कायमां, जे मुनिवेषे प्रवर्त्तेरे ।
गृही यति धर्मथी बाहेरा, ते निर्धन गति वर्त्तेरे ॥ तुज०॥७६॥

व्याख्या–जे छकायमांहे निर्दय हृदय थका मुनिवेषे करी प्रवर्ते छे. ते गृहीके०गृहस्थना अने यतिना धर्मथी बाहेरा छे. यतिधर्म विराधता नथी. अत्रेई रहस्य–जे माटे धुरथी वेष लीधो त्यांथी मांडी साधुधर्म पाम्याज नथी तो ते यतिधर्म क्यांथी विराधे ? अने वेष लेइ मागी खायछे ते माटे गृहस्थमां पण नहि. एटला माटे भिक्षुक इत्यर्थ. श्राद्धधर्म अप्रतिपत्तिथी नथी, ते वली निर्धन गतिय वर्त्ते. भीखारीना टोलामांहे गणाय. ॥७६॥

साधुभगति जिनपूजना, दानादिक शुभ कर्मरे।
श्रावक जन कह्यो अति भलो, नहि मुनिवेषे अधर्मरे ॥तुज०॥७७॥

व्याख्या–साधुनी भक्ति, श्रीजिनवरनी पूजा, अने दानादिक चार शुभ धर्म इहां आदि शब्दथी शील तप भावना लेइए. तेणे शुभकर्मी श्रावक जन अति भलो कह्यो, पण मुनिवेषे अधर्मी भलो कह्यो नहिं. यतः–" अरिहंतचेइआणं, सुसाहुपूआरओ दढायारो । सुस्सावओ वरतरं, न साहुवेसेण चूअधम्मो ॥१॥" ॥७७॥

केवल लिंगधारीतणो, जे व्यवहार अशुद्धोरे ।
आदरीए नवि सर्वथा, जाणी धर्म विरुद्धोरे ॥तुज० ॥७८॥

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

व्याख्या–एहवो जे केवलज्ञानादिक गुण विना लिंगधारीनो जे आचार ते अशुद्ध व्यवहार जाणपणानो होय तोए न प्रमाणीए, अने सर्वथा आदरीए नहिं तेने धर्म विरुद्ध जाणिए. ए ढालनो परमार्थ निश्चय योग व्यवहार ते शुद्ध निश्चय, प्रतिकूल ते अशुद्ध एवो विवेक राखवो. एम उपदेशमालामां कह्युं छे ते इहां कह्युं ॥ ७८ ॥ हवे त्रीजो संवेगपक्षीनो मार्ग देखाडवा आगळ ढाल कहे छे.

॥ ढाल सातमी ॥

आगे पूरव वार नवाणुं ए देशी ॥

जे मुनिवेष शके नवि छंडी, चरण करण गुणहीणाजी ।
ते पण मारग मांहे दाख्या, मुनिगुण पक्षे लीणाजी ॥
मृषावाद भवकारण जाणी, मारग शुद्ध प्ररुपेजी ।
वंदे नवि वंदावे मुनिने, आप थइ निज रुपेजी ॥ ७९ ॥

व्याख्या–जे चरण गुणे हीणा थइ लज्जादिके मुनिवेष नथी छांडी शकता, यतः– "जइ न तरसि धारेउं मूलगुणभरं सउत्तरगुणं च । मुत्तूण तो तिभूमी, सुसावगत्तं वरतरागं ॥१॥" इत्यादिक उपदेशमालायां० ग्रंथोपदेशना क्रमने साचवे तेपण मारगमांहे देखाड्या छे, पण जो मुनिगुणपक्षे लीणा होय, शुद्ध आचार भाखे. मृषावाद ते भव के० संसारनुं कारण जाणीने शुद्ध मारग प्ररूपे. मुनिने पोते भावे वंदे, पण आप निजरूप थइने वांदवा न दे. अत्र गाथा–"संवेगपक्खियाणं लक्खणमेयं समासओ भणियं । ओसन्नचरणकरणावि जेण कम्मं विसोहंती ॥१॥ शुद्धं सुसाहुधम्मं, कहेइ निंदेइ नियमायारं । सुतवस्सिआण पुरओ, हवइ अ सव्वोमरायणिओ ॥२॥ वंदइन वंदावइ किइकम्मं कुणइ कारवेनेय । अत्तट्ठीनवि दिक्खं देइ सुसाहूण बोहेउं ॥३॥ ओसन्ना अतट्ठि परमप्पाणं च हणइ दिक्खंतो । तं छुहइ दुग्गइए, अहिययरं वुड्डइ सयं च ॥४॥ उपदेशमालायामिति शोधी ॥ "जइ वि ण सक्कइ काउं, सम्मं जिणभासियं अणुट्ठाणं । तो सम्मं भासिज्जा, जह. भणियं खीणरागेहिं ॥१॥ ओसन्नो वि विहारे, कम्मं सोहेइ सुलहबोही अ । चरणं करणविशुद्धं, अववूहिंतो परूवेंतो ॥ २ ॥ शुद्धं सुसाहुधम्मं, कहमाणो ठवइ संयतइपरके (तइय पक्खंमि) अप्पाणं इअरो पुण गिहत्थधम्माउ चुकति ॥३॥" इति गच्छाचारे ॥ ८० ॥

मुनि गुण रागे पूरा शूरा, जे जे जयणा पालेजी ।
ते तेहथी शुभ भाव लहीने, कर्म आपणां टालेजी ॥

आप हीनता जे मुनि भाषे, मान सांकडे लोकेजी ।
ए दुर्द्धर व्रत एहनुं दाख्युं, जे नवि फूले फोकेजी ॥ ८० ॥

व्याख्या–ते संवेगपक्षी मुनि गुणरागे पूरा छतां मार्गे प्रासुक जल ग्रहणादिरुप जे जे जयणा पाळे, ते तेहथी शुभभाव इच्छा योगरूप लहीने पोतानां कर्म टाळे छे. "सम्यक्त्वोत्पत्तिस्थानवच्चारित्रोत्पत्तिस्थानस्यापि गुणश्रेण्यंतरकोटिकरणासंभवादिति भावः" ते संवेगपक्षी महापुरुष मानसांकडे लोकछते जे मुखे आपहीनता भाषे, ए एहनुं दुर्धरव्रत छे. फोके फूलतो नथी. उक्तंच–"आयरतरसंमाणं, सुदुकरं माणसंकडे लोए । संविग्गपक्खिअत्तं, ओसन्नेणं फुडं काउं ॥१॥" इति उपदेशमालायां. ॥ ८० ॥

प्रथम साधु बीजो वर श्रावक, त्रीजो संवेग पाखीजी ।
ए त्रणे शिव मारग कहीए, जिहां छे प्रवचन साखीजी ॥
शेष त्रण भव मारग कहीए, कुमत कदाग्रह भरियाजी ।
गृहि यति लिंग कुलिंगे लखीए, सकल दोषना दरियाजी ॥८१॥

व्याख्या–प्रथम के० पहेलो साधु, बीजो वर के० प्रधान श्रावक, अने त्रीजो संवेगपक्षी, ए त्रण शिवमार्ग के० मोक्षमार्ग कहीए. ज्यां प्रवचन उपदेशमाळादिक साखी छे. शेष के० थाकता रह्या जे त्रण, ते भव के० संसारमार्ग कहीए. जे कुमते अने कदाग्रहे भरेला छे. गृहस्थने लिंगे ब्राह्मणादिक, यति लिंगे निन्हवादिक, कुलिंगे तापसादिक लखीए के० जाणीए. ते केवा ? तोके सकल दोषना दरिया. गाथा–" सावज्जजोगपरिवज्जणाउ सव्वोत्तमो अ जइधम्मो ॥ बीओसावयधम्मो, तइओ संविग्गपक्खो य ॥ १ ॥ सेसा मिच्छादिट्ठी, गिहिलिंगकुलिंगदव्वलिंगेहिं जह तिण्णि य मोक्खपहा, संसारपहा तहा तिण्णि ॥ २ ॥" इति उपदेशमालायां. ॥ ८१ ॥

जे व्यवहार मुगति मारगमां, गुणठाणाने लेखेजी ।
अनुक्रमे गुणश्रेणिनुं चढवुं, तेहज जिनवर देखेजी ॥
जे पण द्रव्यक्रिया प्रतिपाळे, ते पण सन्मुख भावेजी ।
शुक्लबीजनी चंद्रकला जेम, पूर्ण भावमां आवेजी ॥ ८२ ॥

व्याख्या–जे व्यवहार मुक्तिमार्गमांहे गुणठाणाने लेखे वचनानुष्ठानरूप होय. अनुक्रमे गुणश्रेणिए वधतीए चढवुं तेहज श्रीजिनवर देखे छे. जे पण प्रीति भक्त्यादिरूपे द्रव्यक्रिया प्रते पाळे छे, ते पण शुक्लपक्षनी बीजनी चंद्रकला जेम होय तेम अनुक्रमे पूर्णभावमांहे आवे. एम अभ्यास क्रिया पण सफली तो निजोचित्ते ज्ञानी संवेग पक्षीनी क्रिया शुद्धमार्गरूप होय. तेहमां शुं कहेवुं ? ॥ ८२ ॥ तेहज देखाडे छे.

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

ते कारण लज्जादिकथी पण, शील धरे जे प्राणीजी ।
धन्य तेह कृतपुण्य कृतारथ, महानिसीथे वाणीजी ॥
ए व्यवहारने मन धारो, निश्चयनय मत दाख्युंजी ।
प्रथम अंगमां वितिगिच्छाए, भाव चरण नवि भाख्युंजी ॥८३॥

व्याख्या-तेह कारणे लज्जादिकथी पण जे नरनारी शील पाळे छे, तेह धन्य कृतपुन्य एवी वाणी महानिशीथमांहे छे.-"धन्ने णं से पुरिसे कयत्थे महाणुभावे, जे णं लोगलज्जाए वि सीलं पाळेइ । धन्ने णं सा कयत्था कयलक्खणा महाणुभावा, जे णं लोग लज्जाए वि सीलं पाळेइ ॥" इत्यादि वचनात् । ए महानिशीथमांहे कह्युं ते व्यवहारनये मनमां धारो. निश्चयनयनो मततो प्रथम अंगमांहेज कह्यो छे-भाख्यो छे जे विचिकित्सा के० मननी असमाधी ते छतां भावचरण के० भाव चारित्र भाख्युं नथी. ठेकाणे ठेकाणे नयना अर्थ प्रमाण छे. ॥ ८३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चोपाइनी देशी छे. ॥

अवर एक भाखे आचार, दया मात्र शुद्धज व्यवहार ।
जे बोले तेहज उत्थापे, शुद्ध करुं हुं मुख इम जपे ॥ ८४ ॥

व्याख्या-अवर के० बीजो कुमति एक वली भाखे के० कहे छे जे दया मात्र के० केवल दया तेज शुद्ध व्यवहार जाणवो. एवुं जे मुखे बोले छे तेहज उत्थापे छे. षट्काय भृत लोके कोण योगे दया थाय? वली हुं शुद्ध करुं छुं एम ते मुखे जपे छे. ॥ ८४ ॥

जिनपूजादिक शुभ व्यापार, ते माने आरम्भ अपार ।
नवि जाणे उतरतां नई, मुनिनें जीवदया क्यां गई ॥ ८५ ॥

व्याख्या-जिनपूजादिक जे शुभ के० भला व्यापार छे, तेहने कुमति अपार आरंभ करी माने छे. नवि जाणेजे एम मुनिने नई के० नदी उतरतां जीवदया क्यां गई? जयणाए उतरे तो "जत्थ जलं तत्थ वणं" इत्यादि रीते षट्कायनो वध संभवे. ॥ ८५ ॥

जो उतरतां मुनिने नदी, विधि जोगे नवि हिंसा वदी ।
तो विधि जोगे जिन पूजना, शिव कारण मत भूलो जना ॥८६॥

व्याख्या-हवे जो एम कहेशो के, मुनिने विधि योगे नदी उतरतां आज्ञा प्रमाणे आशय विशुद्धे भावथी हिंसा न वदी के० न कही.-"अज्झत्थ विसोहीए, जीवनिकाएहिं संथडे लोए। देसियमहिंसयत्तं, जिणेहिं तेल्लुकदंसोहि ॥१॥" इति वचनात्। वो विधियोगे जन पूजतां पण शिव कारण के० मोक्ष हेतु छे. ए वातमां जना के० हे लोको! मत भूलो इत्यर्थं ॥ ८६ ॥

विषयारंभतणो ज्यां त्याग, तेहथी लहिए भवजलत्याग।
जिनपूजामां शुभ भावथी, विषयारंभतणो भय नथी ॥८७॥

व्याख्या-जेह करणीमां विषयारंभनो त्याग होय, तेहथी भवजलनो ताग लहे. जिनपूजा मांहे वीतराग गुण प्रणिधानरूप शुभभावथी विषयारंभनो भय नथी ते माटे जिनपूजादिक सदारंभ कहीए. एमां असदारंभनिवृत्ति मोहोटो गुण छे. ॥ ८७ ॥

सामयिक प्रमुखे शुभ भाव, यद्यपि लहिए भवजल नाव।
तोपण जिनपूजाए सार, जिननो विनय कह्यो उपचार ॥८८॥

व्याख्या-यद्यपि श्रावकने सामायिक प्रमुखादिक अनुष्ठाने आरंभ निवृत्तिरूप शुभभाव लहेवो होय, तोपण जिनपूजाए जिननो उपचार के० लोकोपचार विनय पामे एम तो कह्यो ते ते विना केम होय? विनय ते अंतरंग तप छे. शंका धरीने दान देव पूजादिक सामायिक प्रमुखे मेली नाखवाने अवसरे सर्व यथोचित साचवतांज आज्ञा प्रमाण होय. ॥८८॥

आरंभादिक शंका धरी, जो जिनराज भक्ति परिहरी।
दान मान वंदन आदेश, तो तुज सबलो पडयो कलेश ॥८९॥

व्याख्या-आरंभादिकनी शंका धरीने जो जिनराजनी भक्ति पूजादिक परहरि तो तुजने दान, मान, वंदन, आदेश सर्व क्लेश पड्यो छे. त्यां पण वायुकायादिक विराधना अवर्जनीय छे. परिणाम प्रमाण करतां तो पूजामांहे निर्जराज छे. ॥ ८९ ॥

स्वरूपथी दीसे सावद्य, अनुबंधे पूजा निर्वद्य।
जे कारण निजगुण बहु मान, जे अवसरे वरते शुभ ध्यान ॥९०॥

व्याख्या-स्वरूपथकी पुष्पादि जीवारंभे करी सावद्य दीसे छे, पण अनुबंध जे उत्तरोत्तर भाववृद्धि तेणे पूजा क्रिया निर्वद्य छे. जेह कारणे ते पूजा अवसरे श्री जिनगुण बहुमानथी शुभध्याने वर्ते छे. मलीनारंभीने असदारंभनिवृत्ति अधिकारोचित भावे चित्त शुद्धि छे. ॥ ९० ॥

जिनवर पूजा देखो करी, भवियण भावे भवजल तरी।
छकायना रक्षक हो वली, एह भाव जाणे केवली ॥ ९१ ॥

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच . . .

व्याख्या—ए श्रीजिनवर देवनी पूजा अर्चा सेवना देखी करी बीजा ध्यानादिके भावे भव्यप्राणी भवजल तरीने छ काय रक्षक कहीए. एहवो भाव सम्यक्दृष्टिने पूजामांहे वर्ते छे, ते केवली जाणे छे. अतएव कायवचनमनोयोग प्रधानपणे समंतभद्रा, सर्व मंगला, सर्वसिद्धिफला—ए त्रिविध पूजा होय. तेहमां चरणज परमश्रावकने कहीए छेए. ॥९१॥

जल तरतां जल उपर यथा, मुनिने दया न होए वृथा।
पुष्पादिक उपर तिम जाण, पुष्पादिक पूजाने ठाण ॥९२॥

व्याख्या—यतिने कारणे जल तरतां जल जीव उपर दया परिणाम जेम फोक नथी, तेम पुष्पादिक पूजाने ठामे श्रावकने पुष्पादि जीव उपर दयाना परिणामनो अनुबंध भाजतो नथी एम जाणीए ॥ ९२ ॥

ते मुनिने नहीं किम पूजना, एम तुं शुं चिंते शुभ मना।
रोगीने औषध सम एह, निरोगी छे मुनिवर देह ॥ ९३ ॥

व्याख्या—जो निरवद्य जिनपूजा कही तो यति केम न करे? एम तुं शुभमना मुग्ध भावधको शुं चिंतवे छे? जेह माटे ए जिनपूजा रोगीने औषध समान छे. गृही तो मलीनारंभ रोगवंत छे, ते उपशमाववानुं ए मुख्य औषध छे. अने मुनिवर तो सर्व सावद्यनिवृत्त छे, ते रोगरहित रोगनुं औषध केम करे? ॥ ९३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

प्रथम गोवालातणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

भावस्तव मुनिने भलोजी, वेउ भेदे गृही धार।
त्रीजे अध्ययने कह्योजी, महानिशीथ मझार ॥
शुणो जिन तुझ विण कवण आधार ॥ ए आंकणी ॥९४॥

व्याख्या—मुनि—साधुजनने भावस्तवनादिक करवो ते भलो छे. "भावच्चणमुग्गविहारयाय दव्वच्चणं तु जिणपूआ। पढमा जईणं दुण्ह वि, गिहीण पढमच्चिय पसत्था ॥१॥" एवुं श्रीमहानिशीथसूत्रमध्ये त्रीजे अध्ययने कह्युं छे. सांभलो हे जिन श्री सीमंधर देव, तारा विना कोण आधार? ॥ ९४ ॥

वली तिहां फल दाखियुंजी, द्रव्यस्तवनुं रे सार।
स्वर्ग बारमुं गेहिनेजी, एम दानादिक चार ॥ शुणो० ॥९५॥

व्याख्या—वली तिहां महानिशीथमांहे द्रव्यस्तवनुं फल गेहिने के० गृहस्थने बारमुं स्वर्ग दाख्युं. एम दानादिक चारनुं पण तेहज फल कह्युं. तेमाटे द्रव्यस्तव अणुव्रतादिक तुल्यज गृहस्थधर्म जाणजो. यदुक्तं—"काऊण जिणायतणेहिं मंडियसयलमेइणीवट्टं। दाणाइचउक्केण वि सड्ढो गच्छिज्ज अचुयं ण परओ गोयमा" इत्यादि वचनात् ॥ ९५ ॥

छठ्ठे अंगे द्रौपदीजी, जिनप्रतिमा पूजेय।
सूरियाभपरे भावथीजी, एम जिनवर कहेय ॥ शुणो० ॥ ९६ ॥

व्याख्या—छठे अंगे श्री ज्ञाताधर्म कथाए अवदात प्रसिद्ध छे, जे द्रौपदीए श्री जिनप्रतिमा सूर्याभ देवतानी परे भावथी पूजी, एम श्री वीरपरमेश्वर कहे छे, कोइ कहेशे जे द्रौपदी श्राविका नथी. ते उपर कहे छे. ॥ ९६ ॥

नारद आव्ये नवि थइजी, उभी तेह सुजाण।
ते कारण ते श्राविकाजी, भाषे आल अजाण ॥ शुणो० ॥ ९७ ॥

व्याख्या—नारद आव्या तेहने असंयति जाणीने उभी न थइ. एह दृढ धर्मपणाने गुणे द्रौपदी शुद्ध श्राविका छे. ए कारण माटे ते श्राविकाज जाणवी. अजाण छे ते आल भाखे छे जे द्रौपदी श्राविका नथी. ॥ ९७ ॥

जिनप्रतिमा आगल कह्योजी, शक्रस्तव तेणे नार।
जाणे कुण विण श्राविकाजी, एह विध हृदय विचार ॥ शुणो० ॥ ९८ ॥

व्याख्या—हवे ते नारी द्रौपदीए जिनप्रतिमानी आगल शक्रस्तव के० नमोत्थुणं भावस्तवनाए कह्यो, तो हवे श्राविका विना एह जिनप्रतिमा पूजवानी विधि कोण जाणे ? माटे हृदयमां विचारी जुओ के जो ए मिथ्यादृष्टि होय तो नागादिक प्रतिमा आगले दंडवत करी पुत्रादिकनी याचना करे. ॥ ९८ ॥

पूजे जिनप्रतिमा प्रतेजी, सूरियाभ सुरराय।
वांची पुस्तक रत्ननांजी, लेइ धर्म व्यवसाय ॥ शुणो० ॥ ९९ ॥

व्याख्या—सूर्याभ सुरराज, जिनप्रतिमाने रत्ननां पुस्तक धर्मशास्त्ररूप छे ते वांची, धर्म व्यवसाय ग्रहीने पूजे. ॥ ९९ ॥

रायपसेणी सूत्रमांजी, मोहोटो एह प्रबंध।
एह वचन अणमानतांजी, करे करमनो बंध ॥ शुणो० ॥ १०० ॥

व्याख्या—रायपसेणी सूत्रमांहे एह मोहोटो प्रबंध कह्यो छे. एह वचन जे नथी मानता,

वच सुरेंद्रश्यामीकर
तस्यच

ते देवताने 'नो धम्मिआ' कहीने चीकणां कर्म बांधे छे. यतः—"पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लहबोहियत्ताए कम्मं पकरंति तंजहा—अरहंताणमवन्नं वदमाणे १ अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २ आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे ३ चाउवन्नसंघस्स अवन्नं वदमाणे ४ विविकतववंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे ५ ।" ॥ १०० ॥

विजय देव वक्तव्यताजी, जीवाभिगमेरे एम ।
जो थिति छे ए सूरतणीजी, तो जिनगुण थुति केम ॥ शुणो० ॥ १०१ ॥

व्याख्या—श्री जीवाभिगमसूत्र मध्ये विजयदेवनी वक्तव्यता पण ए रीतिएज छे. जो कहेशो के ए देवतानी स्थिति छे तो वारशाखा प्रमुख पूजे तेम जिन प्रतिमा पूजी जोइए. तो इहां जिनगुणनी स्तुति केम करे छे? ॥ १०१ ॥

सिद्धारथ राये कर्याजी, याग अनेक प्रकार ।
कल्पसूत्रे एम भाषियुंजी, ते जिनपूजा सार ॥ शुणो० ॥ १०२ ॥

व्याख्या—श्री कल्पसूत्रमध्ये 'जाएअ भाएअ दाएअ' ए अधिकारे श्रीसिद्धार्थ राजाए अनेक याग कराव्या एवुं कहुं छे, तिहां याग शब्दे जिनपूजा कहीए. श्री कल्पसूत्र मांहे एम भाष्युं छे ते माटे श्री जिनपूजा तेहज सार छे अने आत्माने उत्तम गति तथा उत्तम मतिनी आपनार छे. ॥ १०२ ॥

श्रमणोपासक ते कह्याजी, पहेला अंग मझार ।
याग अनेरा नवि करेजी, ते जाणो निरधार ॥ शुणो० ॥ १०३ ॥

व्याख्या—जे माटे श्री आचारांगसूत्रे द्वितीयश्रुतस्कंधमध्ये श्री महावीर देवनां माता-पिता श्री पार्श्वनाथ तीर्थनां शुद्ध श्रावक कह्यां छे, ते अनेरा पशु यागादिक न करे. ते माटे "यज, देवपूजा संगति करण दानेषु" ए धातु अर्थे वलि याग ते पूजा भगवंतनी ते निरधार के० निश्चये अर्थ विचारणाए भविक जीवने जाणवी. ॥ १०३ ॥

एम अनेक सूत्रे भण्युंजी, जिनपूजा गृहिकृत्य ।
जे नवि माने ते सहीजी, करशे बहु भव नृत्य ॥ शुणो० ॥ १०४ ॥

व्याख्या—एम ए कारणे अनेक सूत्र मांहे श्री जिनपूजा ते श्रावकनुं कृत्य के० करणी भण्युं के० कहुं छे. जे नहीं माने ते बहु भवचक्रवाल मध्ये नाटक करशे. ते माटे भविक जीव भवभीरु होय तेणे श्री जिनपूजा प्रमाण करवी. ॥ १०४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ जं सुरसंघा सा सुरसंघा । अथवा एणे पुर कंबल कोइ न लेसी–ए देशी ॥

अवर कहे पूजादिक ठामे, पुण्यबंध छे शुभ परिणामे ।
धर्म इहां नवि कोइ दीसे, जेम व्रत परिणामे मन हीसे ॥ १०५ ॥

व्याख्या–वली अपरमति कोइक एम कहे छे के पूजादिकने ठामे शुभ परिणामे पुण्यनो बंध छे, पण इहां धर्म कोइ दीसतो नथी. जेम व्रत परिणामे धर्म कहेतां चित्त हीसे छे, तेम पुष्पादिक आरंभ भणी पूजा धर्म कहेतां चित्त हीसतुं नथी. ॥ १०५ ॥

निश्चय धर्म न तेणे जाण्यो, जे शैलेशी अंत वखाण्यो ।
धर्म अधर्म तणो क्षयकारी, शिवसुख दे जे भव जल तारी ॥ १०६ ॥

व्याख्या–एम कहेछे ते मतीए निश्चय धर्म जाण्यो नथो. निश्चय धर्म जे शैलेशी अंत के० चउदमा गुणठाणाने छेहेडे वखाण्यो छे. ते धर्म केवो छे? अधर्मनो क्षयकारी अथवा वीजो अर्थ एम छे जे धर्म अधर्म ए बंनेनो क्षय करनारो छे, अने भवजल तारीने शिवसुख के० मोक्षसुख आपे एवो छे. उक्तंच धर्मसंग्रहण्यां–"सो उभयखयहेऊ सेलेसीचरमसमयभाविति"–निश्चय धर्म जाण्यो होय तो तेहने विरहे पंचमे छठे गुणठाणे सरखोज कहे पण पक्षपात न करे ॥ १०६ ॥

तस साधन तुं जे जे देखे, निज निज गुणठाणाने लेखे ।
तेह धरम व्यवहारे जाणो, कारज कारण एक प्रमाणो ॥ १०७ ॥

व्याख्या–ते शैलीशी चरम समय भावी निश्चय धर्म तुं परंपराए साधन जेहनुं निज निज के० पोतपोताने गुणठाणे देखे छे तेहने व्यवहारे जाण. "तंदुलाः वर्षति वर्षंति पर्जन्यः" इति वचनात्–कार्य कारण एक करी प्रमाण जे वस्तु स्पर्शी उपचार पण प्रमाण छे. तेहनो निषेध तो पूजामांहे न संभवे, तो केम कहेवुं? जे पूजामांहे पुण्य होय पण धर्म न होय. ए विचारी जोजो ॥ १०७ ॥

एवंभूत तणो मत भाख्यो, शुद्ध द्रव्य नय एम वलि दाख्यो ।
निज स्वभाव परणति ते धर्म, जे विभाव ते भावज कर्म ॥ १०८ ॥

व्याख्या–एवंभूत नयनी अपेक्षाए भाख्यो? शुद्ध द्रव्य नये वली एम देखाड्यो छे. जेटलो निज स्वभावनो आविर्भाव ते धर्म, अने जेटलो विभावनो विलास ते भावकर्म जाणवो. ॥ १०८ ॥

धर्म शुद्ध उपयोग स्वभावे, पुण्य पाप शुभ अशुभ विभावे ।
धर्म हेतु व्यवहारज धर्म, निज स्वभाव परणतिनो मर्म ॥ १०९ ॥

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

व्याख्या–अहीयां शुद्ध द्रव्य नय ते शुद्धाशुद्ध प्रकृति व्यवहाररूप लेवी. अथवा नैगम अति शुद्ध द्रव्यार्थिक प्रकृति संग्रह नय छे ते तो सर्व आत्माने धर्मस्वरूप माने छे. पूजा दयाजनित धर्म कहेतो नथी, ए नयांतर वादीए विचारवुं. ऋजुसूत्र नयने मते यावत् काल शुद्ध उपयोग स्वभाव, तावत् काल धर्म. यावत् काल शुभाशुभ विभाव परिणाम, तावत् काल पुन्य पाप. ते नय अनुसरी जिनपूजादिक धर्म हेतु जाणी व्यवहारे धर्म कहीए. जेह मांहे योग्यतापादक निजस्वभाव परिणाम आवे छे. ते माटे कारण कार्योपचारे करीए. ॥१०९॥

शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय, निज परिणामे न धर्म हणाय ।
यावत् योग क्रिया नहीं थंभी, तावत् जीव छे योगारंभी ॥ ११० ॥

व्याख्या–श्री जिनदेवनी पूजादिक मांहे यद्यपि शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय छे, तोपण निज के० पोताना परिणामे धर्म हणाय नहीं. यावत् के० ज्यहां लगे योगक्रिया थंभी नथी, तावत् के० त्यां लगे जीव योगारंभी कह्यो छे. ज्यां लगी ए जयी विजयी त्यां लगे ते भणी अंतक्रिया निषेधी छे. ॥ ११० ॥

मलिनारंभ करेजे किरिया, असदारंभ तजीने तरिया ।
विषय कषायादिकने त्यागे, धर्म मति रहिए शुभ मागे ॥ १११ ॥

व्याख्या–श्रावकतो मलिनारंभी छे. जे जे दान देवपूजादिक धर्मक्रिया करे छे ते असदारंभ छांडीने संसार समुद्रने तरे छे. ते भाव तो पूजामांहे अविरुद्ध छे. विषय कषायादिक प्रमुखनो त्याग थाय ते रीते धर्मबुद्धिए शुभ मार्गमांहे रहिए. ए उपदेश छे ते जाणवो. ॥ १११ ॥

स्वर्ग हेतु जो पुण्य कहीजे, तो सराग संयम पण लहीजे ।
बहुरागे जे जिनवर पूजे, तस मुनिनी परे पातक धूजे ॥ ११२ ॥

व्याख्या–स्वर्गनुं कारण ते माटे जो द्रव्यस्तव पुण्य कहीए तो सराग संयम पण केम लेइए? ते पण स्वर्गनुं कारण छे. बहुरागे के० घणीए भक्तिए करीने श्री जिनवरने जे पूजे तेहनां पातक मुनि के० सराग संयम तेहनी पेरे धूजे के० कंपे. ॥ ११२ ॥

भावस्तव एहथी पामीजे, द्रव्यस्तव ए तेणे कहीजे ॥
द्रव्य शब्द छे कारण वाची, भमे म भुलो कर्म निकाची ॥ ११३ ॥

व्याख्या–कोइ कहेशे के, द्रव्यस्तव कहेतां अप्रधानस्तव थाय. ते शंका टाळे छे. एह पूजादिकथी भावस्तव के० चारित्र पामे. ते कारणे द्रव्यस्तव के० द्रव्य शब्द अहीयां कारण वाची छे, अप्रधान वाची नथी. माटे कर्म निकाचीतें भूलो भमीश मां.

॥ ढाळ अगीयारमी ॥

॥ दान उलट धरी दीजीए-ए देशी. ॥

कुमति एम सकल दूरे करी, धारीए धर्मनी रीतरे ।
हारीए नवि प्रभु बल थकी, पामीए जगत्मां जीतरे ॥
स्वामी सीमंधर तुं जयो ॥ ए आंकणी ॥ ११४ ॥

व्याख्या-एम सर्वे कुमति दूर करी व्यवहार तल श्रद्धानेज शुद्धात्म भावनारूप धर्मनी रीतिए धरीए. अने प्रभुना नामना बल थकी हारीए नहि. वली जगत्मांहे जीत पामीए. हे श्रीमंधरस्वामी ! तमे जयवंता वर्त्तो. इत्यर्थ. ॥ ११४ ॥

भाव जाणे सकल जंतुना, भव थकी दासने राखरे ।
बोलिया बोल जे ते गणुं, सफल जो छे तुज साखरे ॥ स्वामी० ॥ ११५ ॥

व्याख्या-सकल के० सर्व प्राणी मात्रना भाव जे स्वरूप ते जाणे-देखे छे, ते माटे हे स्वामी, भव के० संसारना भय थकी दास के० सेवकने राख जे बोल बोल्या छे ते सफलपणे तो गणु, जो हे जगत्रयना नायक तारी साखे करी कहुं छुं तो. ॥ ११५ ॥

एक छे राग तुज उपरे, तेह मुज शिवतरु कंदरे ।
नवि गणुं तुज परे अवरने, जो मिले सुर नर वृंदरे ॥ स्वामी० ॥ ११६ ॥

व्याख्या-एक राग मुजने तुज उपरे छे, तेह मुजने मोक्षनोज कंद छे. तुजने मेलीने अवर कोइ देवने ध्याववानी माहरी मनसा नथी. जो देवतानां अने मनुष्यनां वृंद के० समूह मले तोपण तेने ध्यावुं नहीं ॥ ११६ ॥

तुज विना में बहु दुःख लह्यां, तुज मिल्ये ते केम होयरे ।
मेह विण मोर माचे नहीं, मेह देखी माचे सोयरे ॥ स्वामी० ॥ ११७ ॥

व्याख्या-हे प्रभु में ताहरा ध्यान विना बहु के० घणांज दुःख लह्यां, हवे तुजने मल्ये माहरां सर्व दुःख क्षय पाम्यां. मेघना आगमन विना जेम मोर महाले नहीं, मेह देखीने मोर नाचकला मांडे, तेम तुज दर्शने करी पाप नाठां ॥ ११७ ॥

मनथकी मिलन में तुज कियो, चरण तुज भेटवा सांइरे ।
कीजिए जतन जिन ए विना, अवर न वांछिए कांइरे ॥ स्वामी० ॥ ११८ ॥

वच सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच तथास

तुज वचन राग सुख आगले, नवि गणुं सुर नर शर्मरे ।
कोडी जो कपट कोइ दाखवे, नवि तजुं तोए तुज धर्मरे ॥ स्वामी० ॥११९॥
तुं मुज हृदयगिरिमां वसे, सिंह जो परम निरीहरे ।
कुमत मातंगना जुथथी, तो कशी प्रभु मुज बीहरे ॥ स्वामी० ॥१२०॥
कोडी छे दास प्रभु ताहरे, माहरे देव तुं एकरे ।
कीजिए सार सेवक तणी, ए तुज उचित विवेकरे ॥ स्वामी० ॥ १२१ ॥
भक्ति भावे इस्युं भाखीए, राखीए एह मनमांहीरे ।
दासनां भव दुःख वारिए, तारिए सो ग्रही बांहीरे ॥ स्वामी० ॥ १२२ ॥
बाल जेम तात आगल कहे, विनवुं हुं तेम तुजरे ।
उचित जाणो तेम आचरुं, नवि रह्यो तुज किस्युं गुजरे ॥ स्वामी० ॥ १२३ ॥
मुज होजो चित्त शुभ भावथी, भव भव ताहरी सेवरे ।
याचिए कोडी यतने करी, एह तुज आगले देवरे ॥ स्वामी० ॥ १२४ ॥

॥ कलश ॥

हरिगीत छंद.

इम सकल सुखकर दुरित भयहर, विमल लक्षण गुणधरो ।
प्रभु अजर अमर नरिंद वंदित, विनव्यो सीमंधरो ॥
निज नाद तर्जित मेघ गर्जित, धैर्य निर्जित मंदरो ।
श्री नयविजय बुध चरण सेवक, जशविजय बुध जय करो ॥ स्वामी० ॥१२५॥

इतिश्रीमन्महोपाध्यायगणिश्रीयशोविजयजी कृतं
सीमंधरजिनस्तवनं बालावबोधसहितं संपूर्णम्.

॥ श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरचरणपङ्कजेभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्री श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत वीरस्तुतिरूप ॥ हुंडिनुं स्तवन प्रारंभ.

॥ प्रथम अर्थकर्तानुं मंगलाचरण—अनुष्टुप्वृत्तम् ॥

प्रणम्य श्रीमहावीरं, शंकरं शिवसौख्यदं ।
धीरवीरं प्रकुर्वे हं, श्रीवीरस्तववार्त्तिकं ॥ १ ॥

ए स्तवनमां प्राये—घणुंकरीने पद आघां पाछां होय, तेनो अन्वय करीने अर्थ करवो. ते अर्थ अमे अन्वय करीने लखशुं. ते अन्वय पद आघां पाछां होय, ते पोतानी मेले जोड़ लेजो. यद्यपि श्रीमद्यशोविजय उपाध्यायजीएज आलावा लखवा रूप वार्तिक तो कर्युं छे, पण सर्व पदनो अर्थ सर्वनी नजरमां न आवे, ते माटे पोताने संभारवा सारुं तथा जे कोइ माराथी अल्प बुद्धिवाला छे, तेओना उपकारने अर्थे ए अर्थ लखुं छुं. त्यां प्रथम गाथामां मंगलाचरण, प्रयोजन, संबंध अने अभिधेय देखाडे छे.

॥ ढाल १ ली ॥

॥ भविका सिद्धचक्रपद वंदो—ए देशी ॥

प्रणमी श्रीगुरुना पयपंकज, थुणशुं वीर जिणंद ।
ठवण निक्षेप प्रमाण पंचांगी, परखी लहुं आणंदरे ॥
जिनजी तुज आणा शिर वहिए, तुज शासन नय शुद्ध परूपण ।
गुणथी शिवसुख लहिएरे ॥ जि० ॥ १ ॥

अर्थ—हवे प्रणमी कहेतां प्रणाम करीने, श्री गुरुके० तत्वने जे कहे तेने गुरु कहीए. ते गुरु श्रीके० लक्ष्मी ज्ञानादिक गुणनी तद्वत् जे गुरु तेना पयपंकज के० चरणकमल ते गुरुपदपंकजने नमीने हवे उत्तरक्रिया कहे छे. थुणशुं के० स्तवीशुं. वीरजिणंद के० वीर-नामा चोवीशमा परमेश्वर. जिन के० जेणे राग द्वेष जीत्या छे, एटले सामान्य केवली तेमां इंद्र सरखा एटले तीर्थंकर तेमने स्तवीशुं. तेपण श्री रीते स्तवीशुं ? ते कहे छे. पंचांगी प्रमाण ठवण निक्षेप परखीने आनंद लहुं, इत्यन्वय. ५ अंगी जे एक सूत्र, बीजी निर्युक्ति, त्रीजी

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

भाष्य, चोथी टीका अने पांचमी चूर्णि ए पंचांगी प्रमाणे थापना निक्षेपो परखीने आनंद पामु. इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

हवे भावार्थ–एमां एम कह्युं जे पंचांगी मानवाने योग्य छे. प्रतिमा पण मानवाने योग्य छे. ते सर्व वात आगल कहेशे, एटले ए गाथामां प्रथम पदे मंगलाचरण कर्युं. १ तथा पंचांगी प्रमाण ठवण निक्षेप परखी, ए पदे अभिधेय देखाड्युं. जे माटे वीरस्तवीशुं ए पण अभिधेय, तथा पंचांगी स्थापन करवुं तथा स्थापना निक्षेपो स्थापवो ए पण अभिधेय जाणवुं. २ तथा पंचांगी प्रमाणे ए पदमां संबंध देखाड्यो, जे माटे पंचांगीना परुपक परंपराए सर्वज्ञ छे, तेवारे गुरुपर्व क्रम संबंध आव्योज. ३ तथा आनंद पामुं, ए पदे करी प्रयोजन देखाड्युं. तेमां कर्ताए ग्रंथ कर्यो, एटले परोपकार थयो, तरत आनंद उपन्यो, ए अनंतर प्रयोजन. आनंद जे मोक्ष ते पामु ए परंपर प्रयोजन. तथा श्रोताने अर्थ ज्ञान ते अनंतर प्रयोजन अने सिद्धि वरवी ए परंपर प्रयोजन ॥ ४ ॥ ए रीते चार वानां प्रथम गाथामां देखाड्यां. हे जिनजी तुज आणा शिर वहिए के० तमारी आज्ञा मस्तके धरीए. एटले ए पदमां एम देखाड्युं जे आज्ञा तेज प्रमाण छे, पण कुयुक्ति करवी ते प्रमाण नथी. जे माटे ते ढुंढक लोको एम कहे छे जे 'दयाए धर्म, किंवा हिंसाए धर्म.' एवुं भोला लोकोने कहीने समजावे छे. तेओने पाछो उत्तर वालवा ए पद कह्युं. यथा एम कहे तेने पाछुं पूछिए जे 'दयाए धर्म, किंवा आज्ञाए धर्म' इति. एटला माटे हे प्रभुजी, तुज शासन के० तमारी आज्ञा, तेहनी नय के० नीति तेने शुद्ध परुपण गुणथी के० यथार्थ परुपवारूप गुण थकी शिवसुख लहिए के० मोक्ष सुख पामीए. इति प्रथम गाथार्थ ॥१॥

हवे ते थापना निक्षेपो देखाडवा माटे सिद्धांतनी साख देखाडे छे. ए स्तवनमां ढुंढीआ बत्रीश सूत्र माने छे. यथा अगीआर अंग, बार उपांग, एक नंदी, एक अनुयोगद्वार, एक दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, निसीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, अने आवश्यक ए बत्रीश. तेमांनीज साख देखाडशे. इति.

श्री अनुयोग दुवारे भाख्या, चार निक्षेपा सार ।
चार सत्य दश सत्या भाख्या, ठाणांगे निरधाररे ॥ जिनजी ॥ तु०॥२॥

अर्थ–श्री अनुयोगद्वारने विषे भाख्या के० कह्या छे. चार निखेपा सार के० प्रधानपणे, एटले वधता निक्षेपा न करी शके तोपण चारनी तो प्रधानता छे. अवश्य करवा एवुं देखाडवा सारुं ए पद छे. यतः–"जत्थ य जं जाणिज्जा निखेवं निखिवे निरवसेसं जत्थ वि य न जाणिज्जा चउक्कयं निखिवे तत्थ ॥ १ ॥" इति अनुयोगद्वारे ॥ अर्थ—अधिका निक्षेपा न जाणिये, तोपण चार निक्षेपा सर्व ठामे करवा. वळी चार प्रकारनी सत्यभाषा चोथे ठाणे तथा दश प्रकारनी सत्यभाषा दशमे ठाणे, ठाणांगे निरधार के० श्रीठाणांग सूत्रने विषे निश्चयपणे कही छे. यतः ॥ चउव्विहेसच्चे पन्नत्ते नामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे भाव-

सच्चे ॥"-ए चोथे ठाणे तथा-"दसविहे सच्चे पन्नते तंजहा-जणवयसम्मयठवणा, नामे रूवे पडुच्चसच्चे य। ववहारभावजोए, दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥" इति ठाणांग मध्ये दशमे ठाणे छे. एनो अर्थ-कोंकणदेश प्रमुखनेविषे पयने पिच्च कहे छे. पाणीने उदक कहे छे. इत्यादिक जनपद सत्य कहीए. १ कुमुद कुवलयादिक पण पंकथी उपजे छे पण पंकज ते अरविंदनेज सम्मत छे. ए सम्मतसत्य. २ तथा लेप्यादिकनेविषे अरिहंत प्रतिमा, एकका-दिक अंकविन्यास, कार्षापणादिकनेविषे मुद्राविन्यासादिक, ते सर्व थापना सत्य. ३ तथा कुलनी वृद्धि न करतो होय तोपण कुलवर्द्धन नाम होय ते नामसत्य. ४ व्रतना गुण न होय तो लिंग मात्रे पण व्रती कहीए ते रूपसत्य. ५ तथा अनामिकांगुलि कनिष्ठाने आ-श्रीने दीर्घ कहीए अने मध्यमाश्रीने ह्रस्व कहीए, ए प्रतीत्य सत्य. ६ पर्वत उपर तृणादिक वलतां छतां पर्वत वले छे, पाणी झमे छे तोपण कहिशुं के घडो झमे छे, अने पेट छतां पण कन्याने अनुदरा कहे छे, इत्यादिक सर्व व्यवहार सत्य छे. ७ वर्णादिक जे भाव ते भावसत्य. यथा वगलां उजलां छे. यद्यपि वगलांमां पांचे वर्ण छे, तोपण शुक्लवर्ण उत्कृष्ट छे माटे उजलां वगलां एम कहे छे. एमज भमरो कालो, इत्यादिक भावसत्य जाणवुं. ८ तथा दंडने जोगे जे दंडी कहीए, इत्यादिक योगसत्य कहीए. ९ अने समुद्र सरखुं तलाव छे. इत्यादिक उपमासत्य. १० ए दश सत्यमां स्थापना सत्य आव्युं, तथा पूर्वोक्त चार सत्यमां पण स्थापना सत्य आव्युं, ते माटे स्थापना ते सत्य छे, एम श्री ठाणांगनी साखे देखाडशुं. ए गाथा पन्नवणा सूत्रे भाषा पदमां पण छे. इति द्वितीय गाथार्थ. ॥ २ ॥

एतो सामान्य प्रकारे थापना पण साची छे, एम कह्युं. हवे कहे छे जे वीतराग तो चारे निक्षेपाए साचा छे. ते देखाडे छे.

जास ध्यान किरियामांहि आवे, तेह सत्य करी जाणुं ॥
श्री आवश्यक सूत्र प्रमाणे, विगते तेह वखाणुंरे ॥ जि० ॥ तु० ३ ॥

अर्थ—जास ध्यान के० जे वीतरागनुं ध्यान, किरियामां आवे के० क्रिया जे आव-श्यकनी क्रिया तेमां आवे, तेह सत्य करी जाणुं के० साचुं करी मानुं, जे माटे आवश्य-कनी करणी ते चारित्रियानी छे, माटे ते जे क्रियामां बोले ते साचुज बोले तो चारित्र रहे अन्यथा चारित्र विराधे. भाषासत्य ते साचुं बोलतां थाय छे ते विचारी जोजो. हवे श्री आवश्यकसूत्र प्रमाणे विगते के० भिन्न भिन्न पणे, तेह के०ते नामादिक सत्य वखाणुं छुं. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

चोवीशत्थयमांहि निक्षेपा, नाम द्रव्य दोय भावुं ॥
काउस्सग्ग आलावे ठवणा, भाव ते सघले लावुंरे ॥ जि० ॥ तु०४ ॥

अर्थ-चोवीशत्थय के० चोवीश जिननी स्तवना एटले लोगस्स उज्जोगरे ए पाठ उ-च्चारतां ऋषभादिक चोवीश नाम प्रगटपणे कहे छे, ते नामनिक्षेपो जाणवो. तथा द्रव्यनि-

वच सुरेंद्रश्रामी ..
तस्यच

क्षेपो "जे अइआ सिद्धा" ए गाथामां छे, पण ए गाथा कुमति माने नहीं, तेने चोवीशत्था मांहेज देखाडे छे. नामद्रव्य के० नामनिक्षेपो अने द्रव्यनिक्षेपो. दोय भावुं के० ए बन्ने निक्षेपा भावुं छुं. ते द्रव्यनिक्षेपो एम जे ऋषभादिक तिर्थंकरने वारे जे प्रभु विचरता ते भावतीर्थंकर जाणवा, पण बीजा त्रेवीश तीर्थंकर रह्या ते चोवीशत्थामां द्रव्यनिक्षेपे वंदाणा. यतः-"भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके। तत् द्रव्यं तत्वज्ञैः सचेतनाचेतनं कथितम् ॥१॥" इति वचनात् ॥ तथा वळी हमणां जे चोवीशत्थो कहेछे तेने "अरिहंते कित्तइसं" अथवा "तित्थयरा मे पसीयंतु" इत्यादिक पाठ कहेतां मृषावाद लागेछे, जे माटे हमणां तो चोवीशे भावनिक्षेपे सिद्ध छे ते माटे पूर्व भावनो उच्चार लेइ द्रव्यनिक्षेपे वांदतांज सत्य थाय ते विचारी जोजो, एटले चोवीसत्थामांहे नाम अने द्रव्य ए बे निक्षेपा फलाव्या. हवे थापनानिक्षेपो कहेछे. काउस्सग्ग आलावेके० काउस्सग्ग करवानो आलावो जे "अरिहंत चेईआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए॥" इत्यादिक पाठ उच्चारतां ठवणाके० थापनानिक्षेपो भावुंछुं. अर्थ-अरिहंतनी प्रतिमाने वंदन पूजनथी जे फल होय, ते फलने अर्थे काउस्सग्ग के०काउस्सग्ग करुंछुं. अहीयां ढुंढीआ एम कहेछे जे अमे ए आलावो मानता नथी. तेनो उत्तर जे, आवश्यक सूत्रमांनो आलावो खंडित थाय तो पांचमुं काउस्सग्ग नामे आवश्यक केम थाय? तथा आवश्यकसूत्र आज छे, तेमां ए पाठ छे ते केम ओलवाए? अने जे ओलवे तेने माथे आज्ञाभंगरूप वज्रदंडनो घात पडे. तथा आ स्तवनने अनुमाने जाणीए छैए, जे पूर्वे ढुंढीआ आ आलावो मानता दीसेछे, पण हमणांज ना कहेछे. बाकी जो पूर्वे न मानता होय तो तेनी साख आ स्तवनमांज केम होय? इतिभाव. एम त्रीजा निक्षेपानुं ध्यान क्रियामांहे आव्युं, अने भाव ते सघले लावुंके०भावनिक्षेपो तीर्थंकरनो जे केवल ज्ञानादि गुणरूप ते तो ध्यान द्वाराए सर्वत्र क्रियासमाप्ति यावत् हृदयमांहे लावुंछुं. इति चतुर्थ गाथार्थ ॥ ४ ॥

एवं चार निक्षेपा आवश्यक क्रियामांहे देखाडया. हवे केटलाएक ढुंढीआ एम कहे छे जे-अमे आवश्यक सूत्र मानीए छैए पण ते आ तमे कहो छो ते आवश्यक छे नहीं. तेने उत्तर देछे जे तमोने कोणे कह्युं के ते आवश्यक नहीं? ते विषेनो तो केवली विना निरधार थाय नहीं. तेवारे ढुंढीआओ कहे के-तमने कोणे कह्युं जे आवश्यक तेनुं तेज छे? तेनो उत्तर जे अमे तो आगम प्रमाणे मान्युं. तेज आगली गाथाए देखाडे छे.

पुस्तक लिखित सकल जिम आगम, तिम आवश्यक एह।
भगवई नंदी साखे सम्मत, तेहमां नहीं संदेहरे ॥ जि० ॥ तु० ५॥

अर्थ-पुस्तकलिखित जेम समस्त आगम के० सिद्धांत छे. तेम ए आवश्यक पण पुस्तकलिखित छे. तथा भगवई साखे के०श्रीभगवतीसूत्रमांहे आवश्यकनी भलामण छे. यथा-"जहा आवस्सए" इति तथा वली नंदीसाखेके० नंदी सूत्र मध्ये पण सर्व सूत्रनां नाम कह्यां,

त्यां उत्कालिक सूत्रमां आवश्यकनुं नाम प्रगट पणे कह्युं छे. ते माटे अमे मानीए छैए तेम अवश्य तमारे पण मानवुं पडशे. नहीं मानो तो भगवती तथा नंदी ए बे सूत्र विराधशो. ते माटे सम्मतके० ए बे सूत्रनी साखे मानवा योग्य छे, तेमां कांइ पण संदेह नथी. इति गाथार्थ ॥ ५ ॥ हवे ढुंढक कहेछे के—आवश्यक सूत्र तो घरघरनुं जुदु छे एक नथी. तेने शिक्षा कहेछे.

सूत्र आवश्यक जे घरघरनुं, कहेशे ते अज्ञानी ।
पुस्तक अरथ परंपर आव्युं, माने तेहज ज्ञानीरे ॥ जि० ॥ तु० ६ ॥

अर्थ—सूत्र आवश्यक जे घरघरनुं के० भिन्न भिन्न छे, एम जे कहेशे तेतो अज्ञानी अथवा मूर्ख जाणवा. शामाटे मूर्ख ? ते कहेछे. पुस्तकके० पानामां लख्युं छे ते ना केम कहेवाय ? जेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमध्ये कह्युं छे के—"नो आगमओ दव्वावस्सयं जं पत्तयपोत्थयलिहियं " इति । तथा अर्थ पण छ आवश्यकरूप चाल्यो आवेछे. एमां त्रण प्रकारना आगम देखाड्या. यतः—"सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे ॥" इति । तथा परंपर आव्युं के० परंपराए चाल्युं आव्युं छे, ते पण मानवुं. एमां पण त्रण प्रकारनां आगम देखाड्यां छे. यत—"अत्तागमे अनंतरागमे परंपरागमे" इति । तेथी जे आवश्यक न माने तेणे एटला आलावा दूहव्या माटे तेने मूर्ख कहीए. ते माटे माने तेहज ज्ञानीके० जे ए वात माने तेज ज्ञानी पुरुष छे, एम कहीए. इति षष्ठ गाथार्थ ॥ ६ ॥

वली जे एकलो भावनिक्षेपो वांदवा योग्य मानेछे, तेने स्थापना तथा द्रव्य निक्षेपो वांदवा योग्य छे एम बतावे छे.

बंभीलिपि श्रीगणधरदेवे, प्रणमी भगवई आदे ।
ज्ञानतणी ते ठवणा अथवा, द्रव्यश्रुत अविवादेरे ॥ जि० ॥ तु० ९ ॥

अर्थ—भगवई आदे के० श्री भगवतीसूत्रने धुरे श्री गणधरदेवे के० सुधर्मा स्वामीए बंभीलिवि के० ब्राह्मीलिविने प्रणमी के० प्रणाम कर्यो छे. "नमो बंभीए लिवीए" ए सूत्रे करीने, अने ब्राह्मीलिपि के० अक्षर विन्यास कहीए. ए अर्थ आगली गाथाए स्पष्ट थशे. ते अक्षरविन्यास तो ज्ञाननी स्थापना छे. यतः अनुयोगद्वारे—"आवस्सए त्ति ठवणा ठविज्जइ." तथा वली "सब्भावठवणा असब्भावठवणा" ए बे भेद पण अनुयोगद्वारमध्येज कह्या छे. ते माटे तेके० ते ब्राह्मीलिपि ज्ञानतणी ठवणाके० ज्ञाननी थापना जाणवी. अथवाके० पक्षांतरे जो थापना न गणीए अने ग्रंथरूप ब्राह्मीलिपि लेइए तो द्रव्यश्रुत के० द्रव्यनिक्षेपे द्रव्यश्रुत कहिये. अविवादेके० विवादरहितपणे एटले एमां कोइ झघडो नथी. यतः—"द्रव्वसुअं जं पत्तयपोत्थयलिहियं ॥" इत्यादि अनुयोगद्वार वचनथी जाणवुं. एटले ए भाव जे "नमो बंभीए लिवीए ॥" ए सूत्रप्रमाणे ज्ञाननो स्थापनानिक्षेपो अथवा द्रव्यनिक्षेपो साधुने

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

वांदवा योग्य छे तो श्रीतीर्थंकर देवना स्थापना तथा द्रव्य ए बे निक्षेपा वांदवा योग्य केम न थाय ? इति भावार्थ ॥ इति सप्तम गाथार्थ. ॥ ७ ॥

आ ठेकाणे कोइ ब्राह्मीलिपिनो अर्थ मरडेछे. तेने शिखामण दीएछे.

भेद अढारज बंभीलिपिना, समवायांगे दीठा।

शुद्ध अरथ मरडी भव बहुला, भमशे कुमति धीठारे ॥ जि० ॥ तु० ८ ॥

अर्थ—भेद अढारज बंभीलिपिनाके० ब्राह्मीलिपिना अढार भेद, श्रीसमवायांग सूत्रमां दीठा के० देखाड्या छे. यथा—"बंभीएणं लिवीए अढारविहे लिविविहाणे पन्नत्ते" इत्यादि. ब्राह्मीलिपि अढार प्रकारनी छे. ते ब्राह्मीलिपि ने अक्षरन्यास रूप कहेछे. ते ब्राह्मीलिपिने पंचमांगने धुरे श्रीगणधर देव प्रणम्या, ते वांको अर्थ केम थाय ? तेमाटे ए शुद्ध अर्थ मरडीने कुमतिके० कुबुद्धिना धणी धीठाके० वांको अर्थ करवाने धैर्यवंत, गणधर तथा तीर्थंकरनी पण बीक नही धरतां, भवबहुला भमशे के० घणो संसार रझळशे. ते माटे तमे संसार दीर्घथी शुं नथी बीहीता ? इति भावार्थ. इति अष्टम गाथार्थ ॥ ८ ॥

हवे पूर्वे कह्युं जे कुमतिओ अर्थ मरडे छे. ते शुं मरडे छे ? ते कहेछे.

बंभीलिपि जो तेहनो करता, तो लेखक पण आवे।

गुरुआणा विण अरथ करे जे, तेहनो बोल न भावेरे ॥ जि० ॥ तु० ९ ॥

अर्थ—बंभीलिपि के० ब्राह्मीलिपि तेना करनारा ऋषभ परमात्मा तेने गणधर नम्या. जे माटे ब्राह्मीलिपि श्री ऋषभदेवजीए बतावी ते माटे एम आशंका परनी करीने उत्तर देछे. बंभीलिपि के० पालाने दृष्टांते ब्राह्मीलिपिना कर्ता श्रीऋषभदेव लेइए. अहींयां ए भाव छे. सूत्रधारने, पालो घडवा काष्ट लेवा जतो देखी कोइके पूछ्युं के क्यां जशो ? तेवारे अशुद्ध नैगमनयनी अपेक्षाए सुतार बोल्यो जे पालो लेवा जइशुं. तेम अहींयां पण ऋषभदेवजीनो अर्थ करे छे. इति भाव. तेहने उत्तर—तो लेखक पण आवे के० तो लहिओ—पुस्तकनो लखनारो पण आवशे. इहां ए भाव जे नैगमनये ऋषभदेव लीधा पण अशुद्ध नैगमनी अपेक्षा छे ते थकी ढुंकडो ते शुद्ध नैगम कहीए. तेम इहां ढुंकडो तो ब्राह्मीलिपिनो कर्ता लहिओ ठरे. जेम कोरीने अने छोलीने चोखो कर्यो एवो जे पालो तेने पालो कहे ते शुद्धनैगम कहेवाय. तेम अहींयां पण जाणवुं. ए नयनी अपेक्षाए ढुंकडो ते शुद्ध अने वेगळो ते अशुद्ध इति भाव. तेवारे लहिओ वांदवा योग्य तमारे थयो. १ तथा वली केहेशो के ब्राह्मीनो आदि कर्ता लेइशुं, तो ते मिथ्या छे. जे माटे ए "बंभीए लिविए" ए पदनो अर्थ नहिं, ए तो उपचार करीने अर्थ खेंची लेइए तेवारे आवे ते तो निःप्रयोजन उपचार करीए तो सूत्र दोष थाय. २ तथा वली "नमो बंभीए लिवीए" ए पद भ्रांतिनुं करणहार कह्युं. तेवारे "नमो सिप्पसयस्स" एवुं पण भ्रांति रहित पद थाय. ते कां न कह्युं? जे समवायांगसूत्र अढार लिपिनुं ते साथे विरोध पडेज नहीं ३ तथा वली "नमो अरिहंताणं"

ए पदमां शुं ऋषभदेव आव्या नहीं? जे वली "वंभीए लिवीए" ए पद कहीने अलगा देखाड्या. ४ तथा वली वंभीनो कर्ता तो 'लिवीए' ए पद कहेवानुं शुं काम? तथा एम कहेशो के. ब्राह्मीलिपिनी क्रिया एमणेज वतावी ते क्रियागुणे वांदवा योग्य, तेनो उत्तर के, ऋषभदेव वांद्या तेवारे ब्राह्मीलिपितो पहेलां वांदीज. जे माटे क्रियानो कर्तावंद्य तो क्रियावंद्यज थइ. इत्यादि घणा उत्तर छे माटे गुरु आणा विण के० गुरु जे परमगुरु श्री तीर्थंकर तेनी आज्ञा विना जे अर्थ करे के० खोटो अर्थ करे तेनो वोल आज्ञा वाह्यपणा माटे न भावे के० भावतो नथी इति भाव. अथवा गुरु के० शुद्ध परंपराए आव्या जे गुरु तेनी आणा. इति. हवे ब्राह्मीलिपि द्रव्यश्रुत छे, माटे वंदना करवा योग्य एवुं कह्युं. ते उपर दृष्टांत वतावे छे.

जिनवाणी पण द्रव्यश्रुत छे, नंदीसूत्रने लेखे।
जिम ते तिम वंभीलिपि नमिये, भाव ते द्रव्य विशेषरे ॥ जि० ॥ तु० १० ॥

अर्थ–जिनवाणी पण नंदीसूत्रने लेखे द्रव्यश्रुत छे. ते के० तेने जेम नमीए छैए तेम वंभीलिपि के० ब्राह्मीलिपिने पण नमीए. इति पदत्रय अक्षरार्थ. भावार्थ तो ए छे जे श्री भगवतीने धुरे "नमो सुअदेवयाए" ए सूत्रे जिनवाणीने गणधरे नमस्कार कर्यो. अने जिनवाणी तो नंदीसूत्रमां द्रव्यश्रुत कही वोलावी छे. तथा च तत्पाठ–"केवलनाणेणऽत्थे णाउ जे तत्थपण्णवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो वइजोग सुअं हवइ सेसं ॥१॥" अर्थ–केवल ज्ञाने करी अर्थ जे पदार्थो तेने जाणीने जे ज्यां प्रज्ञापना योग्य–प्ररूपवा योग्य ते त्यां तीर्थंकरो भाषे एटले जे अभिलाप्य होय ते वोले, अने अनभिलाप्य होय ते जाणे छे, पण वचन गोचर न आवे तेथी अनभिलाप्य वचने कहेवाता नथी, ते परमात्मानुं वचन योग शेषश्रुत थाय एटले द्रव्यश्रुत थाय. इति. एटले ए भावार्थ–तीर्थंकरनो वचनयोग ते शेषश्रुत के० द्रव्यश्रुत जाणवो एवो अर्थ छे. एवुं जाणी द्रव्यश्रुत जिनवाणी वंदीए तो द्रव्यश्रुत वंभीलिपि केम न वांदीए? ए वेमां फेर नथी, तेनो हेतु कहे छे. भाव के० आपणो भाव ते द्रव्य विशेष के० द्रव्यनो विशेष करे. इति अक्षरार्थ. भावार्थ तो ए छे के द्रव्यपणे तो सर्व वस्तु सरखी छे. जेम ब्राह्मीलिपि अक्षररूपे द्रव्य छे, तेम जिनवाणी छे ते भाषावर्गणाना पुद्गलरूप द्रव्य छे. ए वेमां तो कांइ विशेष नथी. पण आपणा ज्ञानादिक भावना साधनपणे प्रणम्या थकी ते द्रव्य विशेष पाम्यो कहीये. ते माटे ए वांदवा योग्य छे एम सद्दहवुं. इति दशम गाथार्थ ॥ १० ॥

कोइ कहेशे के अजीवरूप थापनाथी आपणने शो गुण थाय? तेने कहीए छैए.

जेम अजीव संयमनुं साधन, ज्ञानादिकनुं तेम।
शुद्धभाव आरोपे विधिसुं, तेहने सघले खेमरे ॥ जि० ॥ तु० ११ ॥

वच सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच ८

अर्थ–जेम अजीव संयमनुं साधन के० जेम वस्त्र पात्रादिक अजीव छे, पण ते संयम के०चारित्रनां साधन छे. एथी चारित्र सधाय छे. ज्ञानादिकनुं तेम के० तेमज स्थापना जे ब्राह्मीलिपि तथा जिनप्रतिमा प्रमुख, ज्ञानने तथा दर्शन शुद्धि प्रमुखनो हेतु थाय, ते माटे शुद्धभाव आरोपे विधिसुं के० विधिपूर्वक पोतानो जे शुभाध्यवसाय तेनुं आरोपण सामी वस्तुने विषे करे, तेहने के० ते प्राणीने सघले खेम के० सर्व ठेकाणे मंगलीक छे. इति भाव इति गाथार्थ ॥ ११ ॥

ते उपर सूत्र लखीए छैए–"तं महाफलं खलु अरहंताणं भगवंताणं नामगोयमस्स वि सवणयाए ॥" अहींयां ए आलावे नामनिक्षेप ते महाफलदायक कह्यो. तथा–"धंनाणं तें गामागरनगरखेडकव्वडमंडवदोणमुहपट्टणासमसंवाहसन्निवेसा जत्थ अरिहंता भगवंता विहरंति" ए आलावामां ग्रामादिकने धन्य कह्यां. ते पण श्री अरिहंतनीज प्रशंसा थइ. तथा वली श्रीश्रमणसूत्र प्रमुख घणा सूत्रोमां तेत्रीश आशातना मध्ये गुरु संबंधी पाटी पीठ संथारे पग संघटतां आशातना लागे. ए सर्व वस्तुओ अजीव छे. तोपण पोताने विशेषे आराधवा योग्य कहीओ, तेतो तुं पण मानेछे, तो पछी जिनप्रतिमा ब्राह्मीलिपि प्रमुख अजीव केम नथी मानतो? तथा वली श्री अंतगडदशांगमां सुलसाना अधिकारे हरिणेगमेषीनी प्रतिमा आराधने ते हरिणेगमेषी आराध्य हतो, तेथी ते हरिणेगमीषी संतुष्ट थयो, तेम वीतरागनी प्रतिमा आराधने वीतराग आराध्य केम न थाय? थायज. अहींयां कोइ कहेशे के, जेम हरिणेगमेषी संतुष्ट थयो तेम श्री वीतराग पण ए दृष्टांते तो संतुष्ट थवा जोइशे. तेनो उत्तर जे दृष्टांत होय ते तो एक देशे होय, ते माटे अहींयां आराध्यरूप देश लीधो छे एटले ए भाव जे वीतराग छे माटे कांइ संतुष्ट न थाय पण आराध्य तो थायज. एवुं सम्यक्दृष्टिए विचारवुं. वली भावजिन पण आराध्यफल देछे. तेमां पण बे वात छे. जे भावजिनने देखे छे ते पण पुद्गलपिंड आकार रूप देखे छे, ते तो थापना छे, ए पण उंडो आलोच करी विचारजो. बीजुं भावजिन छता होय त्यांपण पोतानो भाव निर्मल होय तो फल आपे. जो पोताना भाव विना फल आपे तो अभव्य अने दूरभव्यनेज फल आपवुं जोइए, ते माटे निजभाव तेज प्रमाण छे. तेम थापना जिनने विषे पण जाणवुं.

अहींयां पोतानो भाव प्रमाण कह्यो, तेमां कोइकने आशंका उपजे के, सामी वस्तु जेवी होय तेवी हो पण पोतानो भावज प्रमाण छे. तेने कहे छे के एम नहीं ते उपर गाथा कहे छे.

शुद्धभाव जेहनो छे तेहना, चार निक्षेपा साचा।
जेहमां भाव अशुद्ध छे तेहना, एक काचे सवि काचारे ॥ जि० ॥ तु० १२ ॥

अर्थ–शुद्ध भाव जेहनो छे के० जे वस्तुनो भावनिक्षेपो शुद्ध छे. तेहना चारे निक्षेपा साचा छे. गौतमादिकनी परे. एटले ए भाव जे गौतमजीनो भावनिक्षेपो आराध्य साचो

छे तो नामादिक पण गौतमनां आराध्य छे. परम मंगलिकभूत छे. तथा जेमां भाव अशुद्ध के० जे वस्तुनो भावनिक्षेपो अशुद्ध छे, तेहने के० ते वस्तुने एक काचे सवि काचा के० एक भावनिक्षेप काचे करीने चारे निक्षेपा काचा जाणवा. अंगारमर्दकाचार्यनी परे. जेम तेहनो भाव अशुद्ध छे, तो तेनां नामादिक पण परम पापरूप छे. माटे आराध्य नहीं. तेथी भाव तेहज सत्य छे. माटे पापी जीवनी अजीवस्थापना पण आराध्य नहीं. इति भाव. इति गाथार्थ ॥ १२ ॥

हवे व्यतिरेक दृष्टांते साध्य साधे छे.

दश वैकालिके दूषण दाख्युं, नारी चित्रने ठामे।
तो केम जिनप्रतिमा देखीने, गुण नवि होय परिणामेरं॥ जि०॥ तु० १३॥

अर्थ—जेम दशवैकालिक सूत्रने विषे नारी चित्रने ठामे के० स्त्रीनुं रूप चितर्युं होय, आलेख्युं होय, तेने जोतां. एटलुं पद अर्थगम्यथी लेवुं. दूषण दाख्युं के० कंदर्प विकार उपजे एह दोष देखाड्यो छे. यतः—"चित्तभित्तिं न णिज्झाए नारीं वा सुअलंकियं। भरकरं पिव दट्ठुणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ १ ॥" ए गाथानो अर्थ एके चित्रामणनी भिंति प्रत्ये न णिज्झाए के० न जोइए. तेने विषे नारीं के०स्त्री प्रतिमा ते अलंकृत होय माटे एवी प्रत्ये न जोवुं. विकार उपजवानो हेतु छे माटे. भरकरं के० सूर्य सामु जोइने जेम दिट्ठिं के० दृष्टि संहरी लेइए, तेनी परेज चित्रामण देखीने दृष्टि संहरी लेवी. इति भाव. इति दशवैकालिके दृष्टांते जिनप्रतिमा देखीने परिणामे के० पोताने भावे केम गुण न होय? एटले स्त्रीनुं रूप देखी दोष कह्यो तो जिनप्रतिमा देखीने गुण केम न थाय? थायज. इति भाव ॥ १३ ॥

एतो सामान्यपणे स्थापनानिक्षेपो वंद्य देखाड्यो. हवे जिनप्रतिमा कोणे वांदी? ते देखाडे छे.

रुचकद्वीपे एक डगले जातां, पडिमा नमिय आणंदे।
आवतां एक डगले नंदीसरे, बीजे इहां जिन वंदेरे॥ जि०॥ तु० १४॥

अर्थ—अहींयां जंघाचारण मुनिनो अधिकार छे. आगली गाथामां जंघाचारण एहवुं पद छे. ते जंघाचरण मुनि रुचक द्वीपे के० रुचक नामा तेरमो द्वीप. मतांतरे एकवीशमो द्वीप. तेहने विषे एक डगले जातां के० एकज डग भरी उत्पत्या ते त्यां उतर्या. उतरीने पडिमा नमिय के० जिन प्रतिमा, तेने आनंदे के० हर्षे नमीने, आवतां के० पाछा वलतां, एक डगले नंदीसरे के० एक डगले नंदीसरनामा आठमो द्वीप, त्यां उतरे, त्यां उतरी विसामो लइ त्यां जिनप्रतिमा वांदे. बीजे के० बीजे डगले अहींयां आवे. अहींयां जिनप्रतिमा वांदे. ए अहींयांना जिन ते अशाश्वती प्रतिमा वांदे. एम जणाव्युं. इति चतुर्दश गाथार्थ ॥ १४ ॥

वच सुरेंद्रश्चामीकर

तस्यच . ९

त्रिछी गतिए भगवई भाखी, जंघाचारण केरी।
पंडगवन नंदन इहां पडिमा, ऊर्ध नमे घणेरीरे ॥ जि० ॥ तु० १५ ॥

अर्थ–त्रिछी गतिए भगवई भाखी के० श्री भगवतीसूत्रने विषे ए तीर्छिगति कही. एक वार भगवतीनुं नाम दीधुं. एटले जंघाचारण तथा विद्याचारणनो अधिकार सघलो भगवतीसूत्रमां छे, एम समजवुं. जंघाचारण केरी के० जंघाचारणनी तिरछी गति कही. हवे ऊर्ध्वलोकनी वात कहे छे. एक डगले उंचा मेरुपर्वतने माथे पंडक वन के० पांडुकवनने विषे जाय. त्यां चैत्यवांदे. त्यांथी पाछा वलतां एक डगले नंदन के० नंदनवन संभूतला पृथ्वीथी पांचशे योजन उंचु छे, त्यां आवे. त्यांनां चैत्य वांदे. त्यां थकी वीजे डगले इहां पडिमा के० अहींयां धरती उपरे अशाश्वती प्रतिमाने वांदे. एम ऊर्ध नमे घणेरी के० ऊर्ध्वलोके घणी प्रतिमा वांदे. इति पंचदश गाथार्थ ॥ १५ ॥

हवे विद्याचारण मुनिनो संबंध कहे छे.

विद्याचारण ते एक डगले, मानुषोत्तरे जाय।
वीजे नंदीसरे जिनप्रतिमा, प्रणमी प्रमुदित थायरे ॥ जि० ॥ तु० १६ ॥

अर्थ–विद्याचारणमुनि ते प्रथम एक डगले मानुषोत्तरे जाय के० अढीद्वीपनी मर्यादा करीने रह्यो एवो जे मानुष्योत्तर पर्वत ते पर्वते जाय. त्यांनां चैत्य वांदे. त्यांथी वीजे के० वीजे डगले नंदीश्वर द्वीपे जाय. त्यां जिनप्रतिमा प्रत्ये प्रणमी के० प्रणाम करीने प्रमुदित थाय, एटले हर्षवंत थाय. इति गाथार्थ ॥ १६ ॥

तिहांथी पडिमा वंदण कारण, एक डगले ईहां आवे।
ऊर्धपणे जातां वे डगले, आवतां एकस्वभावेरे ॥ जि० ॥ तु० १७ ॥

अर्थ–तिहांथी के० ते नंदीसर द्वीपथी, पडिमावंदण कारण के० प्रतिमा वंदणने हेतुए एक डगले ईहां आवे के० एक उत्पाते अहींयां आवे. आवीने अहींयांनां चैत्य वांदे. ए तीर्च्छी लोकनी वात कही, हवे ऊर्धलोकनी वात कहे छे. ऊर्धलोके पण जातां वे डगलां अने आवतां एक डगलुं. एटले ए भाव जे जातां एक डगले नंदनवने जइने चैत्य वांदे. अने वीजे डगले पांडुकवने जइने चैत्य वांदे. त्यांथी एक डगले अहींयां आवी अहींयांनी प्रतिमा वांदे. स्वभाव के० ए गतिना ए स्वभाव छे. वचमां वीजा विसामा करी शकाय नहीं. इति भाव. इति गाथार्थ ॥ १७ ॥

हवे पूर्वे भगवती सूत्रमां ए पाठ छे. एवुं तो कह्युं हतु, पण कीए ठामे छे? ते कहेछे.

शतकवीशमे नवम उद्देशे, प्रतिमा मुनिवर वंदी।
इम देखीजे अवला भांजे, तस मति कुमति फंदीरे ॥ जि० ॥ तु० १८ ॥

अर्थ-शतक वीशमे नवम उद्देशे के० शतक वीशमुं अने उद्देशो नवमो, तेमां प्रतिमा मुनिवर वंदी के० मुनिराजे प्रतिमा ए रीते वांदी छे. इम देखी के० एवो पाठ देखीने, जे अवला भांजे के० जे प्राणी अवला वांका जाय छे. तस मति के० तेओनी जे बुद्धि, ते कुमति फंदी के० कुगुरुनो भोलवी थकी कुमतमां फंदाई रहे छे. एटले जो मिथ्यात्वने जोरे कुमति फंदमां पड्या छे, तो एवा प्रगट पाठ देखीने पण अवला भांजे छे. कुमतिनो जालमां गुंथाय छे. इति भाव ॥ इति गाथार्थ ॥ १८ ॥

हवे ते पाठ लखे छे. "कइ विहा णं भंते चारणा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा चारणा पन्नत्ता—तं जहा विज्जाचारणा य जंघाचारणा या से केणट्ठेणं भंते!एवं वुच्चइ विज्जाचारणा?गोयमा!छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं विज्जाए उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ,से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणा। विज्जाचारणस्स णं भंते!कहं सीहागई कहं सीहे गइविसए पन्नत्ते?गोयमा!अयणं जंबुद्दीवे दीवे जाव किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं,देवेणं महिड्ढीए जाव महासोक्खे जाव इणामेव तिकट्टु जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छिराणिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स णं गोयमा! तहा सीहागई तहा सीहे गइविसए पन्नत्ते। विज्जाचारणस्स णं भंते! तिरियं केवइए गइविसए पन्नत्ते? गोयमा! से णं इतो एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ,करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ.वंदइत्ता बीएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तइत्ता इहमागच्छइ, इहमागच्छइत्ता इह चेइआइं वंदइ, विज्जाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवइए गतिविसए पन्नत्ते। विज्जाचारणस्स णं भंते! उड्ढं केवइए गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! से णं इतो एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता बितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तइत्ता इहमागच्छइ, इहमागच्छइत्ता इह चेइआइं वंदइ। विज्जाचारणस्स णं गोयमा! उड्ढं एवइए गतिविसए पन्नत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइअ पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जंघाचारणे? गोयमा! तस्स णं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलद्धीनामं लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ जंघाचारणे। जंघाचारणस्स णं भंते! कहं सीहा गई कहं सीहे गइविसए पन्नत्ते? गोयमा! अयणं जंबुद्दीवे दीवे जहेव विज्जाचारणस्स णवरं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा। जंघाचारणस्स णं गोयमा! तहा सीहागई तहा सीहे गइविसए पन्नत्ते, सेसं तं चेव। जंघाचारणस्स णं भंते! तिरियं केवइए गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! से णं इतो एगेणं उप्पाएणं रुअगवरे दीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिनियत्तमाणे बीइएणं उप्पाएणं नंदीसरे दीवे समोसरणं

वत्र सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच तथास-

करेइ, करेइत्ता तहिं चेइआई वंदइ, वंदइत्ता इहमागच्छइ इह चेइयाई वंदइ, जंघाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवइए गतिविसए पन्नत्ते। जंघाचारणस्स णं भंते! उड्ढं केवइए गइविसए पन्नत्ते? गोयमा! से ण इतो एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ,करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तमाणे वितिएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेइ,करेइत्ता तहिं चेइयाइं वदइ,वदइत्ता इहमागच्छइ, इहमागच्छइत्ता इह चेइयाइं वंदइ,जंघाचारणस्स णं गोयमा! उड्ढं एवइए गतिविसए पन्नत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। सेणं तस्स ठाणस्स आलोइअपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते सेव भंते जाव विहरइ" इति भगवती सूत्रे शतक वीशमे उद्देशे नवमे ए पाठ छे.

हवे कुमति नवनवा अभिप्राय लावी ए आलावानो अर्थ मरडे छे. ते प्रगट करी दूषवे छे. अहिंआं ढुंढक कहे छे जे–चैत्य शब्दे अमे जिनप्रतिमा नथी मानता अने एम करता तमे चैत्य शब्दे जिनप्रतिमा कहो छो तो कहो, पण ते वांदतां लाभ होत तो सूत्रमां "तस्स ठाणस्स अणालोइअ" इत्यादिक पाठे केम कह्युं जे ते स्थानकने अणआलोए, अण पडिकमे काल करे तो विराधक थाय? इति तेनो उत्तर कहे छे जे–

आलोअणनुं ठाण कह्युं जे। तेह प्रमाद गति केरो ॥
तीर गति जे जात्र विचाले। रहे ते खेद घणेरोरे जि० तु०॥१९॥

अर्थ–ते ठाणनुं आलोअण कह्युं के० ते स्थानक जे चैत्यवंदनामां प्रमाद स्थानक तेहनुं जे आलोववुं, तेज देखाडे छे. ते प्रमाद गति केरो के० प्रमादे गति करी तेनुं आलोववुं छे जे कारण माटे लब्धि उपजीवन ते प्रमाद गतिछे. कोइ पूछे जे–ते ठाणनुं आलोअण कह्युं एहवो अनवय क्यांथी कर्यो? तेने कहीए छैए जे–"तस्स ठाणस्स अणालोइअ." इत्यादिक सूत्र पाठ थकी एवो अन्वय कर्यो इति. तथा वली प्रमाद स्थान बीजुं देखाडे छे. तीर गति के० तीरना वेगनी पेरे उतावली गतिए जे चाल्या जाय, ते जाता थका जात्र विचाले के० वचमां तीर्थयात्राप्रमुख शाश्वतां देहेराप्रमुख रहे के० रही जाय छे. ते खेद घणेरो के० घणो खेद चित्तमां उपजे छे. एटले तीरना वेगनी परे गया ते आलोअण स्थानक कहीए. इति भाव ॥ इति एकोनविंशतितम गाथार्थ ॥ १९ ॥

हवे आलावानो अर्थ–'कइविहा णं' के०केटला प्रकारना हे भगवन्, चारण मुनि कह्या छे? प्रभुजी कहे छे हे गौतम! बे प्रकारना चारणमुनि छे. 'तं जहा' इत्यादिक ते कहे छे. एक विद्याचारण बीजा जंघाचारण. 'से केणट्ठेणं' के० शा कारणथी विद्याचारण? प्रभुजी कहे छे. हे गौतम छट्ठं छट्ठं ने 'अणिक्खित्तेनं' के०अनिक्षप्त जे एटले निरंतर तप करतां 'विज्जाए' के०विद्याए करी पूर्वगत श्रुत विशेषे करीने 'उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स' के० पिंड विशुद्धयादिकने विषे तप, तेहने खमता–सहेता एटले तप करता इतिभाव. विद्याचारणलब्धि उपजे छे. 'से तेणट्ठेणं' के०ते कारणे विद्याचारण कहीए. हे स्वामिन्, विद्याचारणनी 'कहं

सीहा गई' के०केवी शीघ्रगति छे? 'कहं सीहे गइविसए' के०शीघ्रगति विषय केवो छे एटले गमन विना पण शीघ्रगति विषय केटलुं खेत्र छे? इति भाव. प्रभुजी कहे छे. हे गौतम! अयणं के० आ जंबूद्वीप लाख योजननो यावत् ३१६२२७ योजन, ३ गाउ, १२८ धनुष्य १३ अंगुल झाझेरां. एटली 'परिक्खेवेणं' के० परिधि छे. महर्द्धिक यावत् महानुभवनो धणी देवता त्यां अच्छराणिवाएहि के० त्रण चपटी वगाडीए एटली वारमां तिक्खुत्तो के० त्रणवार जंबूद्वीप फरी आवे. विद्याचारणनी एवी शीघ्रगति छे. एवो शीघ्रगतिनो विषयछे. ए सामान्यप्रकारनी गति कही. हवे त्रिछी गति विषय पूछेछे. 'विज्जाचारणस्स णं' इत्यादिक सुगम छे, 'तिरियं केवइए गइविसए' के०त्रिछी गतिनो विषय केटलो छे? प्रभुजी कहे छे. हे गौतम–'एगेणं उप्पाएणं' के०एक डग ले 'माणुसुत्तरे पव्वए' के०मानुषोत्तर पर्वतने विषे 'समोसरणं' के०समवतार करे. करीने 'तत्थ चेइयाइं वंदइ' के०त्यहां चैत्य वांदे. 'वितीएणं उप्पाएणं' के० बीजे डगले 'नंदीसरवरदीवे' के० नंदीश्वर द्वीपने विषे 'समोसरणं करेइ'के० समवतार करे. करीने 'तहिं चेइआइं वंदइ' के०त्यां चैत्यने वांदे. 'ततो पडिनियत्तइ' के० त्यांथी पाछा निवर्ते. 'इहमागच्छइ' के० अहींयां आवे. इह चेइआइं वंदइ के० अहींयानां चैत्य वांदे, 'विज्जाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवइए गतिविसए' के हे गौतम विद्याचारणनो त्रिछी गति विषय एटलो छे. 'विद्याचारणस्स णं उड्ढं केवइए गइ विसए पन्नत्ते' के० ते विद्याचारणनो ऊर्ध्वगति विषय केटलो छे? प्रभुजी कहे छे. हे गौतम 'सेणं' के० ते, 'इतो' के० अहींयांथी, 'एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेइ' के० एके डगले नंदन वनने विषे समवसरण करे, करीने 'तहिं चेइआइं वंदइ' के० त्यां चैत्य वांदे, वितीएणं उप्पाएणं' के० बीजे डगले, 'पंडगवणे' के०पांडुकवन मेरुने मस्तके समवसरण करे. 'तहिं चेइआइं वंदइ' के० त्यहां चैत्य वांदे. 'ततो पडिनियत्तइ' के०त्यांथी पाछा निवर्ते. इहमागच्छइ' के०अहिंयां आवे. 'इह चेइआइं वंदइ' के०अहींयांनां चैत्यवांदे. 'विज्जाचारणस्स णं' इत्यादि सुगम छे. 'सेणं तस्स ठाणस्स' के०ते स्थानकने एटले लब्धि फोरवी ते स्थानकने, 'अणालोइअपडिक्कंते' के० अणआलोए, अणपडिकमे, 'कालं करइ' के० काल करे. तो 'नत्थि तस्स आराहणा' के०आराधना तेने नथी. 'सेणं तस्स ठाणस्स' के० ते स्थानकने, 'आलोइअपडिक्कंते कालं करइ' के०आलोवीने अने पडिकमीने काल करे तो 'अत्थि तस्स आराहणा' के० तेने आराधना छे. एटले ए भावार्थ लब्धि उपजीवन ते प्रमाद छे. ते प्रमाद आलोया विना चारित्रनी आराधना न थाय. अने विराधक चारित्रनुं फल न पामे. 'से केणट्ठेणं भंते' इत्यादिक जघाचारणना आलावानो पण एज अर्थ छे, पण एटलो फेर छे के अट्ठम अट्ठमनां पारणां करता ए लब्धि उपजे॥ 'जंघाचारणस्स णं भंते कहं सीहा गई' इत्यादिक पण विद्याचारणनी परे छे. पण एटलो फेर जे कोइ देवता 'तिसत्तक्खुत्तो' के० एकवीसवार जंबूद्वीपने फरी आवे, एवी शीघ्रगति जंघाचारणनी छे. 'जघाचारणस्स णं भंते तिरियं' इत्यादिक सुगम छे, पण एटलो फेर जे 'सेणं एगेणं उप्पाएणं रुअगवरे दीवे समवस-

वच सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच तथास८

रणं करेइ' के० एके डगले रुचकवर जे तेरमो द्वीप तेने विषे समवसरण करे. फरीने 'तहिं चेइआई वंदइ' त्यहां चैत्य वांदे, वांदीने 'तओ पडिनिअत्तमाणे' के०त्यांथी पाछां निवर्त्ततां वितीएण णंदीसरवरे दीवे समवसरणं करेइ' के०नंदीश्वर द्वीपने विषे समवसरण करे. 'तहिं चेइआई वंदइ' के० त्यां चैत्यने वांदे. इहमागच्छइ' के०अहिंआं आवे. 'इह चेइआई वंदइ' के० अहियां चैत्य वांदे, जंघाचारणनो ऊर्ध्वगति विषय एटलो छे. यावत् संपूर्ण लगी सुगम छे. 'सेवं भंते' के०गौतमस्वामी कहे छे. ॥ तहत्ति इति ॥ अहींयां विद्याचारणने जावुं बे डगले अने आववुं एक डगले, तथा जंघाचारणने जावुं एक डगले अने आववुं बे डगले, ते लब्धिनो स्वभाव छे. तथा कोइ कहे छे के, विद्याचारणने आवतां विद्या स्पष्टतर थाय, माटे एक डगले आवे. अने जातां तेवी न होय माटे बे डगले जाय. अने जंघाचारणने लब्धिथी उपजे. माटे आवतां अल्प सामर्थ होय, तेथी आववुं बे डगले अने जावुं एक डगले. इति वृत्ति.

हवे ते आलोववा उपर सिद्धांतसाखे दृष्टांत कहे छे.

करी गोचरी जिम आलोए । दशवैकालिक साखे ॥
तिम ए ठाम प्रमाद आलोए । नहीं दोष ते पाखेरे ॥ जि० तु०२० ॥

अर्थ–करी गोचरी के० गोचरी करीने जेम उपाश्रये आवीने साधु पद अर्थापत्तीए लइए. ते साधु. जिम आलोए के० प्रमादने आलोवे छे, पण नहीं दोष ते पाखे के० ते. प्रमाद विना बीजो दोष नथी. इति अक्षरार्थ. भावार्थ तो ए छे के श्रीदशवैकालिके एम कह्युं जे, साधु गोचरी करी आवीने गुरु पासे आलोवे. ते भली रीते न आलोयुं होय तो फरी पडिक्कमे. एम कह्युं. तेमां ए पडिक्कम्युं ते दोष लाग्यो तेने पडिक्कम्युं पण गोचरी करी ते पडिक्कम्यो नथी, तेम अहींयां पण चैत्यवंदना पडिकमी नथी. दोष लाग्यो ते पडिकम्यो छे. इति भाव. एटले कोई पूछे जे–आलोया पडिक्कम्या विना काल करे तो विराधक थाय, एम कह्युं श्रीभगवती सूत्रमां तेहनो शो जवाब वाल्यो?" तेने कहिए जे हे देवाणु प्रिय, अमे जवाब वाल्यो, पण तुं भलो समज्यो नथी. फरी सांभल. गोचरी करीने साधु, उपाश्रये आवतां मार्गमध्ये आलोया पडिक्कम्याविना काल करे तो आराधक कहीए, किंवा विराधक कहीए? ते विचारी जोजो. यतः श्रीदशवैकालिके पंचमाध्ययने॥ "विणएणं पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी। इरियावहियमादाय, आगओ अ पडिक्कमे ॥१॥ आभोइत्ताण णीसेसं अइयारं जहक्कमं । गमणागमणे चेव भत्तपाणे अ संजये ॥२॥ उज्जुपन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा । आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे ॥३॥ ण सम्ममालोइयं हुज्जा, पुव्विंपच्छाविजं कडं । पुणो पडिक्कमे तस्स,वोसिट्ठो चिंतए इमं॥४॥ अर्थ– 'विणएणं' के०विनय करी, 'पविसित्ता' के० पेशीने, सगासे गुरुणो के०गुरुनी समीपे 'मुणी' के० मुनि, 'आगओ' एटले आव्यो थको, 'इरियावहीयं पडिकमे' के० इरियावही पडिक्कमे,

'आदाय' के० ग्रहीने. १ पछी काउस्सग्गमांहे 'आभोइत्ता' के० उपयोग देइने, 'नीसेसं' के० सघलाए, 'अइयारं' के० अतिचारने, 'जहक्कमं' के० यथा अनुक्रमे अतिचारने चिंतवे. 'गमणागमणे' के० जातां आवतां, 'चेव' के० निश्चये, 'भत्तपाणे अ' के० भात पाणीने विषे, 'संजए' मुनि. २ 'उज्जुपन्नो' के० सरल प्रज्ञावालो, 'अणुव्विग्गो' के० उद्वेगरहित, 'अव्वक्खित्तेण चेअसा' के० सावधान मने करी काउस्सग्ग पारीने, 'आलोए गुरुसगासे' के० गुरुनी समोपे आलोए. 'जं जहा गहियं' के० जे जेम लीधो होय ते तेम. ॥३॥ एम करतां कदाचित् 'न सम्ममालोइयं हुज्जा' के० रुडी पेरे आलोयुं न होय, 'पुव्विं पच्छा व जं कडं' के० पूर्वे आहारादिक ग्रह्युं होय ते पछे कहेवाणुं होय, अथवा पछी ग्रह्युं होय ते पूर्वे कहेवाणुं होय, 'जं कडं' के० जे एम कीधां तथा पूर्वे कर्म दोष पश्चात् कर्म दोष लाग्या होय, तेने 'पुणो पडिक्कमे' के० फरी पडिक्कमे. तस्स के० ते सूक्ष्मअतिचारने, वोसिट्ठो के० ते कायाने वोसिरावी, चिंतए इमं के० एम चिंतवे. ए चार गाथानो अर्थ.

हवे एवो भगवतीसूत्रनो पाठ सांभलीने कुमति बोल्यो.

कहे कोइ ए कहेवा मात्रज । कोई न गयो नवि जाशे ॥
नहीं तो लवणशिखा मांहे जातां । केम आराधक थाशेरे? ॥ जि० तु० २१॥

अर्थ—कोइक कुमति एम कहे छे जे, कहेवामात्रज के० ए भगवतीसूत्रमां चारणमुनिनुं नाम देइने कह्युं, पण ते कहेवारूप जाणवुं. पण कोइ न गयो के० ए रीते कोइ अतीत काले गयो नथी, तथा नवि जाशे के० अनागत काले कोइ जाशे पण नहीं. तेनो हेतु कुमति देखाडे छे. नहीं तो के० जे में कह्युं तेम न होय तो लवणशिखामांहे जातां के० लवणसमुद्रनी शिखामां थइने जातां केम आराधक थाशे के० अपकायनी विराधना करीने जतां आराधक केम थाशे ? इति गाथा अक्षरार्थ. हवे भावार्थ कहे छे, जे जंबूद्वीपने पछवाडे बे लाख योजन एक दिशाए पहोलो एवो चारे दिशाए फरतो लवणसमुद्र छे, ते लवणमां सोल हजार योजन पाणी उंचु चोफेर छे, ते पाणीमांथी थईने मुनि केम जाय? अने जाय तो आराधक केम थाय ? तथा बीजो कोइ मार्ग जवानो नथी, ते माटे कहीए छैए के चारणमुनिनी वात ते भगवतीसूत्रमां कहेवारूप छे, पण करवारूप नथी ॥२१॥

हवे कुमतिने आगली गाथामां उत्तर दे छे.

सत्तर सहस्स जोयण जई उंचा । चारण तीर्छा चाले ॥
समवायांग प्रगट पाठ ए । शुं कुमति भ्रम घालेरे? ॥ जि० तु० २२ ॥

अर्थ—सत्तर सहस्स जोयण के० सत्तर हजार योजन, जई उंचा के० उंचा जईने, चारण तीर्छा चाले के० ते चारणमुनि तीर्छा जाए छे. एम ए रीते श्रीसमवायांगसूत्रमां प्रगट पाठ छे, तो शुं कुमति भ्रम घाले के० हे कुमति, कुत्सित मतिना धणी भोलालोकने

खोटी खोटी वातो कही शुं भ्रम घाले छे ? संशयमां शुं पाडे छे? जे तुं कहेछे तेम कहेवा मात्र होय तो समवायांगसूत्रमां एवो पाठ केम कहे ? इति भाव. यथा–" लवणेणं समुद्दे सत्तरजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पन्नत्ता। इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ साइरेगाइं सत्तर जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पइत्ता तओ पच्छा चारणाणं तिरियगई ॥" इति समवायांगे ॥ एनो अर्थ–लवणसमुद्र 'सत्तर जोयण सहस्साइं' के०सत्तर हजार जोजन 'सव्वग्गेणं' के०सर्व थइने कह्यो छे. एक हजार उंडो, सोल हजारनी उपर शिखा. एवं १७००० 'इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए' के०ए रत्नप्रभा पृथ्वीथकी 'बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागाओ' के० घणी सरखी एटले बराबर रमणीक भूमि भाग थकी, एटले मेरुनी धरतीथकी, 'साइरेगाइं सत्तरजोअणसहस्साइं उड्ढं उप्पइत्ता' के० सत्तरहजार जोजन झाझेरा ऊर्ध्व जईने पच्छा के०पछी 'चारणाणं तिरियगई' के०चारणमुनिनी तीर्छी गति प्रवर्ते. ते माटे भगवतीसूत्रनो पाठ करवारूप छे, पण कहेवारूप नथी. इति भाव. इति द्वाविंशतितम गाथार्थ ॥२२॥

हवे ए आलावामां चेइआइं वंदे कह्युं, ते उपर कुमति चैत्यशब्दनो अर्थ ते ज्ञान कहे छे. तेह आशंका लावीने उत्तर वालवा गाथा कहे छे.

चैत्यशब्दनो ज्ञान अरथ ते । कहो करवो कुण हेते ॥
ज्ञान एक ने चैत्य घणां छे । भूले जड संकेतेरे ॥ जि० तु० २३ ॥

अर्थ–चैत्य शब्दनो जे ज्ञान अर्थ करो छो, ते शा हेतुए करवो ? पाधरो अर्थ चैत्य के०जिननुं घर अथवा जिनप्रतिमा. यतः–"चैत्यं जिनौकस्तद्विंबं चैत्यो जिनसभातरुः ॥" इत्यनेकार्थ संग्रहे एवो अर्थ मूकीने चैत्य के० ज्ञान एवो अर्थ शा माटे करवो पडे छे? इति भाव. ज्ञान एक ने चैत्य घणां छे के० ज्ञान तो एक छे, अने चैत्य घणां छे, तेमाटे भूले के० ते अर्थ करतां भूले छे. शामाटे भूले छे? ते कहे छे. जडसंकेते के० मूर्खसंकेते, एटले शुद्ध गुरु परंपरा आवी होय तो निपुण संकेत होय, पण निगुरुना संकेत ते मूर्खज होय. इति गाथा अक्षरार्थ. अथ भावार्थ. ते कुमति एम कहे छे जे, " विद्याचारण जंघाचारण मुनिए नंदीश्वर प्रमुखनी वातो सिद्धांतमां सांभली ते सांभली हृदयमां कौतुक उपन्युं, जे ए वात केम हशे ? आपणी नजरे जोइए." एम विचारीने नंदीश्वरादिकने विषे जोवा गया. त्यां जेम आगममां सांभल्युं तेम नजरे दीठुं, ते वारे प्रभुना ज्ञाननुं बहुमान भाख्युं जे "धन्य प्रभुना ज्ञानने" एम कहीने प्रभुना ज्ञानने पगे लागे. चेइआइं वदइनो ए अर्थ छे, एम कुमति कहे छे. तेनो उत्तर वाल्यो जे, मूर्ख व्याकरण प्रमुख भण्या विना शुं समजे ? चेइआइं के० चैत्यानि ते द्वितीयानुं बहुवचन छे, हवे जो ज्ञानने पगे लाग्या होय तो बहुवचन सूत्रकार शाने माटे कहे? ज्ञान तो एक छे. एवी वातो मूर्ख जाणे ? इति.

अहीयां केटलीक वातो स्तवनमां नथी आणी, पण कांईक विशेष वात लखीए छैए. त्यां जइ ज्ञानने पगे लाग्या, एम कहे तेवारे वाटमां जातां चमत्कार उपजे एवा पहाड पर्वत समुद्र प्रमुख घणा आव्या हशे, तो तेने देखीने प्रभुना ज्ञानने वंदना कां न करी ? ते विचारजो. वली एम चैत्यशब्दे ज्ञान कहीए तो 'नाणं पंच विहं पन्नत्तं ॥' इत्यादिक, सूत्रमां ज्ञानना आलावा घणा छे. त्यां सघले 'चेइयं पंच विहं पन्नत्तं । आभिणिबोहियचेइयं, सुयचेइयं, ओहिचेइयं, मणपज्जवचेइयं, केवलचेइयं'. इत्यादि पाठ लखत, पण ते तो क्यांए दीसता नथी, तथा वली एवो अर्थ करे जे, आगममांथी वात सांभली निर्णय करवा गया, ते वारे शंका तो हृदयमां ठरी अने जिन वचनमां शंका उपजे, ते वारे साधु पणु केम रहे ? यतः–' पयमक्खरंपि एकं पि जो न रोएइ सुत्तनिद्दिठ्ठं। सेसं रोयंतो वि हु मिच्छद्दिठ्ठी जमालि व्व ॥१॥" ते माटे मूर्ख संकेतनो अर्थ छांडी निपुण संकेत अर्थ करीए तो सर्व समुं थाय. ए जवाबना उत्तर घणा छे, तेहनो खप होय तो प्रतिमाशतक ग्रंथ उपाध्यायजीनो करेलो छे ते जोज्यो ए विस्तारे सर्यु ॥ २३ ॥

हवे वली कुमति एम कहे छे जे, " चैत्य के० प्रतिमा हो तो पण भले हो पण ते शाश्वती प्रतिमा हती अने तमे तो अशाश्वती मानो छो." एम कहेनारने, एज आलावामांथी अशाश्वती देखाडे छे.

रुचकादिकना चैत्य नम्या ते। सासय पडिमा कहिए ॥
जेह इहांना तेह अशाश्वत । बेउमां भेद न लहिएरे ॥ जि० तु० २४॥

अर्थ–रुचकादिकना के० रुचक आदि देई. आदि शब्द थकी नंदीश्वरादिक लइए. तेह चैत्यने मुनि जे नम्या ते सासय पडिमा के० ते शाश्वतीप्रतिमा कहीए तथा जेह इहांना के० अत्रे भरतनां चैत्य वांद्यां. 'इह चेइआई वंदइ त्ति' पाठात् ॥ ने अशाश्वतां जाणवां. ते माटे मूर्ख होय ते शाश्वतीमां अने अशाश्वतीमां पूज्यापूज्यनो फेर पाडे. तेज माटे आगल कहेवाशे जे द्रौपदीनो अधिकार, तेमां केवल अशाश्वतीनेज पूज्यपणु कह्युं छे, अने जिनघर कही बोलाव्युं छे, ते कारणे बेउमां भेद न लहीए के० शाश्वतीमां अने अशाश्वतीमां अंश मात्र भेद नथी. इति गाथार्थ ॥ २४ ॥

हवे ए अधिकार पूरो थयो माटे उपसंहार करे छे.

जे उपर साहेब तुज करुणा । शुद्ध अरथ ते भाखे ॥
तुज आगमनो शुद्ध परूपक । सुजश अमियरस चाखेरे ॥जि०तु०२५॥

अर्थ–जे उपर साहेब तुज करुणा के० हे साहेब, जे प्राणी उपर तमारी करुणा एटले कृपा छे, शुद्ध अरथ ते भाखे के० ते प्राणी यथार्थ व्याख्या करे. अहींयां ए व्याख्याए, एक उपर करुणा छे अने एक उपर करुणा नथी एवो अर्थ थाय, ते वीतरागने केम घटे?

वच सुरेंद्रश्रामीकर

अत्र उत्तर. जेम एक वापना बे दीकरा होय, बापनुं ते बेउ उपर हेत सरखुं छे, पण एक आज्ञाकारी छे, बीजो आज्ञाकारी नथी. तेमां जे आज्ञाकारी छे ते उपर हेत, लोक प्रगटपणे देखे छे, अने जे आज्ञाकारी नथी ते उपर यद्यपि पितानुं हेत छे, तोपण लोको ते प्रगटपणे देखता नथी, तेम अहींयां पण तीर्थंकरने यद्यपि सर्व प्राणीओ उपर करुणा छे, पण जेओ आणाना आराधक छे तेओ उपर प्रगटपणे दीसेछे, ते माटे एम कह्युं. जे उपर साहेब इत्यादि० अहींयां सर्वथा करुणा नथी एम कहेछे ते निवारवुं, जे माटे वीरस्वामिने छद्मस्थपणे भगवतीना शतक पन्नरमानी वृत्ति मध्ये श्रीअभयदेवसूरिजीए लख्युं छे जे ॥ 'स्नेहगर्भानुकंपा सद्भावात्' ॥ ते वारे केवलीने स्नेहरहित अनुकंपा ठरी, अन्यथा स्नेहगर्भ पदनुं शुं प्रयोजन ? इत्यादिक बहु चर्चा छे, ते ग्रंथ वधे माटे नथी लखता. ते माटे तुज आगमनो जे शुद्ध परूपक होय ते प्राणी सुजश के० भला यशरूप, अमियरस के० अमृतनो रस ते चाखे के० आस्वाद करे. एटले कविए पोतानुं नाम पण सूचव्युं. इति पंचविंशति गाथार्थ ॥ २५ ॥ ए प्रथम ढाल थयो. ग्रंथा ग्रंथ ४७२ अक्षर १४.

हवे बीजो ढाल कहे छे. तेहनो संबंध जे प्रथम ढाळे प्रतिमा स्थापन करीने प्रतिमाने वंदना कही, हवे केटलाक मूढ एम कहे छे जे " प्रतिमा वांदीए पण पूजीए नहीं. " तेमने समजाववा माटे बीजो ढाल कहे छे. तेनी प्रथम गाथा.

महाविदेह-क्षेत्र-सोहामणुं–ए देशी ॥

तुज आणा मुज मन वसी, जिहां जिनप्रतिमा सुविचार; लालरे ।
रायपसेणी सूत्रमां, सूरिआभतणो अधिकार; लालरे ॥ तुज० १ ॥

अर्थ–तुज आणा के० तमारी जे आज्ञा, प्रस्तावथी वीरनी जे आज्ञा ते मुज मन वसी के० महारा चित्तने विषे रही छे. एटले श्रीजिनशासन मांहे आज्ञाए धर्म छे पण आज्ञाग्राह्यमां युक्ति न करवी एम देखाडयुं. ते आज्ञा केवी छे ? जिहां जिनप्रतिमा सुविचार के० जे आज्ञामां जिनप्रतिमानो भलो विचार छे तेहिज आगम साखे देखाडे छे. रायपसेणी सूत्रमां के० रायपसेणी नामे बीजुं उपांग, तेमां सूरियाभतणो अधिकार के० सूर्याभ नामे देवता जे परदेशी राजानो जीव प्रथम देवलोके उपन्यो तेनो अधिकार विस्तारे छे, एटले ए अर्थ जे सूर्याभ देवताए प्रतिमानी पूजा करी, तेनो विस्तारे अधिकार छे. इति भाव इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

तेहिज विस्तारे देखाडे छे.

ते सुर अभिनव उपन्यो, पूछे सामायिक देव; लालरे ।
शुं मुज पूरव ने पछी, हितकारी कहो ततखेव; लालरे ॥ तुज० २ ॥

अर्थ–ते सुर के० ते देवता अभिनव उपन्यो के० नवो जे वारे उपन्यो ते वारे पूछे

सामानिक देव के० सामानिक जे पोताने सरखी ऋद्धिना धणी ते देवताओने पूछे छे. शुं मुज पूरव ने पछी हितकारी के० महारे पूर्वे अने पछी हितकारी आ विमानमां शुं छे? ते कहो ततखेव के० तत्काल कहो. इति द्वितीय गाथार्थ ॥ २ ॥

ते कहे एह विमानमां, जिनपडिमा दाढा जेह; लालरे ।
तेहनी तमे पूजा करो, पूर्व पच्छा हित एह; लालरे ॥ तुज० ॥ ३ ॥

अर्थ–ते कहे के० हवे ते देवताओ उत्तर कहे छे जे, एह विमानमां के० एहनुं आ पत्यक्ष विमान तेहमां, जिनपडिमा दाढा जेह के० जिनेश्वरनी प्रतिमा छे, तथा जिनेश्वरनी दाढाओ जे छे, तेनी तमे पूजा करो. इति स्पष्टं ॥ पूर्वे पच्छा हित एह के० पूर्वे तथा पछी, जिनप्रतिमा तथा जिनदाढा ए बे वस्तुनी पूजा, तेज हितकारी छे. ए रीते सामानिक देवताए उत्तर वाल्यो. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

अहियां जिनदाढा शब्दे जिनअस्थि जाणवां. अन्यथा सूर्याभदेवना विमानने विषे जिनदाढा संभवे नहीं. जे कारण माटे, एक सौधर्मेंद्र, बीजो इशानेंद्र, त्रीजो चमरेंद्र, अने चोथो बलींद्र, ए चार इंद्रनेज दाढा लेवानो अधिकार छे, एटला माटे जंबुद्वीप पन्नत्तिनी वृत्तिमां शांतिचंद्र उपाध्यायजीए जिनसकहा शब्दे ॥ जिनास्थिनी ॥ एवुं लख्युं छे. जेम अहियां रायपसेणीमां पण ॥सकहा॥ एवोज पाठ छे. ते माटे दाढा शब्दे अस्थि कहिए. इति भाव. तथा पूर्वे पच्छानो अर्थ पोतेज अनेक रीते करशे. माटे अमे नथी लख्यो.

ए त्रण गाथा कही तेमां सूत्र पाठ हतो, ते प्रमाणे गाथामां अर्थ बांध्यो. तथा च तत्सूत्रं "तएणं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तिए पज्जत्तिभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था । किं मे पुव्विं करणिज्जं? किं मे पच्छा करणिज्जं? किं मे पुव्विं सेयं? किं मे पच्छा सेयं? किं मे पुव्विं पच्छावि हियाए सुहाए खमाए णिसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ?, तएणं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणिय-परिसोववण्णगा देवा सूरियाभस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं समुप्पन्नं समभिजाणित्ता जेणेव सू-रियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति । सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं म-त्थए अंजलीं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी । एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणे जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणं मेत्ताणं अट्ठसयं सन्निखित्तणं चिट्ठइ । सभाएणं सुहमाएणं माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुइओ जिण-सकहाओ सन्निखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं देवाणुप्पियाणं अन्नेसिंच बहुणं वेमाणिया णं देवाणं देवीण य अच्चणिज्जाओ जावपज्जुवासणिज्जाओ । तं एयणं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं एयणं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं एयणं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपच्छावि हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । इति रायपसेणी उपांगे । अस्यार्थ–तएणं तस्स सूरियाभस्स देवस्स के० ते वारे ते सूरियाभ देवताने, पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ती-

वच सुरेंद्रश्रामी

. . स-

भावं गयस्स समाणस्स के० पांच प्रकारनी पर्याप्तिए पर्याप्तिभाव पाम्या थकाने एटले देवताने भाषा अने मन ए बे पर्याप्ति साथे नीपजे छे, माटे पांच कही. इमेयारूवे के० एवा प्रकारनो अज्झत्थिए पत्थिए के० मनमां प्रार्थ्यो. मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था के० मनोगत संकल्प उपन्यो ते कहेछे, किं मे पुव्विं सेयं के०शुं मारे पूर्वे श्रेयकारी ? किं मे पच्छा सेयं के० शुं मारे पछी श्रेयकारी ? किं मे पुव्विं पच्छावि के० शुं मारे पूर्वे अने पछी हियाए के० हितकारी पथ्य आहारनी पेरे, सुहाए के० सुखने अर्थे, खमाए के० सगतने अर्थे, खेमने अर्थे, निसेसाए के० निश्रेयस जे मोक्ष तेने अर्थे, आणुगामिअत्ताए के० अनुगमन करे ? एटले परंपराए शुभानुबंधी भविस्सइ के० थशे ? तए णं सूरियाभस्सदेवस्स सामाणिय परिसोववन्नगादेवा के० ते वारे ते सूरियाभदेवना सामानिक पर्षदामां उपन्या देवता ते, सूरियाभस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं समुप्पन्नं समभिजाणित्ता के० सूर्याभदेवतानो एवो अभिप्राय उपन्यो जाणीने, जेणेव सूर्याभे देवे के० ज्यां सूर्याभदेवता छे. तेणेव उवागच्छंति के० त्यां आवे. सूरियाभं देवं के० सूर्याभ देवने, करयलपरिग्गहियं के० बे हाथ जोडीने, दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलीं कट्टु के० दश नख भेला करी, मस्तके आवर्त करी अंजली करीने, जएणं के० जये करीने स्वपक्षनो जय, विजएणं के० परपक्षनो जय ते विजय कहिए. तेणे वधावे, वधावीने, एवंवयासी के० एम कहे. एवं खलु देवाणुप्पियाणं के० खलु नाम निश्चये हे देवानुप्रिया सूर्याभे विमाणे के० सूर्याभ नामा विमानने विषे सिद्धायतणे के० सिद्धनुं घर एटले देहेरुं, ते देहेराने विषे जिणपडिमाणं के० जिनेश्वरनी प्रतिमा छे. ते प्रतिमा केवी छे? जिणुस्सेहपमाणमित्ताणं के०तीर्थंकरना उत्सेध उंचत्व प्रमाण मात्र छे. अट्ठसयं सन्निखित्तं चिट्ठइ के० एकशोने आठ थापना छे, तथा सभाएणं सुहम्माएणं के० सुधर्मनामा सभाने विषे माणवए चेइयखंभे के० माणवकनामा चैत्यस्तंभ छे, ते स्तंभने विषे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु के० वज्रमय गोलवृत्त डावडा छे. तेमां बहुइओ के० घणां, जिणसकहाओ के० जिननां सकहा शब्दे अस्थि छे. सन्निखित्ताओ चिट्ठंति के० थापनाए छे, ताओ णं के० ते जिनप्रतिमा तथा जिणसकहाओ ते देवाणुप्पिया णं के० हे देवानुप्रिय तमने तथा अन्नेसिं के० बीजा पण सम्यग्दृष्टि वेमाणियाणं देवाणं देवीणय के० वैमानिक देवता देवीओने, अच्चणिज्जाओ के० अर्चवा योग्य छे. जाव पज्जुवासणिज्जाओ के०यावत् सेवा करवा योग्यछे. अहींयां यावत् शब्दे वंदणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ इत्यादिक कहेवुं. तं एयणं देवाणुप्पिया णं इत्यादिक सुगम छे. भावार्थ ए छे. के, ए तमने पूर्वे करवा योग्यछे, पछी करवा योग्यछे, ए तमने पूर्वे तथा पछी हितकारी सुखने अर्थे, क्षेमने अर्थे, मोक्षने अर्थे अने शुभानुबंधने अर्थे थाशे.

अहियां केटलाएक कुमति कहे छे के, "ए देवतानी स्थिति छे." तेहनो उत्तर जे, सूत्र पाठमां ॥ अन्नेसिं बहूणं वेमाणियाणं ॥ इति बहु पद शुं करवा कह्युं ? ॥ सव्वेसिं वेमाणियाणं ॥ एवो पाठ कां न कह्यो ? तेज माटे जाणिए छैए जे, ए सर्व देवतानो

स्थिति नहि, ए स्थिति ते सम्यग्दृष्टिनीज दीसे छे. तथा वली सिद्धायतन कहेतां गणधरजीने मृषावाद केम न थाय ? पण जिनप्रतिमा सिद्ध भगवान् ठरे तो सिद्धायतन कहेतां मृषावाद न लागे ते विचारी जोज्यो. वली आ आलावे जेवां जिनप्रतिमा वांद्यानां फल कह्यां, तेवांज फल वर्त्तता जिनने वांद्यानां कह्यां छे. जेम ए रायपसेणी मांहेज पाठ छे–"तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए किमंग पुण वंदण -नमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए एगस्सवि आरियस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं चेइयं देवयं पज्जुवासामि । एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ" इत्यादि ।।अस्यार्थ–तं महाफलं खलु के० निश्चये तेहनुं महाफल छे. शानुं फल छे ? ते कहे छे, तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं के० तथा रूप अरिहंत भगवंतनां नाम गोयस्स वि सवणयाए के० नाम गोत्र सांभल्यां थकां पण, किमंग पुण के० तो तेहनुं शुं कहेवुं ? वंदण नमंसण के० वंदण करीए, नमस्कार करीए, पडिपुच्छण के० प्रतिपृच्छा करीए, पज्जुवासणयाए के०सेवा करे. एगस्सवि आरियस्स सवणयाए के० एक पण आर्यवचन सांभलीए तो महाफल थाय तो, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए के० विपुल अर्थनुं ग्रहण करीए तेहना फलनुं शुं कहेवुं? तं गच्छामि णं के०ते कारण माटे जाउं, समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि के०श्रमण भगवंत महावीरने वंदणा करुं, नमस्कार करुं कल्लाणं के०कल्याणकारी, मंगलं के०मंगलीकनुं करणहार, चेइयं देवयं के० देवता संबंधी चैत्य जे प्रतिमा ते प्रतिमानी परे, पज्जुवासामी के० सेवा करुं. एयं मे० ए मुजने पेच्चा के० परभवे, हियाए सुहाए इत्यादिकनो अर्थ पूर्वनी परे जाणवो. एमां पण देवतानां चैत्यनी परे सेवा करुं एम कह्युं. नित्य पोताना गुरुने वांदतां पण कल्लाणं इत्यादिक पाठ कहे छे, पण मूर्ख कांई विचारता नथी. ए तो प्रसंगे कह्युं, पण ए पाठ लेखे थापना जिन अने भाव जिन ए बेउनां फल समान बताव्यां. तथा वली भाव जिनथी थापना जिन अधिक पण छे ते द्रौपदीने आलावे प्रगट करी देखाडशुं. तथा एज आलावामां देहेराने सिद्धायतन गणधरजीए कह्युं. ते सिद्धनुं घर कह्युं. एटले जिनप्रतिमा सिद्ध स्वरूप बलात्कारे ठरीज, ते वारे भाव जिनथी जिन प्रतिमा अधिकी थईज, एमां कांई विवाद नथी. एटलाज माटे शक्रस्तवमां जिनप्रतिमा आगले 'ठाणं संपत्ताणं' कहीए छैए अने भाव जिन आगल ।। 'ठाणं संपाविउकामे ।।' एवा पाठ छे. तो मूर्ख एटलुं न विचारे के सिद्ध स्थानक पाम्या ते अधिक के सिद्ध स्थानक पामवानी इच्छा करे ते अधिक ? इत्यादिक घणी चर्चा छे, पण ग्रंथ वधे माटे लखता नथी. ए प्रसंगे सर्युं ।। ३ ।।

हवे कुमतिओनी आशंकाओ उपाडी उपाडीने एज आलावामांथी गुप्त अर्थ प्रगट करी उत्तर दे छे. त्यां प्रथम कोइक कुमति कहे छे के 'सूर्याभ देवता जे वेला उपन्यो ते वेला पूजा करी पण पछी तो वधा भव पर्यंत नथी करी. ते वारे ए तो लौकिक आचारनी परे थयुं. पण धर्म अर्थे थयुं नहीं" इति. तेने उत्तर कहे छे.

वच्च सुरेंद्रश्चामीकर

पूरव पच्छा शब्दथी, नित्य करणी जाणे सोय; लालरे ।
समकित दृष्टि सद्दहे, ते द्रव्यथकी केम होय? लालरे ॥ तुज० ४ ॥

अर्थ–पूरव पच्छा शब्दथी के० पूर्वे अने पछी हितकारी शुं? एवुं पूछयुं अने तेओए "पूरव अने पछी एज हितकारी छे" एवुं कह्युं. ते वारे पूजा विनानो शेषकाल कीयो रह्यो? ते माटेज, सोय के० ते सूर्याभदेवता एम जाणे जे मारे नित्यकरणी सदा कर्तव्य छे. एटले सदा काल पूजा करी एम ठर्युं. इति भावार्थ. वली कोइक कुमति बोल्यो के, "ए तो द्रव्यथी बाह्यथी पूजा करी पण भावथी नथी करी." इति. तेहने उत्तर देछे जे, समकित दृष्टि जे होय ते सद्दहे के० धर्म एहवुं सद्दहे, ते द्रव्यथी केम होय? एटले समकिती द्रव्यथी करे तो शुं श्रद्धामां न होय? जेम पुत्र विवाहादिक. इति भाव. इति तूर्यगाथार्थ ॥ ४ ॥ तेज हवे स्पष्ट करी देखाडे छे.

द्रव्यथकी जे पूजीयां, प्रहरण कोशादि अनेक; लालरे ।
तेहथी बेउ जूदां कह्यां, ए तो साचो भाव विवेक; लालरे ॥तुज०५॥

अर्थ–द्रव्यथकी जे पूज्यां. प्रहरण के० शस्त्र, कोश के० भंडार आदि शब्दथी अनेक पूज्यां, पण ते सर्वथी बेउ जे जिन प्रतिमा अने जिन दाढा, ते जूदांज कह्यां छे. जे कारणे प्रणाम, अथवा शक्रस्तवादिक बीजा कोइ स्थानके कह्यां नथी. तथा सामानिक देवे उत्तर वाल्यो, तेवारे पण प्रतिमा तथा दाढाज पूजवापणे वताव्यां, अने फल पण एनांज वताव्यां: ते माटे प्रगटपणे बे जूदांज-कह्यां छे. ए तो साचो भाव के० ए भाव ते साचो विवेक के० वेहेचीने भिन्न भिन्नपणे कह्यो छे. इति गाथार्थ ॥ ५ ॥

ते उपर द्रव्य भाववुं दृष्टांत कहे छे.

चक्ररयण जिण नाणनी, पूजा जे भरते कीध; लालरे ।
ज्यम ते त्यम अंतर इहां, समकित दृष्टि सुप्रसिद्ध; लालरे ॥ तुज० ६ ॥

अर्थ–जेम भरते के० भरतराजाए, चक्ररयणनी के० चक्ररत्ननी पूजा, तथा जिननाणनी के० ऋषभस्वामीना केवलज्ञाननी पूजा; एम पूजा पद बेउ ठामे जोडिए. ते कीध के० करी. ज्यम ते के० जेम चक्रनी पूजा, द्रव्यथी आलोकनुं उपकारी जाणी करी, अने ज्ञाननी पूजा ते भावथी आलोक तथा परलोकनुं उपकारी जाणी करी, त्यम अंतर इहां के० अहींयां सूर्याभ अधिकारे पण द्रव्यनुं तथा भाववुं एम अंतर जाणवुं. समकित दृष्टि सुप्रसिद्ध के० सम्यग्दृष्टि जीवने ए तो प्रसिद्ध छे. अर्थात् प्रगटछे. एटले मिथ्यात्व जेना हृदय मांहे होय तेने ए वे वात जुदी न भासे. इति भाव. एटले कुमतियां समकित नथी; एम पण देखाड्युं. इति गाथार्थ. ॥ ६ ॥

हवे कोइ कुमति कहे छे जे धन काढवाने अधिकारे 'हियाए सुहाए' इत्यादिक पाठ

कह्या छे. ते जेम आ लोकना सुखने अर्थे सूर्याभें पूज्यां तेहने पुव्विं तथा पच्छा ए बे शब्द परलोक वाचक छे एहेवुं देखाडे छे.

पहेले भव पूरव कहे, ज्ञाता दुर्दर संबंध; लालरे।
पच्छा कडुअ विषय कह्या, वली मृगापुत्र प्रबंध; लालरे ॥ तुज०७ ॥

अर्थ—पहेले भव के० गतभव, पूरवभव के० पूरव शब्दे कहे छे. कोण कहे छे? ते कहे छे. ज्ञाता के० छठ्ठुं अंग ज्ञातासूत्र कहे छे. ददुर संबंध क० नंद मणीआर देडका थया. ते संबंधमां एटले देडकाना संबंधमां पूर्व शब्दे गतभव छे. एम ज्ञातासूत्र कहेछे. इतिभाव. तथा च ज्ञातासूत्रं–'पुव्विं पिं णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स'। इत्यादि. ए रीते पूर्व शब्दे गतभव कह्यो. हवे पच्छा शब्दे आगलो अनागतभव देखाडे छे. पदने एक देशे पदना समुदायने उपचारीए माटे पच्छा कडुअ के० पछी कडुआ विपाक आवे. एवा विषय कह्या छे. क्यां कह्या छे? ते कहे छे. वली के० पूर्व शब्दनो अर्थ ज्ञाताए देखाड्यो; तेनी अपेक्षाए वली मृगापुत्र प्रबंध के० मृगापुत्रना संबंधमां कह्यांछे, यतः—अम्मताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा पच्छा कडुअविवागा अणुबंधुदुहावहा, अर्थ—अम्मताय के० हे माता पिता, मए के० में, भोगा के० भोग, भुत्ता के० भोगव्या. ते कहेवा छे? विसफलोवमा के० विषफलनी उपमाए छे. पच्छा के० पछी आवते भवे, कडुअविवागा के०कडवा विपाक छे जेहना, अणुबंधु के० परंपराए, दुहावहा के० दुःखना आपनार छे.

ए रीते श्रीउत्तराध्ययनमां मृगापुत्रे मातपिताने कह्युं. एम पच्छा शब्दे पण परभवनो अर्थ छे. एटले पूर्व पच्छा शब्द ते सूरियाभने आभव वाचक नथीः ॥ ७ ॥

हवे कोइ कुमति कहे छे जे तमे पूर्व पच्छानो जे रीते अर्थ कर्यो, तेम अर्थ करतां आ भव तो न आव्यो तेने उत्तर दे छे.

आगमेसीभद्दा कह्या; गइठिई कल्लाणा देव; लालरे।
तस पूरव पच्छा कहे, त्रिहुं काले हित जिन सेव; लालरे ॥ तुज०८॥

अर्थ—आगमेसिभद्दा के० आगल मनुष्यावतार पामीने मोक्ष जावुं छेः एवा कह्या छे तथा गइठिई कल्लाणा के० अहींयां कल्याण शब्द बेउने जोडीए. एटले ए अर्थ—गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा। इति. त्यहां गइ कल्लाणा के० गति जे आवती मनुष्य गतिने विषे कल्याण छे जेहने, तथा ठिइकल्लाणा के० स्थिति जे देवतानो भव, त्यां पण कल्याणछे. एवा देव के० सम्यग्दृष्टि देवता सूत्रे वखाण्या छे. यतः—'गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दा' इति ॥ आगमेसिभद्दा के० आगले भद्रकारीछे. ते माटे त्रणे भव आव्या. जे माटे सूर्याभ देव सम्यग्दृष्टि छे, ते भगवंत दाढा तथा जिन प्रतिमा पूजतां, तस पूरव पच्छा कहे के० ते देवने पूरव पच्छा कह्यां थकी, त्रिहुं काले हित के० त्रणे काले हित जाणवुं. जिन सेव के० परमेश्वरनी सेवा एवी छेः

हवे व्यतिरेके करी पूर्व पच्छा शब्दे अर्थापत्तिए त्रिकाल लेइए एम देखाडे छे.

जस पूरव पच्छा नहीं, मध्ये पण तस संदेह; लालरे ।
एम पहेले अंगे कह्युं, छे सूधो अर्थ ते एह; लालरे ॥ तुज० ९ ॥

अर्थ—जस पूरव पच्छा नहीं के० जेने पूर्वे तथा पछी नथी. मध्ये पण तस संदेह के० तेने वचमां पण संदेह जाणवो, एटले ए भाव जे, जेहने पूर्व अने पछी नथी, तेहने मध्ये संदेह. ते वारे एम आव्युं जे जेने पूर्व तथा पछी छे, तेहने मध्ये पण अवश्य छे. एम पहेले अंगे के०श्रीआचारांग सूत्रमां एम कह्युंछे. यतः—"जस्स नत्थि पुरापच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया ।" इति. जस्स नत्थि के० जेने नथी, पुरापच्छा के० पूर्व अने पछी, मज्झे तस्स कुओ सिया के०तेने मध्ये पण क्यांथी होय ? इति आचारांगे, छे सूधो अरथ ते एह के० ए अर्थ सूधो छे. पांशरो छे तेथीं सूर्याभने त्रिकाल हितकारी जिनपूजा छे. इति भाव. इति गाथार्थ ॥ ९ ॥

हवे कोइक वली कहे छे जे वांदवाने अधिकारे 'पेच्चाहियाए' कह्युं छे ते परभव हित आवे. पण अहींयां पच्छा शब्द छे, माटे आभवज हितकारी छे तेने उत्तर दे छे.

पच्छा पेच्चा शब्दनो, जे फेर कहे ते दुट्ठ; लालरे ।
शब्द तणी रचना घणी, पण अरथ एक छे पुट्ठ; लालरे ॥ तुज० १० ॥

अर्थ—पच्छा अने पेच्चा ए बे शब्दनो जे फेर कहे के० अर्थ शब्दगम्यमान छे माटे जे फेर अर्थ करे छे; ते दुट्ठ के० दुष्ट जाणवा, जे माटे, शब्दतणी रचना घणी के० शब्द-रचना यद्यपि घणी छे, पण अर्थ तो एकज छे. एवकार गम्यमानछे. पुट्ठ के० पुष्ट अर्थछे. इति गाथा अक्षरार्थ. हवे भावार्थ—जे पेच्चानो अर्थ जेम परभव छे, तेम पच्छानो अर्थ पण परभवज छे एम जाणवुं, पण शब्द फेर रचनाए भूलवुं नहीं. जेम वदनानाज अधिकारमां क्यहांक तो ॥ पेच्चाहियाए ॥ एम कह्युं छे, तथा क्यहांक तो 'इह भवे वा परभवे वा आणुगामियत्ताए भविस्सइ ' एवो पाठछे, ते माटे परभव अने पेच्चा, ए बे शब्दमां जेम फेर नथी, तेम पच्छा पेच्चा शब्दमां पण फेर न जाणवो. ते पच्छा शब्दे पच्छा कडुअविवागा इत्यादिक ठामे परभवनो अर्थ संभव देखाड्यो छे ॥ १० ॥

ए रायपसेणी सूत्रनो पाठ हतो, ते चर्चा युक्तिना उत्तर वाल्या. हवे सूरियाभ देवता आगल शुं करे ? ते कहे छे.

वांची पुस्तक रत्ननां, हवे लेइ धरम व्यवसाय; लालरे ।
सिद्धायतने ते गया, जिहां देवछंदनो ठाय ॥ लालरे ॥ तु० ॥ ११ ॥

अर्थ—वांची पुस्तक रत्ननां के० शाश्वता रत्ननां पुस्तक वांचे. ते वांचीने, हवे लेइ धरम व्यवसाय के० धर्मना व्यवसाय शब्दे उपकरण लेइने, सिद्धायतन के० सिद्धनुं आयतन जे घर तेने विषे ते गयो के० ते सूरियाभ देवता गयो. ज्यां देवछंदनुं स्थानक छे त्यां गयो. इति गाथार्थ ॥ ११ ॥

जिनप्रतिमा देखी करी, करे शिर प्रणाम शुभ बीज; लालरे।
पूष्प माल्य चूर्णे करी, वस्त्राभरणे वली पूज ॥ लालरे ॥ तु० ॥ १२ ॥

अर्थ—जिनप्रतिमा देखीने करे शिर प्रणाम के० मस्तके प्रणाम करे. शुभ बीज के० ते प्रणाम शुभ जे पुण्य तेनुं बीज छे, एटले पुन्यनुं बीज छे. पुष्प के० फूले करी तथा माल्य के० मालाए करी तथा चूर्णे करी तथा वस्त्रे करी तथा आभरण के० घरेणांएकरी, वली पूज के० पूजा करी. इति गाथार्थ ॥ १२ ॥

फूल पगर आगे करी, आलेखे मंगल आठ; लालरे।
धूप देई काव्य स्तवी, करे शक्रस्तवनो पाठ ॥ लालरे ॥ तु० ॥ १३ ॥

अर्थ—ते वार पछी फूल पगर के० फूलना ढगला, आगल करी, आलेखे मंगल आठ के० अष्ट मंगलीक ते आलेखे. यथा स्वस्तिक १ श्रीवत्स २ कलश ३ भद्रासन ४ शरावसंपुट ५ मत्सयुग्म ६ दर्पण ७ नंदावर्त ८ एवं अष्ट मंगल, धूप देई के० अनेक जातीना धूप देईने, काव्य स्तवी के० ते वार पछी अपुनरुक्त एकसो आठ काव्ये स्तवीने, करे शक्रस्तवनो पाठ के० छेहेली वारे नमुत्थुणंनो पाठ कहे. इति गाथार्थ ॥

ए वली सूत्र प्रमाणे गाथा बांधी. तथा च तत्सूत्रं—'तएणं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हइ, पोत्थयरयणं गिण्हित्ता पोत्थयरयणं विहडेइ, विहडित्ता पोत्थरयणं वाएइ, वाएइत्ता धम्मियं ववसायं गिण्हइ, गिण्हइत्ता पोत्थरयणं पडिनिक्खवेइ, पडिनिक्खवेइत्ता सीहासणाओ अब्भुठेइ, अब्भुठेइत्ता ववसायसभाओ पुरिमच्छिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता जेणव नंदापुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हत्थपायं पक्खालेइ, पक्खालेइत्ता आचंते चोक्खे सूइभूए एगं महं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं भिंगारं गिण्हेइ, गिण्हेइत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हइत्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तएणं सूरियाभं देवं बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगइआ कलसहत्थगया जाव अप्पेगइआ धूवकडुच्छयहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठओ समणुगच्छंति। तएणं सूरियामे देवे चउहिं सामाणिअसाहसीहिं जाव अन्नेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे सव्वबलेहिं जाव वाइअरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सिद्धायतणं पुरिच्छिमेणं दारेणं अणुपविसइ, पविसइत्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव अट्ठसयं जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जिणपडिमाणं

वच सुरेंद्र श्रामीकर

आलोए पणामं करेइ, करेइत्ता लोमहत्थयं गिण्हइ, गिण्हइत्ता लोमहत्थेणं परामुसइ, परामुसइत्ता गंधोदएणं ण्हावेइ, ण्हावेइत्ता गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ, अणुलिंपइत्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूस जुअलाइं निअंसेइ, निअंसेइत्ता पुप्फारुहणं १ मल्लारुहणं २ चुण्णारुहणं ३ वत्थारुहणं ४ आभरणारुहणं ५ करेइ, करेइत्ता आसत्तो उसत्त विउल-वट्टवग्धारियमल्लदामकलावं करेइ, करेइत्ता करयलपब्भिग्गहियं करयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेइत्ता जिणपडिमाणं पुरओ अच्छेहिं सण्णेहिं रययामएहिं अत्थराहिं तंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलिहइ, तं जहा–सत्थिय जाव दप्पणं, तयाणंतरं च णं चंदप्पभरयणवयरवरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंतगंधुध्धुआभिरामं गंधवट्टिं विणिम्मुअंतं वेरुलियमयकडुच्छुयं पग्गहिऊणं धूवं दाऊण जिणवराणं, अट्ठसयं विसुद्धजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ, संथुणइत्ता पच्छा सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ । वामं जाणु अंचेइ अंचेइत्ता दाहिणं जाणु धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवेसेइ, णिवेसेइत्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ, करेइत्ता जाव करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी, नमुत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं ॥" इत्यादि रायपसेणी उपांगे.

अहींयां कुमति कहे छे के "देवतानी करणी हुं मानुं नहीं. तेने पूछीए जे देवता, जे करणी करे तेमां पुण्य तथा पाप बंधाय के नहीं ? जो कहेशो के बंधाय तो ए पूजा प्रमुख करतां पुण्य बधाणुं के पाप? तेनो उत्तर देजो. त्यारे कहेशे के कांइ न बंधाय. ते वारे जीव समयमात्र सात कर्म बांध्या विना रहे नहीं, ते केम मेलवशो? ते कहो. तथा कोइक कुमति कहे छे जे 'देवता तो 'नोधम्मिआ छे' तेनो उत्तर जे चारित्रनी अपेक्षाए तो नोधम्मिआ सुखे कहो पण श्रुत समकितनी अपेक्षाए नोधम्मिआ केम कहेवाशे ? ते विचारजो. वली श्री भगवती सूत्रने विषे अविरती देवताने कहीए तो ॥ निट्ठुरवयणमेयं ॥ एम कह्युं छे. इत्यादिक युक्ति, उपाध्याय श्री यशोविजयजीकृत नोधम्मिआ निषेध ग्रंथथी जाणवो

वली देवकरणी मानवीज घटे छे. ते देखाडे छे,

जेहना स्वमुखे जिन कहे, भवसिद्धि प्रमुख छ बोल; लालरे ।
तास भगति जिनपूजना, नवि माने तेह निटोल ॥ लालरे ॥ सु० ॥१४॥

अर्थ–जेहना के० जे सूरियाभ देवताना, स्वमुखे जिन कहे के० जिनेश्वर अर्थात् श्रीवीरस्वामी पोताने मुखे कहेता हवा. भवसिद्धि प्रमुख के० भवसिद्धि प्रमुख, प्रमुख शब्दे बीजा अभवसिद्धि १ समकिती मिथ्यात्वी, २ परित्त संसारी अनंत संसारी ३ सुलभबोधी

दुर्लभबोधी ४ आराधक विराधक ५ चरम अचरम ६ ए छ बोल लइए. इति. भावार्थ. जे देवताना ए छ बोलमां जे रुडा बोल ते प्रभुए बताव्या. तुं भव्य छे. १ तुं समकिती छे, २ परित्त संसारी छे, ३ सुलभ बोधी छे, ४ आराधक छे, ५ चरम छे, ६ एम बताव्युं, इति भाव. तास भगति जिनपूजना के० ते सूरियाभनी भक्ति आगल कहिशुं ते, तथा जिन पूजना जे पूर्वे कही ते, नवि माने के० जे मूर्ख माने नहीं, ते पुरुष निटोल के० अटोल-काटलुं लोक प्रसिद्ध कहेवाय छे, तेहवा जाणवा. इति गाथार्थ ॥ १४॥

हवे आलावानो अर्थ—तए णं से सूरियाभे देवे के० तेवारे ते सूरियाभ देवता, पोत्थय-रयणं गिण्हइ के० पुस्तकरत्न लीए. लेइने, पोत्थयरयणं विहडिइ के० पुस्तकरत्न उघाडे, उघाडीने, पोत्थयरयणं वाएइ के० पुस्तकरत्न वांचे. वांचीने, धम्मियं ववसायं गिण्हइ के० धर्म संबंधी व्यवसाय ले. अहींयां धर्म व्यवसाय ते पूजाना उपकरण ते ले. पोत्थयरयणं पडिनिक्खवइ के० पुस्तकरत्न पाछुं मूके. पडिनिक्खवेइत्ता के० ते मूकीने, सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ के० सिंहासनथकी ऊठे. अब्भुट्ठइत्ता के० ऊठीने, ववसायसभाओ के० व्यवसाय सभाथकी, पुरिमच्छिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमइ के० पूर्वदिशिने बारणे नीकले, नीकलीने जेणेव णंदापुक्खरणी के० ज्यां नंदा नामे वाव्य छे, तेणेव उवागच्छइ के० त्यां आवे. आ-वीने, हत्थपाए पक्खालेइ पक्खालेइत्ता के० हाथ पग पखाले. पखालीने, आयंते के० नव द्वार श्रोतनां (देहनां) छे, ते शुद्ध पाणीए पखालवे करीने, आंचंत के० ग्रह्युं छे आचमन जेणे, चोक्खे के० थोडो पण मेल राखे नहीं, एटला माटे सूइभूए के०पवित्र थया. एगं महं के०एक मोहोटो, सेयं के० श्वेत उज्वल, रययामयं के० रुपानो, विमलसलिलपुण्णं के० निर्मल पाणीए भर्यो, भिंगार के० कलश, गिण्हेइ के० ते लेइने, जाइ तत्थ उप्पलाइं के० त्यां जे उत्पल एटले कमल, जाव सहस्सपत्ताइं के० यावत् हजार पांखडीनां कमल. यावत् शब्दे बीजा कमलना भेद लेवा ते लेइने, जेणेव सिद्धायतणे के० ज्यां सिद्धायतन एटले जिनघर छ, तेणेव पहारेत्थ गमणाए के० त्यां जावाने उद्यम करे. तए णं सूरियाभं देवं के० ते वार पछी सूरियाभ देवने पूछे, बहवे आभिओगिया देवा देवीओ के० घणा आ-भियोगिक देवता देवीओ, अप्पेगइया कलसहत्थगया के० केटलाएकना हाथमां कलश रही गया छे. जाव अप्पेगइया धूवकडुच्छुयहत्थगया के० यावत् केटलाएकना हाथमां धूपना कडछा रही गया छे. अहींया यावत् शब्दथी केटलाएकना हाथमां भृंगार कमल प्रमुख लेवा, सूरियाभं देवं पिट्ठओ समणुगच्छंति के० सूरियाभदेवतानी पूंठे चाल्या जाय, तए णं सूरियाभे देवे के० ते वार पछी सूरियाभ देवता, चउहिं सामाणियसाहस्सिहिं के० चार हजार सामानिक देवताए, जाव अन्नेहिं देवेहिं देवीहि सद्धिं के० बीजा पण देवता देवीए, संपरिवुडे के० परिवर्यो. अहींयां यावत् शब्दे बीजा पर्षदाना, कटकना, आत्म-रक्षक. इत्यादिक देवता लेवा. सव्वबलेणं के० सर्व बले सहित जाव वाइयरवेणं के० वाजीत्रना शब्द वाजते, जेणेव सिद्धायतणे के० ज्यां सिद्धायतन छे. तेणेव उवागच्छइ

वच सुरेंद्रश्रामीकर'

उवागच्छइत्ता के० त्यां आवे, त्यां आवीने, सिद्धायतणं पुरित्थिमेणं दारेणं के० सिद्धायतन प्रत्ये पूर्वदिशिने बारणे, अणुपविसइ के० प्रवेश करे, प्रवेश करीने, जेणेव देवच्छंदए के० ज्यां देवच्छंदो छे, जेणेव अट्ठसयं जिणपडिमाओ के० ज्यां एकसो आठ जिन प्रतिमाओ छे, तेणेव उवागच्छइ के० त्यां आवे. आवीने जिनपडिमाणं आलोए के० जिन प्रतिमाने दीठांथकां, पणामं करेइ के० प्रणाम करे. प्रणाम करीने. लोमहत्थयं गिण्हइ के० मोरपीछी ले. लेइने, लोमहत्थेणं पराम्रुसइ के० ते मोरपीछीए पूंजे, पूंजीने, गंधोदएणं ण्हावेइ के० सुगंध पाणीए नवरावे. नवरावीने, गोसीस चंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ के० गोशीर्षचंदन जे बावनाचंदन, तेणे करीने गात्र जे प्रतिमानुं शरीर, तेहने विलेपण करे. करीने, जिनपडिमाणं के० जिनप्रतिमाने, अहयाइं के० अक्षत. देवदूसजुअलाइं के० देवदूष्यनो युगल एटले जोडो, नियंसेइ के० पहेरावे. पेहेरावीने. पुप्फारुहणं के० फूलनुं आरोपण करे. मल्लारुहणं के० फूलनी मालनुं आरोपण करे. चुण्णारुहणं के० वास बरास प्रमुख सुगंधी चूर्णनुं आरोपण करे. वत्थारुहणं के० वस्त्रनुं आरोपण करे. आभरणारुहणं के० मुकुट प्रमुख आभरणनुं आरोपण करे. करीने आसत्तो के० भूमिए लाग्यो उसत्त के० उपर लाग्यो विउल के० विस्तीर्ण, वट्ट के० गोल. वग्घारिय के० लंबायमान. एवो मल्लदामकलावं के० माल्यदाम जे माला तेनो समूह करे. करयलपडिग्गहियं के० हस्त तलने विषे ग्रह्या. करयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं के० हस्ततलथी भ्रष्ट थयां मूक्यां एहवां, दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं के० पंचवरणी फूले, मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं के० मूक्या छे पुप्पना पुंज. तेहने उपचारे सहित करे. करीने, जिणपडिमाणं पुरओ के० जिन प्रतिमानी आगल, अच्छेहिं के० निर्मल, सण्हेहिं के० सुकोमल, रययामएहिं के० रूपमयी. अत्थराहिं के० ढुंकडो वस्तुनो प्रतिबिंब पडे एहवा निर्मल, तंदुलेहिं के० चोखे करीने, अट्ठमंगले आलिहइ के० अष्टमंगल आलेखे, तं जहा के० ते कहे छे. सत्थिय के० स्वस्तिक, जाव दप्पण के० यावत् दर्पण कहेवुं, यावत् शब्दे श्रीवत्स प्रमुख लेवां. तयाणंतरं च णं के० ते वार पछी चंदप्पभरयण के० चंद्रप्रभ रत्न, वरय के० वज्र, वेरुलिय के० वैडूर्य रत्नमयी, विमलदंड के० निर्मल छे दंड जेनो, वली कंचणमणीरयणभत्तिचित्तं के० कनक मणिरत्ननी भाति विचित्र छे, कालागुरु के० कृष्णागुरु, पवर के० प्रधान, कुंदरुक ते प्रसिद्ध, तुरुक्कनामा गंधद्रव्य विशेष, डज्झंत धूव के० दह्यमान जे दशांगादि धूप. तेहनो मघमघंत के० महमहाटगंध धूआभिराम के० प्रगट थयो गंध तेणे अभिराम, गंधवट्टिं विणिमुयंतं के० गंध द्रव्य गुटिका सरखो सुगंध मूकते, वेरुलियमयकडुच्छयं के० वैडूर्य रत्नमय कडछा, पग्गहिऊणं के० लेइने, धूवं दाऊणं जिणवराणं के० जिनवरने धूप देइने, अट्ठसयं के० एकशो आठ, विसुद्ध जुत्तेहिं के० शुद्ध युक्त, अपुणरुत्तेहिं के० फरी फरीने तेहनो तेह पाठ न आवे. एवा महावित्तेहिं के० महाकाव्ये, संथुणइ के० स्तवना करे. करीने. पच्छाय सत्तट्ठपयाइं के० पाछा सात पगलां, पच्चोसक्कइ के० पाछो ओसरे. वामं जाणु अंचेइ के० डावो ढींचण ऊंचो राखे

दाहिणं जाणु के० जमणो ढींचण, धरणितलंसि साहट्टु के धरतीने विषे थापे. तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसइ के० त्रणवार मस्तक धरतीए थापे. थापीने, एगसाडीउत्तरासंगं करेइ के० एक साडो उत्तरासंग करे. करीने, जाव करयलपरिग्गहियं दसनहं के० हस्ततल परिग्रहित दश नख, सिरसावत्तं के० मस्तके आवर्तन करीने, मत्थए अंजलिं कट्टु के० मस्तके अंजली करीने, एवं वयासी के० एम कहे. 'नमुत्थु णं' कहे. एहनो अर्थ टीकाथी जाणवो. अहींयां कहेतां ग्रंथ वधी जाय छे इति.

हवे ते छ बोल रायपसेणी मध्ये कह्या छे तथा हि-"तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव उट्ठेत्ति उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ एवं वयासी, अहण्णं भंते सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए? १ सम्मदिट्ठिए मिच्छादिट्ठिए? २ परित्तसंसारीए अणंतसंसारीए? ३ सुलहबोहिए दुल्लहबोहिए? ४ आराहए विराहए? ५ चरमे अचरमे? ६ सूरियाभाइ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी, सूरियाभा तुम णं भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए, जाव चरमे णो अचरमे" अस्यार्थ-तए णं से सूरियाभे देवे के० ते वारे ते सूरियाभ देवता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीए क० श्रमण भगवान् महावीरनी समीपे, धम्मं सोच्चा निसम्म के० धर्म सांभलीने, हट्ठ जाव उट्ठेति क० हर्ष पामीने यावत् उठे. उठीने, समणं भगवं महावीरं के० श्रमण भगवान् महावीर मत्ये, वंदइ नमंसइ के० वंदना करे. नमस्कार करे, एवं वयासी क० एम कहे. अहण्णं भंते सूरियाभे देवे के० हे भगवन्, हुं सूर्याभ नामे देवता. किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए के० शुं भव्य छुं किं वा अभव्य छुं? सम्मदिट्ठी के० सम्यक्दृष्टि छुं किं वा मिथ्यादृष्टि छुं? २ परित्तसंसारिए अणंतसंसारिए के० परित्त संसारी छुं किं वा अणंत संसारी छुं? ३ सुलहबोहिए दुलहबोहिए के० सुलभबोधि छुं एटले परभवे जिन धर्म प्राप्ति सोहली छे जेने एवो छुं के दुर्लभबोधि छुं? ४ आराधक छुं के विराधक छुं. ५ चरमे के० देवतानो भव छेल्लो छे के अचरमे के० घणा भव करवा छे? सूरियाभाइ के० सूर्याभने बोलावीने श्रमणभगवान् महावीर सूर्याभने एम कहे. सूर्याभा, तुमणं भवसिद्धिए के० हे सूर्याभ, तु भवसिद्धिक छे, अभवसिद्धिक नथी. यावत् चरम छे, अचरम नथी. एम छ बोल रुडा कहेवा. बीजा निषेध करवा. इति गाथार्थ ॥ १४ ॥

हवे सूर्याभनी भक्ति देखाडे छे.

प्रभु आगल नाटक कर्युं, भगति सूरियाभने सार; लालरे।
भगतितणां फल शुभ कह्यां, श्री उत्तराध्ययन मोझार; लालरे॥तु०॥१५

अर्थ-प्रभु आगल नाटक कर्युं. ए स्पष्ट छे, ते माटे भक्ति सूरियाभने सार के० सूरि-

वच सुरेंद्रश्रामी

याभ देवताने सार एटले प्रधान भक्ति छे. तथा च तत् सूत्रं–"अहण्णं भंते देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वयं गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं बत्तीसइ बद्धं नट्टविहि उवदंसेमि ॥" अर्थ–अहण्णं भंते देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वयं के० सूर्याभ प्रभुजीने कहे छे. हुं देवाणुप्रियनी भक्तिपूर्वक, गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं के० गौतमादिक श्रमण निग्रंथने, बत्तीसइ बद्धं नट्टविहिं उवदंसेमि के० बत्रीश विधि नाटक देखाडु? इति रायपसेणी मध्ये, ए सूत्रमां भक्तिपूर्वक एवो पाठ छे. माटे जाणीए छैए जे सूरियाभने भक्ति, प्रधान छे अने भक्तिना फल तो शुभ के० उत्तम कह्यां छे श्रीउत्तराध्ययन मोझार के० श्रीउत्तराध्ययन मध्ये अध्ययन ओगणत्रीशमे छे. तथा च तत्पाठः–" गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाएणं भंते! जीवे किं जणइ? गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए विणयपडिवत्ति जणइ। विणयपडिवन्नेणं जीवे अण्णच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुंभइ. वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए माणुस्सदेवसुगइओ निबंधइ। सिद्धिसुगइं च विसोहेइ। पसत्थाइंच णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणइमत्ता भवइ।" अस्यार्थ–गुरुसाहम्मिय-के० साधर्मिकनी गुरुनी, सुस्सूसणयाएणं के० सेवा करतो, भंते के० हे भगवन्, किं जणइ के० शुं उपार्जे? गुरु उत्तर कहे छे. गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए के० गुरु अने साधर्मिकनी सेवा करतो, विणयपडिवत्तिं के० उचित कार्य अंगीकार करे, विणयपडिवन्नेणं जीवे के० विनयप्रतिपन्न जीव, अण्णच्चासायणसीले के० गुर्वादिकना अवर्णवाद न बोले, ते वारे नारकी तिर्यंचनी योनि तथा मनुष्य देवतानी दुर्गतिने रुंधे, वण्ण के० प्रशंसा, संजलणं के० गुणनुं प्रगट करवुं, भत्ति के० अजलो प्रमुख करवी, बहु मान ते अंतर प्रीति–एटलां वानां करतो मनुष्यनी अने देवतानी. सुगइओ निबंधइ के० सद्गतिओ बांधे, सिद्धि सुगइं च–विसोहेइ के० सिद्धिरूप सद्गति ते रत्नत्रय तेहने विशुद्ध करे, परभवे मुक्ति साधे. वली, अन्ने बहवे जीवे के० बीजा घणा प्राणीओने, विणमइत्ता भवइ के० विनयवंत करे उक्तंच–"ठिओ ठावए पर" इति. गाथार्थ ॥ १५ ॥

ए सूरियाभनो अधिकार एकज ए स्तवनमां देखाड्यो. एम केटला कहीए? सूत्रमांतो ठाम ठाम कह्यां छे, माटे अति देश करे छे.

अंग उपांगे घणे कही, एम देव देवीनी भक्ति; लालरे।
आराधकता तेणे थई, इंहां तामली इंद्रनी युक्ति; लालरे ॥तु० ॥ १६ ॥

अर्थ–अंग के० ज्ञातासूत्र प्रमुखने विषे देवीओ अनेक भवनपतिमां उपनीओ छे. त्यां पण सूर्याभनीज रीति कही छे. तथा भगवतीमां इंद्रादिकनां नाटक घणां वखाण्यां छे. तथा, उपांग के० जीवाभिगमादिकमां विजयप्रमुख देवतानो तथा तेवी रीते बीजा पण जण दरवाजाना घणी एमज कह्या छे. घणे कही के० एरीते घणे अंग उपांगे कही छे. कहींक तो करी एवो पाठ छे. त्यां भक्ति करी, एवो अर्थ करीए. एम देव देवीनी भक्ति ए स्पष्ट छे.

वली ठाणांगमध्ये चोथेठाणे नंदीश्वर द्वीपे घणा सुर असुरादिकोए पूजा भक्ति प्रमुख करयां छे तथा ते देवता देवीओने आराधक कही बोलाव्यां छे. ते आराधकपणुं तो. तेणे थइ के० ते वीतरागनी भक्तिएज थइ छे. अहींयां आराधकतानी अपेक्षाए थइ एम कह्युं छे, अहीयां कोइ कहेशेके ए जिन भक्तिए आराधकता नथी. एतो पाछले भवे करणी करी छे, ते अपेक्षाए आराधकता कह्या छे. एम कहेनारने उत्तर देछे. इहां तामली इंद्र के० तामली नामा तापस ते बीजा ईशानदेवलोकेइंद्र थया, तेहनी युक्ति जाणजो. इति गाथाक्षरार्थ.

भावार्थ तो ए छे के तामली नामा तापस, पोताने तपने कष्टे करी बीजा देवलोकने विषे इंद्र थया, तेमणे प्रभु आगल नाटक करी पूछ्युं जे हुं आराधक छुं किं वा विराधक छुं? इत्यादिक छ बोलनी पृछा श्रीभगवतीसूत्रमा कही छे. तेमां कह्युं जे "आराधक छो" एम कह्युं छे, माटे पूछीए छैए जे परभवनी अपेक्षाए आराधक होततो एतो परभवे तापस हता, तेथी केम परभव कहेवाशे? ते माटे आ भवनी प्रभुभक्तिज आराधकता कही छे. इति भाव इति गाथार्थ ॥ १६ ॥

ए जिनेश्वरनो थापनानिक्षेपो पूजवा योग्य छे एम कह्युं. हवे कोइ कहे छे, "ए अचेतन छे. एमां शो गुण छे?" तेनो उत्तर कहे छे जे, जिनदाढा पण अजीव छे तेमां शो गुण छे? अने पूजवा योग्य तो छे ते देखाडे छे.

भक्ति जीतधर्मे करी, लीए दाढा अवर जिन अंग; लालरे ।
थूभ रचे सुर त्रण ते, कहे जंबूपन्नत्ती चंग; लालरे ॥ तु० ॥ १७ ॥

अर्थ—भक्ति के० कोइक देवता भक्ति जाणी ले छे. जीत के० अपरदेवता पोतानो जीतव्यवहार जाणी ले छे. धर्मे करी के० कोइक धर्मे करी लेता हवा, एटले धर्म जाणी लेता हवा. लीए के० एटले प्रकारे ले. दाढा के० दाढा, अवर के० वली बीजा देवता, जिनअंग के० हाड दांत प्रमुख ले. तेवार पछी, सुर के० देवता, त्रण थूभ, रचे के० करे, कहे जंबूपन्नत्ती के० जंबू द्वीप पन्नत्ती एम कहे छे. आद्यंत ग्रहणे मध्यग्रहणमिति न्यायात्. जंबूपन्नत्ती शब्दे जंबूद्वीपपन्नत्ती लेइए, एटले जंबूद्वीपपन्नत्तीमध्ये एम कहे छे. चंग के० मनोहर. इति. तथाच तत्पाठ—"तए णं सक्के देविंदे देवराया उवरिल्लं दाहिणं सकहं गिण्हइ । ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गिण्हइ । चमरे असुरिंदे असुरराया हिठिल्लं दाहिणं सकहं गिण्हइ । वली वइरोयणिंदे वइरोयणराया हिठिल्लं वामं सकहं गिण्हइ । अवसेसा भवणवई जाव वेमाणिया देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं गिण्हइ । केइ जिणभत्तिए केई जीयमेय तिकट्टु केई धम्मो त्तिकट्टु गिण्हति । तए णं सक्के देविंदे देवराया भवणवई जाव वेमाणिया देवा एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया सव्वरयणामए महइमहालए तओ चेइयथूभे करेह, एगं भगवतो तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं । तए णं बहवे जाव करेंति । तए णं ते बहवे भवणवई जाव वेमाणिया देवा तित्थगरस्स परि-

निव्वाणमहिमं करंति जेणेव णंदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छंति।" व्याख्या—तए णं सक्के देविंदे देवराया के० तेवारे शक्र देवेंद्र देवतानो राजा, उवरिल्लं दाहिणं के० जमणी उपरली, सकहं के० दाढा, गिण्हइ के० ग्रहे, ईशाणे देविंदे देवराया के० ईशान देवेंद्र देवतानो राजा, उवरिल्लं वामं सकहं गिण्हइ के० डाबी उपरनी दाढा लीए. चमरे असुरींदे असुरराया के० चमर असुरकुमारनो इंद्र, असुरकुमारनो राजा, हिठिल्लं दाहिणं सकहं गिण्हइ के० जमणी हेठली दाढा लीए. वली वइरोयणिंदे वइरोयणराया के० वली नामा वैरोचन इंद्र वैरोचनराजा, हिठिल्लं वामं सकहं गिण्हइ के० डाबी हेठली दाढा लीए. अवसेसा के० बीजा शेष, भवणवइ जाव वेमाणिया देवा के० भवनपति यावत् वैमानिक देवता. जहारिहं के० जेम जेने योग्य होय ते, अवसेसाइं के० शेष थाकतां, अंगमंगाइं गिण्हइ के० अंगोपांग लीए. केइ जिणभत्तीए के० कोइक देवता जिननी भक्ति जाणी लीए, केइ जियमेयं तिकट्टु के० कोइ जीत आचार छे, एम करीने लीए, केइ धम्मो तिकट्टु गिण्हइ के० कोइक धर्म छे एम करीने लीए. तए णं सक्के देविंदे देवराया के० तेवार पछी शक्र देवेंद्र देवराजा, भवणवइ जाव वेमाणिया देवा एवं वयासी के० भवनपति प्रमुख देवता एम कहे, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया के० शीघ्र शीघ्र हे देवानुप्रिय! सव्वरयणामए के० सर्व रत्नमयी, महइमहालए के० अति मोटी, तओ चेइअथूभे करेह के० त्रण चैत्यस्तूभ करो. एगं भगवओ तित्थगरस्स के० एक भगवान् तीर्थंकरनी, एगं गणहराणं के० एक गणधरनी, एगं अवसेसाणं अणगाराणं के० एक शेष अणगारनी. तए णं के० तेवार पछी, बहवे जाव करेंति के० घणा भवनपति यावत् चार निकायना देवता थूभ त्रण करे. तए णं के० ते वारे ते भवनपति प्रमुख देवता, तित्थगरस्स के० तीर्थंकरनो, परिनिव्वाणमहिमं करंति के० निर्वाण महोत्सव करे. जेणेव णंदीसरे दीवे के० ज्यां नंदीश्वर द्वीप छे. तेणेव उवागच्छंति के० त्यां आवे इत्यादिक पाठ छे. इति जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति पाठ इतिगाथार्थ ॥१७॥

वली एज वात विशेषे कहे छे.

शतक दशमे अंग पांचमे, उद्देशे छठे इंद; लालरे।
दाढ तणी आशातना, टाले ते विनय अमंद; लालरे॥ तु० ॥१८॥

अर्थ—शतक दशमे अंग पांचमे के० पांचमुं अंग श्री भगवतीसूत्र—तेनुं दशमुं शतक—तेने उद्देशे छठे के० छठा उद्देशाने विषे, इंद के० चमरेंद्र प्रमुख इंद्र ते, दाढ तणी आशातना टाले के० दाढानी आशातनाओ टाळे छे. ते विनय अमंद के० ए तीव्र आकरो विनय जाणवो. इति गाथाऽक्षरार्थ. भावार्थ तो ए छे जे, चमरेंद्र प्रमुख सुधर्मा सभा मध्ये विषय प्रमुख नथी सेवता, ते सुधर्मा सभा मध्ये परमेश्वरनो दाढाओ छे, तेनी आशातना टाळवा माटे नथी सेवता. इति भाव ॥ १८ ॥

इहां ए स्तवनने विषे तो दशमा शतकना छठा उद्देशानी साख लखी, अने श्री भग-

वती सूत्रमां जोतां तो दशमा शतकना पांचमा उद्देशामां ए पाठ छे. ते माटे जाणीए छैए जे कोइ धुरथीज लखनारनो दोष छे. अन्यथा उपाध्यायजी एम आणे नहीं, एहवी प्रतीति छे. अथवा रायसहत्तिए-अनाभोगे उपाध्यायजीए एम आण्युं छे. यतः-"नहि नामानाभोगः छद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति । ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानावरणप्रकृतिकर्म्म ॥१॥" हवे ते पाठ लखीए छैए.-"चमरे णं भंते! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणिए सुहम्माए सभाए चमरंसि सिंहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नो पभू जाव विहरित्तए। गोयमा! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचाए रायहाणीए सुहम्माए सभाए माणवए चेइअखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु वहुइओ जिणसकहाए सन्निरिक्खत्ताए चिट्ठंति। जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अन्नेसिंच बहूण असुरकुमाराणां देवाणं देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पुयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति,से तेणट्ठेणं अज्जो एवं वुच्चइ णो पभू जाव विहरित्तए। पभू णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सुहम्माए सभाए चमरंसि सिंहासणंसि चउसट्ठिए सामाणिय साहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अण्णेहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महया हयनट्ट जाव भुंजमाणे विहरित्तए? हंता केवलं परियारिट्ठीए नो चेव णं मेहुणवत्तियाए॥" व्याख्या-चमरेणं भंते के० हे भगवन्! चमरो, असुरिंदे के० असुरदेवनो इंद्र, असुरकुमारराया के० असुरकुमारनो राजा, चमरचंचाए रायहाणीए के० चमरचंचानामे राजधानीने विषे, सुहुम्माए सभाए के० सुधर्मानामा सभाने विषे. चमरंसि सिंहासणंसि के० चमरनामना सिंहासनने विषे रह्यो. तुडिएणंसद्धिं के० तुटित जे इंद्राणीनो समुह ते साथे, दिव्वाइं के० देवसंबंधी, भोगाइं के० भोग, भुंजमाणे के० भोगवतो थको, विहरित्तए के० विचरे. प्रभुजी कहे छे. णो इणट्ठे समट्ठे के० ए अर्थ समर्थ नहीं. एटले भोग न भोगवे, से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ के० हे भगवन्, शामाटे एम कहो छो? णो पभू जाव विहरित्तए के० न समर्थ भोग भोगवतो विचरवाने. एम पूछे थके भगवान् कहेछे. हे गोयम, चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो के० चमरो असुरेंद्र असुरकुमार राजानी, चमरचंचाए रायहाणीए के० चमरचंचा राजधानीमां, सुहम्माए सभाए के० सुधर्मा सभाने विषे, माणवए चेइयखंभे के० माणवकनामा चैत्यस्थंभने विषे वइरामएसु के० वज्रमयी, गोलवट्टसमुग्गएसु के० घणा गोल डावडा छे. तेहने विषे, जिणसकहाओ के० जिनेश्वरनी दाढाओ, सन्निरिक्खत्ताओ चिट्ठंति के० थापी थकी छे. जाओ णं के०जे दाढाओ, चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो के० चमरो, असुरेंद्र, असुरकुमार राजाने तथा अन्नेसिं च के० बीजा पण देवताने, बहुणं असुरकुमाराणं के० घणा असुरकुमार, देवाणं के० देवताने,

देवीण य के० देवीओने, अच्चणिज्जाओ के० अर्चवा योग्य छे. वंदणिज्जाओ के० वांदवा योग्य छे. णमंसणिज्जाओ के० नमस्कार करवा योग्य छे. पूयणिज्जाओ के० पूजवा योग्य छे. सक्कारणिज्जाओ के० सत्कार करवा योग्य छे. सम्माणणिज्जाओ के० सन्मान करवा योग्य छे. कल्लाणं मंगलं के० कल्याणकारी, मंगलकारी. देवयं चेइयं के० देवताना चैत्यनी परे. पज्जूवासणिज्जाओ के० सेवा करवा योग्य, भवंति के० छे. से तेणट्ठेणं अज्जो एवं वुच्चइ के० हे आर्य, ते माटे एम कहीए छैये. णो पभू जाव विहरित्तए के० नथी समर्थ, यावत् देवीओ साथे भोग भोगववाने. फरी पूछ्युं जे, चमरो असुरकुमार चमरचंचा राजधानीने विषे सुधर्मा सभामां चमरसिंहासनने विषे बेठो. चउसट्ठिए सामाणियसाहस्सीहिं के० चोसठ हजार सामानिक देवता साथे, तायत्तीसाए के० तेत्रीश त्रायत्रिंशक साथे, जाव अन्नेहि असुरकुमारेहि, इत्यादिक सुगम छे. इत्यादि भगवतीसूत्रे शतक दशमे उद्देशे पांचमे. इहां परिचारणऋद्धि के० नाटय पूजामांहे स्त्रीशब्द श्रवणादिक परिचारण करे, पण मैथुन संज्ञाए सुधर्मासभामां शब्दादिक न सेवे. ए रीते जेम चमरेंद्रलगे एटले भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक तथा तेहना लोकपालना आलावा छे. ते सर्व अर्थी होतो जोज्यो.

हवे अहींयां कोइ पूछे जे भगवतीसूत्रमां तो एटलुं कह्युं जे "सुधर्मासभामां दाढाओ छे, माटे विषय वात न करे पण ते करतां आशातना थाय, एम क्यां कह्युं छे?" एवी मूर्खनी आशंका धरीने लखीए छैए जे सांभल, श्री उववाइ प्रमुख सूत्रमांहे अनाशातना विनय कह्यो छे, ते सर्व परमारथथी जोतां अरिहंतनोज विनय जाणवो.

हवे एवा अधिकार सांभलीने ते कुमति बोल्या जे "देवता तो अविरति, अपच्चखाणी छे, नोधम्मिया छे. ए देवतानी करणी कोण लेखामां गणे छे? ते माटे ए देवताए एटलां वानां कर्यां छे, पण अमे तो एनी करणी मानता नथी." एम देवताने नोधम्मिआ कही कहीने निंदे छे तेने शिखामण दिए छे.

समकितदृष्टि सुर तणी । आशातना करशे जेह ॥ लालरे ॥
दुर्लभबोधि ते थशे। ठाणांगे भाख्युं एह ॥ लालरे ॥ तु० ॥१९॥

अर्थ–सम्यक्दृष्टि सुरतणी के० सम्यग्दृष्टि देवतानी, आशातना करशे जेह के० जे प्राणी आशातना करशे, अवर्णवाद बोलशे, दुर्लभबोधि ते थशे के० ते प्राणी दुर्लभबोधि थाशे. एटले आगल बोधि बीजनी सामग्री दोहली मलशे. इति भाव. ठाणांगे भाख्युं एह के० एवी वात ठाणांगसूत्र जे त्रीजुं अंग तेमां कही छे. यदुक्तं–"पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लहबोहियत्ताए कम्मं पकरेंति तं जहा अरिहंताणं अवण्णं वयमाणे १ अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे २ आयरियउवज्झायाणं अवण्णं वयमाणे ३ चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे ४ विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवण्णं वयमाणे ५" व्याख्या–पंचहिं–

ठाणेहिं के० पंच स्थानके, जीवा के० जीवने, दुल्लहबोहित्ताए के० दुर्लभबोधिपणुं एटले परभवे जिनधर्म प्राप्ति दोहली होय. कम्मं पकरेंति के० कर्म बांधे. तं जहा के० ते पांच प्रकार देखाडे छे. अरिहंताणं अवण्णं वयमाणे के० अरिहंतना अवर्णवाद बोलतो १ अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे के०अरिहंतना परूप्या धर्मना अवर्णवादने बोलतो. २ आयरियउवज्झायाणं अवण्णं वयमाणे के० आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद बोले ३ चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे के० चतुर्विध संघना अवर्णवाद बोलतो ४ पांचमा बोलनो अर्थ आगल लख्यो छे, पण एटलो फेर जे अवर्णवाद बोलतो दुर्लभबोधिपणुं करे. तथा वर्णवाद ते जश बोलतो थको जीव सुलभबोधिपणुं करे. इति ठाणांगे ॥ इति गाथार्थ ॥ १९ ॥

ए जेम समकिती देवताना अवर्णवाद बोलतां दुर्लभबोधी थाय तेम एनो जश बोलतां सुलभबोधी पण थाय. ते देखाडे छे.

तेहने जश बोले कह्युं । वली सुलभ बोधित थाय ॥ लालरे ॥
तेणे पूजादिक तेहनां । करणी शिवहेतु कहाय ॥ लालरे ॥ तु० ॥२०॥

अर्थ—तेहने के०ते समकितदृष्टि देवतानो जश बोले के० वर्णवाद बोलतां, कह्युं. के० श्री ठाणांग मध्येज कह्युं छे. ठाणांग मध्ये एटलो पाठ अर्थ गम्यथी लइए. वली के० ते दुर्लभबोधिनी अपेक्षाए, सुलभबोधित थाय के० आगल बोधिबीजनी सामग्री तरत मले. यतः—"पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलहबोहित्ताए कम्मं पकरेति तं जहा अरिहंताणं वण्णं वयमाणे जाव विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं वण्णं वयमाणे ॥" अहींयां कोइ पूछे जे ए सूत्रना आलावामां समकिती क्यां कह्या ? जे तमे कहो छो समकितीना अवर्णवाद बोले ते दुर्लभबोधी थाय ! ते तो एमां न आव्यां एम कहे छे, तेने सूत्रमांथी आम्नाय देखाडी समकिती ठरावे छे. अहींयां आचार्य उपाध्याय इत्यादिक भाव निक्षेपे प्रसिद्ध छे. ते माटे तेहने बीजां विशेषण पद न कह्यां. अने देवपदनो अर्थ तो मुख्यताए क्रीडादिक वाचक उदयिक भावपुष्टिपणे प्रसिद्ध छे, ते माटे विशेषण कह्युं. विवक्क के० पाकां तप ब्रह्मचर्य, तेथी उपन्यां पुण्यकर्म जेने एवा देवनो अवर्णवाद बोलतां एतावता सम्यग्दृष्टि आव्याज. इति भाव. तेणे के० ते कारण माटे ए सम्यग्दृष्टि छे. ते माटे तेहनां के० ते देवतानां पूजादिक के० पूजा आदि शब्दथी जन्म महोत्सव समवसरणादिक गमन समवसरणादिकनुं रचवुं लेइए. एहवी जे करणी ते शिवहेतु कहाय के० मोक्षनां हेतु कहीए. एटले देवतानी जे पूजादिक करणी ते मोक्षहेतु जाणवी. इति भाव. इति गाथार्थ ॥ २० ॥

वली जेओ देवतानी करणी नथी मानता तेमने ठपको दे छे. ते जैनशैलीना अजाण छे एम देखाडे छे.

वच सुरेंद्रश्रामी

तप संयम तरुसम कह्यां । फलसम ते सुर शिव शर्म ॥ लालरे ॥
सुरकरणी माने नहीं । नवि जाण्यो तेणे ए मर्म ॥ लालरे ॥ तु० ॥२१॥

अर्थ—तप संयम तरुसम कह्यां के० तपस्या तथा संयम ते तो वृक्ष समान कह्यां छे. अने तेहनां फल समान ते, सुर के० देवतानां सुख, शिव के० मोक्षनां, शर्म के० सुख कह्यां छे. एटले ए भाव जे, तप संयम ते कारण थयां अने देवतानां तथा मोक्षनां सुख ए कार्य थयां. हवे विचारो जे, कारण अने कार्यमध्ये अधिक शुं कहीए? एतावता कार्य अधिक कहिए. "केइत्थ देवलोएसुं केइ सिज्झंति नीरया ॥" इति वचनात्. ते माटे सुरकरणी के० देवतानी जे करणी ते माने नहीं के० न माने, तेणे के० ते मूर्खे, ए कारण कार्य भावना संबधनो जे, मर्म के० गुह्यार्थ ते, नवि जाण्यो के० नथी ओलख्यो. एटले निपट मूर्ख छे. इति भाव. इति गाथार्थ ॥ २१ ॥

हवे कोइकने शंका उपजे जे "देवतामां समजण काची हशे ते पूजा करे तो सुखे करो, पण अमे समजु थइने पूजा केम करीए ? तेने उत्तर दे छे.

दशवैकालिक नर थकी । सुर अधिक विवेक जणाय ॥ लालरे ॥
द्रव्यस्तव तो तेणे कर्यां । माने तस सुजश गवाय ॥ लालरे ॥ तु० ॥२२॥

अर्थ—दश वैकालिके नरथकी के० दश वैकालिकने लेखे मनुष्य थकी पण, सुर के० देवताने, अधिक विवेक जणाय के० अधिको विवेक जणाय छे. तथा च तत्सूत्रं—"धम्मो मगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥" ए गाथाने विषे एम कह्युं जे धर्मने विषे जेनुं सदा मन वर्ते छे, तेने देवता पण नमस्कार करे. अपि शब्दे एम सूचवे छे जे, मनुष्य करे तेमां कहेवुंज शुं? ए लेखे मनुष्य थकी अधिक विवेक ठर्योज. अने द्रव्यस्तवतो तेणे कर्यां के० द्रव्यस्तव जे, प्रभुपूजा, अने परमेश्वरनी भक्ति ते देवताए कर्यां छे. माने के० ते द्रव्यस्तव कर्यां ते माने; प्रतीति करे. तस के० ते प्राणीनो सुजश के० भलो जे जश ते गवाय. एटले ए भाव जे देवतानां कर्यां द्रव्यस्तव मान्यां, एटले आगम प्रमाणे श्रद्धा थइ. ते श्रद्धावंतना गुणग्राम भव्यप्राणी करेज. इति भाव. एटले कर्त्ताए जश एवुं पोतानुं नाम पण सूचव्युं. इति गाथार्थ ॥ २२॥ एटले बीजो ढाल संपूर्ण थयो. ग्रंथाग्रंथ ५३६ अ० २४ सर्व ग्रंथाग्रंथ १ ० १ ०अ० ६

हवे त्रीजो ढाल मांडे छे. तेने पूर्व ढाल साथे ए संबंध छे के बीजा ढालमां पूजानो अधिकार देवता संबधी कह्यो. हवे जे मूर्ख देवतानी करणीमां आडुं अवळुं बोले छे, तेने मनुष्यना अधिकार सिद्धांत साखे ए ढालमां देखाडे छे. ए संबंधे करी आव्यो त्रीजो ढाल तेनी प्रथम गाथा कहे छे.

ढाल ३ जी ॥ ऋषभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

शासन ताहरुं अति भलुं । जग नहीं कोइ तस सरखुंरे ॥
तेम तेम राग घणो वधे । जेम जेम जुगति शुं परखुंरे ॥ शा० ॥ १ ॥

अर्थ–शासन के० शीखामण वचन, ताहरु के० तमारुं, अर्थापत्तिए हे परमेश्वर, तमारुं शीखामण वचन, अति भलुं के० घणु रुडु छे. जग नहीं कोइ तस सरखुं के० जगतमां कोइ ते सरखुं नथी. जेम जेम युक्तिए परीक्षा करुं छुं तेम तेम राग घणो वधतो जाय छे. इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

श्रीअरिहंत अने तेहनां । चैत्य नमुं न अनेरांरे ॥
· अंबड ने तस शिष्यनां । वचन उववाइ घणेरांरे ॥ शा० ॥ २ ॥

अर्थ–श्री अरिहंत के० श्रीवीतराग, अने तेहनां के० श्री वीतरागनां, चैत्य के० प्रतिमाने, नमुं के० नमस्कार करुं. न अनेरां के० श्री वीतराग तथा वीतरागनी प्रतिमा टाली अन्यदर्शनी तथा अन्य दर्शनीनी प्रतिमा न नमु. ए रीने कोणे कह्युं छे? ते कहे छे. अंबड ने तस शिष्यनां के० अंबड परिव्राजक अने अंबडना शिष्य, तेनां वचन उववाइ घणेरां के० श्री उववाइ प्रथम श्री आचारांग सूत्रनुं उपांग तेहमां घणां वचन छे. इति गाथार्थ ॥२॥ तथा च सूत्रं–"अंबडस्स णं नो कप्पइ अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाइं वा अन्नउत्थिअपरिग्गहियाइं अरिहंतचेइयाइं वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा नन्नत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइआणि वा ॥" ए अंबडनो अधिकार कह्यो. एज रीते तेना सातसें शिष्योनो अधिकार जाणवो ते कहीए छैए–"तेणं परिव्वायगा बहूइं भंत्ताइ अणसणाइं छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवताए उववन्ना तर्हि तेसिं गइं दससागरोवमाइं ठिई परलोग आराहगा सेसं तं चेव ॥' अहींयां अंबड शिष्यनो शेष अधिकार अंबडने भलाव्यो, ते माटे समकितनो आलावो सहूनो सरखो जाणवो. इतिभाव.

अर्थ–अंबड परिव्राजक पोतेज बोले छे. अंबडस्स णं के०अंबडने, णो कप्पइ के० न कल्पे, अन्नउत्थिए वा के० अन्य तीर्थी प्रत्ये तथा, अन्नउत्थियदेवयाणि वा के० वा अथवा अन्य तीर्थीना देव प्रत्ये, तथा, अन्नउत्थियपरिग्गहियाइं के० अन्य तीर्थीए ग्रह्यां एवां अरिहंतनां चैत्य जे जिनप्रतिमा ते प्रत्ये, एटले ए भाव जे अरिहंतनी प्रतिमा होय, ते अन्य तीर्थीए पोतापणे ग्रही होय, ते प्रत्ये शुं न कल्पे? ते कहे छे. वंदित्तए वा के० वंदना स्तवना करवी, तथा, नमंसित्तए वा के०नमस्कार करवो, नन्नत्थ के० एह विना, अरिहंते वा के० अरिहंत तथा, अरिहंतचेइयाणि वा के० अरिहंतनी प्रतिमा, एटले ए बेउने वंदना नमस्कार करुं, पण पूर्वे कह्यां तेमने न करुं. इतिभाव. ए अंबडनो अधिकार

कह्यो. वली एज प्रमाणे तेना सातसे शिष्योनो अधिकार जाणवो. ते कहिए छेए-"ते णं परिव्वायगा के० ते परिव्राजक, बहुइं भत्ताए अणसणाइं छेदित्ता के०घणा भात अणशणे छेदीने, आलोइयपडिक्कंता के०आलोइ पडिकमीने, समाहिपत्ता के०समाधि पाम्या थका, कालमासे काल किच्चा के०काल अवसरे काल करीने, बंभलोए कप्पे के० पांचमा ब्रह्म-देवलोकने विषे. देवत्ताए उववन्ना के० देवतापणे सघलाए उपन्या. तेहिं के० ते देव-लोकने विषे, तेसिं के० ते देवताओनी, दस सागरोवमाइं ठिई के० दश सागरोपमनी स्थिति छे. परलोगस्स आराहगा के०परलोकना सहुए आराधक छे. सेसं तं चेव के०शेष बीजो सर्व पाठ अंबडनी परे कहेवो ॥२॥

हवे ते मूर्खलोक, चैत्य शब्दनो अर्थ फेरवे छे. ते उपर आगली गाथा कहे छे.

चैत्य शब्द तणो अरथ ते । प्रतिमा नहि कोइ बीजो रे ॥
जेह देखी गुण चिंतिए । तेहज चैत्य पतीजो रे ॥ शा० ॥ ३ ॥

अर्थ-चैत्य शब्दनो अर्थ ते प्रतिमा छे, पण नहीं कोइ बीजो के० बीजो कोइ अर्थ नथी. 'चैत्यं जिनौकस्तद्बिंबं ॥'इति अनेकार्थ संग्रहवचनात्. वली आवश्यक चूर्णिमध्ये पण कह्युं छे जे-"सव्वलोए सिद्धाइं अरिहंतचेइआइं तेसिं चेव पडिमाओ, चित्तिसंज्ञाने संज्ञा-नमुत्पाद्यते काष्टकर्मादिषु प्रतिमां दृष्ट्वा ॥" चैत्य शब्दनो ज्ञान एवो अर्थ कोइ पण ठेकाणे नथी. नहींतर ॥ 'केवलवरनाणदंसणं समुपज्जइ ॥' एहवा पाठ सिद्धांतमां छे. तेम ॥ 'केव-लवरचेइयदंसणे ॥' एवो पाठ पण होय तथा, जेह देखी गुण के० जे देखीने गुण ते परमात्माना गुण अथवा पोताना ज्ञानादिक गुण, चिंतिए के०प्रतीतमां आणीए. तेहज चैत्य पतीजो के० तेमने चैत्य प्रतीतमां आणो. इति गाथार्थ ॥ ३ ॥ अने चैत्य कहेतां ज्ञान कहीए तो अन्य तीर्थीए ग्रह्युं जे अरिहंतनुं ज्ञान ते केम संभवे ? तथा ज्ञान एक छे अने चैत्य अनेक छे ॥ चेइयाइं ॥ ए ठामे बहुवचन छे. इत्यादिक शब्दार्थनी वातो मूर्ख शुं जाणे ? व्याकरणादिक विना व्युत्पत्ति शुं जाणे ? अने ज्यां शब्दशुद्धि न होय तो, ते विना बीजुं महाव्रत न आराधे.श्रीप्रश्नव्याकरणांगमां कह्युं छे के-"नामक्खाय-निवाय-उव-स्सग्ग-तद्धिय-समास-संधि-पय-हेउ-जोगिय-उणाइ-किरियाविहाण-धातु-सर-विभत्ति-वन्नजुत्तं-तिकलं । दसविहंपि सच्चं जह भणियं तह कम्मुणा होइ दुवालस विहाइं वि होइ भासावयणं पि य होइ सोलसविहं एवं अरिहंतमणुन्नायं समिक्खियं संजएण कालंमि वत्तव्वं ॥" अस्यार्थ-नाम ते देव, घट, वृक्ष इत्यादिक विभक्ति रहित शब्द ते नाम कहीए. आख्यात ते क्रियापद, जेम भवति, करोति, तनोति, पचति, पठति इत्यादिक. निपात ते अनेक अर्थने विषे पडे. यथा-च, वा, खलु, अहो, एव, एवं, नूनं, विना इत्यादिक. उपसर्ग ते उप-समीपे धातुने करीए ते उपसर्ग. प्र, परा, अप, सं, अव, निर्, दुर्, वि, आङ्, अधि, अभि इत्यादिक. तद्धित तेने हित ते तद्धित यथा नाभेरपत्यं नाभेयः तव इदं तावकं,मम इदं

मामकं, इत्यादि. समास ते, अव्ययीभाव प्रथम, तत्पुरुष बीजो, द्वंद्व त्रीजो, बहुव्रीहि चोथो, कर्मधारय पांचमो, द्विगु छठो अने एकशेष सातमो, ए सात समास जाणवा, उपनगरं ग्रामं ए अव्ययी भाव १, अर्हतां चैत्यानि अरिहंतचेइआणि ए तत्पुरुष २, ग्रामनगरे नगर-खेडकव्वडा इत्यादि द्वंद्व ३, बहुधनं यस्य स बहुधनः बहुधणो ए बहुव्रीहि ४, नीलं च तदुत्पलं नीलोत्पलं नीलुप्पलं ए कर्मधारय ५, दशानां पुराणां समाहारो दशपुरं, ए द्विगु ६, माताच पिताच पितरौ ए एकशेष ७, एम समास जाणवा. संधि के० बे पद एकठां मळे ते संधि कहीए. यथा दधि इदं दधीदं, गुणाकार इत्यादि. पद के०विभक्ति अंते आवे ते पद कहीए. तथा हेतु पंचावयव अनुमाननो अंग—तर्क शास्त्र प्रसिद्ध. यौगिक ते बेउ पदने योगे निष्पन्न हरिषेण, श्रीषेण, पद्मनाभ इत्यादि. ओणादि अनेक प्रत्यय छे. यथा-अत सातत्यगमने इति धातु. अतति गच्छति इति आत्मा. अहीयां औणादिक प्रत्यय छे. एणीपरे औणादिक प्रत्यय थकी अनेक शब्द नीपजे छे. किरियाविहाण के० क्रियाविधि क्रियाए करी पद नीपजे छे. यथा पठतीति पाठकः पचतीति पाचकः इत्यादिक. धातु ते भू सत्तायां पा पाने ध्रा गंधोपादाने ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः इत्यादि अनेक धातु छे. स्वर अकारादिक. अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ एऐ ओऔ इत्यादिक. विभक्ति के० स्यादित्यादि. वर्ण ते अक्षर क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ इत्यादिक. व्यंजन ते वर्ण कहेवाय एटले करी जुत्त के० सहित तथा, तिकल्लं के० त्रिकाल विषय अतीत अनागत वर्तमान काल विषयनुं वचन, यथाविधि बोलवुं. दसविहं पि सच्चं जह भणियं के०दश प्रकारनुं सत्य ते जेम पूर्वे जणवयसम्मयठवणा इत्यादिक कह्यां छे. तह कम्मुणा होइ के० अक्षर लखनादिक क्रिया करे ते पण सत्य जाणवुं. एटले ए भाव—जेम वचन सत्य बोलवुं, तेम बीजुं हस्तादिक कर्म पण सत्ये करवु. कोइ एम जाणशे जे में जुठुं बोलवानो नियम कीधो छे पण लख-वानो तथा मस्तक नयनादिक संज्ञानो नियम नथी कीधो एम न जाणवुं. जेम वचन सत्य तेम कर्म पण सत्यज करवुं इत्यर्थं दुवालस विहाइं होइ भासा के० भाषाना बार भेद जाणवा. ते कोण? तो के एक संस्कृत, बीजी प्राकृत, त्रीजी सौरशेनी, चोथी मागधी, पांचमी पैशाचिकी, छठी अपभ्रंशिका. ए भाषा गद्यपद्य बेउ भेदे करतां भाषाना बार भेद थाय, तथा, वयणं पि य होइ सोलसविहं के० वचन पण शोल प्रकारे जाणवुं ते शोल भेद कीआ? ते ग्रंथांतरथी कहीए छैए—"वयणतियं ३ लिंगतियं ३ कालतियं ३ तह परोक्ख-पच्चक्खं ११ उवणीयाइचउक्कं १५ अज्झत्थं चेव १६ सोलसमं" अस्यार्थ—एकवचन, द्विवचन अने बहुवचन, वृक्षः घटः पटः ए एक वचन, वृक्षौ घटौ पटौ ए द्विवचन, अने वृक्षाः घटाः पटाः ए बहुवचन ए वचनत्रिक. पुरुष स्त्री नपुंसक लिंग, देवः नरः ए पुंलिंग. कुमारि, नदी, नगरी, गंगा यमुना ए स्त्री लिंग. कमलं, मुखं, नयनं, ए नपुंसक; ए लिंगत्रिक ६. अतीत, अनागत, वर्तमान ए कालत्रिक ९. अकरोत्, अभूत्, अपठत् ए अतीतकाल. करिष्यति, भविष्यति, पठिष्यति ए अनागत काल. करोति, भवति, पठति ए वर्तमानकाल

वच सुरेंद्रश्रामीकर

एवं ९. परोक्ष वचन ते, ए कार्य तेणे कीधुं इत्यादिक १०. प्रत्यक्ष वचन ते, ए एम करे छे इत्यादिक ११. उपनीत अपनीत ते पहेलो गुण, पछी अवगुण. जेम ए स्त्री सुशील छे पण काली छे १२ अपनीत उपनीत ते पहेलो अवगुण अने पछी गुण, जेम-ए पुरुष कुशील छे पण पंडित छे १३ उपनीत उपनीत ते पहेलो गुण कहेवो अने पछी पण गुण कहेवो. यथा-ए स्त्री रूपवंती छे अने सुशील छे १४. अपनीत अपनीत वचन ते पहेलुं वखोडवुं अने पछी पण वखोडवुं. यथा, स्त्री कुरूपी छे अने कुशील छे १५. अध्यात्मवचन ते हैयामां गोपवीने कांइक कहेवुं होय अने हैयामां होय तेज कहेवाय. यथा,-कोइक रूनो वेपारी वाणीओ रू मोंघुं जाणी कोइक गामे रू लेवा गयो. हवे तृषा लागी. मनमां जाणे छे जे रूनी वात कोइने कहेवी नथी. हवे ते वाणीयो पाणी पीवा कोइकने घरे गयो त्यां तेणे ते घरवाली स्त्रीने कह्युं के रू पा. हवे ते स्त्री विचिक्षण छे माटे जाण्युं जे एहने पाणी पीवुं छे; अने एम कह्युं जे रू पा; माटे रू मोंघुं दीसे छे. पछी पोताना भरतारने कहीने रू पोते लेवराव्युं; त्यां लगी ते स्त्रीए रूना वेपारी वाणियाने आगता स्वागता करी भोजन करावी पछी विसर्जन कर्यो. ए अध्यात्म वचन कहीए १६ एहवा सर्व पूर्वोक्त प्रकार समजीने बोले ते सत्य भाषा अने कांइकने ठामे कांइक कहे तो श्री वीतरागनी आज्ञा भंग करे. एवं के० ए रीते, अरिहंतमणुन्नायं के० अरिहंते आज्ञा करी छे. एम जाणी पूर्वे कह्युं तेहवुं सत्य बोलवुं. समिक्खिय के० सम्यक् प्रकारे बुद्धि आलोची विमासी संजएण काले वत्तव्वं के० संयमवंत चारित्रिए अवसरी बोलवुं इति गाथार्थ ।। ३ ।।

एमज आलावे आणंदने । जिनप्रतिमा नति दीसेरे ॥
सप्तम अंगना अर्थथी । ते नमतां मन हींसेरे ॥ शा० ॥ ४ ॥

अर्थ-एमज आलावे आणंदने के० एज रीते जेम अंबडने कह्युं तेम आणंदने आलावे पण जिनप्रतिमानुं नति के० नमवुं दीसे छे. सप्तम अंगना अर्थथी के० ए सातमा अंगनो अर्थ छे. एटले श्री उपाशकदशांग मध्ये आणंद श्रावक जिनप्रतिमाने नम्या छे. ते कारणथी ते के० जिनप्रतिमा नमतां थकां मनहीसे के० मन हर्षे. इति गाथार्थ. ४. ते आणंदनो आलावो श्री उपासक दशांगसूत्र मध्ये छे; ते लखीए छैए.-"नो खलु मे भंते कप्पइ अज्ज पभिइ च णं अन्नउत्थिया वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाइं अरिहंतचेइयाइं वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालित्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुपदाउंवा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं, कप्पइ मे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण पाणं खाइमं साइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुच्छणेणं पाडिहारियपीढफलगसेज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभे माणस्स विहरित्तए, इति कट्टु एवं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ ॥"-अस्यार्थ-नो के० नहीं, खलु के० निश्चे, मे

के०मुजने, भंते के० हे भगवन्, कप्पइ के० कल्पे एटले हे भगवन् मुजने नहीज कल्पे. इति भाव. शुं न कल्पे? ते कहे छे. अज्ज पभिइ च णं के०आजथी मांडीने, अन्नउत्थिया वा के० अन्य तीर्थी प्रत्ये वा शब्द पक्षांतर सूचक छे. अन्नउत्थियदेवयाणि वा के० अन्य तीर्थीना देव हरिहरादिक. अन्नउत्थियपरिग्गहियाइं अरिहंतचेइयाइं के०अन्य तीर्थिए ग्रह्यां जे जिन चैत्य–जिनप्रतिमा एटला प्रत्ये वंदित्तए वा के०वंदना करवी, नमंसित्तए वा के० नमस्कार करवो. पुव्विं अणालित्तेणं के० आगलथी वगर बोलावे, आलवित्तिएवा के० बोलावबुं, संलवित्तए वा के०वारंवार बोलावबुं, ए सर्व न कल्पे. एम संबंध करवो. वली तेसिं के० तेहने. असणं वा के० अशन ओदनादिक, पाणं वा के० पाणी द्राक्षपानादिक, खाइमं वा के० खादिम शुखडी प्रमुख, साइमं वा के० तंबोल प्रमुख, दाउं वा के० देवुं, अणुपदाउं वा के० वारंवार देवुं न कल्पे, एम अहींयां पण जोडिए. पण ए छ कारण टालीने न कल्पे ते कहे छे. नन्नत्थ के० एटला कारण विना, रायाभिओगेणं के० नगरादिकनो स्वामी ते राजा कहीए, तेहनो अभिओग ते शासन, एटले राजानी आणाए करतां दोष नहीं, कार्तिकशेठनी परे. १ गणाभिओगेणं के० लोकनो समुदाय ते गण कहीए, तेहनो आणाए. २ तथा. बलाभिओगेणं के० बलवंत चोर परम ऐश्वर्यवंत ते पोताना आग्रहे करावे. ३ देवाभिओगेणं के० जैन प्रतिकुल क्षुद्र देवता तेहनी आणाए. ४ गुरुनिग्गहेणं के० गुरु ते माता, पिता, भर्ता, कलाचार्यादिक ते शाक्यादिकना भक्तिवंत मिथ्यात्वी होय तेहना आग्रहथी वंदनादि करवुं पडे ते गुरुनिग्गहेणं कहिए. ५ वित्तिकंतारेणं के० वृत्ति जे आजीविका तेहज कांतार जे भीष्म अटवी, तेहने एटले अन्यत्र आजीविकाने अभावे मिथ्यात्वीनी आजीविका होय तेणे करी करवुं पडे. ६ ए छ छंडीए पूर्वे कह्या तेमने वंदनादिक करता दोष न लागे. इतिभाव. ए न कल्पे ते कह्युं. हवे कल्पे ते कहे छे. कप्पइ मे के०मुजने कल्पे. समणे निग्गंथे के०जैन श्रमण निर्ग्रंथ प्रत्ये अशन, १ पान, २ खादिम, ३ स्वादिम, ४ वत्थ के०वस्त्र पडिग्गह के० पडघो–पात्र, कंबल के० ऊर्णमय वस्त्र, पायपुच्छणेणं के० रजोहरण, पाडिहारिय के० वावरीने पाछां आपवां. एहवां. पीठ के० बाजोठ, फलक के० पाटला, सेज्जा के० वसती, संथारएणं के०तृणादिक संथारो. ओसहभेसज्जेणं के० औषधने भेसज्जे करी, पडिलाभे माणस्स के० पडिलाभतां थकां, विहरित्तए के०विचरवुं. इति कट्टु के० एम करीने. एवं एयारूवं के०एहवो एतद्रूप, अभिग्गहं अभिगिण्हइ के० अभिग्रह ते ले. इत्यादिक पाठ छे.

हवे ढुंढक, ए आलावामां वांकु बोले छे, तेमने उत्तर वालवा माटे आगली गाथा कहे छे. ते ढुंढक एम कहेछे जे परतीर्थी तेहना देवनी प्रतिमाने वांदवानो निषेध कर्यो, पण जिनप्रतिमाने वांदी तो नथी एम कहे छे, तेहने उत्तर दिए छे.

परतीर्थी सुर तेहनी । प्रतिमानी नति वारीरे ॥
तेणे मुनि जिन प्रतिमा तणी । वंदन नति निरधारीरे ॥ शा० ॥५॥

वच सुरेंद्रश्वामीकर

अर्थ—परतीर्थी सुर तेहनी प्रतिमानी के० अन्यतीर्थी तथा अन्यतीर्थीना देवनी प्रतिमानी, नतिवारी के० नमवानो निषेध कर्यो, तेणे के० तेहज कारणे, मुनि जिन प्रतिमा तणी के० मुनिने तथा जिनप्रतिमाने वंदन नति निरधारी के० वंदना नमस्कारनो निरधार कर्यो. एटले ए भाव जे, अन्यतीर्थीने वंदनानो निषेध कर्यो; एटले मुनिने वंदना करुं एम आव्युंज. एमां मूर्खने पण शंका न उपजे. तथा पूर्वे अंबडने आलावे अन्यतीर्थीनो निषेध अने स्वतीर्थीनी हा एम बेवडो आलावो कह्योज छे; ते पण मूढो समजता नथी. इति भाव ॥ ५ ॥

वळी कुमति एम कहे छे जे चैत्यशब्दे मुनि कहीए, एटले अन्यतीर्थीनां ग्रह्यां चैत्य के० मुनि एहवो अर्थ भरडे छे. तेने उत्तर कहे छे.

परतीर्थीए जे परिग्रह्या । मुनि तेतो परतीर्थीरे ॥
त्रण शरण मांहे चैत्य ते। कहे प्रतिमा शिव अर्थीरे ॥ शा० ॥६॥

अर्थ—परतीर्थीए जे परिग्रह्यां मुनि के० जे मुनि परतीर्थीए ग्रह्यां एटले अन्य तीर्थीओमां गया ते तो परतीर्थी के० ते मुनि तो परतीर्थीज कहीए, एटले परतीर्थीने वंदना नहीं करुं; तेहमां आवी गया ते माटे चैत्य शब्दनो मुनि अर्थ ते खोटो करे छे, ते उपर कहे छे. त्रण शरणमांहे चैत्य ते कहे प्रतिमा शिव अर्थी के० मोक्षअर्थी त्रण शरणमां चैत्य ते प्रतिमा छे एम कहे छे. एटले ए भाव जे भगवतीसूत्र मध्ये असुरकुमारना देवो सोधर्म देवलोक लगे जाय छे, त्यारे एक अरिहंत, बीजुं चैत्य अने त्रीजुं अणगार ए त्रणनां शरण करे छे, तेहमां अरिहंत १ चैत्य २ अने अणगार ३ ए त्रण कह्यां छे. जो चैत्य के० मुनि होत तो अणगार जूदा केम कह्या? इति भाव. हवे ते श्री भगवतीसूत्रनो आलावो लखीए छैए.—"नन्नत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाणि वा भाविअप्पणो अणगारस्स वा णिस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥" अस्यार्थ—नन्नत्थ के० न अन्यत्र ए त्रण टालीने बीजी रीते जइ न शके. अरिहंते वा के० अरिहंतनी निश्रा १ तथा, अरिहंतचेइयाणि के० अरिहंतनी प्रतिमा २ तथा, भाविअप्पणो के० संयम तपने विषे आत्मा भाव्यो छे जेणे, एवा, अणगारस्स के० अणगारनी निश्रा विना, उड्ढं उप्पयंति के० उर्ध्व उतपते एटले ए निश्रा विना उंचा जइ न शके—जाव सोहम्मो कप्पो के० यावत्सौधर्म देवलोक लगे जइ न शके ॥ इति गाथार्थ ॥ ६ ॥

अहीयां कोइक कुमति एम पूछे छे जे "कोण श्रावके देहेरां कराव्यां?" तेने कहिए जे श्री समवायांगसूत्रमां सर्वसूत्रनी हुंडी छे; तेमां श्री उपासकदशांगनी हुंडी मध्ये कह्युं छे जे "दशे श्रावकनां चैत्य तथा धर्माचार्य अने उद्यान कहीशुं." अहींयां साधु तथा उद्यान जूदां कह्यां छे, माटे चैत्य शब्दे प्रतिमा तथा देहेरांज ठरशे. तथा यद्यपि आजकालना दोषे करी सातमा अंगमां ए वातोनां पाठ विच्छेद गया छे, तोपण समवायांगनो पाठ

खरो के नहीं ? ए लेखे श्रावके देहेरां पण कराव्यां छे. इति. ते पाठ लखीए छैए.—"से किं तं उवासगदसाओ उवासगदसासु णं उवासगाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं राया अम्मा समो धम्मायरिया इति ॥" अर्थ—से किं तं उवासगदसाओ के०उपासगदशांग ते शुं कहीए ? एम पूछे थके उत्तर कहे छे उवासगदसासु णं के० उपासग दशांगने विषे, उवासगाणं के० श्रावकोनां, नगराइं के० नगर कहेवाशे. उज्जाणाइं के० उद्यान कहेवाशे. चेइआइं के० चैत्य देहेरां कहीशुं, एम वनखंड कहीशुं, राजा कहीशुं. अम्मा के० माता, पिता, धर्माचार्य कहीशुं ॥ ६ ॥

हवे कोइक मूर्ख, अन्य तीर्थीनां चैत्यने नहीं वांदु एम कह्युं, त्यां एम अवळुं बोले छे के जो चैत्य शब्दे जिनप्रतिमा कहेशो तेवारे आलावामां एम कह्युं छे के तेहने बोलावीश नहीं, अन्नादिक आपीश नहीं. ते केम मेलवशो ? ते उपर गाथा कहे छे.

दान कशुं प्रतिमा प्रत्ये । एम कहे जे छल हेरीरे ॥
उत्तर तास संभव तणी । शैली छे सूत्र केरीरे ॥ शा० ॥ ७ ॥

अर्थ—दान कशुं प्रतिमा प्रत्ये के० ते कुमति बोल्यो जे प्रतिमाने दान शुं ? एम कहे जे छल हेरी के० एम जे छलना हेरनार कहे छे. उत्तर तास के० तेहने उत्तर कहे छे. संभव तणी शैली छे सूत्र केरी के० सूत्रनी ए शैली छे, जेहने जे संभवे तेहने ते जोडीए, नहीं तो घणे ठेकाणे अर्थनो अनर्थ थाय. एटले वंदना, नमस्कार ते अन्यतीर्थी प्रमुख सहुने जोडीए, अने दानादिक ते अन्य तीर्थीनेज जोडीए. पण प्रतिमाने न जोडीए. इति भाव. इति सप्तम गाथार्थः ॥ ७ ॥

ते संभव उपर सूत्रांतरनो पाठ आगली गाथामां देखाडे छे.

दशविध बहुविध ज्यम कह्युं । वैयावच्च जह जोगेरे ॥
दशमे ते अंगे तथा ईहां । जोडीए नय उपयोगेरे ॥ शा० ॥ ८ ॥

अर्थ—दशविध के० दश प्रकारनुं, बहुविध के० अनेक प्रकारनुं ज्येम वैयावच्च कह्युं छे. ते, जह जोगे के० जेहने जेवुं घटे तेहवुं करवुं. पण सामान्यसूत्रमां वैयावच्च करवुं कह्युं. ते सर्वने सरखुं नहीं. ते आगल देखाडशुं. दशमे ते अंगे के० ते वैयावच्च दशमुं अंग जे प्रश्नव्याकरण ते मध्ये जेम कह्युं छे, तथा इहां के० तेम इहां अन्यतीर्थी चैत्ये वंदना प्रमुख तथा अशनादिकनुं देवुं, ते जेम घटे तेम अहीयां जोडीए. नयउपयोगे के० नयने उपयोगे जेम ज्यां जेवो नय घटे त्यां तेवो उपयोग राखी जोडीए.

हवे ते प्रश्न व्याकरण मध्ये त्रीजे संवर द्वारे पाठ छे ते लखीए छैए.—" अह केरिसए पुणाइ आराहए वयमिणं जे से उवहिभत्तपाणे संगहदाणकुसले अच्चंत बाल १ दुब्बल २ गिलाण ३ वुड्ढ ४ खवगे ५ पवत्ते ६ आयरिय ७ उवज्झाए ८ सेहे

९ साहम्मिए १० तवसी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेइयट्ठे १५ निज्जरट्ठी वेयावच्चं अणिस्सियं दसविहं बहुविहं पि करेइ" अर्थ—अथ के०प्रश्न. केरिसए के०केहेवो, पुणाइ पदते अलंकारने अर्थे छे. आराहए वयमिणं के० ए व्रत आराधे. एतावता शिष्य पूछे छे के हे भगवान, केवो साधु ए त्रीजुं व्रत आराधे ? एम पूछ्याथी गुरु कहेछे. जे से के०जे साधु, उवहिभत्तपाणे के० वस्त्र तथा भातपाणीनो, संगह के० यथोक्त विधिए लेवुं. दाण के०यथोक्त विधिए आचार्यादिकने आपवुं. तेहने विषे, कुसले के०निपुण एटले यथोक्त विधिए उपधि भात पाणी लेइ जाणे तथा देइ जाणे; ते साधु ए त्रीजुं व्रत आराधे. तथा अच्चंत के० अत्यंत बाळ होय, दुब्बल के० शक्तिहीन, ग्लान के० रोगादिकवंत, वुड्ढ के०वृद्ध—स्थविर, क्षपक के० मासक्षपणादिकनो करणहार. एटलाने विषे वैयावच्च करे. तथा पवित्त के० प्रवर्त्तक आचार्य उपाध्यायने विषे वैयावच्च करे. तेहमां प्रवर्त्तक ते गच्छमांहे जे जेवा योग्य होय तेहने त्यहां प्रवर्त्तावे, ते प्रवर्त्तक कहीए. तथा, सेहे के० नवदीक्षित शिष्यनी वैयावच्च करे. तथा, साहम्मिए के० लिंगे प्रवचने सरखो वर्ते ते साधर्मिक कहीए, तेहने विषे वैयावच्च करे. तवस्सी के० चतुर्थ, षष्ठ, अष्टमादिक तपनो करणहार तेहने विषे वैयावच्च करे. तथा कुल—गण—संघ—चेइअट्ठे के० कुल ते चांद्रादिक, गण ते कुलनो समुदाय कोटिकादिक, संघ ते कुलगणनो समुदाय जे चतुर्विध संघ ते. चैत्य के० अरिहंतनी प्रतिमा एटलानो जे अर्थ तेहने विषे निर्ज्जरानो अर्थी कर्मक्षय वांच्छतो थको, अणिस्सियं के० जश मानादिकनी अपेक्षा विना एटले एहवुं न वांच्छे जे हुं एहनो वैयावच्च करुं; जेथी मारी प्रशंसा थाय. एहवा भाव रहित वैयावच्च करे ते कहे छे, वैयावच्च योग्यने उपष्टंभ दे. अहींयां कोइ एम पूछे के भातपाणी उपधि दीजे तेहज वैयावच्च. एम कहे ते खोटुं. जे माटे बाल, दुर्बल, वृद्ध अने क्षपकादिकने विषे भक्तपाननो वैयावच्च संभवे; पण कुल, गण अने संघ तथा चैत्य एटलांने भातपाणीने देवेज वैयावच्च नथी. अनेरा घणा प्रकार वैयावच्चना होय; ते माटे कुल, गण, संघ तथा अरिहंतनी प्रतिमा—एटलानो कोइ अवर्णवाद, हीलना, विराधना करे, तेहने उपदेशादिक देइ तेहनी विराधना टाळे; ए पण वैयावच्च कहीए. ए वैयावच्च चारित्रीओ करे ते त्रीजुं व्रत आराधे, अहींयां दशविध ते अन्यत्र ठाणांग तथा व्यवहारसूत्र मध्ये दश प्रकार कह्या छे. यतः—"ठाणांगे दसविहे वेयावच्चे पन्नत्ते तं जहा ॥ आयरिय वेयावच्चे १ उवज्झाय वेयावच्चे २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेह ६ कुल ७ गण ८ संघ ९ साहम्मिय वेयावच्चे १०" ए आश्रीने दश विध कह्युं छे. अहींयां पूर्वे जे घणा प्रकार कह्या ते पण आ दशमां अंतर्भूत छे; ते जेम वैयावच्च दश प्रकारनां सर्वने सरखां नहीं, जेम अशनादिकनुं दान पण अन्यतीर्थीने जोडीए, पण जिनप्रतिमाने न जोडीए. इति भाव. ए दशनुं वैयावच्च, बहुविहं पि करेइ-के०भातपाणी प्रमुख अनेक प्रकारे जेहने जेवुं घटे, तेहने तेवुं करे. इति वली प्रसंगागत लखीए छैये जे ए आलावामां साधुने दांडो कह्यो छे; ते मूढो राखता नथी. ए रीते भगवतीसूत्रे तथादश

वैकालिके विधिवादे दांडो कह्यो छे, अने पूछ्या थकां कहे छे जे वृद्धने दांडो राखवो ते खोटुं कहे छे. जे कारणे वृद्ध, कोइ सूत्रमां कह्या नथी. दश वैकालिके विधिवादे दांडो पडिलेहवो कह्यो छे. हवे प्रस्तुत कहे छे.

साधुने जिनप्रतिमा तणुं । वैयावच्च त्यहां बोल्युंरे ॥
एह अरथथकी कुमतिनुं । हियडुं कांई न खोल्युंरे ॥ शा० ॥ ९ ॥

अर्थ–साधुने जिनप्रतिमा तणुं के० मुनिने जिन प्रतिमा तणुं एटले मुनिने जिनप्रतिमानुं, वैयावच्च त्यहां बोल्युं के० ते प्रश्न व्याकरणमांज कह्युं. "चेइअट्ठे निज्जरट्ठि ॥" ए पदे अनंतर वरणवी आव्या. तेह अरथ थकी पण कुमतिनुं के० जिनवचन उत्थापक दुष्ट मतिना धणीनुं. हैयुं कांइ न खोल्युं के० लगार मात्र पण न उघड्युं: अथवा कांइ न खोल्युं के० शे न खोल्युं? इति नवम गाथार्थ ॥ ९ ॥

संघ तणी जेम थापना । वैयावच्च जस वादोरे ॥
जाणीए जिनप्रतिमातणुं । तेम ईहां कवण विवादोरे॥ शा० ॥१०॥

अर्थ–संघतणी जेम स्थापना के० जेम पूर्वे बोल कह्या त्यहां संघनुं स्थापन करवुं. वैयावच्च के० ते संघनुं वैयावच्च करवुं. जसवादो के० ते संघनो जश बोलवो. तेम के० जेम संघने तेम जिनप्रतिमाने पण जाणवुं. इहां कवण विवादो के० अहीयां पाधरं विचारे तेने शो विवाद छे? इति दशम गाथार्थ ॥ १० ॥

हवे अहींयां जिनप्रतिमा अधिकार छे माटे तवनमध्ये नथी गुंथ्यो, तोपण व्यवहारसूत्रथी आलोयण अधिकार लखीए छैए, ते निश्चयथी जाणजोजी. जे भिरकू के० जे भिक्षु साधु, अन्नयरं के० अनेरो, अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता के० करवाने अयोग्य स्थानक पडिसेविने, इच्छेज्जा के० वांच्छे. आलोइत्तए के० आलोचवुं तो, जत्थेव के० ज्यहां, अप्पणो के० पोतानो, आयरियउवज्झाए पासेज्जा के० आचार्य उपाध्याय देखे, कप्पइ से के० कल्पे. ते साधुने, तस्संतिए के० तेनी समीपे. आलोइत्तए वा के०आलोचवुं. पडिक्कमित्तए वा के० पडिकमवुं. उवट्टित्तए वा के० प्रायश्चित्तने टाळे, विसोहित्तए वा के० आत्माने विशुद्धि करवा, अकरणयाए के०फरी अणकरने. अब्भुट्ठित्तए वा के०एहवो उजमाळ थयो. अहारिहं के० यथायोग्य, तवोकम्मं के० तप कर्म, पायच्छित्तं के० प्रायश्चित्त, पडिवज्जित्तए वा के०अंगीकार करीने विचरे छे. नो चेव णं अपणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा के० कदाचित् पोतानो आचार्य तथा उपाध्याय न मल्या तो, जत्थेव संभोइयं साहम्मियं के० ज्यहां आहार पाणी भेळु करे छे एवा सरखा धर्मना साधु, बहुस्सुयं के० बहुश्रुत, पज्जागमं के० घणा आगमना जाण, पासेज्जा के० तेमने देखीने, कप्पइ से तस्संतिए के०ते सांभोगिक साधुने समीपे कल्पे, आलोइत्तए वा के०आलोचवुं, जाव पडिक्कमित्तए वा के०

वच सुरेंद्रश्चामीकर

यावत् पडिकमवुं, नो चेव णं संभोइयं के० वली ते सांभोगिक पण, साहम्मियं के० सरखा धर्मना धणी, वज्जागमं पासेज्जा के० घणा आगमना जाण एवा न देखे तो जत्थेव अन्न-संभोइयं साहम्मियं के० ज्यहां अन्यसांभोगिक आहार पाणी एकठां न करवां ते साथे एवा सरखाधर्मी, वहुस्सुयं के० वहुश्रुत, वज्जागमं पासेज्जा के०घणा आगमना जाण देखे. कप्पइ से तस्संतिए के० तेमनी समीपे कल्पे अलोइत्तए वा के०आलोचवुं जाव पडिवज्जित्तए वा के०यावत् प्रायश्चित लेे, नो चेवणं अन्नसंभोइयं के० ते अन्य सांभोगिक पण न र , साहम्मियं के० साधर्मिक, वहुस्सुयं के०वहुश्रुत, वज्जागमं पासेज्जा के०वहु आगमना धणी न देखे तो. जत्थेव सारूवियं के०ज्यां साधुना वेषधारी, वहुस्सुयं के०वहुश्रुत, वज्जागमं पासेज्जा के० वहु आगमना धणी देखे. कप्पंति से तस्संतिए के० तेहनी पासे कल्पे. अलोइत्तए वा के० आलोचवुं. जाव पडिवज्जितए वा के० यावत् प्रायश्चित्त पडिवजवुं, नो चेव णं सारूवियं के० कदाचित् वेषधारी, वहुस्सुयं के०वहुश्रुत, वज्जागमं पासेज्जा के०वहु आगमवत न देखे तो, जत्थेव समणोवासगं के० ज्यहां श्रमणोपासक श्रावक पछवाडे चारित्र सेवी पड्याछे, साधुपणुं मूकीने श्रावक थया छे. पच्छाकडं के० तेहने पश्चात्कृत श्रमणोपासक कहीए, वहुस्सुयं के०वहुश्रुत, वज्जागमं के०वहुआगमना जाणने, पासेज्जा के० देखे. कप्पइ से तस्संतिए के०तेनी पासे कल्पे. आलोइत्तए वा के०आलोचवुं. जावपडिवज्जित्तए वा के० यावत् प्रायश्चित्त पडिवज्जे. नो चेव णं समणोवासंगं के०श्रमणोपासक पुर्वे कह्या एवा न देखे, पच्छाकडं के०पश्चात्कृत, वहुस्सुयं के०वहुश्रुत, वज्जागमं पासेज्जा के० बहु आगमना धणी न देखे तो, जत्थेव सम्मंभावियाइं के० ज्यां सम्यक्भावित एटले सुविहित प्रतिष्ठित, चेइयाइं के० जिनप्रतिमा, ॥ 'चैत्यं जिनौकस्तद्विंबं' इति वचनात् ॥ एवी प्रतिमा, पासेज्जा के० देखे. कप्पइ के०कल्पे, से तस्संतिए के०तेहनीपासे, आलोइत्तए वा के०आलोचवुं. जाव पडिवज्जित्तए वा के०यावत् पडिवजवुं, नो चेव णं सम्मं भावियाइं चेइयाइं पासेज्जा के० सम्मग्भावित चैत्य पण न देखे तो, वहिया गामस्स वा के०गामने वाहेर, अथवा, जाव सन्निवेसस्स व के०यावत् सन्निवेशने वाहेर, पाहिणाभिमुहे वा के० पूर्व दिशिने सामा अथवा, उदिणाभिमुहे वा के०उत्तर संमुख रहीने इत्यादिक पाठ छे.

इत्यादिक व्यवहार प्रथमोद्देशके छे तो मुनि चैत्यनी साखे आलोयण लीए एम कह्युं. आहींयां चैत्यनो अर्थ बीजो थायज नहीं; तो गृहस्थ देव पूजा वैयावच्च चैत्यनुं करे तेहनुं शुं कहेवुं ? तोपण मूर्खोनी आंखो उघडती नथी. हवे अधिकार वालेछे.

एम सवि श्रावक साधुने ॥ वंदनानो अधिकारोरे ॥ सूत्रे कह्यो प्रतिमातणो ॥ हवे कहुं पूजा विचारो ॥ शा० ॥ ११ ॥

अर्थ—एम सर्व श्रावक साधुने वंदनानो अधिकार प्रतिमानो सूत्रे कह्यो, एटले प्रतिमाने वंदनानो अधिकार, सूत्रे करीने अमे कह्यो. हवे पूजानो अधिकार कहुं छुं. एटले

प्रसंगागत पूर्वे सूर्याभादिकना पूजाना अधिकार कह्याछे, पण मनुष्यना अधिकार हवे कहेवाशे. इति गाथार्थ ॥ ११ ॥

याग अनेक कस्या कह्यां ॥ श्रीसिद्धारथ राजेरे ॥ ते जिन पूजना कल्पमां ॥ पशुना याग न छाजेरे ॥ शा० ॥ १२ ॥

अर्थ—याग अनेक कह्यां के० अनेक याग करया, श्रीसिद्धारथराजे के० श्रीसिद्धारथ राजाए करया कह्याछे ते याग, जिनेश्वरनी पूजा छे. श्रीकल्पसूत्रमां कह्यांछे. अहींयां ते दुष्ट पशुना याग बतावेछे, ते पशुना याग कहेतां छाजे नहीं. इति गाथार्थ ॥ १२ ॥ ते कल्पसूत्रनो पाठ लखीए छैए—"तएणं सिद्धत्थे राया दसाहियाए ठिइवडियाए वद्धमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य लंभेमाणे पडिच्छेमाणे पडिच्छावेमाणे एवं विहरइ।" इति कल्पसूत्रे. अर्थ—तएणं सिद्धत्थे राया के० तेवार पछी सिद्धार्थराजा, दसाहियाए के० दश दिवसनी, ठिइवडियाए के०स्थिति पताका कुलस्थितिरूप प्रवर्त्ते थके, सइए य के०सैकडो गमे, साहस्सिए के०हजारो गमे, सयसाहस्सिए के० लाखो गमे, जाए य के० याग, अहियां यागशब्दे अरिहंतनी प्रतिमानी पूजा लेइए. दाए य के० पर्व दिवसादिकने विषे देवुं. भाए य के० भागे लाध्युं द्रव्य, तेहनो भाग, दलमाणे के० देता, दवावेमाणे के० देवरावतां, लंभेमाणे के० जे पोताने लाभ आवे, पडिच्छेमाणे के० ग्रहेता, पडिच्छावेमाणे के० ग्रहेवरावता. एवं विहरइके० एम विचरे.

अहियां जिनप्रतिमानी पूजा लाखो गमे कही, तेहमां ते कुमति, परमेश्वरना पिताने याग ते पशुने होमवुं एम कहेछे; तेना मुख उपर आचारांगनी साख रूप चपेटा मारेछे.

श्री जिन पासने तीरथे ॥ समणोपासक तेहोरे ॥ प्रथम अंगे कह्यो तेहने ॥ श्री जिनपूजानो नेहोरे ॥ शा० ॥ १३ ॥

अर्थ—श्री जिनपासने तीरथे के० श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना तीर्थने विषे, समणोपासक तेहो के० ते सिद्धर्थराजा तथा त्रिसलाराणी समणोनां उपासक एटले श्रावक, प्रथम अंगे के० प्रथमांग जे आचारांग तेहने विषे कह्यांछे. तेहने के० एरीते ते सिद्धार्थ राजा अने त्रिसला राणीने, श्रीजिनपूजानो नेहोके० श्रीजिनेश्वरनी पूजानो स्नेह छे. ते श्रावक थका बीजा याग केम करे ? इति भाव. तथा वली यज् एवो धातु, देवपूजावाचक छे. ते मूढा अनक्षर न समजे. आचारांगे वीरनां मातपिता श्रमणोपासक कह्यां छे; ते पाठ लखीए छैए—"समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापिअरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा आविहोत्था। तेणं वहुणि वासाणि समणोवासगपरियागं पालइत्ता छण्हं जीव निकायाणं संरक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्तं पडिवज्जित्ता कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खायंति,पच्चक्खायंतित्ता अच्चुए कप्पे देवताए उववन्ना। तओ णं आउक्ख-

वच सुरेंद्रश्वामीकर

एणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं महाविदेहे वासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्जिसंति बुज्जिसंति मुच्चिसंत्ति सव्वदुरकाणमंतं करिस्संति ॥" अर्थ–समणस्स भगवओ इत्यादि, श्रमण भगवान महावीरनां, अम्मापिअरो के० माता पिता, पासावच्चिज्जा के० पार्श्वनाथना अपत्य एटले शिष्य परंपरा तेहना, समणोवासगा आविहोत्था। के० श्रमणोपासक श्रावक होता हवा. तेणं इत्यादि ते घणां वर्ष लगे श्रमणोपासकनो पर्याय पालीने, छएहं जीव निकायाणां के० छकाय जीवनी, संरक्खणनिमित्तं के० रक्षाने निमिते, आलोइत्ता के० आलोइने, निंदित्ता के०आत्मासाखे निंदा करीने, गरहित्ता के० गुरुसाखे गर्हा करीने, अहारिहं के० यथायोग्यपणे, उत्तरगुणपायच्छित्तं पडिवज्जित्ता के० उत्तरगुणरूप प्रायश्चित्त अंगीकार करीने, कुससंथारं दुरुहित्ता के० डाभना संथारा उपर बेशीने, भत्तं पच्चरकायंति के०आहारपाणीनां पच्चक्खाण करे करीने, अच्चुए कप्पे देवताए उववन्ना के० अच्यूत जे बारमो देवलोक–त्यां देवतापणे उपज्यां. तओ णं के० त्यां थकी देवतासंबंधी, आउरकएणं के० आयुष्यनो क्षय थये थके एम भवनो क्षय, एम ते आयुष्यनी स्थितिनो क्षय थये थके, महाविदेहवासे के० महाविदेह क्षेत्रने विषे, चरमेणं उस्सासेणं के० छेहले श्वासोश्वासे, सिज्जिसंति के० निष्ठितार्थ थाशे. बुज्जिस्संति के० तत्वना जाण थाशे, मुच्चिसंत्ति के०आठे कर्मथी मूकाशे, सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति के० सकल दुःखनो अंत करशे. ए रीतिनां श्रावक सिद्धार्थ राजा अने त्रिसला राणी छे. ते अरिहंत पूजारूप यज्ञ करे पण बीजा पशूवधरूप यज्ञ न करे. इतिगाथार्थ ॥ १३ ॥

श्रेणिक महाबल प्रमुखना। एम अधिकार अनेकोरे ॥
छठे अंगे वली द्रौपदी। पूजा प्रगट विवेकोरे ॥ शा० ॥ १४ ॥

अर्थ–श्रेणिक महाबल प्रमुखना के० ए रीते श्रेणिकराजा अने महाबल प्रमुखना अनेक अधिकार श्री सिद्धांतमां छे. त्यहां ॥ ण्हायाकयबलिकम्मा ॥ एवा पाठ छे. त्यां बलिकर्म ते पूजानो अर्थ छे. ते आगल चोथी ढालमां कहीशुं. वली छठे अंगे के० श्री ज्ञातासूत्रने विषे, द्रौपदीपूजा प्रगट विवेको के० द्रौपदीए प्रगट विवेके पूजा करी छे. इति गाथार्थ. ते ज्ञातासूत्रनो पाठ लखीए छैए–"तएणं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, मज्जणघरं अणुप्पविसइ, ण्हाया कयबलीकम्मा कयकोउअमंगल पायच्छित्ता सुद्धपावेसाइं वत्थाइं परिहियाइं मज्जणघराओ पडिणिरकमइ, जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, जिणघरं अणुप्पविसइ, पविसइत्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेइ, लोमहत्थयं परामुसइ, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अचेइ तहेव भाणिअव्वं जाव धूवंदहइ, धूवं दहइत्ता वामं जाणु अंचेइ, अंचेइत्ता दाहिणजाणु धरणितलंसि निहट्टु तिरक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ, सनिवेसेइत्ता ईसिं पच्चुणमइ करयल जावकट्टु एवं वमासी नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं। वंदइ नमंसइ जिणघराओ पडि-

णिरकमइ." इति ज्ञातासूत्र अध्ययन सोलमे. अर्थ—तएणं सा दोवड रायवरकन्ना के०तेवारे ते द्रौपदी, राजवरनी कन्या, जेणेव मज्जणघरे के० ज्यां स्नान मज्जन करवानुं घर छे, तेणेव उवागच्छइ के० त्यां आवे. मज्जणघरं अणुपविसइ के० मज्जनघरमां पेसे. ण्हाया के० स्नान कर्युं. कयबलिकम्मा के० कर्युं छे बलिकर्म पूजानुं कार्य. अर्थात् इहां घरमां देहेरानी पूजा लेइए. ए देहेरानुं स्नान घरे कर्युं, श्रामाटे के विस्तारे जिनपूजातो आगल कहेशे. कयकोउअमंगलपायच्छित्ता के० कौतुक ने तिलकादिक, मंगल ने दधि दुर्वा अक्षतादिक—तेहज प्रायश्चित. दुःस्वप्नादिकनां घातक ते, कय के० कर्या छे जेणे, सुद्धपावेस्साइं वत्थाइं परिहियाइं के० शुद्ध जे उज्वल, पावेसाइं के० देहेरे जावा योग्य एवां वस्त्र पेहेर्यां छे, मज्जणघराओ पडिणिक्कमइ के० मज्जनघरमांथी नीकले. जेणेव जिणघरे के० ज्यां जिनघर छे त्यां आवे. जिणघरं अणुपविसइ के० जिनघरमां पेसेः पेसीने आलोए के० दीठे थके. जिनपडिमाणं पणामं करेइ के० जिनप्रतिमाने प्रणाम करे. अहींयां पण जिनघर कही बोलाव्युं; माटे जिनप्रतिमा ते जिन छेः नहींतर गणधरने ए पाठ कहेतां मृषावाद थाय. हवे, लोमहत्थयं परामुसइ के० मोरपींछी ले, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं के० जेम सूर्याभदेवता जिनप्रतिमाने पूजे तेम सघलोय विधि जाणवो ते अधिकार सूर्याभनो त्यां लगे कहेवो. जाव धूवं डहइ के० यावत् धूप दहे ते विस्तार पूर्वे सूर्याभने अधिकारे कह्यो छेः त्यांथी जाणवो. ते धूप दहीने, वामं जाणु अंचेइ के० डावो ढींचण उंचो राखे. दाहिणं जाणु धरणितलंसि निहट्टु के० जमणो ढींचण धरतीए थापेः थापीने, तिक्खुत्तो के० त्रणवार, मुद्धाणं के० मस्तक, धरणितलंसि के० पृथ्वीतलप्रत्ये, निवेसइ के० थापे थापीने. ईसिं पच्चुणमइ के० लगारेक नीचे नमे. करयल जावकट्टु के० हाथ जोडी दश नख भेला करी मस्तके अंजली करीने, एवं वयासी के० एम कहे. नमुत्थु णं, अरिहंताणं भगवंताणं के० नमस्कार थाओ अरिहंत भगवंतप्रत्ये, जाव संपत्ताणं के० यावत् सिद्धिगतिप्रत्ये पाम्या छो. यावत् शब्दे शक्रस्तव संपूर्ण थयो कहेवो. पछी वंदइ के० वंदना करे, नमंसइ के० नमस्कार करे. जिणघराओ पडिणिक्खमइ के० जिनघरमांथी नीकले. एनो विशेष अर्थ टीकाथी जाणवो. अहीयां ते कुमति एम कहे छे जे द्रौपदी श्राविका न होती, ने पूजा करे एमां शुं ? एम कहे छे तेहने शिक्षा देतां श्राविका ठरावे छे.

नारद देखीने नवि थई । उभी तेह सुजाणरे ॥
जाणीए तेणे ते श्राविका । अक्षर एहज प्रमाणरे ॥ श्रा० ॥१५॥

अर्थ—नारद देखीने नवि थइ उभी के० जे द्रौपदी नारद आव्या तेवारे असंयमी जाणीने उभी न थइ. तेह सुजाण के० एहवी ते सुजाण डाही जाणिए. तेणे ते श्राविका के० ते कारणे तेने श्राविका जाणीए. श्राविका विना असंयमी आगल उभा न थाइं,

एहवुं केम जाणे ? अक्षर एहज प्रमाण के० अक्षर तेहज प्रमाण छे. एटले अहींयां आगम प्रमाणे श्राविका छे. इति गाथार्थः ॥ १५ ॥ ते आलावो ज्ञातानो छे ते लखीए छैए-"तएणं सा दोवईदेवी कच्छुल्लं नारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चरकायपावकम्मं तिकट्टु नो आढाइ नो परिआणाइ णो अब्भुट्टेइ ॥" इति. अर्थ-तएणं के० जेवारे नारद आव्या ते वारे, सा दोवईदेवी के० ते द्रौपदीदेवी, कच्छुल्लं नारयं के० कच्छुलनामा नवमा नारद प्रत्ये, असंजय के० असंजमी, अविरय के० अविरती, अप्पडिहयपच्चरकाय के० नथी हण्यां, थी पचख्यां पावकम्मं के० पापकर्म जेणे, इति कट्टु के० एम करीने, णो आढाइ के० न आदर करे, नो परियाणाइ के० आव्यो जाणे पण नहीं, नो अब्भुट्टेइ के० ऊंभी पण न थाय. इति.

वळी ते द्रौपदी श्राविका छे तेनुं बीजुं प्रमाण कहे छे.

आंबिल अंतर छठनुं । उपसर्गे तप कीधुंरे ॥
केम नवि कहिए ते श्राविका । धर्मे कारज सीधुंरे ॥शा०॥१६॥

अर्थ-आंबिल अंतर छठनुं उपसर्गे के० जेवारे अमरकंकाए द्रौपदीने छेई गया ते उपसर्गमां छठने पारणे आंबिल एहवुं तप कीधुं. केम नवि कहिए ते श्राविका के० तेने श्राविका केम न कहीए ? वळी धर्मथी जेनुं कार्य पण सिद्ध थयुं.

हवे तेणे छठ छठनुं तप कर्युं ते आलावो लखीए छैए-"तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ओहय जाव झियाहि । तुमणं मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि । तएणं सादोवई देवी पउमनाभं एवं वयासी । एवं खलु देवाणुप्पिया जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए कण्हेनामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइं । तं जइ णं से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ । तएणं अहं देवाणुपिया जं तुमं वदसि तस्स आणाउवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि । तएणं से पउमे दोवइए एयमट्ठं पडिसुणेइ दोवइदेवी कन्नंतेउरे ठावेइ । तएणं सा दोवईदेवी छट्ठं छट्ठेणं अणिरिकत्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥" इति. अर्थ-तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ओहय जाव झियाहि के० अमरकंकाए जेवारे पद्मोत्तरराजाए द्रौपदीने मित्र देवता कने तेडावी तेवारे द्रौपदी विकल्प करती जाणीने पद्मोत्तर द्रौपदीने कहे छे. उपहत मनथकी यावत् मत्त आर्तध्यान करी, तुमणं मए सद्धिं के० तमे मारी साथे, विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि के० विपुल भोग भोगवतां थकां विचरो. तएणं सा दोवई देवी के० तेवारे ते द्रौपदी देवी, पउमनाभं एवं वयासी के० पद्मनाभ प्रत्ये एम कहे. एवं खलु देवाणु के० हे देवानुप्रिय, जंबुद्दीवे दीवे के० जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भारहे वासे के० भरतक्षेत्रने विषे, त्यां बारवइए के०

द्वारकानगरीने विषे, कण्हे नामं वासुदेवे के० कृष्ण नामे वासुदेव छे ने, मम पियभाउए के० माहरा भर्तारना भाइ, परिवसइ के० त्यां वसे छे. तं जइ णं से के० ते जो, छण्हं मासाणं के० छ महीनामां, मम के०मने, कूवं के० पाछी वालवा, नो हव्वमागच्छइ के० नहि आवे, तएणं अहं देवाणु के० तो हुं हे देवानुप्रिय, जं तुमं वदसि के० जे तुं कहीश, तस्स आणाउवायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि के० आज्ञाउपाय वचन निर्देशे रहीश. तएणं से पउमे के० तेवारे ते पद्मनाभ, दोवई ए यमट्ठं पडिसुणेइ के० द्रौपदीनी ए वात मानी. पछी, दोवईदेवी के० द्रौपदी देवीने. कन्नंतेउरे ठावेइ के०कन्याना अंतेउरमध्ये मूके, तएणं सा दोवइदेवी के० तेवारे ते द्रौपदीदेवी, छट्ठं छट्ठेणं के०छह छहने, अणिक्खित्तेणं के० निरंतर, आयंबिल परिग्गहिएणं के० आंबिल परिगृहीत, तवोकम्मं के० तपकर्म करीने, एटले छठ छठने पारणे आंबिल करती थकी, अप्पाणं भावेमाणे के० आत्माने भावती थकी, विहरइ के० विचरे ॥ इति.

वली कुमति कहे छे जे द्रौपदी श्राविका नथी एम कहे छे. तेहने दृष्टांत देइने वली द्रौपदीने श्राविका ठरावेछे.

रायकन्या कही श्राविका ॥ न कही जे भूलेरे ॥ राजीमती
कही तेहवी ॥ तिहां संदेह ते झुलेरे ॥ शा० ॥ १७ ॥

अर्थ—रायकन्या कही के० द्रौपदीने राजकन्या कही छे, पण, श्राविका न कही के० श्राविका नथी कही. एम, जे भूले के० एवी वातो करीने जे भूलेछे तेहने उत्तर कहेछे. राजीमती कही तेहवी के० जेम राजीमती साध्वी थकी राजकन्या कहीछे. अथवा मल्लिनाथने ज्ञातासूत्रमध्ये राजकन्या कहीछे; तेहमां श्राविका पणुं तथा साध्वीपणुं केम गयुं ? तेम द्रौपदी पण जाणवी. ए दृष्टांते, संदेह ते झुले के० संदेह जातो रहे. यतः—“अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ॥” इति उत्तराध्ययने. वली कुमति कहेछे जे परण्या पछी समकित पामीछे, ते पांच भरतार कर्या एटले नियाणुं कर्युं हतुं ते पूरुं थयुं; माटे मिथ्यात्व थकां पूजा करीछे. एम कहे छे तेहने हवे उत्तर वाले छे.

हरि परे कर्म नियाणनुं ॥ इह भवे भोग न नासेरे ॥ समकित
लहे परण्यापछी ॥ कहे ते शुं न विमासेरे ? शा० ॥ १८ ॥

अर्थ—हरि परे के० श्रीकृष्णनी पेरे, कर्मनियाणानुं के० जे नियाणानुं कर्म तेणे करी, इह भवे के०आ भवपर्यंत, भोग न नासे के० भोग नाशे नहीं. एटले आ भवपर्यंत भोगवे, तेवारे छूटको थाय. समकित लहे परण्या पछी के० परण्या पछी समकित पामी, कहे ते शुं न विमासेरे के० एम कहेछे ते केम नथी विचारता ? इति अक्षरार्थ. भावार्थतो ए छे जे

दशाश्रुतस्कंधमां नवप्रकारनां नियाणां कह्यांछे. ते मध्ये धुरनां सात नियाणां कामभोगनां छे, ते उत्कृष्टे रसे नियाणुं कर्युं होय तो समकित न पामे; अने जो मंदरसे नियाणुं कर्युं होय तो सुखे समकित पामे. जेम कृष्ण, वासुदेवनुं नियाणुं करीने उपन्या छे, तेहने पण समकितनी प्राप्ति थइछे. कोइ दुढिओ बोल्यो जे वासुदेवनी पदवी पाम्या एटले नियाणुं पूरुं थयु, माटे वासुदेवनी पदवी पाम्या पछी समकित पाम्याछे; तेम द्रौपदी पण पांच भरतार पामी एटले नियाणुं पुरु थयुं पछी परणीने समकित पामी ते खोटुं कहेछे. जे माटे नियाणुं तो भव लगे पहोंचे. केमके दशाश्रुतस्कंधमांज नवमुं नियाणुं दीक्षानुं कह्यु छे; ते दीक्षा लीधी एटले नियाणुं पुरुं थयु जोइए तेवारे तेहज भवनेविषे केवलज्ञान उपज्युं जोइए ते केवलज्ञान उपजवानी तो दीक्षाना नियाणावालाने ना कही छे. तद्यथा–"एवं खलु समणाउसो निग्गंथे वा निग्गंथी वा नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइअ अपडिक्कंते सव्वं तं चेव से णं मुंडे भवित्ता आगाराउ अणागारं पव्वएज्जा, से णं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव दुक्खाणं अंत्तं करेज्जा, नो इणट्ठे समट्ठे ॥" इत्यादि. एमां एम कह्युं जे, ते दीक्षाना नियाणावाले ते भवमां मोक्षे न जाय. तेमाटे नियाणुं ते भव पूरो थाय त्यां लगे पहोंचे. पण मंदरसे नियाणु कर्युं होय तो सम्यक्त्वादिक गुण सुखे पामे. एक केवलज्ञान न पामे ते माटे द्रौपदीनुं नियाणुं मंदरसेज छे. ते कारणे बाल्यावस्थाने विषे समकित पामी संभवे छे बाकी तो आम्नायविना सूत्र अक्षर देखीने अर्थ करीश तो एहज दशाश्रुतस्कंधमां त्रीश थानके महा मोहनीय कर्म बांधे. ते महा मोहनी तो उत्कृष्टी सीत्तेर कोडा कोडी स्थिति छे तो परदेशी राजाने समकित अणुव्रतनी प्राप्ति न थइ जोइए. जे माटे परदेशी राजाए तो घणा पंचद्रिय जीवोनी हिंसा करी छे; ते तो रायपसेणीसूत्रमां प्रसिद्ध छे. ते महामोहनी बांधीने घणो संसार रझल्यो जोइए पण ते तो एकावतारीछे; तेवारे ए सूत्र केम मलशे ? अने सूत्रमां तो द्रौपदीए पूजा करी तेवारे सूर्याभने भलाव्यो छे; ते लेखे पण समकिती तो अवश्य ठरेज छे. वली परणवानी धक पकमां महामोहनी भीडमां जिनपूजानी करणी सांभरीछे, ए पकी श्रद्धावंतीनां लक्षण छे. ते माटे द्रौपदी सुलभ बोधि हती; माटे जिनपूजा सांभरीछे. अहियां कोइ कहेशे जे एकज वार पुजी कहीछे, पछीतो कहींए पूजी नथी. तेहने कहीए जे एकवार पण कहीछे. अने द्रौपदीए खाधुं तो एकवार पण नथी कह्युं माटे खाधुं पण नहि होय. वली तुंगीया नगरीमां श्रावके साधु एकजवार वांद्याछे, तथा आणंद कामदेवादिके भगवंतने एकजवार वांद्याछे; ते केम बीजीवार नहिज वांद्या होय ? वली जो परणतां मोहनी भीडमां जिनपूजा करीछे तो बीजे काले तो अवश्य पूजा करीज हशे; एमां शी शंकाछे ? वली मूर्ख कहेछे जे ए स्त्री बतावीतो कोइ श्रावक कां न कह्यो ? तेने कहीए जे प्रभुजीने रेवती श्राविकाएज औषध वहोराव्यु तो श्रावके वहोराव्युं एम कां न कह्युं ? वली प्रथम सिद्ध मरुदेवीमाता थयां, तथा वीर प्रभुनो अभिग्राय छ मास पांच दिन उणे चंदनबालाए पूरो कर्योछे; तथा संगमाना उपसर्गने छ महीने वत्सपाली डोसीए पारणुं परमान्ने कराव्युं छे. वली ए चोवीशीमां मल्लिनाथजी अनंत चोवीशीए

स्त्रीपणे तीर्थंकर थया, इत्यादिक आ चोवीशीमां स्त्रीओए घणां मोटां काम कर्यां छे; तें प्राय पुरुष तो करे तेमां शी वडाइ? पण स्त्रीओने करवुं दोहलुं छे, तेम पुरुषने तो पूजानां कारण मेलववां सुगम छे; पण स्त्रीने विषम छे; द्रौपदीनो अधिकार विस्तारे कह्योछे, जो स्त्रीए एम पूजा करीतो पुरुषे तो घणीज करीछे; एमां शो संदेह ? ए भाव. वली द्रौपदीनी निंदा करतां घणु दुःख पामशे, जेम कौरवोनो निकंदन थयो, तथा कैयाकीचक कबीला सहित दुःख पाम्यो; वली पद्मोत्तर राजा दुःख पाम्यो; अने द्रौपदीने शरणे उगर्यो, तेम ढुंढक पण आ भवे जैनबाह्य थया छे, अने परभवे शी गति थाशे ? ते ज्ञानी जाणे, हवे ते राजवर कन्या पोताना नियम व्रतनेविषे रही थकी ए पाठ दीक्षा लीधा पछीनो छे,

वली कुमति कहेछे जे परण्या पछी समकित पामी छे, नहींतर पांच भर्तार केम करे ? एम कहेछे तेने एज गाथामांथी उत्तर वाळेछे,

हरि परे के० श्रीकृष्णनी पेरे, कर्मनियाणनुं के० नियाणानुं जे कर्म—तेणेकरी, इह भवे के० आ भवमां भोगनो नाश न थाय; ते माटे, समकित लहे परण्या पछी के० परण्या पछी समकित पामी, कहे ते शुं न विमासे के० एम कहेछे ए वात केम विचारता नथी ? इति अक्षरार्थ, भावार्थ तो ए छे जे, श्रीकृष्णे पूर्वे नियाणुं वासुदेवनुं कर्युं हतुं, ते वासुदेव पदवी भव पर्यंत भोगव्या विना छूटको नहि; पण समकितने बाध नथी, तेम द्रौपदीए पांच भर्तारनुं नियाणुं कर्युं हतुं, ते पांच भर्तार थया विना छूटको नहीं; पण समकितने बाधा कोणे करी ? जे माटे मनकल्पित नव नवी वातो उठावो छो ? इति भाव इति गाथार्थ ॥ १८ ॥

जिणधर केणे कराव्युं ॥ तिहां प्रतिमाने पइट्ठारे ॥ तेहनी पूजा ते कुण करे ॥ एम परखे ते गरिट्ठारे ॥ शा० ॥ १९ ॥

अर्थ—जिणधर केणे कराव्युं के० देहेरुं जिनेश्वरनुं श्रावकटाली कोणे कराव्युं ? तिहां प्रतिमाने पइट्ठा के० त्यां प्रतिमा तथा प्रतिमानी प्रतिष्ठा एटलां वानां श्रावक विना कोण करे ? एम परखे के० एम परीक्षा जे करे, ते गरिट्ठा के० ते महोटा आदमी जाणवा, पण वगर विचारे जेम तेम जे बोले ते हलका जाणवा, इति वली कुमति कहे छे जे परणवा वेला पूज्या छे, तेने उत्तर कहे छे.

वर नवि माग्यो छे पूजतां ॥ शक्रस्तवे शिव मागेरे ॥ भक्ति समी सूरियाभने ॥ विरती विशेषथी जागेरे ॥ शा० ॥ २० ॥

अर्थ—वर नवि माग्यो छे पूजतां के० पूजा करतां वर नथी माग्यो, शक्रस्तवे शिव

वच सुरेंद्रश्रामीकर

मागे के० नमुत्थु णं करतां मोक्ष माग्याछे, जे माटे ॥ 'तिण्णाणं तारयाणं ॥' इत्यादिक पद भावतां तुं तर्यो मुजने तार, इत्यादिक भावना कीधीछे, पण वर पामुं तो याग भोग तमारां करशुं, एम नथी कह्युं, तो अछतुं आल चडावी कां अनंतो संसार बांधो ? वली कुमति कहेछे जे सूरियाभनी परे कूवा, वावी, उंबरा प्रमुख पण द्रौपदीए पूज्यां छे; एम कहेछे. जे माटे ॥ 'जहा सूरियाभो तहेव जिणपडिमा अच्चेइ ॥' ए पाठे सूर्याभनी पेरे जिन प्रतिमा पूजे एम कह्युं छे. तथा देशविरती छे ते माटे सूर्याभथकी विशेष भक्ति छे एम पण समजवुं. तेहज कहे छे. भक्तिसमी सूर्याभने के० भक्ति सूर्याभना सरखी. हवे भक्ति शब्द आगल जोडीए, विरती विशेषथी भक्ति जागे के० देशविरतीए विशेष भक्ति प्रगट होय. इति गाथार्थ ॥ २० ॥

वली जिनप्रतिमाने ॥ 'ठाणं संपत्ताणं ॥' एम कह्युं छे तथा भाव तीर्थंकरने 'ठाणं संपाविउं कामे ॥' एहवा पाठछे. माटे सिद्ध स्थानक पाम्या छो एम जिन प्रतिमाने सिद्ध गण्या माटे भावतीर्थंकरथी पण ए अपेक्षाए अधिकीछे; माटे लौकिक पूजा द्रौपदीए नथी करी एतो विशेषे प्रत्यक्ष पाठ जणाय छे. आंख उघाडी जुए ते देखे. वली कोइ कुमति एम कहे छे जे जिनघर ते अवधिजिननुं घर एटले कोइ यक्षनुं देहेरु हतुं. शामाटे जे अवधिजिन ठाणांग मध्ये कह्याछे. एम कहेछे ते खोटुं. जे माटे अवधिजिन आगल कोइए शक्रस्तव नथी कर्युं. इति ॥

धर्म विनय अरिहंतनो ॥ एम ए लोग उवयारोरे ॥ संभ
वे सर्वने जाणिए ॥ समकित शुद्ध आचारोरे शा० ॥ २१ ॥

अर्थ–धर्म विनय अरिहंतनो एम ए लोग उवयारो के० एम ए पूजा, अरिहंतनो लोकोपचार विनय धर्मछे; एम अन्वय करवो. संभवे सर्वने जाणिए के० जेहने जे संभवे तेहने ते जाणीए. एटले जे साधु एणी पेरे करे, देश विरती एणी पेरे करे अने समकिती एणी पेरे करे, एम जेहने जेवो पाठ संभवे तेहने यद्यपि सूत्रकारे न कह्यो होय तोय कहेवो. समजवुं जे जिनपूजा ते समकितनोज शुद्ध आचारछे; पण मिथ्यात्वीनो आचार नथी. इति गाथार्थ. ॥ २१ ॥ ते उपर दृष्टांत कहेछे.

आणंदनो विधि नवि कह्यो ॥ राय प्रदेशीने पाठेरे ॥ संभ
व सर्व न मानशे ॥ वींटाशे तेह आठेरे ॥ शा० ॥ २२ ॥

अर्थ–आणंदनो विधि नवि कह्यो के० सातमा अंगमां आणंदश्रावकनो विधि कह्यो; ते रीते नथी कह्यो. क्यहां नथी कह्यो ? ते कहेछे. रायप्रदेशीने पाठे के० रायपसेणीमां प्रदेशी राजाना पाठमां नथी कह्यो, ते माटे शुं आणंदे जेम व्रत समकित उचर्यां तेम प्रदेशीए शुं नथी उचर्यां ? तेमाटे जेने जे संभव होय ते मानवो, तथा संभव सर्व न

मानशे के० सघलो संभव नहि माने, वींटाशे तेह आठे के० ते आठे कर्मे वींटाशे, एटले घणो संसार रझलशे. ॥ २२ ॥ तथा वली एहज संभव देखाडे छे.

पडिकमणादिक क्रम नहीं ॥ पाठे सप्तम अंगेरे ॥ पढम अणु ओगथी प्रकरणे ॥ सर्व कह्यो विधि रंगेरे ॥ शा० ॥ २३ ॥

अर्थ—पडिकमणादिक क्रम के० पडिकमणादिकनो अनुक्रम, नहीं पाठे सप्तम अंगे के० उपासक दशांगमां पाठ नथी. एटले ए भाव जे साधुने पडिकमणानो अनुक्रम तो थेडोएक श्री उत्तराध्ययने सामाचारी अध्ययनमां कह्यो छे, पण श्रावकने तो सातमा अंगमां आणंदादिकने कांइए बताव्यो नहीं; तेवारे श्रावक पडिकमणादिक कोण सूत्र उपर करे ? तेमाटे ए नगुरांने उत्तर देवानुं ठेकाणुं नथी. इहां शिष्ये पूछ्युं के हे स्वामिन्, तेवारे श्रावक क्यांथी करे छे ? तेहने करुणाए पाछो जवाब कहे छे. पढमअणुओगथी के० प्रथमानुयोग जे दृष्टिवादना चोथा भेदनो प्रथम भेद, तेहमां थकी प्रकरणमां पूर्वाचार्ये सर्व विधि कह्यो छे. रंग के० पर उपकारने रंगे कह्यो छे. यतः श्रीसमवायांगसूत्रे—“से किं तं अणुओगो अणुओगे दुविहे पन्नते तं जहा, मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य॥ ’ इत्यादि. अर्थ—बारमा दृष्टिवादना भेद पांच छे. एक परिकर्म, बीजो सूत्र, त्रीजो पूर्वानुगत, चोथो अनुयोग, अने पांचमो चूलिका—तेमां चोथो अनुयोग ते, दुविहे पन्नते के० ते बे प्रकारे छे. तेमां मूल प्रथमानुयोगमां घणी वातो सूत्रकारे लखी छे, पण ते कहेतां ग्रंथ वधेछे माटे नथी कहेता. इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

हवे कोइक कहेशे जे प्रदेशी प्रमुखना अधिकारमां विशेषे वात कां न कही ? ने उत्तर कहेछे जे ए सिद्धांतनी शैलीजछे; ते उपर गाथा कहेछे.

किहांएक एक देशज ग्रहे ॥ किहांएक ग्रहे ते अशेषोरे ॥ कि एक क्रम उतक्रम ग्रहे ॥ ए श्रुतशैली विशेषोरे ॥ शा० ॥ २४ ॥

अर्थ—किहांएक एक देशज ग्रहे के० कोइक स्थानके तो वस्तुनो देशज एक ग्रहे. जेम श्रीभगवतीसूत्रमध्ये रथ मुसल संग्राम तथा महा शिलाकंटक संग्राम कह्यो, तेम, किहांएक ग्रहे ते अशेषो के० कोइक स्थानके समस्त ग्रहे, जेम निरयावलीमध्ये एहज संग्राम विस्तारे कह्या छे. किहांएक क्रम के० कोइक स्थानकनेविषे अनुक्रमे कहे. जेम पन्नवणा प्रमुखनेविषे धर्मास्तिकायादिक अनुक्रमे कह्या छे. उतक्रम ग्रहे के० कोइक स्थानके पश्चानुपूर्वीए ग्रहे. जेम कल्पसूत्रनेविषे वीरस्वामिथकी रुषभदेवजी लगे अधिकार कह्यो. ए श्रुतशैली विशेषो के० ए सिद्धांतनी शैली विशेषछे. यतः—“कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ घिप्पंति निरवसेसाइं । उक्कमवइक्कमाइं, सहावबसओ निरुत्ताइं ॥१॥” इति कल्पभाष्ये सुगमा ॥ ए वातो नजरमां राखे तो सूत्रनो खरो अर्थ थाय. ते देश प्रमुख सूत्रे ग्रह्या होय ते संपूर्ण तो निर्युक्ति टीका प्रमुखमां पामीए. इति गाथार्थ. ॥ २४ ॥ हवे उपसंहार करेछे.

शासननी जे प्रभावना ॥ ते समकितनो आचारोरे ॥
श्री जिनपूजाए जे करे ॥ ते लहे सुजश भंडारोरे ॥ शा० ॥ २५ ॥

अर्थ—शासननी के० जिनशासननी, जे प्रभावना के० शासन उजळुं देखाडवुं; जे देखी लोक प्रशंसा करे, ते समकितनो आचारो के० ते समकितनो आचार छे. यतः श्री उत्तराध्ययन अठावीशमे अध्ययने कह्युं छे—"निस्संकियनिकंखियनिव्वितिगिच्छा अमूढ दिठ्ठी य । उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अठ्ठ ॥१॥" अर्थ—निस्संकिय के० देशथी सर्वथी शंका न करवी. १ निकंखिय के० अन्यदर्शननी वांच्छा न करवी. २ निव्वितिगिच्छा के० फलनो संदेह न राखवो. अथवा मल मलीन गात्रदेखीने साधुनी दुगंछा न करवी. ३ अमूढदिठ्ठी य के० कुदर्शनीना विद्या चमत्कार देखे तोपण जिनशासन रूडुं जाणे. पण मतिमूढ न थाय. ४ ए चारे श्रद्धारूप अंतरआचार छे. हवे बाह्यक्रियारूप चार आचार कहेछे. उववूह के० प्रशंसा करीने गुणवंतना ते ते गुणनुं वधारवुं. ५ थिरीकरण के० धर्मानुष्टानमां सीदाताने थिर करवा ६ वात्सल्यं के० साधर्मिकोने भातप्रमुखे उचित प्रतिपत्तिनु करवुं. ७ पभावणा के० जेथकी जिनशासननी उन्नति थाय. एवी चेष्टाए वर्त्तवुं. ८ ते माटे प्रभावना ते समकितनो आठमो आचारछे. ते श्रीजिनपूजाए जे करे के० श्रीजिनेश्वरनी पूजाए जे प्राणी शासननी उन्नति करे, ते लहे सुजश भंडारो के० ते प्राणी पूजा करीने शासननी प्रभावनानो करणहार भलो जशनो भंडार पामे. एटले पूजा, तीर्थ यात्रा, संघ काढवे शासननी प्रभावना थायछे एम देखाडयुं. तथा जश एवुं पोतानुं नाम पण कविए सूचव्युं. इति पंचविंशतमी गाथार्थ ॥ २५ ॥ एम त्रीजो ढाल संपूर्ण थयो. ग्रंथाग्रंथ ५१३ अक्षर १६ सर्व ग्रंथाग्रंथ मलीने १५२४ अक्षर—१०

हवे चोथो ढाल कहेछे. तेहने पूर्व ढालसाथे ए संबंध छे, जे त्रीजा ढालमां पूजानो अधिकार कह्यो, हवे ते कुमति, पूजामां हिंसा माने छे; तेहने जवाब देवा चोथो ढाल कहे छे, ए संबंधे आव्यो चोथो ढाल तेहनी ए प्रथम गाथा कहेछे,

॥ ढाल चोथो ॥ झांझरिया मुनिवर धन धन तुम अवतार ए देशी ॥

कोइ कहे जिन-पूजतांजी ॥ जे षट्काय आरंभ ॥ ते
केम श्रावक आचरे जी ॥ समकितमां थिरथंभ ॥ सुख
दायक तोरी आणा मुज सुप्रमाण ॥ टेक ॥ १ ॥

अर्थ—कोइ कहे जिन पूजतां के० कोइक तो ढुंढीआ एम कहे छे जे परमेश्वरनी पूजा करतां थकां, जे षट्काय आरंभ के० छ कायनी जे हिंसा थाय छे, ते के० ते पूजा केम श्रावक आचरे के० श्रावक केम करे? समकितमां थिरथंभ के० समकित

दृढ छे ते श्रावक छ कायनीं हिंसानो हेतु जे जिनपूजा ते, धर्मवास्ते केम करे ? इति प्रथम गाथार्थ. सुखदायक के० हे सुखदायक, सुखना देणहार, तोरी आणा के० तमारी आज्ञा ते, मुज सुप्रमाणके० महारे प्रमाण छे. अथवा प्रभुजीनी स्तवना ते करेज छे माटे प्रभुजीने कहे छे जे सुखदाइ जे तमारी आज्ञा ते मारे प्रमाण छे, एटले ए भाव जे तमारी आज्ञा ते प्रमाणछे, पण कुयुक्ति करवी ते प्रमाण नथी ॥ १ ॥

हवे उत्तर वाले छे,

तेहने कहीए जतना भक्ति ॥ किरियामां नहीं दोष ॥ पडिकमणे मुनिदान विहारे ॥ नहींतो होय तस पोष ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ–तेहने कहीए के० जे पूजामां हिंसा बतावे छे तेहने कहीए, शुं कहीए ? ते कहेछे, जतना भक्ति के० एक जतना, बीजी भक्ति, किरियामांके० जे क्रियामां होय एटले जे क्रियामां जतना तथा भक्ति होय, नहीं दोष के० ते क्रियामां दोष नथी, तथा कदाचित् तेहमां पण हिंसा कहीने दोष देखाडीए तो, पडिकमणे के० पडिकमणामां, मुनिदान के० मुनिने दान देतां, विहारे के० मुनिने विहार करतां, नहींतो के० जतना भक्तिए पण करतां दोष कहीए तो, होय तस पोष के० ते प्रतिक्रमण प्रमुखमां पण हिंसानी पुष्टि थाशे, एटले ए भाव जे, प्रतिक्रमण करतां उठ वेस करतां वायुकाय हणाय, मुनि दानमां पण उन्ही बाफ नीकले, तथा दान देवा उठतां पण जीवघात थाय, वली मुनिने विहार करतां पण पृथ्वी, पाणी, वायु, वनस्पति वली त्रस वेंद्रियादिकनो पण घात थाय; ते माटे ए पण न करवां; एम कहेवुं पडशे, ते माटे जतना भक्तिए क्रियामां दोष नथी ॥ २ ॥

हवे ते उपर दृष्टांत देखाडे छे.

साहमी वच्छल पक्खिय पोसह ॥ भगवई अंग प्रसिद्ध ॥ घर निर्वाह चरण लिए तेहनां ॥ ज्ञातामांहे हरि कीध ॥ सु० ॥३॥

अर्थ–साहमीवच्छल के० साधर्मिकनां वात्सल्य कर्यां, तथा पक्खिय पोसह के० पाक्खीनो पोसो कर्यो ए अर्थे सूचव्यो. एहवो शंख पुष्कलीनो अधिकार भगवई अंग प्रसिद्ध के० श्री भगवतीसूत्रमां प्रसिद्धछे. तथाच तत्पाठः–"तएणं से संखे समणोवासए एवं वयासी, तुम्हे णं देवाणुप्पिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह । तएणं अम्हे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामि ॥" इति भगवतीसूत्रे शतक बारमे उद्देशे पहेले ॥ अर्थ–तएणं के० सावत्थीनगरीने बाहेर वीरस्वामि समोसर्या. त्यां शंख श्रावक प्रमुख घणा श्रावक, देशना सांभलीने पाछा घरभणी आवे छे तेवारे, से संखे के० ते शंख श्रावक, समणोवासए के० बीजा श्रमणोपासकोने, एवं वयासी के० एम कहेछे. तुम्हे णं देवाणुप्पिया के० हे देवाणुप्रिय तमे, विउलं के० विपुल अशनादिक, उवक्खडा-

वच सुरेंद्रश्रामीकर

वेह के० रंधावो. तएणं अम्हे के० तेवारे आपण, विउलं असणं इत्यादिक सुगम छे. तेहने आस्वादन करतां थकां थोडुं खावुं, घणुं तजवुं: ते आस्वाद कहीए, शेलडीनी पेरे, तथा विसाएमाणा के० विशेषे स्वाद करतां खजूर प्रमुखनी पेरे घणुं खातां थोडुं काढी नाखतां, परिभाएमाणा के० अन्योन्य देतां. परिभुंजेमाणा के०अन्नादिकनी पेरे सर्व वावरतां पाखी संबंधी पोसह, पडिजागरमाणा के० पालता थका, विहरिस्सामि के० विचरशुं. इति. एम ठराव करीने पछे वधते परिणामे घेर जइ शंखेतो निराहार पोसह कर्यो. ते 'सुदक्खु-जागरिका' एम भगवंते वखाण्यो. ते माटे बीजा श्रावकना पक्खिय पोसह वखोडया न कहीए. जेम धना अणगारनो तप वखाण्यो एटले बीजा अणगारनो तप वखोडयो न कहीए. जिनशासनमां सर्व करणी शक्ति प्रमाणे लेखेछे: ते माटे ए साहमिवत्सल करतां हिंसा तमारे लेखे थइ जोइए: पण जतना तथा भक्ति होय त्यां दोष न लागे एम मानीए तो सूत्रमां सघु लागे. तथा वली. घरनिर्वाह चरण लिए तेहनां के० जे चारित्र लीए तेना घरनो निर्वाह, हरि कीध के० कृष्णे कर्यो छे. ते ज्ञातामांहे के० ज्ञातासूत्रमध्ये कह्युं छे ते हिंसा. कृष्णने केम नहीं लागे? अहींयां तो जतना पण नथी. तथा च ज्ञातासूत्रं—"तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ. सद्दावेइत्ता एवं वयासी, गच्छह णं देवाणुप्पिया बारवइए नयरीए सिंघाडगतिगजाव पहेसु हत्थिखंधवर-गया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह। एवं खलु देवाणुप्पिया थावच्चापुत्ते संसार भउव्विग्गो भीए जम्म मरणाणं इच्छइ अरहओगं अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए. तं भो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारो वा ईसरो वा तलवरे वा कोडंबियसेट्ठिसेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पवयंतमणुपव्वयति. तस्स णं कन्हे वासुदेवे अणुजाणइ. पच्छाउरस्सावि य से मित्तणाइ जोगखेमं वट्टमाण पडिवहइ त्ति घोसणं घोसेह. जाव घोसेइ। तएणं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं णिक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरुढं समाण मित्तणाइपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भयं। तएणं कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ. कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ. सद्दावेइत्ता एवंवयासी, जहा मेहस्स णिक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं पासेइ. विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ। तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरहाअरिट्ठनेमि सव्वं तं चेव॥" इति ज्ञातासूत्रे अध्ययन पांचमे॥ अस्यार्थ—तएणं से कण्हे वासुदेवे के०तेवारे ते कृष्णवासुदेव, थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे के० थावच्चापुत्रे एम कहे थके एटले कृष्णने थावच्चापुत्रे कह्युं: जे मरणथी रखवालो तो रहुं एम कहे थके, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ के० कौटंबिक पुरुषने बोलावे. बोलावीने एवं वयासी के०एम कहे. गच्छह णं देवाणुप्पिया के०हे देवानुप्रिय, जाओ. बारवइएनयरीए के० द्वारकानगरीने विषे, सिंघाडगतिगजाव पहेसु के० सींगोडाने आकारे

मार्ग, एम त्रिक चोक मार्ग. यावत् राजपथने विषे, हत्थिखधवरगया के० हाथीना स्कधने विषे वेसीने, महया सद्देणं के० मोटे शब्देकरी, उग्घोसेमाणा के० घोसणो करतां, उग्घोसणं करेह के० उद्घोषणा करो एटले लोकने एम जणावो. एव खलु देवाणुप्पिया के० हे देवानुप्रियो एवी रीते, थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे के० थावच्चापुत्र ससारना भयथी उद्वेग पाम्याछे. भीए जम्ममरणाणं के० जन्म मरणथी वीहीन्याछे. इच्छइ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अंतिए के० अरिष्टनेमि अरिहंतने पासे इच्छे छे. मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए के० मुंड थइने प्रवर्ज्या लेवाने, तं भो खलु देवाणुप्पिया के० हे देवानुप्रिय. जे कोइ राया वा जुवराया के० राजा अथवा युवराज, देवी वा के० राणीप्रमुख, कुमारो वा के० कुमार. ईसरो वा के ईश्वर, तलवरे वा के० कोटवाल, कोडुंबिय के० कुटुंबना स्वामी, सेट्ठी सेणाव के० शेठ सेनापति, सत्थवाहे वा के० सार्थवाह, थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयति के० थावच्चापुत्र दीक्षा लेताने पछवाडे दीक्षा लीए, एटले थावच्चापुत्र साथे दीक्षा लीए तस्स णं कन्हे वासुदेवे अणुज णइ के० तेहने कृष्णवासुदेव आज्ञा आपेछे. पच्छा के० ते राजा दीक्षा लीधे थके पछवाडे, आउरस्सावि य के० आतुर जे धनादिकने अभावे दुःखी हशे, से के० तेहना. मित्तणाइ के० मित्र ज्ञाति एटले पोता संबंधी परिजनने, जोगखेमं वट्टमाण के० योग क्षेम वर्तमान वहेशे. एटले जेहनी पासे नहीं होय तेहने आपशे; ते योग कहीए; अने जेहनी पासे हशे तेहने पालशे तेहने क्षेम कहीए, ते योग तथा क्षेम वर्तमानकाले जेम घटशे तेम राजा कृष्ण करशे. एटले ए भाव जे-जे कोइ थावच्चापुत्र साथे दीक्षा ले तेहने पछवाडे तेना घरना निर्वाहनी चिंता कृष्ण करशे, ते अटकावे कोइ रहेशे। नहीं. इति भाव. घोसणं घोसेह के० घोषणा करो. जाव घोसेइ के० ते कौडुंबिक पुरुष तेमज उद्घोषणा करे. तएणं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं के० थावच्चापुत्रने रागे, पुरिससहस्स के० एक हजार पुरुषे, णिक्खमणाभिमुहे के० दीक्षा लेवा सन्मुख थया. ण्हायं के० स्नानप्रमुख करो, सव्वालंकारविभूसियं के० सर्व अलंकारे शोभित थइ, पत्तेयं पत्तेयं के० प्रत्येके भिन्न भिन्न. पुरिससहस्स वाहिणीसु सिवियासु के० हजार पुरुष उपाडे एवी शिबिकाने विषे दुरूढं समाणं के० वेठा थकां, मित्तणाइपरिवुडं के० मित्र ज्ञाते परिवरया. थावच्चापुत्तस्स अंतिय पाउब्भवं के० थावच्चापुत्रने समीपे प्रगट थाय एटले थावच्चापुत्रने पासे आवे. तएण कन्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ के० ते कृष्ण वासुदेव हजारे पुरुष आव्या देखे. कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ के० कौडुंबिक पुरुषने वोलावे वोलावीने, एव वयासी के० एम कहे. जहा मेहस्स णिक्खमणाभिसेओ के० जेम मेघकुमारनो निष्क्रमणाभिषेक ते दीक्षा लेवानो अभिषेक कर्यो; तहेव के० तेमज, सेयपीएहिं के० श्वेत पीलां एटले कनक रूपाने कलशे करी, ण्हावेइ के० नवरावे, जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडाग पासइ के० अहींयां यावत् अरिहा अरिष्टनेमिना छत्राति छत्र पताका देखे, विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता के० विद्याधर चारण जृंभक देवता आकाश थकी उतरता देखीने, सीधाओ

वच सुरेंद्रश्चामीकर

तस्यच तथास-

पच्चोरुहइ के० शिबिका थकी उतरे. तएणं कण्हे वासुदेवे के० तेवारे कृष्ण वासुदेव, थावच्चापुत्तं पुरओ काऊं के० थावच्चा पुत्रन आगळे करीने, जेणेव अरहाअरिट्ठनेमि के०ज्यां अरिहा अरिष्टनेमि छे; सव्व तं चेव के०बाकी सर्व मेघ कुमारनी परे कहेवुं अहीयां कृष्ण महाराजे लोकनां घर निर्वाह कर्यां; तेमां हिंसा लागे के नहि ? ते विचारजो. इति-तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

कुणिक राय उदायन कीधां ॥ वंदन मह सुविविके ॥ ण्हाया
कय बलिकम्मा कहिया ॥ तुंगीय श्राद्ध अनेक ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ—वली कुणिकराय के० कुणिकराजाए, वंदनमह के० घणे आडंबरे वांदवाना महोत्सव कर्या. एटले प्रभुजीने सामाइयां कर्यां, ते श्री उववाइसूत्रमां विस्तार घणो छे; ते लखतां ग्रंथ घणो वधे माटे लखता नथी. वली उदायन के० उदाइ राजाए पण सामइयां कर्यां. ते श्री भगवतीसूत्रमां शतक तेरमे उद्देशे छठे अधिकार छे. तथा च तत्पाठ—"तएणं उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ कोडंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया वीतभयं नगरमब्भिंतरबाहिरियं जहा कोणीओ उववाईए जाव पज्जूवासेइ॥" अस्यार्थ—तएणं उदायणे राया के०तेवारे उदाइराजाए, इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे के० वीरस्वामिने आव्यानी कथा पामे थके. हट्ठतुट्ठ के० हर्ष पामे. संतोष पामे. कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ के० कौटुंबिकपुरुषने बोलावे. बोलावीने एवं वयासी के० एम कहे. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया के०भो देवानुप्रिय शीघ्र, वीतभयं नयरमब्भिंतरबाहिरियं के० ए वीतभयनगर मध्ये तथा बाहेर शणागारो. इत्यादिक. जहा कोणिओ उववाईए के० जेम कुणिक राजा उववाइ सूत्रमां कह्या छे तेम कहेवुं. जाव पज्जूवासेइ के० यावत् प्रभुजीनी सेवा करे. एम कूणिकने, उदाइने, सामईयामां हिंसा लागे के नहीं ? ते विचारजो. तथा, ण्हाया कयबलिकम्मा के० कर्यां छे बलिकर्म—पूजाकर्म जेणे एहवा, तुंगीय श्राद्ध अनेक के० तुंगीया नगरीना अनेक श्रावक वखाण्या छे. ते भगवतीसूत्रना शतक बीजे उद्देशे पांचमे छे; ते श्रावक पूजा करे ते अरिहंत विना बीजा कोण देवनी करे ? ते विचारजोजी. तथा बलिकर्म ते पूजाज छे. शामाटे जे ज्ञातासूत्र मध्ये—"तएणं मल्ली विदेहवररायकन्ना ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया बहूहि खुज्जाहिं जाव परिखित्ता ॥" अहियां बे वार सरखो पाठ छे; ते माटे मल्लिए कय बलिकम्मा के० बे वार देव पूजा करी. अप्पणो पडिमं कारेइ के० पोतानी प्रतिमा भरावी वली नित्य आहार कवल मूक्यो. तेहमां पण जीवनी उत्पत्ति थाय. पण ते हिंसामां नहीं. वली यतिना पडिकमणसूत्रमांहे ॥ 'मंडिपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ॥' ए पाठ छे. मंडिपाहुडियाए के० भीखारीने माटे ढांकणीमांहे धान घाल्युं ते लेवुं नहीं. बलिपाहुडि-

याए के० नैवेद्यनुं धान वहोरवुं नहीं अजाणतां वहोरी खाधुं तो ॥ मिच्छामि दुक्कडं ॥ वली नाममाला मध्ये—'पूजार्हणा सपर्यार्चा उपहार बलीसमौ ॥' एम महानिशीथ आवश्यक निर्युक्ति मध्ये पण वली ते नैवेद्य छे. वास्तुक शास्त्रनेविषे पण तथा ज्योतिषशास्त्रे घर देवतानो पूजा करीने भूतने बलि देइने पेसवुं कह्युं छे यतः—"गृहे प्रवेशं सुविनीतवेषः, सौम्यायने वासरपूर्वभागे । कुर्याद्विधायालयदेवतार्चां, कल्याणभूः भूतबलिक्रियां च ॥ १ ॥" एम अनेक ठामे बलि शब्दे नैवेद्य पूजा छे. इति तूयं गाथार्थ ॥ ४ ॥

हवे ए क्रिया ते समकितनी करणीछे ते कहेछे.

समकित संवरनी ते किरिया ॥ तेम जिनपूजा उदार ॥ हिंसा होय तो अरथदंडमां ॥ कहे नहीं तेह विचार ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ—समकित संवरनी ते किरिया के० ए समकित नामे संवर, तेहनी क्रिया छे. जे माटे श्रीठाणांगने विषे ठाणे पांचमे कह्युं छे—"पंच संवरदारा पन्नत्ता तं जहा—सम्मत्तं १ विरई २ अपमादो ३ अकसायया ४ अयोगया ५" इत्यर्थः पंचसवरद्वार कह्यां छे. समकित ते संवर कहीए. एम विरति तथा अप्रमादीपणुं तथा अकसायीपणुं तथा अयोगीपणुं, तेहमां साहमीवच्छल तथा घर निर्वाह चारित्र लीए तेहनां, तथा सामैयां कर्यां. ए सर्व समकित संवरनी करणी छे. तेम जिनपूजा उदार के० उदारपणे जिनपूजा करवी; ते पण समकित संवरनी करणी छे. एहमां हिंसा नथी. एहमां एम पण कहेवाणुं जे समकिती देवताछे ते समकित संवरना धणी छे. तेहने अधर्मी केम कहीए ? तथा देवतानी करणी अधर्ममां कहीए तो, कोइक देवता तीर्थंकरने साधुने अने श्रावकने परीसह करे, कोइक सेवा करे, ते बेउने फल केवां होय ? वली कोइक शिष्य दवता थयो होय ते गुरुने चारित्रथी पडिवाइ देखीने गुरुने ठेकाणे आणे तेहने अधर्मी केम कहीए ? तथा गुरुए काल कर्यो होय ते तमारे मते देवता थयो न जोइए. शामाटे जे देवतामां बे जाती छे समकिती तथा मिथ्यात्वी, तेमां जो समकिती थाय तो सुरियाभनीपरे जिनप्रतिमा पूजे; अने मिथ्यात्वी कहेतां तमारी जीभ चाले नहीं. मनुष्य पण थाय नहीं. शामाटे जे तमे तमारा गुरुने चारित्रिया मानोछो; ते मरीने मनुष्य थाय नहीं. सिद्धिपण पंचमकालमांहे हमणां वरे नहीं. माटे अमने संदेह छे जे तमारा गुरु मरीने कंइ गतिए जाय ? वली तमारा गुरुए काल कर्यो तेहने तमे केम वंदना करोछो ? ते समजावजो ते माटे देवताने अधर्मी न कहेवाय. वली उत्तराध्ययने हरिकेशी अणगारनुं जक्षे वैयावच्च कर्युं, ब्राह्मणोने लोहि वमता कर्या; तेहने हिंसा दोष लाग्यो के नहीं ? तथा सूत्रकारे तो वैयावच्च कही बोलाव्युं ॥ 'जक्खा हु वेयावडियं करेंति ॥' इति पाठात्. ते वैयावच्चना करणहारने अधर्मी केम कहेवाय ? तथा वली ज्ञातामांहे पोटिलाए तेतली पुत्र समजाव्यो. तथा वली सौधर्मेन्द्रे भगवंतने अवग्रह आज्ञाकरी, ते धर्म कहीए के अधर्म कहीए ? वली लोकांतिक देव, प्रभुजीने प्रतिबोधवा आवे ते अधर्ममां केम गणाय ? इत्यादि शुं शुं लखीए ? ए प्रसंगे सर्युं.

पच्चोरुहइ के० शिबिका थकी उतरे. तएणं कण्हे वासुदेवे के० तेवारे कृष्ण वासुदेव, थावच्चापुत्तं पुरओ काऊं के० थावच्चा पुत्रन आगले करीने, जेणेव अरहाअरिट्ठनेमि के०ज्यां अरिहा अरिष्टनेमि छे; सव्व तं चेव के०बाकी सर्व मेघ कुमारनी परे कहेवुं अहीयां कृष्ण महाराजे लोकनां घर निर्वाह कर्यां; तेमां हिंसा लागे के नहि ? ते विचारजो. इतितृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

कुणिक राय उदायन कीधां ॥ वंदन मह सुविविके ॥ ण्हाया
कय बलिकम्मा कहिया ॥ तुंगीय श्राद्ध अनेक ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ—वली कुणिकराय के० कुणिकराजाए, वंदनमह के० घणे आडंबरे वांदवाना महोत्सव कर्या. एटले प्रभुजीने सामाइयां कर्यां, ते श्री उववाइसूत्रमां विस्तार घणो छे; ते लखतां ग्रंथ घणो वधे माटे लखता नथी. वली उदायन के० उदाइ राजाए पण सामइयां कर्यां. ते श्री भगवतीसूत्रमां शतक तेरमे उद्देशे छठे अधिकार छे. तथा च तत्पाठ—"तएणं उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ कोडंवियपुरिसे सद्दावेति, सद्दाविचा एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया वीतभयं नगरमब्भितरवाहिरियं जहा कोणीओ उववाईए जाव पज्जूवासेइ॥" अस्यार्थ—तएणं उदायणे राया के०तेवारे उदाइराजाए, इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे के० वीरस्वामिने आव्यानी कथा पामे थके. हट्ठतुट्ठ के० हर्ष पामे. संतोष पामे. कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ के० कौटुंबिकपुरुषने बोलावे. बोलावीने एवं वयासी के० एम कहे. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया के०भो देवानुप्रिय शीघ्र, वीतभयं नयरमब्भितरवाहिरियं के० ए वीतभयनगर मध्ये तथा बाहेर शणगारो. इत्यादिक. जहा कोणिओ उववाईए के० जेम कुणिक राजा उववाइ सूत्रमां कह्या छे तेम कहेवुं. जाव पज्जूवासेइ के० यावत् प्रभुजीनी सेवा करे. एम कूणिकने, उदाइने, सामईयामां हिंसा लागे के नहीं ? ते विचारजो. तथा, ण्हाया कयबलिकम्मा के० कर्यां छे बलिकर्म—पूजाकर्म जेणे एहवा, तुंगीय श्राद्ध अनेक के० तुंगीया नगरीना अनेक श्रावक वखाण्या छे. ते भगवतीसूत्रना शतक बीजे उद्देशे पांचमे छे; ते श्रावक पूजा करे ते अरिहंत विना बीजा कोण देवनी करे ? ते विचारजोजी. तथा बलिकर्म ते पूजाज छे. शामाटे जे ज्ञातासूत्र मध्ये—"तएणं मल्ली विदेहवररायकन्ना ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिखित्ता ॥" अहियां बे वार सरखो पाठ छे; ते माटे मल्लिए कय बलिकम्मा के० बे वार देव पूजा करी. अप्पणो पडिमं कारेइ के० पोतानी प्रतिमा भरावी वली नित्य आहार कवल मूक्यो. तेहमां पण जीवनी उत्पत्ति थाय. पण ते हिंसामां नहीं. वली यतिना पडिकमणसूत्रमांहे ॥ 'मंडिपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ॥' ए पाठ छे. मंडिपाहुडियाए के० भीखारीने माटे ढांकणीमांहे धान घाल्युं ते लेवुं नहीं. बलिपाहुडि-

थाए के० नैवेद्यनुं धान वहोरवुं नहीं अजाणतां वहोरी खाधुं तो ॥ मिच्छामि दुक्कडं ॥ वली नाममाला मध्ये–'पूजार्हणा सपर्याचाँ उपहार वलीसमौ ॥' एम महानिशीथ आवश्यक निर्युक्ति मध्ये पण वली ते नैवेद्य छे. वास्तुक शास्त्रनेविषे पण तथा ज्योतिपशास्त्रे घर देवतानी पूजा करीने भूतने वलि देइने पेसवुं कह्युं छे यतः–"गृहे प्रवेशं सुविनीतवेषः, सौम्यायने वासरपूर्वभागे । कुर्याद्विधायालयदेवतार्चां, कल्याणभूः भूतवलिक्रियां च ॥ १ ॥" एम अनेक ठामे वलि शब्दे नैवेद्य पूजा छे. इति तूर्य गाथार्थ ॥ ४ ॥

हवे ए क्रिया ते समकितनी करणीछे ते कहेछे.

समकित संवरनी ते किरिया ॥ तेम जिनपूजा उदार ॥ हिंसा होय तो अरथदंडमां ॥ कहे नहीं तेह विचार ॥ सु० ॥ ५ ॥

अथ–समकित संवरनी ते किरिया के० ए समकित नामे संवर, तेहनी क्रिया छे. जे माटे श्रीठाणांगने विषे ठाणे पांचमे कह्युं छे –"पंच संवरदारा पन्नत्ता तं जहा–सम्मत्तं १ विरई २ अपमादो ३ अकसायया ४ अयोगया ५" इत्यर्थः पंचसंवरद्वार कह्यां छे. समकित ते संवर कहीए. एम विरति तथा अप्रमादीपणुं तथा अकसायीपणुं तथा अयोगीपणुं, तेहमां साहमीवच्छल तथा घर निर्वाह चारित्र लीए तेहनां, तथा सामैयां कर्‍यां. ए सर्व समकित संवरनी करणी छे. तेम जिनपूजा उदार के० उदारपणे जिनपूजा करवी; ते पण समकित संवरनी करणी छे. एहमां हिंसा नथी. एहमां एम पण कहेवाणुं जे समकिती देवताछे ते समकित संवरना धणी छे. तेहने अधर्मी केम कहीए ? तथा देवतानी करणी अधर्ममां कहीए तो, कोइक देवता तीर्थंकरने साधुने अने श्रावकने परीसह करे, कोइक सेवा करे, ते बेउने फल केवां होय ? वली कोइक शिष्य दवता थयो होय ते गुरुने चारित्रथी पडिवाइ देखीने गुरुने ठेकाणे आणे तेहने अधर्मी केम कहीए ? तथा गुरुए काल कर्‍यो होय ते तमारे मते देवता थयो न जोइए. शामाटे जे देवतामां बे जाती छे समकिती तथा मिथ्यात्वी, तेमां जो समकिती थाय तो सुरियाभनीपरे जिनप्रतिमा पूजे; अने मिथ्यात्वी कहेतां तमारी जीभ चाले नहीं. मनुष्य पण थाय नहीं. शामाटे जे तमे तमारा गुरुने चारित्रिया मानोछो; ते मरीने मनुष्य थाय नहीं. सिद्धिपण पंचमकालमांहे हमणां वरे नहीं. माटे अमने संदेह छे जे तमारा गुरु मरीने कंइ गतिए जाय ? वली तमारा गुरुए काल कर्‍यो तेहने तमे केम वंदना करोछो ? ते समजावजो ते माटे देवताने अधर्मी न कहेवाय. वली उत्तराध्ययने हरिकेशी अणगारनुं जक्षे वैयावच कर्‍युं, ब्राह्मणोने लोहि वमता कर्‍या; तेहने हिंसा दोष लाग्यो के नहीं ? तथा सूत्रकारे तो वैयावच कही बोलाव्युं ॥ 'जक्खा हु वेयावडियं करेति ॥' इति पाठात्. ते वैयावचना करणहारने अधर्मी केम कहेवाय ? तथा वली ज्ञातामांहे पोटिलाए तेतली पुत्र समजाव्यो. तथा वली सौधर्मेन्द्रे भगवंतने अवग्रह आज्ञाकरी, ते धर्म कहीए के अधर्म कहीए ? वली लोकांतिक देव, प्रभुजीने प्रतिबोधवा आवे ते अधर्ममां केम गणाय ? इत्यादि शुं शुं लखीए ? ए प्रसंगे सर्युं.

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तस्यच तथास

हवे वली पूजामांहे हिंसा कहेछे, तेहने पूछीए जे ज्ञातासूत्रमध्ये सुबुद्धिप्रधान राजाने प्रतिबोधवा निमित्ते खाइनु पाणी लाव्या; ते हिंसा थइ के नहीं? ते विचारजो. तथा जंबूद्वीप पन्नतीमांहे प्रभुजीनो जन्माभिषेक वर्णव्यो छे; ते तो समुद्रसरखा पाणीना प्रवाह चाल्या; तेहमां पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ, वनस्पती, त्रसकायमां केइ काय उगरी हशे? तो पण परमेश्वरनो जन्माभिषेक ते हिंसा न कहेवाय. भक्ति प्रबल छे माटे. तेम पूजामां पण हिंसा न गणवी. एटलाज माटे प्रश्नव्याकरणमध्ये दयानां नाम कह्यांछे. तेहमां पूजाप्रमुखनां नाम कह्यांछे. ते पूजा ते दया कहीछे; पण हिंसाना नाममां पूजा नथी. इत्यादिक घणी चर्चा छे. केटली लखाय? आत्मार्थी होतो मध्यस्थ थइने जोज्यो. हिंसा होय तो के० जिनपूजामां हिंसा होय तो, अर्थदंडमां कहे नहीं? तेह विचार के० श्री सूयगडांगसूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां तेर क्रिया चालीछे तेमां प्रथम अट्ठादंडे के० अर्थे, प्रयोजने हिंसा करे ते अर्थदंड कहीए. जो पूजा करतां हिंसा होय तो अर्थदंडमां पूजा कहे नहीं? अने न कही तेवारे जाणीए छैए जे पूजामां हिंसा नथी. इति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥

नाग भूत जक्षादिक हेते ॥ पूजा हिंसा उत्त ॥
सूगडांगमां नवि जिन हेते ॥ बोले जे होए जुत्त ॥ सु०॥ ६ ॥

अर्थ—नाग भूत जक्षादिक हेते के० नागने हेते भूतने हेते, जक्षने हेते, पूजा हिंसा उत्त के० पूजा ते हिंसा कहीछे. सूगडांगमां के० सूगडांगमध्ये, नवि जिन हेते के० जिनेश्वरने हेते पूजा ते नथी कही. एटले ए भावजे ते सूगडांगमध्ये अर्थदंडमां नागादिकनी पूजा ते हिंसामां गणीछे; पण जिननी पूजा नथी गणी, ते माटे पूजानो अधिकार कह्यो. अने जिनपूजा शे न कही? ते कहे छे—बोले जे होए जुत्त के० सूत्रमां जे जुक्त होय तेहज बोले, अयुक्ति न बोले. तथा उलटा सिद्धांतमां चैत्य महोत्सव बोल्या छे ॥ 'चेइयमहेराइवा ॥ इत्यादिक आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध प्रथमाध्ययन प्रथम उद्देशेछे. एम जमाली प्रमुखने अधिकारे एवा ठाम ठाम पाठछे देहेरां पण उववाइसूत्रमध्ये चंपानगरी वर्णववाने अधिकारे पाडे पाडे कह्यांछे, अने ठामे ठामे नगरीओनो वर्णव उववाइसूत्रने भलाव्योछे. तेवारे सर्व नगरमध्ये पाडे पाडे चैत्य ठर्यांज. इत्यादिक घणो विचारछे. केटलो लखाय? ॥ ६ ॥

हवे कुमति कहेछे, पूजामां हिंसा छे माटे ज्यां हिंसा होय त्यां जिनेश्वरनी आज्ञा केम होय? ते उपर गाथा कहे छे.

ज्यां हिंसा तिहां नहीं जिनआणा ॥ तो केम साधु विहार ॥
कर्मबंध नहीं जयणा भावे ॥ ए छे शुभ व्यवहार ॥ सु० ॥७॥

अर्थ—कुमति बोलेछे के, ज्यां हिंसा के० ज्यां हिंसा होय, तिहां नहीं जिनआणा के० त्यां प्रभुआणा न होय. तेनो उत्तर कहेछे. तो केम साधुविहार के० तो मुनिने विहारनी आज्ञा परमेश्वरे केम करी ? वली विहार करतां नदीमां—"एगं पायं जले किच्चा ॥ एगं पायं थले किच्चा ॥" एहवा पाठ आचारांगे तथा कल्प सूत्रे केम कह्या ? वली नदी उतरतां सूर्य अस्तगत थाय तो पाणीमांने पाणीमां चारे पहोर साधु उभा रहे. एम दशाश्रुतस्कंधमां केम आज्ञा करी ? वली वरसाद वरसतां पण वहोरवा जवाना अधिकार कल्पसूत्रनी सामाचारीमां केम कह्या ? वली वरसाद वरसतां एक साधु अने एक साध्वी, एकांते वृक्षादिक ठामे भेलां थायतो उभां न रहे; वरसतामां पण चाल्यां जाय. ए आज्ञा केम कीधी ? वली ऋषभदत्त प्रभुने वांदवा गया. तिहां—'धम्मियं जाणपवरं ॥' एम कह्युं ते रथ ने धर्मयान केम कह्युं ? ए रथ, मार्गमध्ये शी दया पालशे ? तथा धर्मयान अने पापयान ए बे प्रकार जुदा पण दीसे छे. माटे पापयान कां न कह्युं ! वली श्रावक आणंदादिकने उपासकदशांगमध्ये व्रत उचराव्यां; ते वारे प्रथम व्रतमां " वारणे ढोर होय तो तेहने भातपाणीनो विच्छेद करे तो अतीचार लागे. ए अतीचार जाणवा पण आचरवा नहीं. " एम आज्ञा केम कीधी ? तथा वली आचारांगमां कह्युं जे वहोर्युं लूण गृहस्थ पाछुं न लेतो पोते वावरे; सांभोगिकने वहेंची आपे. ते लुण वापरतां विराधना केटली थाय ? पण एटली विराधना करतो आराधक कह्यो. ज्यां हिंसा त्यां आज्ञा नहीं. एम कहो तेवारे सघलां ए सूत्र देखाड्यां. तेहथी बीजां पण घणां छे. केटलाक लखाय ? ते सघलाए व्यर्थ थाय; ते माटे ते ते ठेकाणे हिंसापण छे; अने आज्ञा पण करीछे. ए विचारजो.

हवे शिष्य पूछेछे जे " हिंसा पण छे अने आज्ञा पण छे; तेवारे ए केम मेलवीए." हवे उपकार करवा शीखवेछे. सांभल भाइ, कर्मबंध नहीं जयणा भावे के० जतनाभावे कर्मबंध नथी. एटले ए भाव जे, जतनाए जे जिनशासननी करणी करी तेहमां यद्यपि हिंसा होय तो पण कर्मबंध न थाय. इति भाव. ए छे शुभ व्यवहार के० एहज भलो व्यवहार छे. इति सप्तमी गाथार्थ. ॥ ७ ॥

हवे कोइ कहेशे जे, " पूजामां हिंसा तो थायछे, तेहनो बंधपण प्रथम थाय छे. " एम कहेछे तेहने कोइक वचमां उत्तर वालेछे.

प्रथम बंध ने पछी निर्ज्जरा ॥ कूपतणोरे दिठंत ॥
कोइ जोडे बुध भाषे ॥ भाव ते शुचिजल तंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ—प्रथम बंध ने पछी निर्ज्जरा के० प्रथम फूल, जल, न्हावुं, धूप, दीपे जीव हींसाए बंध थाय; पछी भावना स्तवनाए आल्हादताए निर्ज्जरा थायछे. कूपतणोरे दिठंत के० कूआने दृष्टांते, जेम कूवो खोदे तेवारे ते माटी मसुखे मेलो थाय. मजूरी करतां तर

वच सुरेंद्रश्रामीकर
तरयच

हवे वली पूजामांहे हिंसा कहेछे, तेहने पूछीए जे ज्ञातासूत्रमध्ये सुबुद्धिप्रधान राजाने प्रतिबोधवा निमित्ते खाइनु पाणी लाव्या; ते हिंसा थइ के नहीं? ते विचारजो. तथा जंबूद्वीप पन्नतीमांहे प्रभुजीनो जन्माभिषेक वर्णव्यो छे; ते तो समुद्रसरखा पाणीना प्रवाह चाल्या; तेहमां पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ, वनस्पती, त्रसकायमां केइ काय उगरी हशे? तो पण परमेश्वरनो जन्माभिषेक ते हिंसा न कहेवाय. भक्ति प्रबल छे माटे. तेम पूजामां पण हिंसा न गणवी. एटलाज माटे प्रश्नव्याकरणमध्ये दयानां नाम कह्यांछे. तेहमां पूजाप्रमुखनां नाम कह्यांछे. ते पूजा ते दया कहीछे; पण हिंसाना नाममां पूजा नथी. इत्यादिक घणी चर्चा छे. केटली लखाय? आत्मार्थी होतो मध्यस्थ थइने जोज्यो. हिंसा होय तो के० जिनपूजामां हिंसा होय तो, अर्थदंडमां कहे नहीं? तेह विचार के० श्री सूयगडांगसूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां तेर क्रिया चालीछे तेमां प्रथम अट्ठादंडे के० अर्थे, प्रयोजने हिंसा करे ते अर्थदंड कहीए. जो पूजा करतां हिंसा होय तो अर्थदंडमां पूजा कहे नहीं? अने न कही तेवारे जाणीए छैए जे पूजामां हिंसा नथी. इति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥

नाग भूत जक्षादिक हेते ॥ पूजा हिंसा उत्त ॥
सूगडांगमां नवि जिन हेते ॥ बोले जे होए जुत्त ॥ सु०॥ ६ ॥

अर्थ—नाग भूत जक्षादिक हेते के० नागने हेते भूतने हेते, जक्षने हेते, पूजा हिंसा उत्त के० पूजा ते हिंसा कहीछे. सूगडांगमां के० सूगडांगमध्ये, नवि जिन हेते के० जिनेश्वरने हेते पूजा ते नथी कही. एटले ए भावजे ते सूगडांगमध्ये अर्थदंडमां नागादिकनी पूजा ते हिसामां गणीछे; पण जिननी पूजा नथी गणी, ते माटे पूजानो अधिकार कह्यो. अने जिनपूजा शे न कही? ते कहे छे—बोले जे होए जुत्त के० सूत्रमां जे जुक्त होय तेहज बोले, अयुक्ति न बोले. तथा उलटा सिद्धांतमां चैत्य महोत्सव बोल्या छे ॥ 'चेइयमहेराइवा ॥ इत्यादिक आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध प्रथमाध्ययन प्रथम उद्देशेछे. एम जमाली प्रमुखने अधिकारे एवा ठाम ठाम पाठछे देहेरां पण उववाइसूत्रमध्ये चंपानगरी वर्णववाने अधिकारे पाडे पाडे कह्यांछे, अने ठामे ठामे नगरीओनो वर्णव उववाइसूत्रने भलाव्योछे. तेवारे सर्व नगरमध्ये पाडे पाडे चैत्य ठर्यांज. इत्यादिक घणो विचारछे. केटलो लखाय? ॥ ६ ॥

हवे कुमति कहेछे, पूजामां हिंसा छे माटे ज्यां हिंसा होय त्यां जिनेश्वरनी आज्ञा केम होय? ते उपर गाथा कहे छे.

ज्यां हिंसा तिहां नहीं जिनआणा ॥ तो केम साधु विहार ॥
कर्म्मबंध नहीं जयणा भावे ॥ ए छे शुभ व्यवहार ॥ सु० ॥७॥

अर्थ—कुमति बोलेछे के, ज्यां हिंसा के० ज्यां हिंसा होय, तिहां नहीं जिनआणा के० त्यां प्रभुआणा न होय. तेनो उत्तर कहेछे. तो केम साधुविहार के० तो मुनिने विहारनी आज्ञा परमेश्वरे केम करी ? वली विहार करतां नदीमां—"एगं पायं जले किच्चा ॥ एगं पायं थले किच्चा ॥" एहवा पाठ आचारांगे तथा कल्प सूत्रे केम कह्या ? वली नदी उतरतां सूर्य अस्तगत थाय तो पाणीमांने पाणीमां चारे पहोर साधु उभा रहे. एम दशाश्रुतस्कंधमां केम आज्ञा करी ? वली वरसाद वरसतां पण वहोरवा जवाना अधिकार कल्पसूत्रनी सामाचारीमां केम कह्या ? वली वरसाद वरसतां एक साधु अने एक साध्वी, एकांते वृक्षादिक ठामे भेलां थायतो उभां न रहे; वरसतामां पण चाल्यां जाय. ए आज्ञा केम कीधी ? वली ऋषभदत्त प्रभुने वांदवा गया. तिहां—'धम्मियं जाणपवरं ॥' एम कह्युं ते रथ ने धर्मयान केम कह्युं ? ए रथ, मार्गमध्ये शी दया पालशे ? तथा धर्मयान अने पापयान ए बे प्रकार जुदा पण दीसे छे. माटे पापयान कां न कह्युं ! वली श्रावक आणंदादिकने उपासकदशांगमध्ये व्रत उचराव्यां; ते वारे प्रथम व्रतमां " वारणे ढोर होय तो तेहने भातपाणीनो विच्छेद करे तो अतीचार लागे. ए अतीचार जाणवा पण आचरवा नहीं " एम आज्ञा केम कीधी ? तथा वली आचारांगमां कह्युं जे वहोर्युं लूण गृहस्थ पाछुं न लेतो पोते वावरे; सांभोगिकने वहेंची आपे. ते लुण वापरतां विराधना केटली थाय ? पण एटली विराधना करतो आराधक कह्यो. ज्यां हिंसा त्यां आज्ञा नहीं. एम कहो तेवारे सघलां ए सूत्र देखाड्यां. तेहथी बीजां पण घणां छे. केटलाक लखाय ? ते सघलाए व्यर्थ थाय; ते माटे ते ते ठेकाणे हिंसापण छे; अने आज्ञा पण करीछे. ए विचारजो.

हवे शिष्य पूछेछे जे " हिंसा पण छे अने आज्ञा पण छे; तेवारे ए केम मेलवीए." हवे उपकार करवा शीखवेछे. सांभल भाइ, कर्मबंध नहीं जयणा भावे के० जतनाभावे कर्मबंध नथी. एटले ए भाव जे, जतनाए जे जिनशासननी करणी करी तेहमां यद्यपि हिंसा होय तो पण कर्मबंध न थाय. इति भाव. ए छे शुभ व्यवहार के० एहज भलो व्यवहार छे. इति सप्तमी गाथार्थ. ॥ ७ ॥

हवे कोइ कहेशे जे, " पूजामां हिंसा तो थायछे, तेहनो बंधपण प्रथम थाय छे. " एम कहेछे तेहने कोइक वचमां उत्तर वालेछे.

प्रथम बंध ने पछी निर्ज्जरा ॥ कूपतणोरे दिठ्ठंत ॥
कोइ जोडे बुध भाषे ॥ भाव ते शुचिजल तंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ—प्रथम बंध ने पछी निर्जरा के० प्रथम फूल, जल, न्हावुं, धूप, दीपे जीव हींसाए बंध थाय; पछी भावना स्तवनाए आल्हादताए निर्ज्जरा थायछे. कूपतणोरे दिठ्ठंत के० कूआने दृष्टांते, जेम कूवो खोदे तेवारे ते माटी प्रमुखे मेलो थाय. मजूरी करतां तर

वच सुरेंद्रश्चामीकर
तस्यच

सपण लागे, थाक पण चडे. पछी पाणी आवे तेवारे मेल जाय, तरस भागे, थाक पण उतरे, बीजा लोक पण पाणी पीए ते माटे ए दृष्टांते प्रथम बंध थाय; पछी निर्ज्जरा थाय यतः आवश्यकनिर्युक्तौ–"अकसिणपवत्तगाणं, विरयाविरियाण एस खलु जुत्तो। संसार-पयणुकरणे, दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो ॥ १ ॥" व्याख्या–अकसिणपवत्तगाणं के० समस्तपणे न प्रवृत्या एहवा, विरयाविरियाण के० विरताविरती–श्रावक देशविरती, जे कारण माटे श्रावक देशथी प्रवृत्याछे. सर्वथी तो मुनि प्रवृत्या छे. ते श्रावकने, एस के० ए, दव्वत्थए के० द्रव्यस्तव घटमानछे. संसारपयणुकरणे के० संसार पातलो करवाने, कूवदिट्ठंतो के० कूआनुं दृष्टांत जाणवुं. इति उक्तगाथार्थः १ ते कूआनुं दृष्टांत कह्युं ते रीते, कहीने कोइ जोडे के० कोइक ए रीते कहीने जोडेछे. पण तेहने निषेधेछे. बुधभाषे के० पंडित लोको तो एम कहेछे. भाव ते शुचिजल के० भाव जे अध्यवसाय शुभछे ते शुभ अध्यवसायरूप पाणीए अशुभबंधरूप मेले मेलो थतोज नथी. इति भाव. अहींयां शिष्य पूछे छे जे कूआनुं दृष्टांत केम मलशे? तेहने उत्तर दीएछे जे दृष्टांत होय ते देशिक होय, माटे अहींयां बंधरूप मेल, शुभ अध्यवसायरूप पाणी. एटली सरखामणी लीजीए. हवे एहज वात दृढ करेछे.

उपादानवशे बंधन कहियुं ॥ तस हिंसा शिर उपचार ॥
पुष्पादिक आरंभतणा एम ॥ होय भावे परिहार ॥ सु० ॥ ९ ॥

अर्थ–उपादान के० आत्मानो अध्यवसाय, तेहने वशे बंधन कहियुं के० बंध कह्यो. एटले जेवो आत्मानो अध्यवसाय थाय तेहवो बंध पडे. यतः–"जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण। सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ १ ॥" इति उपदेश मालायां ॥ व्याख्या–जे जे समये जीव, जे जे भावे आवेशमां आवे, ते प्राणी ते ते समये शुभाशुभ कर्म बांधे. इति. तस के० तेहने अध्यवसाय विना जे हिंसा छे ते उपचारेज छे. एटले पूजामां फूल पाणी प्रमुखनी हिंसा कहेवाय छे, ते उपचारे कहेवाय छे. जे माटे हिंसाना अध्यवसाय नथी. माटे एहने माथे हिंसा ते उपचारे छे. पुष्पादि आरंभतणा के० फूल प्रमुखना आरंभनो, एम के० ए उपचार प्रकारे, होय भावे परिहार के० अध्यवसाए परिहार थाय. एटले अध्यवसाय विशेषे पुष्पादिकनो आरंभ टले; आरंभ न लागे. इति भाव. इतिगाथार्थं ॥५॥ वली दृष्टांते करी दृढ करेछे

जल तरतां जल उपर मुनिने ॥ जेम करूणारे रंग, ॥
पुष्पादिक श्रावकने तेम ॥ पूजामांहे चंग ॥ सु० ॥१०॥

अर्थ–जल तरतां के० पाणी तरतां, जल उपर मुनिने जेम करुणानो रंग के० जेम मुनिने पाणी उपर दयानोज रंग छे, पण अंश मात्र हिंसानो परिणाम नथी. पुष्पादिक

उपर श्रावकने तेम पूजामां के० श्रावकने तेहज रीते एटले मुनिनी रीते, पूजामां फूल धूप दीप प्रमुखमां जाणवुं. चंग के० मनोहर–एटले श्रावकने फूल प्रमुख उपर दया भाव छे, पण हिंसानो परिणाम अंशमात्र नथी. अहीयां जलतरतां कह्युं तेहमां एम सूचव्युं जे पाणी, उतरे तो खरा, अने पाणी तरे पण खरा. जे कारण माटे ठाणांग मध्ये पांचमे ठाणे पांचे ठामे आज्ञा न ओलंघे. तेमां साधवी तणाती देखीने तरीने पण साधु काढे. एम आज्ञा करी छे. माटे पाणी तरतां एम पाठ कह्यो. इति दशमी गाथार्थ ॥ १० ॥

पात्र दानथी शुभ विपाक ज्यम ॥ लहे सुबाहुकुमार ॥
पहेले गुणठाणे भद्रक पण ॥ त्यम जिनपूजा उदार ॥ सु० ॥ ११ ॥

अर्थ–पात्र दानथी के० सुपात्रने दान दीधाथी शुभ विपाक ज्यम के० जेम शुभ विपाक, लहे के० पामे. सुबाहुकुमार के० श्रीविपाकसूत्रमां सुबाहुकुमार, पहेले गुणठाणे के० मिथ्यात्व गुणठाणे हता, भद्रक पण के० भद्रक सरल स्वभावपणे हता. एटले ए भाव जे, सुबाहुकुमार भद्रक हता, मिथ्यात्व गुणठाणे हता; सुपात्र दाने करी पुन्य बंधाणुं, संसार परित्त कह्यो अने शुभ विपाक पाम्या. त्यम जिनपूजा उदार के० एज रीते मिथ्यात्वी होय अने उदार भक्ति ए जिनपूजा करे ते शुभ विपाक पामे. इति एकादशमी गाथार्थ ॥ ११

वली कुमति बोल्यो जे–" दाननुं फल कह्युं पण पूजानुं फल क्यां कह्युं छे? " तेहने उत्तर करे छे. उपलक्षणथी इत्यादि.

उपलक्षणथी जेम शीलादिक ॥ तेम जिनपूजा लीध ॥
मनुज आयुबंधे ते सुबाहु ॥ तेणे समकित न प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ १२ ॥

अर्थ–उपलक्षणथी जेम शीलादिक के० दानना उपलक्षणथी जेम शील तप प्रमुख लीजीए, तेम जिनपूजा लीध के० तेम उपलक्षणथी जिनपूजा लीधी छे. अन्यथा महानिशीथसूत्रमां तो प्रगटपणे पूजानां फल कह्यां छे. पण महानिशीथसूत्र कुमति न माने, माटे उपलक्षण बताव्युं छे. वली कुमति बोल्यो–"सुबाहुकुमार मिथ्यात्वी क्यां कह्या छे?" तेहने उत्तर दीए छे. मनुज आयुबंधे ते सुबाहु के० ते सुबाहुकुमारे मनुष्यनुं आयुष बांध्युं छे. समकिती होय ते नियमा वैमानिकनुं आयुष बांधे. तेणे समकित न प्रसिद्ध के० ते कारणे एहने समकित प्रसिद्ध नथी. ॥ १२ ॥

वली मिथ्यात्व गुणठाणे पुण्यकरणी करतां शुभविपाक पामे ते उपर बीजुं दृष्टांत कहे छे. मेघजीव इत्यादि ॥

मेघ जीव गज शस अनुकंपा ॥ दान सुबाहु विचार ॥
पहेले गुणठाणे पण सुंदर ॥ जेम जिनपूजा प्रकार ॥ सु० ॥ १३ ॥

अर्थ–मेघ जीव गज शस अनुकंपा के० मेघकुमार श्रेणिकनो पुत्र, ते पाछले भवे गज हतो. तेणे ससलानी अनुकपाए पग हेठो न मूक्यो; अने महा वेदना खमी. ते वेलाए पण तेने मिथ्यात्व हतुं. तेम दान सुबाहु विचार के० सुबाहु कुंवरनुं दान तेहनो पण विचार करवो. ते पहेले गुणठाणे पण सुंदर के० रूडा अध्यवसायवंत हता. तेम जिन पूजानो प्रकार पण एम जाणवो. एटले मिथ्यात्व गुणठाणे एवडो गुण करे छे, तो समकित देशविरति वालाने ए पूजा गुणकारी थाय; एमां पूछवुंज शुं ? साखुं एहथी अधिक गुण करे. इति त्रयोदशमी गाथार्थ ॥ १३ ॥

हवे एम कहे थके कुमति बोलनो जे–"पूजामां गुण मानो छो ते वारे साधु कां न करे ? जेहमां गुण होय ते सहुए करे" एम कहे छे तेहने उत्तर वाले छे.

दान देव पूजादिक सघलां ॥ द्रव्यस्तव कह्यां जेह ॥
असदारंभी तस अधिकारी ॥ मांडी रहे जे गेह ॥ सु० ॥ १४ ॥

अर्थ–दान देव पूजादिक सघलां द्रव्यस्तव कह्यां जेह के० दान, देव पूजा आदि शब्दथी साहमिवच्छल, प्रभावना, तीर्थयात्रा, अने रथयात्रा प्रमुख लेवां. ए सर्वे द्रव्यस्तव कह्यां छे. असदारंभी के० हीणा आरंभना धणी, तस अधिकारी के० ते द्रव्यस्तवना अधिकारी छे. ते असदारंभी केवा छे? मांडी रहे जे गेह के० जेओ घर मांडी रह्या छे; एवा छे. एटले ए भाव जे–आरंभ बे प्रकारे छे. एक सदारंभ अने बीजो असदारंभ. तेमां दान, देवपूजा, साहमिवत्सल प्रमुखमां जे आरंभ–ते सदारंभ कहीए, अने घरबार करावतां तथा छैयां छोकरां परणावतां जे आरंभ–ते असदारंभ कहीए. जे असदारंभी होय ते सदारंभनो अधिकारी होय. पण निरारंभी मुनिराजने सदारंभ पण केम होय ! इति भाव.

हवे ते उपर एक दृष्टांत कहीए छैए–चोमासामां कोइपण गृहस्थ, धर्मशालामां सामायिक करी बेठो. एवामां वरसाद आव्यो, तेणे करी ते धर्मशालामां चूवा लाग्युं. तेवामां कोइ छूटो गृहस्थ त्यां आव्यो; तेणे चूवा स्थानके कुंडुं मांड्युं. ते कुंडुं पाणीए भराणुं. एवामां ते कुंडामां मांखी पडी ते तडफडे छे. हवे ते सामायिकवालो गृहस्थ, ते माखी काढे के न काढे ? जो काढे तो असंख्याता अप्कायनो घात थाय छे सचित्तनो स्पर्श पण थाय छे. जो न काढे तो चौरेंद्रि माखी मरेछे अने तेथी दया रहेती नथी हवे कोइ बीजो छूटो गृहस्थ आवे ते माखीने सुखे काढे. ते वारे गृहस्थ गृहस्थमां, विरति तथा अविरतिमां पण एटलो फेर छे तो, पूजा करवामां साधु तथा गृहस्थमां फेर केम न होय ? इति गाथार्थ ॥ १४ ॥

सदारंभमां गुण जाणी जे ॥ असदारंभ निवृत्ति ॥
अरसणीकृता त्यागे भाषी ॥ एमज प्रदेशो प्रवृत्ति ॥ सु० ॥ १५ ॥

अर्थ—सदारंभमां गुण जाणीजे के० असदारभमां बेठो होय तेने सदारंभमां गुण जाणीए. शो गुण जाणीए ? ते कहेछे. असदारंभनिवृत्ति के० असदारंभनो त्याग थाय. एटले ज्यांलगी सदारंभमां प्रवृत्ते त्यांलगी असदारभ न करेज. वली सदारंभमां द्रव्यमूर्छा उतारे, ते द्रव्ये असदारंभ न सेवे. इति भाव. ते उपर सूत्र साख देखाडे छे अरमणिकता त्यागे के० अरमणिक न थाजे. ए प्रकारे, भाषी के० कही. प्रदेशी एमज प्रवृत्ति के० प्रदेशी राजानी प्रवृत्ति बतावी. एटले ए भाव के, केशीस्वामिए प्रदेशी राजा धर्म पाम्या तेवारे कह्युं के हे राजन् रमणिक थइने अरमणिक म थाजे. तेवारे रमणिक थाजे एम कह्युंज. इति गाथार्थ ॥ १५ ॥ हवे सूत्रपाठ लखीए छैए. “ मा णं तुमं पएसी पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि ॥” इत्यादि. अस्यार्थ—मा णं तुमं के० मत थाजे तुं. पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता के० पूर्वे अन्यने दान देनारो थइने पछी, अरमणिज्जे भविज्जासि के० हवे धर्म पाम्या पछी अदाता थइश मां. अन्यथा अमने अंतराय बंधाय. वली जिनधर्मनी अपभ्राजना थाय. इति. वली आगले आलावे प्रदेशीए कह्युं छे के, हुं पूर्वे रमणिक थइने अरमणिक नहीं थाउं. हुं सात हजार गामना चार भाग करीश. एक भाग हाथी घोडा प्रमुख वाहनमां दइश, एक भाग कोठारमां नाखीश, एक भाग अंतःपुरने दइश, अने एक भाग दानशालाए विपुल चार प्रकारना अशनादिक रंधावीने घणा श्रमण, माहण, भिक्षु, पंथी प्रमुखने आपीश. इत्यादि पाठ तो छे. जो सदारंभमां गुण छे तो. इति ॥

वली सूत्रसाखे बीजुं दृष्टांत देखाडे छे.

लिखन शिल्पशत गणित प्रकाश्यां ॥ त्रण प्रजा हित हेत ॥
प्रथम राय श्रीऋषभजिणंदे ॥ तिहां पण ए संकेत ॥ सु० ॥ १६ ॥

अर्थ—लिखन के० अढार लिपि गणित पद अहींयां जोडीए. एटले गणित ते एकं, दशं, शतं, सहस्रं इत्यादिक, शिल्पशत के० सो शिल्प, ए प्रकाश्यां के० कह्यां. त्रण के० ए त्रण लिखनादिक जांणवां. उपलक्षणथी बहोतेर पुरुषकला १, चोसठ स्त्रीनी कला २, अने सो शिल्पकला ३, प्रजाहित हेत के० प्रजाना हितने कारणे, प्रथम राय के० प्रथम राजा श्री ऋषभजिनेश्वरे देखाड्यां. तिहांपण ए संकेत के० त्यां श्री ऋषभदेवने पण एज संकेत छे. एटले ऋषभदेवजीने पण उन्मार्ग तजीने मार्गे लोक प्रवृत्ते एवोज संकेत छे. अन्यथा ऋषभदेवजी त्रण ज्ञानना धणी एम बतावेज केम? इति भाव. ते सूत्रपाठ कहे छे— “लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ चउसट्ठिमहिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिन्निवि पयाहियाए उवदिसइ उवदिसइत्ता ॥” इति. व्याख्या-लेहाइयाओ के० लिखन आदेदेइ, गणियप्पहाणाओ के० गणित छे प्रधान जेहमां. सउणरुयपज्जवसाणाओ के० शकुनरुत छेहेडे छे जेने, बावत्तरिं कलाओ के० एवी बहोतेर कला १, चउसट्ठिमहिलागुणे के० चोसठ स्त्रीना गुण २, सिप्पसयं च कम्माणं के० कर्म जे कृषि वाणिज्यादिक. तेहमां सो शिल्प ३, तिन्निवि के० ए त्रणे, पयाहियाए के० प्रजाना हितने

तस्यच तथास

अर्थे, उवदिसइ के० देखाडे छे. इति. अहीयां कोइ पूछे जे "ए कलाप्रमुख, प्रभुजी केम देखाडे?" तेनो उत्तर कहीए छैए. ए कलाप्रमुख उपाये करी सुखे आजीविका निर्वाह थाय. तेवारे चोरीप्रमुख व्यसन पण न सेवे. ते सांभली शिष्य बोल्यो के "बहु सारुं. ए हेतुए कलादिक देखाडवुं थाओ; पण राज्य प्रवर्त्तावुं केम घटे?" गुरु कहेछे. उत्तमना उपकारने अर्थे, दुष्टना निग्रहने अर्थे तथा धर्मस्थिति ग्रहेवाने अर्थे ते राज्यस्थितिए रुडी रीते प्रवर्त्ततां अनुक्रमे महापुरुषने उपदेशे चोरी प्रमुख व्यसन निवर्ते, तेथी नारकी प्रमुखनी गति निवर्ते, आ भव परभवनां सुख साधवा समर्थ माटे राज्यस्थिति प्रशस्त तथा महापुरुषनी प्रवृत्ति ते सघले परउपकारी होय. बहु गुण अल्प दोष कार्य कारण विचारणा पूर्वकज होय. वली ठाणांगना पंचमाध्ययने पण कह्युं छे—"धम्मेणं चरमाणस्स पंचनिस्साठाणा पन्नत्ता तंजहा छकाया १, गणो २, राया ३, गाहावई ४, सरीरं ५, इत्यादि." एमां एम कह्युं जे धर्म आचरतां पंच निश्रा स्थानक छे. तेहमां राजानी निश्राए धर्म पाली शके. टीकामां कह्युं छे के, राजा छे ते धर्मने सहायकारी छे. दुष्ट थकी साधुनी रक्षा करे, एम कह्युं छे. वली परम करुणावंत, परमधर्मना प्रवर्त्तावनारा अने त्रण ज्ञानना धणी—तेणे राज्यधर्म प्रवर्त्ताव्यो तेमां कांइ अनुचित नथी. युक्ति ए घटती वात छे. तेहनो विस्तार जिनभवन पंचाशकनी सूत्रवृत्तिमां यतना द्वारे व्यक्तपणे देखाड्यो छे. त्यांथी जाणवो. अहींयां ग्रंथ गौरवना भय थकी लखता नथी. एणे करीने ॥ 'राज्यं हि नरकांतं स्याद्यदिराजा न धार्मिकः ॥' एह उक्ति पण दृढ थइ. तथा वली त्रीजा आराने छेडे राज्यस्थिति उपन्ये थके धर्मस्थितिनो उत्पाद थयो. अने पांचमा आराने छेडे श्रुत, आचार्य, संघने धर्म—ए पूर्वान्हे विच्छेद जाशे. तथा विमलवाहनराजा, मंत्री, न्यायमार्ग मध्यान्हे विच्छेद जाशे, अग्नि संध्याये विच्छेद जाशे. यतः—"सुअसूरिसंघधम्मो पुव्वण्हे छिज्जही अगणि सायं । निवविमलवाहणो सुहुममंती तद्धम्म मज्झण्हे ॥ १ ॥" ए लेखे धर्मस्थिति विच्छेद थयो पछी राज्यस्थिति विच्छेद थयो. तेवारे राज्यस्थिति ते धर्म स्थितिनो हेतु छे; एम ठर्युंज. ते माटे प्रभुजीने राज्यस्थिति स्थापना कांइ अनुचित नथी. ॥ १६ ॥

हवे अहीयां वली कोइ पर बोल्यो के "मुनि होय ते पूजा प्रमुख हिंसानो उपदेश केम करे?" ते उपर ॥ मुनि उपदेश दिए ॥ एम सूत्र साखे देखाडे छे.

यतनाए सूत्रे कह्युं मुनिने ॥ आर्य करम उपदेश ॥
परिणामिक बुद्धि विस्तारे ॥ समजे श्राद्ध अशेष ॥ सु० ॥ १७ ॥

अर्थ—यतनाए के० मुनिने सूत्रने विषे अर्थात् उत्तराध्ययन सूत्रने विषे कह्युं छे, एटले मुनि आर्यकर्मनो उपदेश दीए. इति भाव. पछी श्राद्ध परिणामिक बुद्धिए करी विस्तारे अशेष समजे. इत्यन्वय श्राद्ध के० श्रावक, परिणामिक बुद्धि के० बुद्धि परिणमी जाए एवी बुद्धिए करीने विस्तारे. अशेष समजे के० सर्व समजी जाय ते सूत्र पाठे ए

छे. ॥ जइ तंसि भोए चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं। धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकंपी तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ।१।"व्याख्या–चित्रमुनिए ब्रह्मदत्तने उपदेश घणो दीधो, पण प्रतिबोध न पाम्यो. तेवारे चित्रमुनि कहेछे. जइ के० जो, तंसि के० तुं छे. भोए चइउं असत्तो के० भोग छांडवा असमर्थ तो, अज्जाइं कम्माइं के० आर्य काम–उत्तम लोकने उचित एहवां कार्य जे अनुष्ठान, करेहि रायं के० हे राजन् करजे. धम्मे ठिओ के० धर्मने विषे रह्यो. प्रस्ताव थकी गृहस्थ धर्म लइए एटले गृहस्थ धर्ममां रह्यो. सव्वपयाणुकंपी के० सर्व प्रजा जे प्राणी तेमनी अनुकंपावंत थको, तो के० ते आर्य कार्य करवाथी होहिसि के० थाइश. देवो के० देवता, इओ के० आ मनुष्यना भव थकी, विउव्वी के० वैक्रिय शरीरवंत थइश.

अहीयां कोइक कहे छे जे " आर्य काम ते पोसह सामायिक लीजीए पण पूजा नहीं " तेने कहीए जे भोग छांडवा असमर्थ कह्यो छे अने पोसह सामायिकमां तो भोग छंडाय छे; माटे पूजा, प्रभावना अने साहमिवत्सल प्रमुखज आवे

आर्य कार्य श्रावकनां जेछे ॥ तेहमां हिंसा दिठ ॥
हेतु स्वरूप अनुबंध विचारे ॥ नाशे देई निज पिठ ॥ सु० ॥ १८ ॥

अर्थ–आर्य कार्य श्रावकनां जे छे के० जे जे श्रावकनां आर्य काम छे, तेहमां हिंसा दिठ के० तेहमां एटले आर्य काममां हिंसा दीठी छे. ते हिंसा त्रण प्रकारे छे ते त्रण प्रकार देखाडेछे. हेतु के० एक हेतुहिंसा, स्वरूप के० बीजी स्वरूपहिंसा अने, अनुबंध के० त्रीजी अनुबंधहिंसा, विचारे के० ए त्रण भेद, हिंसाना विचारे तो, नाशे देइ निज पिठ के० ते पूजा प्रमुखमां हिंसा प्ररूपनारा कुमति पोतानी पूठ देइने नाशे पण युक्तिए बकी शके नहीं. इति अष्टादशमी गाथार्थ ॥ १८ ॥

हवे एज त्रण प्रकारनी हिंसानो अर्थ देखाडे छे.

हिंसाहेतु अयतना भावे ॥ जीव वधे ते स्वरूप ॥
आणाभंग मिथ्यामति भावे ॥ ते अनुबंध विरूप ॥ सु० ॥ १९ ॥

अर्थ–हिंसाहेतु के० हेतुहिंसा ते कहीए जे, अयतना भावे के० अनाउपयोग प्रमादे प्रवर्त्तवुं; तेहमां यद्यपि जीवहिंसा न थाय तोपण हेतुहिंसा कहीए. हवे स्वरूपहिंसा कहे छे. ते स्वरूप के० तेहने स्वरूपहिंसा कहीए. कोने ? ते कहे छे. जीव वधे के० प्राणीनो घात थाय. तेवारे एटले मुनिराज पण उपयोगे चालता हालता होय अने कोइ जीवनो घात थयो. तो मुनिने स्वरूपहिंसा लागे; पण ते स्वरूपहिंसा, हीणां फल देवानो एकांत नहीं. हवे अनुबंधहिंसा कहे छे. आणाभंग के० प्रभुजीनी आज्ञानो भंग करे, आज्ञा लोपे; मिथ्यामति भावे के० मिथ्या विपरीत एहवी जे मति, ते भावे करीने एटले विपर्यास

श्रद्धाए करीने जेटलुं प्रवर्त्तन करे. कष्ट अनुष्ठान करे ते यद्यपि बाह्यथी हिंसा न करतो होय तोपण, पोतानो आत्मा हणाय छे, माटे अनुबंध ते सतंतर भावे परंपराए हिंसानुं फल आपे छे माटे अनुबंधहिंसा कहीए. ते विरूप के० पूर्वे बे हिंसा कही, तेथी ए महा विरूप छे, विपरीत स्वरूपछे. इति ओगणीशमी गाथार्थः ॥१९॥ वली एहज स्पष्ट करेछे.

हेतु स्वरूप न हिंसा सेवी ॥ सेवी ते अनुबंध ॥
तो जमालि प्रमुखे फल पाम्या ॥ कडुआं करी बहु द्वंध ॥सु०॥२०॥

अर्थ-हेतुस्वरूप के० हेतुहिंसा तथा स्वरूपहिंसा, न हिंसा सेवी के० ते हिंसा सेवी न कहीए. एटले दुष्टविपाक फल तेवां न आपे अने, सेवो ते अनुबंध के० अनुबंध हिंसा ते हिंसाज सेवी. जे माटे महा विपरीत, परभवे दुष्टविपाक फल ते ए आपे छे. ते उपर दृष्टांत देखाडे छे. तो जमालि प्रमुखे फल पाम्यां, कडुआं के० ते अनुबंध हिंसावंत हतो तो जमालि प्रमुख कडुआं फल पाम्यां. करी बहु द्वंध के० घणा द्वंध क्लेष करीने काया कष्ट करी वली बीजाने पण मिथ्या श्रद्धानी वासनारूप द्वंध करीने. एटले ए भाव जे, जो आणा विना एकली दयाथीज जो धर्म पामे तो श्री भगवतीसूत्रना नवमा शतक मध्ये जमालिनो अधिकार विस्तारे छे; तेहमां जमालिए शुद्ध चारित्र पाल्युं छे. माखोनी पांख सरखी दुहवी पण नथी, पण एक प्रभुवचन लोप्युं. बीजुं सर्व साचुं मानतो हतो पण फल ते हिंसानां आप्यां, पण अहिंसानां न आप्यां. तो रे, कुमतिओ, एना सरखी तो तमाराथी दया पलती छे नहीं. मात्र मुखे दया दया पोकारो छो, माटे आणा विना तमारो निस्तार केम थशे? ते जमालिनो अधिकार घणो छे माटे अहींयां लखता नथी. आत्मार्थी हो तो त्यहां जोज्यो.

सरूपथी हिंसा न टले छे ॥ समुद्रजले जे सिद्ध ॥
वली अपवादपदे जे वरते ॥ पण तेणे शिवपद लीध ॥सु०॥२१॥

अर्थ-सरूपथी हिंसा न टले के० नथी टलती, समुद्रजले जे सिद्ध के० लवण समुद्र तथा कालोदधि तथा जलशब्दे गंगा प्रमुख नदीना पाणीमां सिद्धि वर्या एटले अढी द्वीप बे समुद्र मध्ये सूचिअग्र जेटली जग्या सिद्ध नथी थया एहवी नथी. तेवारे पाणीमां सकल कर्मक्षय करतां पाणीना जीवोनी सरूपथी हिंसा थायछे. वली के० बीजुं उदाहरण कहे छे. अपवादपदे जे वरते के० अपवापद ते कारणे करवुं पडे. त्यां वर्त्ततां हिंसा थाय छे, पण तेणे शिवपद लीध के० पण ते अपवादना सेवको, मोक्षपद पाम्या छे. श्री आचारांगसूत्र द्वितीयश्रुतस्कंध प्रथम अध्ययन दशमे उद्देशे-" से भिक्खू वा भिक्खूणी वा जाव स माणे सिया से परो अभिहट्ट अंतो पडिग्गहे बिलं वा लोणं नो उब्भियं वा लोणं परिभाइत्ता नीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहेगं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफा-

सुअं जाव नो पडिग्गहेज्जा, सेआहच्च पडिगाहिएसिया तं च नाति दूरं गए जाणिज्जा से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भगिणीत्ति वा इमं किं ते जाणया दिन्नं उदाहु अजाणया? से य भणिज्जा नो खलु मे जाणया दिन्नं अजाणया, इमं खलु आउसो इदाणिं निसिरामि तं भुंजह वा णं परिभाएज्जा, तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं ततो संजयामेव भुंजिज्ज वा पिएज्ज वा, जं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए वा साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया समणुन्नाया ते वत्तव्वं सिया नो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्नं कीरइ तहेव कायव्वं सिया एवं खलु तस्स भिक्खूस्स भिक्खू सामग्गियं॥" व्याख्या—से भिक्खू वा भिक्खूणी वा के० ते साधु अथवा साधवी, जाव स माणे के० यावत् गृहस्थने घेर गोचरी पेठां, सिया के० कदाचित्, सेपरो के० ते गृहस्थ, अभिहट्टुअंतो के० मांहे पेशीने, पडिग्गहे के० पात्रने विषे ग्लानादिकने काजे खांड प्रमुख याच्ये थके, बिलं वा लोणं के० खाण विशेषे उपन्नुं लुण, उब्भियं वा के० लुणना आगारमां उपन्युं, तोसं के० तेवारे, दातार परिभाइत्ता के० पोताना भाजन मध्येथी थोडुंक ग्रहीने, निहट्टु के० बहार नीकलीने दलएज्जा के० साधुने आपे, तहप्पगारं के० तथा प्रकारनुं, पडिग्गहगं के० भाजन हजी, परहत्थंसि वा के० परना हाथमां छे, परपायंसि वा के० परभाजनने विषे, अफासुअं के० एहवुं सचित्त, जाव नो पडिग्गहेज्जा के० यावत् न पडघावे न लिए निषेध करे, आहच्च के० सहसात्कारे पडिगाहए सिया के० पडघाव्युं होय—लीधु होय. तं च नाति दूर गया जाणिज्जा के० ते दातार घणो समीपे जाणोने, से तमायाए के० ते भिक्षु, लवणादिक लेइने तत्थ गच्छिज्जा के० ते दातार पासे जाय, जइने. पुव्वामेव आलोइज्जा के० प्रथमथी ते लवणादिक देखाडे, पछी एम कहे. आउसोत्ति वा के० हे आउखावंत, भगिणीत्ति वा के० हे बहेन, इमं ते किं जाणया दिन्नं के० आ लुण प्रमुख तमे जाणते आप्युं? उदाहु अजाणया के० अथवा अजाणे आप्युं? से य भणिज्जा के० ते एम कहे, नो खलु मे जाणया दिन्नं के० में जाणीने नथी आप्युं, अजाणया के० अजाणे आप्युं छे, एवं खलु आउसो के० हे आउखावंत साधु, इंदाणिं निसिरामि के० हवणां में आप्युं, तं भुंजह वा णं परिभाएज्जा के० ते तमे भोगवो, अथवा तमारा साधुने वहेंची आपो तं परे हिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं के० ते परे एम जाणीने आज्ञा आपे थके, ततो संजया मेव के० ते वारे साधु पोते कारणे, भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा के० खाय अथवा पीए, जं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए वा के० जो न भोगवी शके अथवा न पान करी शके; साहम्मिया तत्थ वसंति के० त्यां साधर्मिक साधु वसता होय, संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया के० एक समाचारी वाला जाणे, तप न कर्यो होय, अदूरगया समणुन्नाया के० ढुंकडा जाणीने, तेवत्तव्वं सिया के० तेहने कहे, एटले तेहने वहेंची आपे, नो जत्थ साहम्मिया के० ज्यां एवा साधु न होय, जहेव बहुपरियावन्नं कीरति के० बहु पर्यापन्न विधि करे, ते विधि आचारांगमां पूर्वे कही छे, तहेव कायव्वं सिया

तस्यच

के० तेम करे, एवं खलु तस्स भिक्खूस्स सामग्गियं के० ए भिक्षुनुं सामग्र्य जाणवुं, ए मुनिने लूण वावरतां स्वरूप हिंसा क्यां टली ? अने मुनि उत्कृष्ट कह्या माटे शिव पद पण लीधुं. वली अहींयां पण विचारज्यो, आज्ञा प्रमाण के दया प्रमाण ! इति.

"से भिक्खू वा भिक्खूणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा उन्नाओ वा दरीओ वासइ परकमे संजयामेव परकमेज्जा नो उज्जुणं गच्छेज्जा केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परकममाणे पयछेज्ज वा पवडेज्ज वा से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणिवा हरियाणिवा अवलंबिय अवलंबिय उत्तरिज्जा ॥" व्याख्या —सेभिक्खू वा भिक्खूनी वा के०ते साधु अथवा साधवी, गामानुगामं दूइज्जमाणे के० ग्रामानुग्राम विचरतां, अंतरा से के०मार्ग वचमां,वप्पाणि वा के०वप्र होय, फलिहाणि वा के०खाइ होय, पागाराणि वा के० कोट होय, तोरणाणि वा के० तोरण होय, अग्गलाणि वा के० भोंगल होय, अग्गलपासगाणि वा भोंगलनां पासां पड्यां होय, उन्नाओदरीओ के० कोइ वस्तु विशेष, सइ परकमे के० छते बीजे मार्गे, संजयामेव परकमेज्जा के० यतनाए ते वांके मार्गे जाय, नो उज्जुअं गच्छेज्जा के० पाधरे मार्गे न जाय, केवली बूया आयाणमेयं के० केवलज्ञानी कहे छे, आयाण ते कर्मग्रहेवानुं कारण छे. एटले पाधरे मार्गे जातां पडे आखडे तो संयम आत्मानी विराधना थायज. हवे कदाचित् अन्य मार्गे अणछते, से तत्थ परिक्कममाणे के० ते मुनि ते मार्गे जाय; अने जातां थकां, पयलमाणे के० चलायमान थको, पवडमाणे के० पडतो थको. रुक्खाणि वा के० रूखने आलंबे अथवा, गुम्माणि के० गुल्मने आलंबे अथवा, लयाओ के० लताने आलंबे अथवा, वल्लीओ के०वेलडीने अवलंबे अथवा, तणाणि के० तृणने आलंबे अथवा, हरियाणि वा के० हरियाने आलंबे, अवलंबिय अवलंबिय के० आलंबी आलंबीने, उत्तरिज्जा के० उत्तरे, अहींयां अवलंबिय अवलंबिय ए पद सहूने जोडीए. इति आचारांगे द्वितीयश्रुतस्कंधे तृतीय अध्ययनस्य द्वितीयोद्देशके.

अहींयां पण रूख प्रमुखने आलंबतां स्वरूपथी हिंसा दीसे छे, अने मार्ग तो ए मुनिराजनो दीसे छेः माटे शिवपद पण पामे अहींयां पण विचारजो के आज्ञाप्रमाण के दयाप्रमाण? जो दयाप्रमाण तो वृक्षादिकने केम झाले ! ए विचारजो. ते माटे यद्यपि ए मुनिने लूण वावरवुं तथा वृक्षादिकनुं अवलंबवुं ते स्वरूपथी हिंसा छेः पण अनुबंधे निरवद्य अहिंसा ज छे. तेम जिनपूजामां पण स्वरूपथी हिंसा छे पण अनुबंधे अहिंसाज छे. इति गाथार्थ ॥२१॥

वली एज वात दृढ करे छे.

साधुविहार परे अनुबंधे ॥ नहीं हिंसा जिनभक्ति ॥
एम जे माने तेहनी वाधे ॥ सुजश आगम शक्ति ॥ सु० ॥ २२ ॥

अर्थ—साधुविहार परे के० मुनिना विहारनी परे, अनुबंधे के० परंपराए चाली आवे

एवी हिंसा नहीं के० नथी, जिम भक्ति के०जिनेश्वरनी भक्तिमां एटले पूजामां, हिंसा नथी एटले एम कह्युं जे साधु विहार करे छे, तेहमां यद्यपि वायुकायादिक कोइक अवसरे त्रस कायनी पण अथवा नदी प्रमुख उतरतां वीजी अप्कायादिकनी पण हिंसा, स्वरूपे छे, पण अनुबंधे मुनिने हिंसा नथी. तेम श्रावकने जिनपूजामां हिंसा नथी. इति भाव. एम जे माने के० ए रीते आगमनी रीतिए जिनपूजामां हिंसा नथी एम जे पुरुष माने, तेहनी वाधे के० ते पुरुषनी वधे, गुनश आगम शक्ति के० सुख तथा जश, तेहने आगम के० आववानी शक्ति एटले ते प्राणीने सुख आवे, जश आवे. एटले एमां जश एवुं कविए पोतानुं नाम पण सूचव्युं. इति गाथार्थ ॥ २२ ॥ ए ढाल पण संपूर्ण थयो. ग्रंथाग्रंथ ४८९ अक्षर, २८ सर्व ग्रंथांग्रंथ २०१४ अ० ६.

हवे पांचमी ढाल कहे छे. ए ढालने पूर्वनी ढाल साथे ए संबंध छे. पूर्व ढालमां पूजा करतां हिंसा न थाय. एम ठराव्युं ते तो जिनप्रतिमा ठरे ते वारे पूजा ठरे; माटे जिनप्रतिमानो वर्णव सिद्धांतमां विस्तारे छे ते कहे छे.

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मारी सहीरे समाणी–ए देशी ॥

सासय पडिमा अडसय माने ॥ सिद्धायतन विमानेरे ॥
धन धन जिन वाणी ॥ टेक ॥
प्रभु तें भाषी अंग उवंगे ॥ वरणवशुं तेम रंगेरे ॥ धन० ॥ १ ॥

अर्थ–सासयपडिमा अडसय माने के० शाश्वती प्रतिमा एकसो आठ प्रमाणे, सिद्धायतन के० सिद्धनुं घर एटले देहेरां, विमाने के० विमानने विषे, धन्य धन्य जिनवाणी छे, एटले मुखनी वात नथी, ए तो परमेश्वर कही गया छे. हे प्रभो तें, अंग जे ठाणांग प्रमुख अने उपांग ते जीवाभिगम प्रमुखने विषे भाखी के० कही छे, अहींयां भक्तिए तुंकारो छे तेहमां दोष नथी. जेम तमे अंग उवंगे कही छे तेम अमे, रंगे के० हर्षे वर्णवशुं ॥ इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

कंचनमय कर पद तल सोहे ॥ भविजननां मन मोहेरे ॥ ध० ॥
अंकरतनमय नख ससनेहा ॥ लोहिताक्ष मध्ये रेहारे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ–कंचनमय के० सुवर्णमय, कर पद तल के० हाथ पगनां तलीआं, सोहे के० शोभे छे, भव्य प्राणीनां मन मोह पामे एहवां छे. अंकरत्नमयी नख ते पण, ससनेहा के० स्निग्ध

तस्यच . ५

स्नेहवंता छे; एटले उजला छे, लोहिताक्षरत्ननी, मध्ये रेहा के० रेखा छे एटले नख मध्ये राती रेषा छे. इति द्वितीय गाथार्थ ॥ २ ॥

गात्र यष्टि कंचनमय सारी ॥ नाभि ते कंचनक्यारीरे ॥ ध० ॥
रिठरतन रोमराजि विराजे ॥ चुचूक कंचन छाजेरे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ–गात्रयष्टि के० गात्र जे शरीर तद्रूपयष्टि ते, कंचन के० सुवर्णमय, सारी के० मनोहर छे. इति भाव. नाभि ते जाणीए, कंचननी क्यारीज होयना ! एवी महा मनोहर छे. रिठरतन के० श्यामरतनमयी रोमराजि विराजे छे. चुचूक के० स्तनप्रदेश ते कंचनमयी छाजे छे. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

श्रीवच्छ ते तपनीय विशाला ॥ होठ ते लाल प्रवालारे ॥ ध० ॥
दंत फटिकमय जीह दयालु ॥ वली तपनीयनुं तालुरे ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ–श्रीवच्छ हृदयना मध्यभागे, ते तपनीय के० लगारेक राता सुवर्णमय छे. विशाला के० विस्तीर्ण छे. होठ ते लाल के० होठ राता परवाला सरखा छे. एटले सुंदर छे. दंत फटिक के० दांत ते फटिक रत्नमयी छे. एवा उज्वल सफेद छे. जीह के० जीव्हा, दयालु के० दयावंत छे. तथा तालु के० तालवुं, तपनीय के० रक्त सुवर्णमय छे. एटले जीभ तथा तालवुं ए बेउ वानां रातां छे. इति तूर्य गाथार्थ ॥ ४ ॥

कनक नाशिका तिहां सुविशेषा ॥ लोहिताक्षनी रेखारे ॥ध०॥
लोहिताक्ष रेखित सुविशाला ॥ नयन अंक रतनालारे ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ–कनक के० सुवर्णमय, नाशिका सुविशेषा के० घणां विशिष्टाकारे छे, एटले महा मनोहर नाशिका छे. लोहिताक्षरत्ननी नाशिकामां रेखा छे एटले लाल रेखा छे. लोहिताक्षरतननी रेखाए रेक्षित एवां सुविशाला के० विशाल, नयन के० नेत्र छे. वली अंक रतनालां के० अंकरत्नमयी छे. एटले उज्वल अने मध्ये राती टसरयो छे. ॥ इति पंचम गाथार्थ. ॥ ५ ॥

अच्छिपत्ति भमुहावली कीकी ॥ रिठरतनमय नीकीरे ॥ ध० ॥
श्रवण निलाडवटी गुणशाला ॥ कंचन झाकझमालारे ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ–अच्छिपत्ति के० पांपणो, भमुहा के० उपर वांकी भांपणी. कीकी प्रसिद्ध छे. ए त्रण वस्तु, रिठरतनमय, के० श्यामरतनमय, नीकी के० मनोहर छे. श्रवण के० कान तथा, निलाडवटी के० भाल ते गुणशाला के० गुणनी शाला–स्थानक छे. ते कंचननां छे. झाकझमाला के० देदीप्यमान एहवां छे ॥ ६ ॥

वज्ररतनमय अतिहि सोहाणी ॥ शशघडी सुखखाणीरे ॥ ध० ॥
केशभूमि तपनीय निवेशा ॥ रिठरतनमय केशारे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ–वज्ररतनमयी अतिहि सोहाणी के० अत्यंत मन गमती, एहवी शीश घडी के० मस्तकनी घडी छे; मुखनी खाण छे. केशनी भूमिका ते, तपनीय के० तपावेला सुवर्ण सरखी किंचित् रक्त छे. रिठरतनमय के० श्यामरत्नमयी केश छे. एटले काला छे ॥ इति सप्तमी गाथार्थ ॥ ७ ॥

हवे ते एकसो आठ प्रतिमाने प्रत्येके एक एक प्रतिमाने, अगीयार प्रतिमाओ वीजी छे ते शुं काम करे छे? ते कहेछे.

पूठे छत्र धरे प्रत्येके ॥ प्रतिमा एक विवेकेरे ॥ ध० ॥
दोय पासे दोय चामर ढाले ॥ लीलाए जिनने उवारेरे ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ–पूठे एक प्रतिमा विवेके सहित छत्र धरे छे. बेउपासे, दोय के० बे मूर्ति, प्रभुजीने चामर ढाले छे. ते लीलाए करीने जाणे जिनेश्वरने, उवारे के० उवारणांज करती होयना? इति अष्टमी गाथार्थ ॥ ८ ॥

नागभूत यक्ष ने कुंडधारा ॥ आगे दोय उदारारे ॥ ध० ॥
ते पडिमा जिनपडिमा आगे ॥ मानुं सेवा मागेरे ॥ ध० ॥ ९ ॥

अर्थ–वली जिनप्रतिमा आगल बे मूर्ति, नागदेवतानी छे; बे मूर्ति, भूतदेवतानी छे; बे मूर्ति यक्षदेवतानी छे अने बे मूर्ति कुंडधारा के० आज्ञाधारकनी छे. ते घणी उदार प्रधान छे कवि कहेछे के हुं एम मानुं छुं जे ते प्रतिमाओ, जिनप्रतिमा आगल, सेवा के० चाकरी मागे छे. इति नवमी गाथार्थ. ॥ ९ ॥

घंट कलश भृंगार आयंसा ॥ थाल पाइ सुपइठारे ॥ ध० ॥
मनगुलिया वायकरग प्रचंडा ॥ चित्ता रयण करंभारे ॥ ध० ॥ १० ॥

अर्थ–घंट एकसो आठ, कलश एकशो आठ, भृंगार ते पण कलश विशेष जाणवा ते एकसो आठ, आयंसा के० दर्पण एकसो आठ, थाल एकसो आठ पात्री भाजन विशेष ते एकसो आठ, सुप्रतिष्ठ भाजन विशेष. ते एकसो आठ, अने मनोगुलिका विठिका विशेष ते एकसो आठ, वातकरग कहेतां जलशून्य कुंभ एकसो आठ– प्रचंड के० अत्यंत शोभनीक छे, चित्ता के० विचित्र नाना प्रकारना करंडीआ एकसो आठ छे ॥ इति दशम गाथार्थ ॥ १० ॥

हय गय नर किन्नर किंपुरिसा ॥ कंठ उरग वृष सरिषारे ॥ ध० ॥
रयणपुंज वली फूल चंगेरी ॥ माल्य ने चूर्ण अनेरीरे ॥ ध० ॥ ११ ॥

अर्थ–हय के० हयकंठ, गय के० गजकंठ, किन्नर के० किन्नरकंठ, किंपुरिसा के० किंपुरिसकंठ, उरय के० उरगकंठ, अने वृषसरिषा के० वृषभकंठ–इत्यादिक कंठ शब्द सघळे

तस्यच

जोडीए. सरिषा के० सरखा–ए सर्व एकसो आठ कहेवा. रत्ननां पुंज एकसो आठ, वली फूलनी चंगेरी के० छाबडी, माल्य के० फूलमालानी चंगेरी. तेमज चूर्ण के० सुगंधी चूर्णनी, अनेरी के० बीजी छाबडी. ए पण एकसो आठ कहेवी.

गंध वस्त्र आभरण चंगेरी ॥ सरसव पुंजणी केरीरे ॥ ध० ॥
एम पुष्पादिक पडल वखाण्यां ॥ आगे सिंहासन जाण्यांरे ॥ध०॥१२॥

अर्थ–वली गंधनी चंगेरी. वस्त्रनी चंगेरी, आभरणनी चंगेरी अने सरसवनी चंगेरी, वली पुंजणी केरी के० पुंजणीनी चंगेरी. ए सर्व एकसो आठ जाणवां. एम पुष्पादिक के० फूल प्रमुखनां, पडल के० वस्त्र, वखाण्यां के० जीवाभिगम प्रमुखने विषे वखाण्यां छे. वली आगल सिंहासन जाण्यां छे, सिद्धांत वचने करीने. ॥ १२ ॥

छत्र ने चामर आगे समुग्गा ॥ तैल कुष्टभृत जुग्गारे ॥ ध० ॥
भरिया पत्र चोयग सुविलासे ॥ तगर एला शुचि वासेरे ॥ ध० ॥ १३ ॥

अर्थ–छत्र एकसो आठ, चामर एकसो आठ. वली आगल समुग्गा के० डाबडा. तैलभृत के० सुगंधी तेलना भर्या, कुष्ट के० सुगंध वस्तुना भर्या. जुग्गा के० योग्य. ए सर्व एकसो आठ आठ जाणवा. वली डाबडा पत्रे करी भर्या छे. चोगय के० सुगंध द्रव्ये भर्या छे. सुविलासवंत छे. तगरे करी भरया छे. एला के० एलचीए भरया छे. शुचिवास के० पवित्रवासे छे. इति त्रयोदश गाथार्थ ॥ १३ ॥

वलि हरताल ने मनसिल अंजन ॥ सवि सुगंध मनरंजनरे ॥ ध० ॥
ध्वजा एक शत आठ ए पूरां ॥ साधन सर्व सनूरांरे ॥ ध० ॥१४॥

अर्थ–वली हरतालना डाबडा छे, मनसिलना डाबडा छे–अने अंजनना डाबडा छे. सवि सुगंध के० सर्व सुगंधिवंत छे. मनरंजन के० मनने रीझ उपजावे एवा डाबडा छे. ध्वजा के० नाहानी ध्वजाओ छे, ए सर्व एकसो आठ पूरां छे. ए सर्व साधन छे. सनूरां के० नूरसहित छे. ॥ इति चौदमी गाथार्थ ॥ १४ ॥

सुर ए पूजा साधन साथे ॥ जिनपूजे निज हाथेरे ॥ध० ॥
सिद्धायतने आप विमाने ॥ थूभादिक बहु मानेरे ॥ ध० ॥ १५ ॥

अर्थ–सुर जे देवता–ते ए पूजानां साधन सहित, जिनेश्वरनी पूजा पोताने हाथे करे छे. आप विमाने के० पोताना विमानने विषे, सिद्धायतने के० सिद्धनुं घर–तेहने विषे पूजा करे छे. वली थूभादिकने विषे बहु मान करे. इति गाथार्थ ॥ १५ ॥

त्यां देवता भावना भावे, ते शीरीते भावे ! ते कहे छे.

एह अपूरव दरिशण दीठुं ॥ सुरतरु फलथी मीठुंरे ॥ ध० ॥
ए संसार समुद्रे नावा ॥ तारण तरण सहावारे ॥ ध० ॥ १६ ॥

अर्थ–एह अपूर्व दर्शन दीठुं एटले कदापि काले संसारमां भमतां, भावथकी प्रभुद्-र्शन नथी थयुं; माटे अपूर्व, सूरतरु के०कल्पवृक्षना फल करतां पण मीठुं. वली ए प्रभु भ-क्ति, संसार समुद्रने विषे नावा के० झहाज बराबर छे. जेम नावा पोते तरे अने बीजाने तारे तेम प्रभुजी पोते तर्या अने भक्ति लोकने तारक स्वभाव छे. भक्ति अथवा जिनप्र-तिमानुं विशेषण छे माटे स्त्रीलिंगे भाष्युं छे. इति षोडश गाथार्थ ॥ १६ ॥

एम विस्मय भवभय गुणरागे ॥ झीले तेह अतागेरे ॥ ध० ॥
राचे माचे ने वलि नाचे ॥ धरम ध्यान मन साचेरे ॥ ध० ॥ १७ ॥

अर्थ–एम विस्मय के० प्रभु गुणनी अद्भुतता तथा, भवनो भय के० संसारनी बीक, तथा, गुणरागे के० प्रभुगुणना रागने विषे पण ते राग कहेवो छे? अतागे के० जेहनो ताग नथी; अपार छे. तेहमां देवता झीले. तेहमां राचे, माचे, मग्न थाय अने, नाचे के० नाटक करे. धर्म ध्यानमां जेमनुं साचुं मन छे. सप्तदश गाथार्थ ॥ १७ ॥

थेइ थेइ करतां दे ते भमरी ॥ हर्षे प्रभुगुण समरीरे ॥ ध० ॥
योग निरालंबन लय आणी ॥ वश करता शिवराणीरे ॥ ध० ॥ १८ ॥

अर्थ–थेइ थेइ करतां भमरी दीए के० भमरी देतां हर्ष थकी प्रभुना गुण समरी के० संभारीने, निरालंबन जोग ते सिद्धस्वरूपनी, लय आणी के० तल्लीन थइ, शिवराणी के० मोक्षराणीने वश करता थका छे. इति अष्टादश गाथार्थ ॥ १८ ॥

एम नंदीश्वर प्रमुख अनेरां ॥ शाश्वत चैत्य भलेरांरे ॥ ध० ॥
त्यां जिनपूजे ते अनुमाने ॥ जनम सफल निज मानेरे ॥ ध० ॥ १९ ॥

अर्थ–एम नंदीश्वर प्रमुख अनेरां के० बीजां भलां रुडां शाश्वत चैत्य छे. अहींयां प्र-मुखशब्दे रुचकनां, कुंडलनां, भवनपति प्रमुखनां लेइए. त्यां जिनेश्वरनी पूजा करे ते अनु-माने पोतानो जन्म सफल माने छे एटले देवताने जन्म सफल थयानुं ठेकाणुं जिनराज-नी भक्ति छे. बीजुं नथी. इति एकोनविंशति गाथार्थ ॥ १९ ॥

कल्याणक अठाइ वरषी ॥ तिथि चउमासी सरखीरे ॥ ध० ॥
तेह निमित्ते सुर जिन अरचे ॥ नित्य भक्तिपणे विरचेरे ॥ ध० ॥ २० ॥

अर्थ–कल्याणक के० जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, अने मोक्ष ए कल्याणके तथा वरषी के० संवत्सरी तथा चोमासानो अठाइ–ए दिवसे घणा देवताओ भेला मली अठाइ

महोच्छव करे छे. सरखी के० ए सर्व सरखी तिथि छे. ते कल्याणक प्रमुख निमित्त पामीने, सुर के० देवताओ, जिनेश्वरनी पूजा करे छे. नित्य भक्ति के० निरंतरपणे प्रभुभक्ति रचे छे. ते पूर्वे पूर्वच्छा शब्दनी युक्तिमां कह्युंछे. इति गाथार्थ ॥ २० ॥

भाव ते अक्षयभावे मलिया ॥ ते नवि जाए टलियोरे ॥ ध० ॥
फरि आंबू नवि होय निषेधे ॥ हुओ हेमरस वेधेरे ॥ध० ॥ २१ ॥

अर्थ–भाव के० पोतानो भाव, अक्षयभाव के० प्रभुनो भाव–ते साथे मल्यो थको ते नवि जाए टलियो के० ते टली जाय नहीं. ते उपर दृष्टांत कहे छे. वेधनो अर्थ केलो छे. जे रस वेधे त्रांबानुं हेम थयुं. ते हेम, निषेधे के० त्रांबाने निषेधपणे थयुं छे. ते फरी त्रांबु नहि, हेम के० न थाय; तेम पोतानो भाव अक्षयभावे मल्यो टली जाय नहीं. ॥ इति गाथार्थ ॥ २१ ॥ वली दृष्टांत कहे छे.

एके जललव जलधि भलाए ॥ तो ते अक्षय थाएरे ॥ ध० ॥
आपभाव जिनगुणमांही आणे ॥ तेम ते अक्षय प्रमाणेरे ॥ ध० ॥२२॥

अर्थ–एके जललव के० पाणीनुं बिंदु एक पण जलधि के० समुद्र मांहे, भलाए के० भले तो ते अक्षय थाय एटले सुकाय नहीं; तेम, आपभाव के० पोतानो भाव, जिनेश्वर गुणमांहे आणे तो अक्षय थाय. प्रमाणे के० पूर्वे जे युक्ति कही अथवा दृष्टांत कह्युं ते प्रमाणे करीने अक्षय थाय. ।। इति गाथार्थ ॥ २२ ॥

अपुणरुत्त अडसय वड वृत्ते ॥ एम सुर भावे चित्तेरे ॥ ध० ॥
एम जिन पूजी जे गुण गावे ॥ सुजश लील ते पावेरे ॥ध० ॥ २३ ॥

अर्थ–ते पूजा करीने, अपुणरुत्त के० जे एकवार कह्युं ते बीजी वार न आवे तेहने अपुणरुत्त कहीए, एवे, अडसय वडवृत्ते के० एकसो आठ मोटां काव्योए करी सुर जे देवता तेओ चित्तने विषे भावे. एरीते जिनेश्वरने पूजीने एटले अहींयां व्याख्यान थकी जिन प्रतिमा पूजिने जिनना गुण गावे; ते प्राणी, सुजशलील के० भला जशनी लीला पामे. कविए जश शब्दे जशविजय एवुं पोतानुं नाम पण सूचव्युं.

हवे जिन प्रतिमानो वर्णव तथा चोमासी संवत्सरी तथा जिन जन्मादिक कल्याण के पूजा अठाइ महोच्छव जेम जीवाभिगम सूत्रने विषे कह्यो छे ते पाठ लखीए छैए–" तस्सणं सिद्धायतणस्स बहु मज्झदेसभाए एत्थणं एगा मणिपेढिया पन्नत्ता दो जोयणा आयामविरकंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमया अच्छा तीसेणं मणिपेढियाए उप्पि एत्थणं एगे महं देवच्छंदए पन्नत्ते दो जोयणाइं आयामविरकंभेणं साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामए अच्छे ॥" अर्थ–ते सिद्धायतन के० सिद्धनुं घर–तेहना बहु मध्य

भागे, एत्थणं के० अहीयां, मणिपेढिया के० मणिनी पीठिका छे. ते पीठिका बे योजन आयाम लांबी, अने विरकंभ के० पोहोली छे. जोयणं के० एक जोजन, बाहल्लेणं के० जाडपणे छे. सर्व मणिमयी छे. अच्छ के० निर्मल छे-इत्यादिक वर्णववी. तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं के० ते मणिपीठिका उपर, एत्थणं के० अहींयां, एगेमहं के० एक महोटो, देवच्छंदए के० देवच्छंदो छे. ते प्रभुने बेसवानुं घर विशेष पन्नत्ते के० कह्युं छे. ते बे योजन लांबुं पहोळुं छे; ने योजन झाझेरुं उंचुं छे. सर्व रत्नमयी, अच्छ के० निर्मल छे. सूत्रं-"तत्थ णं देवच्छंदए अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताणं सन्निरिकत्तं चिट्ठए तासिणं जिण पडिमाणं अयमेवारूवे वण्णावासे पन्नत्ते ॥" अर्थ-तत्थ णं के० ते देवच्छंदाने विषे अट्ठसयं जिणपडिमाणं के० एकसो आठ जिनेश्वरनी प्रतिमा; ते केवी छे? जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताणं के० जिनेश्वरना शरीरनुं उस्सेह जे ऊंचपणुं ते प्रमाण मात्र छे. एटले पांचशे धनुष्य प्रमाणे छे. सन्निरिकत्तं के० रूडी रीते थापनाए रह्यो छे. तासिणं जिणपडिमाणं के० ते जिनप्रतिमानो, अयमेयारूवे के० ए एहवा स्वरूप, वण्णावासे के० वर्णावासवर्णव, पन्नत्ते के० कह्यो छे. सूत्रं-" तं जहा तवणिज्जमया हत्थतला पायतला, अंकामयाइं णखाइं, अंतो लोहियरकपरिसेयाइं, कणगामया पादा, कणगामया गोप्फा, कणगामइओ जंघाओ, कणगामया जाणुं, कणगामया उरु, कणगामईओ गायलठीओ, तवणिज्जमईओ णाभीओ, रिट्ठमइओ रोमराजीओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, कणगमईओ बाहाओ, कणगमयाओ गीवाओ, रिट्ठमये मंसू सिलप्पवालमया ओट्ठा, फलिहमया दंता तवणिज्जमईओ जीहाओ, तवणिज्जमया तालुया, कणगमइओ णासाओ, अंतो लोहिअरकपरिसेआओ, अंकामयाइं अच्छीणि, अंतो लोहिअरकपरिसेआइं, पुलगामईओ दिट्ठिओ, रिट्ठामईओ तारगाओ, रिट्ठमयाइं अच्छिपत्ताइं, रिट्ठामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला, कणगामया सवणा, कणगामया निलाडवट्टा, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमइओ केसंत केसभूमिओ, रिट्ठामया उवरिमुद्धया ॥ " अर्थ-तं जहा के० ते वर्णव करे छे. तवणिज्जमया के० तपाव्या सुवर्णमयी, हत्थतला के० हाथ तलीआं छे. पायतला के० पगनां तलीयां छे; एटले हाथ पगनां तलीयां रातां छे. अंकामयाइं के० अंकरत्नमयी नख छे; एटले सफेद छे. अंतो के० मध्ये, लोहिअरकपरिसेयाइं के० लोहिताक्षरत्ननी राती रेखा छे. कणगामयाओ पादा के० सुवर्णमय पग छे, कणगामया गोप्फा के० सुवर्णमय गुल्फ एटले घुंटीओछे कणगामईओ जंघाओ के० सुवर्णमयी जंघाओ छे, ढींचणथी हेठली ते जंघा कहीए. कणगामया जाणु के० सुवर्णमयी ढींचण छे. कणगामयाउरु के० कनकमय साथलछे कणगामईओ गायलट्ठीओ के० कनकमयी गात्रयष्टिछे; एटले शरीर छे. तवणिज्जमईओ णाभिओ के० तपाव्या सुवर्णमयी नाभिछे एटले रातीछे. रिट्ठामईओ रोमराईओ के० श्यामरत्नमय रोमराजी शरीरनी छे तवणिज्जमया चुचुया के० तपाव्या सुवर्णमय चुचुक छे; एटले स्तनाग्रदेश राता छे. तवणिज्जमया सिरिवच्छा के० तपाव्या सुव-

र्णमयी श्रीवच्छ छे एटले राताछे. कणगमईओ बाहाओ के० सुवर्णमयी बांह छे. कणगमयाओ गीवाओ के० सुवर्णमय ग्रीवा के० कंठ छे. रिट्ठमये मंसू के० रिष्टरत्नमय दाढी मूंछ छे. सिलप्पवालमया के० परवालामय, ओट्ठा के० होठ छे. फलिहमया दंता के० स्फटिकरत्नमय दांत छे तवणिज्जमयाओ जीहाओ के० तपाव्या सुवर्णमय जीव्हा एटले जीभ छे. तवणिज्जमया तालुआ के० तपाव्या सुवर्णमय तालवुं छे. एटले जीभ अने तालवुं ए बंने राता छे. कणगमईओ नासाओ के० सुवर्णमय नाशिका छे. अंतो लोहिअरक्रपरिसेयाओ के० ते नाशिका मध्ये लोहिताक्षरत्ननी रेखा छे. अंकामयाइं अच्छीणि के० अंकरत्नमयी आंखो छे; एटले उज्वल छे. अंतो लोहिअरक्रपरिसेयाओ के० ते नेत्र मध्ये लोहिताक्षरत्ननी रेखाओछे. पुलगामइओ दिट्ठिओ के० पुलकरत्नमयी दृष्टिछे. ए पद सूत्र मध्ये छे. पण वृत्तिकारे अर्थ नथी करयो, माटे अमे पण सामान्ये लख्युंछे. रिट्ठामईओ तारगाओ के० रिष्टरत्नमयी तारा एटले कीकी छे. रिट्ठमयाइं अच्छिपत्ताइं के० रिष्टरत्नमयी आंखनी पांपण छे. रिट्ठामईओ भमूहाओ के० रिष्टरत्नमय भांपणि छे. कणगामया कवोला के० कनकमयी कपोल एटले गल्लस्थल छे. कणगामया सवणा के० कनकमय श्रवण एटले कान छे. कणगमया निलाडवट्टा के० सुवर्णमय निलाडपट्ट छे; एटले कपोल छे. वइरामईओ सीसघडीओ के० वज्ररत्नमयी शीर्षघडी छे. तवणिज्जमईओ केसंत केसभूमिओ के० तपाव्या सुवर्णमय केशनी अंतभूमि छे. एटले केशभूमि रक्त छे. रिट्ठमया के० श्याम रत्नमय. उवरिमुद्धया के० ऊपर मुर्द्धजा केश छे. अथ-सूत्रम्-"तासिणं जिणपडिमाणं पिट्ठओ पत्तेयं छत्तधारपडिमाओ पन्नत्ताओ। ताओ णं छत्तधारपडिमाओ हिमरययकुंदेंदुप्पगासाइं सकोरिंटमल्लदामाइं धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति तासिणं जिणपडिमाणं उभओ परिंक पत्तेयं पत्तेयं चामरधारपडिमाओ पन्नत्ताओ। ताओ णं चामरधारपडिमाओ चंदप्पहवेरुलिय नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखंककुंददगरयअमयफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ धवलाओ चामराओ सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति। तासिणं जिणपडिमाणं पुरओ दो दो नागपडिमाओ दो दो जरकपडिमाओ दोदो भूयपडिमाओ दोदो कुंडधारपडिमाओ विणओवणयाओ पायवडियाओ पंजलीउडाओ सन्निरिकत्ताओ चिट्ठंति। सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ॥" अर्थ-तासिणं जिणपडिमाणं पिट्ठओ के० ते जिनप्रतिमाने पूठे. पत्तेयं पत्तेयं छत्तधारपडिमाओ पन्नत्ताओ के० प्रत्येके एकेक छत्रधरनी प्रतिमा कही छे. ताओणं छत्तधार पडिमाओ के० ते छत्रधरप्रतिमा एहवे छत्रे सहित छे. हीम के० शीतकाले हिम पडे छे; एहवुं रयय के० रुपु, कुंद के० मचकुंद एटले मचकुंदनुं फूल, इंदु के० चंद्रमा, पगासाइं के० ए सर्व जेवां उजलां होय तेवां छे. सकोरिंटमल्लदामाइं के० कोरिंटवृक्षना फूलनी माला सहित, धवलाइं आयवत्ताइं के० उज्वल जे छत्र, सलीलं के० लीला सहित मनोहर, ओहारेमाणीओ चिट्ठंति के० धरती थकी रहे छे. एटले प्रभुजीने छत्र धरे छे. तासिणं के०

ते जिनप्रतिमाने, उभओपरिकं के० बेहु पासे, पत्तेयं पत्तेयं के० प्रत्येके प्रत्येके एटले एके-की जिनप्रतिमाने, चामरधारपडिमाओ के० चामरनी धरनारी बे बे प्रतिमा छे. ताओ णं के० ते चामरधार प्रतिमाओ केवी छे ? ते कहे छे. नाणामणिकणग के० नाना प्रकारना मणि तथा सुवर्ण-तेणे करी विमल के० निर्मल, महरिह के० महर्ध्य, तवणिज्जुज्जल के० तपाव्या सुवर्णमय उज्वल अत्यंत देदीप्यमान, विचित्त के० विचित्र प्रकारना, दंडाओ के० चामरना दंड छे. चिल्लियाओ के० देदीप्यमान, शंख प्रसिद्ध छे. कुंद के० मचकुंदनु फुल, दगरय के० पाणीना कण, अमयफेणपुंज के० अमृतशब्दे क्षीरसमुद्र तेहनुं फेण तेहनो पुंज के० समूह, सन्निगासाओ के० ते सरखा उज्वल सुहुम के० सूक्ष्म, रयय के० रूपाना; दीहवालाओ के० दीर्घ लंबायमान वाल छे; एहवा धवल चामर छे. ते सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारे माणीओ चिट्ठंति के० लीलाए जिनने ओवारती थकी एटले वींझती थकी रहे. तासिणं इत्यादि. वली ते जिनप्रतिमानी आगल दो दो नागपडिमाओ के० बे बे नागदेवतानी प्रतिमा छे. वली दो दो जखपडिमाओ के० बे बे यक्षदेवनी प्रतिमाओ छे, वली दो दो भूयपडिमाओ के० बे बे भूतनी प्रतिमाओ छे; वली दो दो कुंडधारपडिमाओ के० बे बे आज्ञाधार देवनी प्रतिमाओ छे. ते सर्व प्रतिमाओ केहेवी छे? विणओवणयाओ के० विनये करी उपनत के० नमोओ छे. पायवडियाओ के० पगे लागती छे पंजलिउडाओ के० प्रांजलिपुट करयो छे; एटले हाथ जोडया छे एवी सन्निरिकत्ताओ चिट्ठत्ति के० रूडी रीते रही छे. सव्वरयणामईओ के० सर्व रत्नमयी. अच्छाओ इत्यादिक वर्णववी. यावत् प्रतिरूप छे. सूत्रम्-"तासिणं जिणपडिमाणं पुरओ अट्ठसयं घंटाणं अट्ठसयं चंदणकलसाणं अट्ठसयं भिंगाराणं एवं आयंसगाणं थालाणं पातीणं सुपइट्ठगाणं मणगुलियाणं वातकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडाणं हयकंट्ठगाणं जावउसभकंठगाणं पुप्फचंगेरीणं जावलोमहत्थचंगेरीणं पुप्फडलगाणं अठ्ठसयं तेलसमुग्गाणं जावधूवकडुच्छगाणं सन्निरिकत्ताणं चिट्ठंति" अर्थ-तासिणं इत्यादि ते जिनप्रतिमाने आगल, अट्ठसयं घंटाणं के० एकसो आठ घंटा छे अट्ठसयं चंदणकलसाणं के० एकसो आठ चंदनना कलश छे; अट्ठसयं भिंगाराणं के० एकसो आठ भिंगार-ते पण कलश विशेष छे. एवं के० ए रीते जे आगल कहीए. तेपण एकसो आठ आठ कहेवा. आयंसगाणं के० आरिसा छे, पात्रीओ छे, थाल छे, सुप्रतिष्ठक के० भाजन विशेष छे. ए शब्दना अर्थ ढालना टबामां लख्या छे तेहथी जाणवा. मनोगुलिका वातकरक चित्ररत्नना करंडिया छे, हयकंठ प्रमुख कंठ कहेवा, फूलप्रमुख चंगेरी कहेवी. एम पुष्प प्रमुखनां पडल कहेवां. अट्ठसयं तेलसमुग्गाणं के० एकसो आठ, तेलनां डाबडां छे. यावत् छेडे एकसो आठ, धूपना कडछा कहेवा. सण्णिरिकत्ताणं चिट्ठंति के० रूडीरीते रह्या छे. वली आगल नंदीश्वर द्वीपना अधिकार मध्ये सिद्धायतननो अधिकार कहीने ए पाठ लख्यो छे.-

"तत्थ णं वहवे भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणियादेवा चाउम्मासियपाडिवएसु संवच्छ-

रेसु य अन्नेसु बहुसु जिणजम्मणनिरकमणनाणुप्पायपरिनिव्वाणमादिएसु अ देवकज्जेसु य देवसमितीसु अ देवसमुदएसु अ देवसमवाएसु अ देवपओयणेसु य एगंतओसहिया समाणा पमुदियपक्कीलिया अट्ठाहिआओ महामहिमाओ करेमाणा सुहं सुहेणं विहरंति ॥" अर्थ—तत्थ णं के० ते सिद्धायतनने विषे, बहवे के० घणा एटले सम्यग्दृष्टि होय ते, भवणवइ के० भवनपति. वाणमंतर के० व्यंतरदेवता, जोइस के० ज्योतिषी, वेमाणिया के० वैमानिक एटले चारे निकायना देवता, चाउम्मासिय पाडिवएसु के० चोमासाना पडवाना दिवसे एटले कार्त्तिकी प्रमुख चोमासे, तथा संवच्छरेसु के० संवच्छरीने विषे बीजा पण बहुसु के० घणां, जिणजम्मण के० जिनेश्वरने जन्म कल्याणके तथा, निरकमण के० दीक्षा कल्याणके, नाणुप्पाय के० केवलज्ञान उपजे ते कल्याणके, तथा निव्वाणमादिएसु अ के० मोक्ष ए आदे देइ बीजा पण, देवकज्जेसु य के० देवकार्यने विषे देव सम्मितीसु अ के० देवताओना समुदाय मल्या होय तेने विषे. एहज वे पदना पर्याय, वे पदे कहेछे. देवसमुदएसु देवसमवाएसु ए बे पदनो पण एहज अर्थ. देवपयओयणेसु य के० देवताना प्रयोजनने विषे एटले कार्ये करी. एगओसहिया समाणा के० एकठां मल्यां थकां, पमुदिय पक्कीलिया के० प्रमुदित एटले हर्षवंत, क्रीडावंत. अट्ठाहियाओ महामहिमाओ के० अठाइरूप महा महोच्छव एटले आठ दिवस लगी महा महोच्छव करतां थकां सुखे सुखे विचरे छे. एरीते जीवाभिगम प्रमुखे पाठ छे. बीजां एकसो आठ काव्ये स्तववुं. सूर्याभ देवना अधिकारमां कह्युं छे. एटले ए ढाल संपूर्ण थयो. ग्रंथाग्रंथ २२० अक्षर ४ सर्वाग्र मलीने ग्रंथाग्रंथ २२३४ अ० १०

हवे छठी ढाल कहे छे. तेहनो पूर्व ढाल साथे ए संबंध छे जे एक तो पूर्वे कह्युं छे जे "पंचांगी प्रमाणे स्थापना निक्षेपो परखीने आनंद पामुं." ते स्थापना निक्षेपो सूत्र प्रमाणे देखाडे. वली ते सूत्रमां योग वहेवा कह्या छे ते ढुंढीआ मानता नथी. ते योग, सूत्र साखे देखाडे छे; तथा पंचांगी पण सूत्र साखे देखाडे छे. अथवा पूर्वे एम कह्युं हतुं जे "तमारी आज्ञा पालवी. पण कुयुक्ति न करवी" ते आज्ञा तो योग तथा पंचांगी माने तेवारे पाली कहेवाय; अने समकित पण तेवारेज थाय. माटे ए ढालमां योग तथा पंचांगी देखाडे छे. ते ढालनी ए प्रथम गाथा लखीए छैए.

॥ ढाल छठी ॥

भोलीडा हंसारे विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

समकित सूधुंरे तेहने जाणीए ॥ जे माने तुज आण ॥
सूत्र ते वांचेरे योग वही करी ॥ करे पंचांगी प्रमाण ॥ स० ॥ १ ॥

अर्थ—ते प्राणीने शुद्ध समकित जाणीए, जे तमारी आज्ञा माने. ते आज्ञा बतावे छे.

जे प्राणी योगवहीने सूत्र वांचे तथा पंचांगी प्रमाण करे एटले सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, टीका, अने चूर्णि; एहमां जे कह्युं छे ते सर्व सत्य करी माने ॥ १ ॥

उद्देशादिक नहीं चउनाणनां ॥ छे सुअनाणनां तेह ॥
श्री अनुयोगद्वार थकी लही ॥ धरीए योगसुं नेह ॥ स० ॥ २ ॥

अर्थ—उद्देशादिक के० उद्देश १ आदि शब्दे समुद्देश २ अनुज्ञा ३ अने अनुयोग ४ ए चारे, नहि चउनाणनां के० चारे ज्ञान जे मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवलज्ञान ए चारनां नथी. छे सुअनाणनां तेह के०ते उद्देशादिक श्रुतज्ञाननां छे. ते माटे भणुं भणावुं अर्थ कह्यो ते श्रुतज्ञाननोज थयो. श्री अनुयोगद्वार थकी लही के० पामीने योग साथे स्नेह धरीए. ते अनुयोगद्वारनो पाठ लखीए छैए.—

अथ सूत्रम्—"नाणं पंचविहं पन्नत्तं तं जहा—आभिणिवोहियनाणं १ सुअनाणं २ ओहिनाणं ३ मणपज्जवनाणं ४ केवलनाणं ५, तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं णो उद्दिसिज्जंति णो समुद्दिसिज्जंति णो अणुन्नविज्जंति । सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ । जइ सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो ४ पवत्तइ, अंग वाहिरस्स उद्देसो ४ पवत्तइ? अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो ४ । इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगवाहिरस्स ॥" इत्यादि अनुयोगद्वार सूत्रादौ ॥ अर्थ—नाणं पंचविहं के०ज्ञान पांच प्रकारे, पन्नत्तं के० कह्युं छे. तं जहा के० ते कहे छे. आभिणिवोहियनाणं के० मतिज्ञान, सुअनाणं के० श्रुतज्ञान, ओहिनाणं के० अवधिज्ञान, मणपज्जवनाणं के०मनपर्यायज्ञान अने, केवलनाणं के० केवलज्ञान, तत्थ के० तेहमां, चत्तारि नाणाइं के० चारज्ञान, ठप्पाइं के० थापी मूकीए. ठवणिज्जाइं के० स्थापवा योग्य छे. णो उद्दिसिज्जंति के०उद्देश ते सामान्य कथन, ते चार ज्ञानने नथी. णो समुद्दिसिज्जंति के०समुद्देश ते विशेषे कथन नथी. णो अणुन्नविज्जंति के० अनुज्ञा पण न थाय. एटले उद्देश समुद्देश अनुज्ञानी क्रिया छे ते न थाय; जे कारण माटे मतिज्ञानादिक चार ज्ञान अपातुं लेवातुं नथी; ते माटे सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ के० श्रुतज्ञाननो उद्देश समुद्देश अनुज्ञा अने अनुयोग ते अर्थ कथन प्रवर्त्ते छे. जइ सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ के० जो श्रुतज्ञाननां उद्देशादिक चारवानां प्रवर्त्ते छे, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो ४ पवत्तइ के०तो शुं अंग प्रविष्टना उद्देशादिक चार प्रवर्त्ते छे के, अंगवाहिरस्स उद्देसो ४ पवत्तइ के०अंग वाह्यना उद्देशादिक चार प्रवर्त्ते छे? जे माटे श्रुतज्ञान तो अंगप्रविष्ट आचारांगादिक पण छे, अने अंगवाह्य आवश्यकादिक पण छे; माटे पूछ्युं जे अंगप्रविष्टनो के अंगवाह्यनो छे? अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो ४ के०अंगप्रविष्टनो पण छे अने अंगवाह्यनो पण छे. इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगवाहिरस्स के० ए आश्रीने तो अंगवाह्यनो छे. जे शिष्यने जेहनो उद्देशादिक प्रवर्त्ततो होय तेहनुं नाम दीजीए. ए आलावो अनुयोगद्वारने धुरे विस्तारे छे. अहींयां संक्षेपे लख्यो छे माटे तिहां जोइ लेजो.

तस्यच

उद्देशादिक क्रमविण जे ज्ञणे ॥ आशाते तेह नाण ॥
नाणावरणी रे वांधे तेहथी ॥ ज्ञगवई अंग प्रमाण ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ—उद्देशादिक के० उद्देश समुद्देशादिकनां, क्रमविण के० अनुक्रम विना जे सूत्र भणे, आशातना करे छे. तेह के० ते प्राणी, तेहथी के० ते ज्ञाननी आशातनाथी, नाणावरणी के० ज्ञानावरणी कर्म बांधे. भगवई अंग प्रमाण के० भगवती नामे पांचमुं अंग, ते प्रमाणे एटले भगवति सूत्रमां कह्युं छे ते लखीए छैए. ॥ ३ ॥

"नाणावरणिज्जकम्मसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं?गोयमा नाणपडिणीयाए नाणनिण्हवणयाए नाणंतराएणं नाणप्पओसेणं नाणासायणाए नाणविसंवायणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मसरीरप्पओग बंधइ ॥" इति ॥ अर्थ—नाणावरणिज्ज इत्यादि ज्ञानावरणी कर्म शरीरनो जे प्रयोगसाबंध ते, कस्स कम्मस्स उदएणं के० कोण कर्मनां उदये करीने; एटले ज्ञानावरणी साथी बंधाय? इति भाव. प्रभुजी कहे छे. हे गोतम! नाणपडिणीयाए के० ज्ञाननुं प्रत्यनीकपणुं ते अनिष्टनुं आचरण करे. नाणनिण्हवणयाए के० ज्ञाननुं ओलववुं करे. एटले ज्ञान अने ज्ञानी कोइ रीते अभेद छे. माटे ज्ञान जे पासे भण्यो तेहने ओलवे. नाणंतराएणं के० ज्ञाननो अंतराय करवे. एटले ज्ञान भणनारने भात पाणी वस्त्र उपाश्रयना लाभनुं निवारण करे. तथा, नाणप्पओसेणं के० ज्ञानने प्रद्वेषे करीने एटले अंतर प्रीति ज्ञान ज्ञानी उपर न राखे. तथा, नाणासायणाए के० ज्ञाननो आशातना करे छे. ज्ञानोनी जाति हीले,नाणविसंवायणाजोगेणं के०ज्ञाननो विसंवाद—विपरीत प्ररूपणा करे. नाणावरणिज्ज इत्यादि एम करतां जीव ज्ञानावरणी कर्म बांधे. इति भगवतीसूत्रे. वली भगवती प्रमुख अंगने छेहडे तपयोग विधि लेशथी कह्योज छे. तेहनो लेश लखीए छैए.॥"पन्नत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति, णवरं चउत्थसयं पढमे दिवसे अट्ठ बित्तीयदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति।नवमाओ सयाओ आरब्भ जावइयं पवेयइ तावइयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति उक्कोसेणं सयंपि एगदिवसेणं। मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयं, जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सयं,एवं जाव वीसइमं सयं,णवरं गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति, जइ सो विऊ एगदिवसेणं अणुण्णविज्जइ, अह न विऊ आयंबिलदुगेणं अणुण्णविज्जंति॥" अर्थ—पन्नतीए के०भगवती सूत्रने विषे,आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं के०धुरनां आठ शतक तेना दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति के० बे बे उद्देसा उद्देशीए, णवरं के० एटलुं विशेष जे, चउत्थसयं पढमे दिवसे अट्ठ के० चोथा शतकना पहेले दिवसे आठ उद्देशा, बितीय दिवसे दो उद्देसा उद्दिसिज्जंति के० बीजे दिवसे बे उद्देशानो उद्देश कराए. हवे, णवमाओ सयाओ आरब्भ के० नवमा शतकथी मांडीने जावइयं पवे के० जेटलुं भणे. तावइयं उद्दिसिज्जइ के० तेटलो उद्देशीए. उक्कोसेणं सयं एगदिवसेणं के० उत्कृष्टुं एक दिवसे शतक, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयं के० मध्यम बे दिवसे शतक, जहण्णेणं तिहिं दिवसेहिं सयं के० जघन्यथी

त्रण दिवसे शतक उद्देशीए, एवं जाव वीसइमं सयं के० एम यावत् वीशमा शतक लगे कहेवुं. णवरं के० एटलुं विशेष जे, गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति के० गोशालानुं पन्नरमुं शतक एक दिवसे उद्देशीए जइ सो विऊ के०जो ते बुद्धिवंत होय तो एगदिवसेणं अणुण्णविज्जंति के० एक दिवसे अनुज्ञा करीए. अह न विऊ के०जो बुद्धिवंत न होय तो आयंबिलदुगेणं अणुण्णविज्जंति के० बे आंबिले अनुज्ञा करीए एटले ए भाव जे पूर्वे जेटलुं भणता तेटली क्रिया करावीने भणावता, ते माटे एम कह्युं जे बे दिवसे बे आंबिलनी क्रिया करावीने अनुज्ञा करावे. सूत्रम्–"एगवीसवावीसतेवीसइमाइं सयाइं एकेक दिवसेणं उद्दिसिज्जंति।" अर्थ–एगवीस के० एकवीशमुं, बावीशमुं, ने तेवीसमुं शतक ते एकेक दिवसे उद्देशीए इत्यादिक सर्व वातो योग विधिथी जणाय. हवे पाठ अधूरो छे, ते सूत्र लखीए छैए. जे माटे कोइ सामाचारी भेदे तथा काल भेदे आधुनिक क्रिया फेर दीसे छे माटे अर्थ नथी लखता॥ सूत्रम्–"चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा, पंचविसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा, बंधिसयाइ अट्ठ सयाइं एगेणं दिवसेणं, एगिंदियाइं वारस एगेण दिवसेणं सेढीसयाइं बारस एगेणं दिवसेणं जुम्मसयाइं बारस एगेणं दिवसेणं, एवं बेइंदियाणं बारस्स, तेइंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं बारस, असन्निपंचिंदियाणं बारस, सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एगवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति. रासिजुम्मसयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति." ए त्रीजो गाथानो अर्थ॥ ३॥

श्री नंदी अनुयोग दुवारमां॥ उत्तराध्ययनेरे योग॥
कालग्रहणनोरे विधि सघलो कह्यो॥ धरिए ते उपयोग॥ स०॥ ४॥

अर्थ–वली श्री नंदीसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्र तथा श्री उत्तराध्ययन सूत्रने विषे पण योग के० योग कह्या छे. कालग्रहणनो के० जोगमध्ये कालग्रहणनो विधि करवो पडे छे; ते विधि सघलोय कह्यो छे. धरिए ते उपयोग के० तेहनो उपयोग राखीए. एटले ते राखीने जोगनी श्रद्धा राखीए. इति तुर्य गाथार्थ॥ ४॥

हवे ते सूत्रना आलावा लखीए छैए. यथा नंदीसूत्रे–"से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो सुअक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचासीइ उद्दसणकाला पंचासीइ समुद्देसणकाला॥" इत्यादि पाठ छे. अस्यार्थ. अहींयां आचारांगादिक सर्व सिद्धांतना उद्देशण काल दिन कह्या छे ते माटे प्रथम आचारांगना कहेछे. सेणं के० ते, अंगट्ठयाए के०अंगार्थे जोइए तो प्रथम अंग छे. तेना दो सुअक्खंधा के० बे श्रुतस्कंध छे. पणवीसं अज्झयणा के०बेहु श्रुतस्कंध थइने पचवीश अध्ययन छे. पंचासीइ उद्देसणकाला पंचासीइ समुद्देस के० योगविधिगम्य उद्देश समुद्देश जाणवा. काला के० कालग्रहणविधि लाभे. इत्यादिक सर्व सिद्धांतनां पाठ छे. केटला लख्यामां आवे? तथा श्री अनुयोगद्वारने धुरे घणो पाठ छे. ते ग्रंथ वधे माटे लखता नथी. तथा श्री उत्तराध्ययने अगीयार. अध्ययने यथा–"वसे गुरुकुले निच्चंजो,–

गवं उवहाणवं । पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहइ ॥१॥" अर्थ—वसे गुरुकुले के०गुरुकुले वसे जे, एटले गुरुकुले वसीने गुरू आणाने विषे सावधान रहे जे, निच्चं के०निरंतर, जोगवं के० धर्म व्यापारवंत तथा उवहाणवं के० अंगादिक अध्ययनने विषे आंबिल प्रमुख तप विशेष कहीए ते उपधानवंत, पियंकरे के० आचार्यादिकने अभिमत आहारादिक अनुकूलकारी पियंवाई के० आचार्यादिकना अभिप्राय प्रमाणे वोले, से के० ते प्राणी सिक्खं के० सूत्रार्थ ग्रहणरूप शिक्षा, लद्धुमरिहइ के० पामवाने योग्य. एटले ए भाव जे, जे प्राणी उपधान करे; ते सूत्रार्थ ग्रहवा योग्य छे. इति गाथार्थ.

वली उत्तराध्ययन मध्ये छव्वीशमे अध्ययने कह्युं छे.—"जं नेइ जया रत्तिं, नरकत्तं तंमि नहचउब्भागे । संपत्ते विरमिज्जा, सज्झायं पउसकालम्मि ॥ १ ॥" अर्थ—जं नेइ के० जे नक्षत्र, रात्रि प्रत्ये पूरुं करे; ते नक्षत्र, नहचउब्भागे संपत्ते के० आकाशने चोथे भागे आवे; एटले विरमिज्जा के० विरमे सज्झायं के० सज्झाय प्रत्ये, पउसकालंमि के० प्रादोपिक कालने विषे एटले पहेले पहोरे रात्रे प्रादोषिक काल ते वाघाइकाल लेवो लाभे—"तम्मेव य नरकत्ते, गयणचउब्भागसावसेसंमि । वेरित्तियं पि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २ ॥" अर्थ—तम्मेव य नरकत्ते के० तेहज नक्षत्र, गयणचऊब्भागसावसेसंमि के० आकाशनो चोथो भाग, सावसेसं के०थाकतो रहे तेवारे, वेरित्तियं पि कालं पडिलेहित्ता के० वेरती काल ग्रहण पण कुज्जा के०करे एटले ग्रहे—"पोरसीए चउब्भागे,वंदित्ताण तओ गुरुं । अप्पडिकमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ ३ ॥" अर्थ—पोरसीए चउब्भागे के० पोरसीनो चोथो भाग वाकी रह्यो. पहेला पहोरनो एटले छ घडी दिवस चढे. वंदित्ताण तओ गुरुं के० गुरुने वंदना करीने, अप्पडिकमित्ता कालस्स के० कालने न पडिकमे, भायणं पडिलेहए के० भाजन पडिलेहे. शामाटे जे सज्झाय पाछली पोरसीए करवो छे; माटे काल न पडिकमे. अहीयां पाभाइ काल वोल्यो.—"पोरसीए चउब्भागे,वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिकमित्ता कालस्स,सिज्जं तु पडिलेहए ॥४॥" अर्थ—पोरसीए चउब्भागे के० पोरसीने चोथे भागे, अर्थात् दिननी चोथी पोरसीने चोथे भागे गुरुने वंदना करीने पडिकमित्ता कालस्स के० काल पडिकमीने. सिज्जं तु पडिलेहए के०सिज्जा जे वसति ते पडिलेहे एटले प्रातःकाले पाभाइ काल पडिकम्यो न होय तो ते सांजे पडिकमे. तथा वसती पडिलेहे ते बीजा काले, कालग्रहणना मांडला करे. इति॥ "पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं । थुइमंगलं च काउं, कालं संपडिलेहए ॥ ५ ॥" अर्थ—पारियकाउस्सग्गो के० पडिकमणानी विधिने छेडे काउसग्ग करीने गुरुने वांदीने, थुइमंगलं च काउं के० स्तुति, परमेश्वरना गुणनी तद्रूप मंगल करीने कालं संपडिलेहए के० काल पडिलेहे. एटले कालग्रहण लीए. अहीयां वाघाइ काल आव्यो॥ "पोरसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया । सज्झायं तु तओ कुज्जा,अबोहंतो असजए ॥ ६ ॥" पोरसीए चउत्थीए के०रातनी चोथी पोरसीए, कालं तु पडिलेहिया के०काल जे वेरती काल ते लीए. पछी, सज्झायं तओ

कुज्जा के० सज्झाय करे. अबोहंतो असंजए के०असंजमीने अणजगावतो. "पोरसीए चउ-
ब्भागे, वंदित्ताण तओ गुरुं। पडिक्कमित्ता कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥७॥" अर्थ-पोरसीए
चउब्भागे के० पोरसीने चोथे भागे. एटले पाछली बे घडी राते गुरुने वंदना करीने पडि-
कमित्ता कालस्स के० काल जे वेरतीकाल पडिकमीने, कालं तु पडिलेहए के० काल जे
पाभाइ काल ते पडिलेहे. ए रीते सूत्रमां जोगविधि साक्षात् बताव्यो छे. तेहनो विधिए
मूढा, केवल सूत्र उपर केम जाणे? वली उत्तराध्ययन मध्ये अध्ययन ओगणत्रीशमे कह्युं छे
॥ यथा-"कालपडिलेहणाएणं भंते जीवे किं जणइ ? कालपडिलेहणाएणं नाणावरणिज्जं
कम्मं खवेइ ॥" अर्थ-काल के० वाघाइकाल, अढरतिकाल, वेरतिकाल, अने पाभा-
इकाल-एनी पडिलेहणाएणं के० आगम विधिए यावत् निरूपणा एटले काल ग्रहण लेवुं,
जागवुं, इत्यादिक विधि करतो. जीव शु उपार्जे? एम पूछये थके उत्तर कहे छे. काल
पडिलेहणा करतो जीव, नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ के० ज्ञानावरणी कर्म खपावे. एम का-
लग्रहण पूर्वक सूत्र भणवुं, वांचवुं, सूत्रमां बोल्युं. तथा तेनो विशेष विधि तो निर्युक्ति वृत्ति
परंपराथी जाणीए, बाकी न जाणीए. इति तुर्यगाथार्थ ॥ ४ ॥

वली पांचमी गाथामां साधुने योग वहेतां आगमेसिभद्दा थाय ते देखाडे छे.

ठाणे त्रीजे रे वली दशमे कह्युं ॥ योग वहे जेह साध ॥
आगमेसिभद्दा ते संपजे ॥ तरे संसार अगाध ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ-ठाणे त्रीजे के० श्रीठाणांगसूत्रने विषे त्रीजे ठाणे, वली दशमे कह्युं के० ठाणां-
ग मध्येज दशमे ठाणे कह्युं छे. योग वहे जे साध के० जे साधु जोग वहे, तेने आगमेसि
भद्दा ते संपजे के० आगल भद्र नीपजे. तरे संसार अगाध के० अपार संसारनो पार
पामे. एटले संसार पार पामे. ए पद त्रीजा ठाणाने जोडीए. आगमेसिभद्दा संपजे ए पद
दशमा ठाणाने जोडीए. एटले ए भाव जे, योग वहे तो संसार तरे एम त्रीजे ठाणे कह्युं
छे; तथा जोग वहेतो आगमेसिभद्दा थाय एम दशमे ठाणे कह्युं छे. ठाणांग सूत्र मध्ये ए
रीत छे; ते माटे ए गाथानो अर्थ पण एम जोडीने संबंध कर्यो. इति पंचम गाथार्थ ॥५॥

हवे ठाणांगनो पाठ लखीए छैए-"तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणादीयं अणवद-
ग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतीवएज्जा तं अणिदाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए जोग
वाहियाए ॥" अर्थ-तिहिं ठाणेहिं के० त्रणे स्थानके, संपन्ने के०पाम्ये थके, अणगारे के०
मुनिराज, अणादीयं के० जेहनी आदि नहीं. अणवदग्गं के० जेहनो अंत नही, दीहमद्धं के०
दीर्घ एटले लांबो छे अध्वा के० मार्ग जेहनो एहवो चाउरंत के० चार विभाग छे नर-
कगति प्रमुख तद्रूप संसार तेहज कांतार के० अटवी. ते चार गतिरूप संसार अटवी मध्ये
वीतीवएज्जा के० अत्यंत वर्जन करे; एटले पार उतरे. ते त्रणे स्थानक कहे छे. अणिदाण-
याए के०भोग ऋद्धिनी प्रार्थना, आर्तध्यानरूप जे नियाणु ते न करे. १ दिट्ठिसंपन्नयाए के०

सम्यग्दृष्टिपणुं २, अने जोगवाहियाए के० जोग जे श्रुतना तप प्रमुख क्रिया विशेष ते करतो ३, हवे दशमे ठाणे पाठ छे. तेहमां पण जोग वाहित्ताए ॥ ए पाठ छे; ते लखीए छैए-"दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दाकत्ताए कम्मं पकरेइ तंजहा ॥ अणिदाणयाए १, दिट्ठिसंपन्नयाए २, जोगवाहियत्ताए ३, खंतिखमणयाए. ४, जितेंदियत्ताए ५. अमाइल्ल-याए ६, अपासत्थयाए ७, सुसामणयाए ८, पवयणवच्छल्लयाए ९, पवयणउब्भावणाए १० ॥" अर्थ-दसहिं ठाणेहिं के०दशे स्थान के, एटले दशे कारणे जीव, आगमेसिभद्दा-कत्ताए के० आगल आवते भवे, भद्र एटले कल्याण छे जेहने, सुदेव सुमनुष्यपणुं पामे. तथा मोक्षरूप भद्र पामे. तं जहा के०तेहज दश कहे छे. अनिदान १, दृष्टिसंपन्न २, योग-वाही ३, ए त्रण पूर्वे कह्या तेम खंतिखमणयाए के० क्षमाए खमता पण असमर्थपणे नहीं. ४ जितेंदियत्ताए के० इंद्रियनो निग्रह करतां ५, अमाइल्लयाए के० अमाइपणे करीने ६, अपासत्थयाए के० ज्ञानादिकने पासे वसे एटले ज्ञानादिक मध्ये न वसे, ते पासत्थो, कहिए. ते पण देशपासत्थो सर्वपासत्थो ते पासत्थापणुं ज्यां नहीं ते अपासत्थो कहीए. तेणे करीने, ७ सुसामणयाए के० मूलोत्तरगुण सहित साधुपणुं करते. ८ पवयणवच्छल्ल-याए के० प्रवचन जे द्वादशांगी अथवा संघ तेहनुं वात्सल्य ते हितकारपणुं एटले प्रत्यनी-कने शिक्षा देवे करी ९ पवयणउब्भावणाए के० ते द्वादशांगीनो अथवा संघनो उद्भावन धर्म कथावाद लब्धि जशवाद बोलवे करीने १० एहमां जोग वहिवा कह्या ते माटे साधु तथा श्रावक पोताने उचित भणे पण तपक्रिया विशेष करीने भणे. ते आगली गाथामां देखाडे छे ॥ ५ ॥

योग वहीने रे साधु श्रुत भणे ॥ श्रावक ते उपधान ॥
तप उपधाने रे श्रुत परिग्रह कह्या ॥ नंदीए तेह निदान ॥ स० ॥ ६ ॥

अर्थ-योगवहीने साधु ने श्रुत भणे के० साधु ते योगवहीने सिद्धांत भणे; श्रावक ते उपधान के० श्रावक उपधान वहीने सूत्र भणे. तप उपधाने के० तप उपधाने करीने श्रुत परिग्रह कह्या के० श्रुतनुं परिग्रहण के० ग्रहण करे. एम कह्युं छे. ते एम श्रावक क्यां कह्या छे? ते कहे छे. नंदीए के० श्री नंदीसूत्र मध्ये कह्युं छे. तेह निदान के० ते माटे यो-ग उपधान कहीए छैए. यतः-"सुअपरिग्गहा तवोवहाणाइं इति" अर्थ-सुअपरिग्गहा के० श्रुतनो परिग्रह करे. तवोवहाणाइं के० तप उपधान सहित, इति श्री नंदीसूत्रे. इति षष्ठी गाथार्थ ॥ ६ ॥

इरियादिकनां रे षट उपधान छे ॥ तेणे आवश्यक शुद्ध ॥
गृही सामायिक आदि श्रुत भणे ॥ दीक्षा लेइ अलुद्ध ॥ स० ॥ ७ ॥

अर्थ-इरियादिकनां के० इरियावही प्रमुखनां, अहींयां उपलक्षणथी नवकारनुं उपधा-न लीजीए. आदि शब्दथी बीजां चार उपधान लीजीए. एटले, षट उपधान छे के० छ

उपधान छे. यथा पहेलुं उपधान, पंचमंगलमहासुअखंध, बीजुं पडिकमणासुअखंध, त्रीजुं शक्रस्तवाध्ययन, चोथुं चैत्यस्तवाध्ययन, पांचमुं नामस्तवाध्ययन अने छठुं श्रुतस्तवसिद्धस्तवाध्ययन ए छ तेणे के० ते उपधाने करीने, आवश्यकसूत्र शुद्ध थाय. गृही के० गृहस्थ सामायिक आदे श्रुत भणे के० सामायिक आदि देइने, आदि शब्दथी दृष्टिवादपर्यंत श्रुतसिद्धांत भणे, दीक्षा लेइने अलुद्ध के० लोभ, उपलक्षणथी क्रोधादिक तेहनो त्याग करीने ते उपधाननो अधिकार महानिशीथ सूत्र मध्ये विस्तारे छे ते जाणवुं. ते कहेतां ग्रंथ वधे ते माटे नथी लखता. तथा मूढा महानिशीथ सूत्र मानता नथी; ते नथी मानता तेने केहेवाना उत्तर प्रत्युत्तर घणा छे, पण नथी लखता. तथा सुबुद्धि मंत्री प्रमुखने अधिकारे बीजे पण सर्व ठामे दीक्षा लीधा पछी ॥ सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ के० सामायिक आदि देइने अगीआर अंग भणे एहवा पाठ छे. इति सप्तम गाथार्थं ॥७॥

वली श्रावक सूत्र न भणे ते देखाडे छे.

सूत्र भण्या कोइ श्रावक नवि कह्या । लद्धट्ठा कह्या तेह ॥
प्रथम ज्ञान ने पछी दया कही । तिहां संजत गुण रेह ॥ स० ॥ ८ ॥

अर्थ- सूत्र भण्या कोइ श्रावक नवि कह्या के० कोइ श्रावक कोइ सूत्रमां सूत्र भण्या कह्या नथी. लद्धट्ठा कह्या तेह के० उलटा लद्धट्ठा कह्या छे. अर्थ—लाध्या छे जेणे इत्यादिक तुंगीआ नगरी प्रमुख श्रावकने अधिकारे कह्या छे. यतः भगवती सूत्रे शतक बीजे उद्देशे पांचमे—"लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छिट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा ॥" इति. अर्थ—लद्धट्ठा के०अर्थ ग्रह्या छे;तेहथी अर्थ लाध्या छे. पुच्छियट्ठा के०संशय थकां पूछ्या छे अर्थ जेमणे, अभिगयट्ठा के०प्रश्न करी निर्णय कर्यो—अर्थनुं अभिग्रहण जाणपणुं थयुं. विणिच्छियट्ठा के० एटला माटे निश्चित अर्थ छे जेणे, एम कहुं छे; पण ॥ लद्धसुत्ता गहियसुत्ता ॥ इत्यादि पाठ कहींए नथी. उलटुं दीक्षा लीधा पछी पण एटलो काल गये भणे, एम कहुं छे ते लखीए छैए.—"

तिवासपरियागस्स निग्गंथस्स कप्पइ आयारप्पकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तएवा, चउवासपरियागस्स निग्गंथस्स कप्पति । सुअगडे नामं अंगे उद्दिसित्तए, पंचवासपरियागस्स समणस्स कप्पति दसाकप्पव्ववहारा नामज्झयणे उद्दिसित्तए, अट्ठवासपरियागस्स समणस्स कप्पति ठाण समवाए नामं अंगे उद्देसित्तए, दसवासपरियागस्स कप्पति विवाहे नामं अंगे उद्दिसित्तए, एक्कारसवासपरियागस्स कप्पति खुड्डिआविमाणपविभत्तिमहल्लियाविमाणपविभत्ति अंगचूलिया वगचूलिया विवाहचूलिया नामं उद्दिसित्तए, बारसवासपरियागस्स कप्पति अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए अज्झयणे उद्दिसित्तए, तेरसवासपरियाए कप्पति उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए देविंदोववाए नागपरियावलिया नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए, चउदसवास क-

प्पति सुमिणभावणा नामं उद्दिसित्तए, पण्णरसवास कप्पति चारणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए, सोलसवास कप्पति वेयणीसयं नामं अज्झयणं उद्दिसित्तए, सत्तरसवास कप्पति आसीविसनामं अज्झयणे उद्दिसित्तए, अट्ठारसवास कप्पति दिट्ठिविसभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए, एगुणवीसइवासपरियागस्स कप्पति दिट्ठिवाए नामं अंगे उद्दिसित्तए, वीसवासपरियाए समणे निग्गंथे सव्वसुआणवाई भवति ॥" अस्यार्थ-एनो अर्थ सुगम छे तो पण संक्षेप लखे छे. त्रण वरसना पर्यायना धणी साधुने कल्पे आचारप्रकल्प नामा अध्ययन भणवाने, चार वरसनी दीक्षावालाने सूयगडांगसूत्र भणवुं कल्पे. एम पांच वरसनाने दशाकल्प, व्यवहार अध्ययन भणवुं कल्पे. आठ वरसना पर्यायवाला ठाणांग समवायांग भणे, दश वरसना पर्यायवाला भगवती सूत्र भणे. अगीआर वरसना पर्यायवाला खुड्डियाविमानप्रविभक्ति महल्लियाविमानप्रविभक्ति अंगचूलिया, वगचूलिआ अने विवाह चूलिया भणे; बार वरसना पर्यायवाला अरुणोपपात, वरुणोपपात, गरुडोपपात, धरणोपपात, वैश्रमणोपपात अने वैलंधरोपपात भणे. तेर वरसना पर्यायवाला उपस्थानश्रुत, समुट्ठाणश्रुत, देवेंद्रोपपात अने नागपरियावलिया अध्ययन भणे. चउदवरसना पर्यायवाला स्वप्नभावना अध्ययन भणे. पन्नर वरसना पर्यायवाला चारणभावना अध्ययन भणे. सोल वरसना पर्यायवाला वेदनी शतक अध्ययन भणे. सत्तर वरसना पर्यायवाला आसी विस अध्ययन भणे. अढार वरसना पर्यायवाला दृष्टिविषभावना नामा अध्ययन भणे. ओगणीस वरसना पर्यायवाला दृष्टिवादनामा अध्ययन भणे. वीश वरसना पर्यायवाला सर्व सूत्रना वादी होय. इति व्यवहारदशमोद्देशके. जो साधु एटला वरस पछी भणे तो श्रावक तो सर्वथा न भणे. इति भाव । तेवारे ढुंढक बोल्यो जे, जो एम छे तो श्री दशवैकालिक मध्ये केम कह्युं जे 'पढमं नाणं तओ दया' के०प्रथम ज्ञान ने पछी दया. ज्ञान विना दया केम पाले? माटे श्रावक ए लेखे सूत्र भणे ते उपर उत्तर वाले छे. प्रथम ज्ञान ने पछी दया कही छे ते कोने कही छे? ते उपर आगलुं पद कह्युं छे. तिहां संजत गुण रेह के० तिहां संजत कह्या छे. गुणनी रेखा सरखा मुनि एवा होय. यतः-"पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सव्व संजए ॥" एम दशवैकालिकनो पाठ छे माटे श्रावकने केम जोडो छो? पण सव्व सावए एवुं नथी कह्युं तो एह वचनथी शो संदेह उपजे छे! इत्यष्टमी गाथार्थ ॥ ८ ॥

नवमे अध्ययने रे बीजा अंगमां । घरमां दीव न दीट्ठ ॥
वलिय चउदमेरे कह्युं शिक्षा लहे । ग्रंथ तजे ते गरिट्ठ ॥ स० ॥ ९ ॥

अर्थ-नवमे अध्ययनेरे बीजा अंगमां के० बीजुं अंग जे सूयगडांग सूत्र तेहना नवमा अध्ययनने विषे एम कह्युं छे. घरमां दीव न दीठ के० घरमां गृहस्थे दीवो न दीठो; माटे दीक्षा ले छे. ॥ यतः-"गिहे दीवमपासंता, पुरिसादाणिया नरा । ते धीरा बंधणुमुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥ १ ॥" इति सूयगडांग सूत्रे नवमे अध्ययने ॥ अर्थ-गिहे दीवम

पासंता के० घरने विषे सूत्ररूप दीवो नथी देखता; ते माटे पुरिसादाणिया नरा के० पुरुषो आदेय नामना धणी, एहवा पुरुष, सूत्ररूप दीवो देखवाने, ते धीरा के० ते धीर, बंधणुमुक्का के० संसार बंधन छांडे. एडले दीक्षा आदरे छे. नावकंखंति जीवियं के० असंयम जीवितव्ये जीववुं नथी वांच्छता. ए गाथार्थे पण सूत्र घरमां भणता नथी दीसता, वलिय चउदमे कह्यां के० वली सूयगडांग सूत्रनाज अध्ययन चौदमे कह्युं. शिक्षा लहे के० शिक्षा पामे. एटले सूत्र भणवारूप शिक्षा पामे. कोण पामे? ते कहे छे. ग्रंथ तजे के० परिग्रह छांडे ते गरिट्ठ के० गुण गरिष्ठ होय ते. एटले निग्रंथ थाय ते शिक्षा सूत्रनी पामे. इति गाथार्थ–हवे चौदमा अध्ययननी गाथा लखीए छैए–" गंथं विहाय इह सिरकमाणो, उट्ठाय सुबंभचरे वसिज्जा। ओवायकारी विणयं तु सिरके.जे छेय से विप्पमायं न कुज्जा॥१॥" अस्यार्थ–गंथं विहाय के० परिग्रह छांडीने, इह सिरकमाणो के० सूत्र भणतो थको, उट्ठाय के० चारित्रमां सावधान थइने, सुबंभचरे वसिज्जा के० भली रीते ब्रह्मचर्यने विषे वसे. ओवायकारी के० उपायनो करणहार एटले रत्नत्रयनो आराधक, विणयं तु सिरके के० विनय प्रत्ये शीखे. जे छेए के० जे निपुण छे. से वि के० ते प्राणी, पमायं न कुज्जा के० प्रमाद न करे इति. एहमां पण कह्युं जे परिग्रह छांडे तेवारे सूत्र भणे इति भाव. इति नवम गाथार्थ ॥ ९ ॥

सप्तम अंगे अपढिया संवरी ॥ दाख्या श्राद्ध अनेक ॥
नवि आचारधरादिक ते कह्या ॥ मोटो एह विवेक ॥ स० ॥ १० ॥

अर्थः–सप्तम अंगे के० श्री उपासगदशांग सूत्र मध्ये, अपढिया संवरी के०भण्या विना संवरवंत कह्या. एम दाख्या श्राद्ध अनेक के० अनेक श्रावक देखाड्या छे. पण सूत्र भण्या नथी कह्या. इति भाव. ते कामदेवना अधिकार मध्ये प्रगटपणे श्री उपासकदशा मध्ये कह्युं छे. यथा–"तएणं समणे भगवं महावीरे वहवे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी, जइ ताव अज्जो समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झे वसंता दिव्वमाणुस्सतिरिरकजोणिए उवसग्गे सम्मं सहंति जाव अहियासंति, सका पुणाइ अज्जो समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्झमाणेहिं दिव्वमाणुसतिरिरकजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए, तओ ते वहवे समणा निग्गंथा निग्गंथीओ य एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ। तएणं से कामदेवे समणं भगवं पसिणाइं पुच्छइ॥" इत्यादि। व्याख्या–तएणं समणं भगवं महावीरं के० तेवारे श्रमण भगवान महावीर स्वामी, वहवे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य के० घणा श्रमण निग्रंथ निग्रंथीने एटले घणा साधु साध्वीने आमंतेत्ता के० आमंत्रण करीने–बोलावीने, एवंवयासी के० एम कहेता हवा. जइ ताव अज्जो के० हे आर्यो, जो–समणोवासगगिहिणो के० श्रमणोपासक गृहस्थ गिहमज्झे वसंता के० घरमां रहेता, दिव्वमाणुसतिरिरकजोणिए के० देवता संबंधी, मनुष्य संबंधी अने तिर्यंच संबंधी

तस्यच तथास-

–उवसग्गे सम्मं सहइ के० उपसर्ग सम्यग् रीते एटले भली रीते–प्रकारे सहे छे. जाव अहियासेइ के० दीनता अणकरवे अहियासे छे. सक्कापुणाइ अज्जो के० हे आर्यो, विशेषे समर्थ थावुं. समणेहिं निग्गंथेहिं के० श्रमण निग्रंथे, दुवालसंगं के० द्वादशांगी, गणिपिडगं के० गणि जे आचार्य–तेनी पेटी. अहिज्झमाणेहिं के० भणते थके, दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए उवसग्गे के० देवता, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधी उपसर्ग, सम्मं सहित्तए के० सम्यग्रीते सहेवाने, जाव अहियासित्तए के० यावत् अहियासवाने तओ के० तेवारे. ते–वहवे समणा निग्गंथा के० ते घणा श्रमण निग्रंथ, निग्गंथीओ य के० साधवी एयमहं विणएणं पडिसुणेंति के० ए अर्थ विनये करीने सांभले. एटले ए समुदाय अर्थ जे प्रभुजीए साधु साध्वीने कह्युं जे श्रावक थकां उपसर्ग खमे छे; तो तमे द्वादशांगी प्रमुखना भणनारा छो; माटे तमारे तो विशेषे उपसर्ग सहेवा.इति भाव. एहमां एम कह्युं जे, श्रावक वगर भण्या विना संवरवंता छे. इति तात्पर्यार्थ. तएणं से कामदेवे के०तेवार पछी ते कामदेव समणं भगवं पसिणाइं पुच्छइ के० श्रमण भगवानने प्रश्न पूछे. इति सूत्रार्थ–वली उपासगदशांग मध्येज कुंडकोलिया नामा भगवानना श्रावकनो अधिकार छे. यथा ॥–कुंडकोलियेत्ति समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियं एवं वयासी से नूणं कुंडकोलिया कल्लं तुब्भे पुव्वावरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्ता । तएणं से देवे णाममुद्दंच तहेव जाव पाडगए । से नूणं कुंडकोलिया अट्ठे समट्ठे हंता अत्थि तं धन्नो सि णं तुमं जहा कामदेवे ॥ व्याख्या–कुंडकोलिया के० हे कुंडकोलिया, एहवुं आमंत्रण करीनें समणे भगवं महावीरे के० श्रमण भगवान महावीर कुंडकोलियं के० कुंडकोलिया श्रावक प्रत्ये एवं वयासी के० एम कहेता हवा. से नूणं कुंडकोलिया के० हे कुंडकोलिया ! निश्चे कल्लं के० गइ काले तुब्भे के० तुजने पुव्वावरण्हकालसमयंसि के० मध्यान्ह समयने विषे असोगवणियाए के० अशोकवाडीने विषे एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्ता के० एक देवता प्रगट थयो. तएणं से देवे के० तेवारे ते देवता णाममुद्दं च के० ताहरी नाममुद्रा तहेव जाव पडिगए के० तेमज यावत् गयो, एटले यावत् शब्दे एम सूचव्युं. नाम मुद्रा वस्त्र देवताए लीधां, प्रश्न पूछयो, तेना ते जवाब उत्तर कर्या. अनुक्रमे निपृष्ट व्याकरण कर्ये थके देवता पाछो गयो. से नूणं कुंडकोलिया के० ते निश्चे हे कुंडकोलिया, अट्ठे समट्ठे के० ए अर्थ साचो. हंता अत्थि क० प्रभुजीने कहेछे. हे भगवन् सत्य, तं धन्नो सि णं तुमं के०प्रभुजी कहे छे धन्य छो तमे जहा कामदेवे के० जेम पूर्वे कामदेव कह्या छे तेम कहेवा. एटले साधुने वोलावीने प्रभुजीए कह्युं जे घरमां रह्या श्रावक पण एम करे छे; तो तमे तो द्वादशागीना धरनारा छो. तमने विशेषे एम जोइए. इति जो श्रावक सूत्र भणता होत तो एम कहेत नहीं इतिभाव.

अहींयां कोइक एम कहेजे "द्वादशांगीना भणनारा कह्या छे. ते द्वादशांगी भणी न शके पण थोडुं घणुं भण्या होशे." तेहने उत्तर देछे–नवि आचारधरादिक ते कह्या के० आचारांगादिकना धरनारा श्रावक नथी कह्या. एटले ए भाव जे ॥ "अप्पेगइया आयार-

धरा अप्पेगईया सूअगडधरा ॥" एम एकादशांगादि भणनारा साधु विवरीने उववाइ प्रमुखमां कह्या छे; पण श्रावक नथी कह्या, तो तमे खोटी संभावना शी करो छो? मोटो एह विवेक के० ए श्रावक तथा साधुने विवेक वहेंचण मोटो करचो छे. इति दशमी गाथार्थ ॥१०॥

अहीयां कोइकनी आशंका करीने उत्तरवाळे छे. ते ढुंढक बोल्यो जे "उत्तराध्ययनमां श्रावकने कोविद कह्यो छे ते भण्या विना कोविद केम कहीए? तेहने उत्तर.

उत्तराध्ययनेरे कोविद जे कह्यो ॥ श्रावक पालित चंप ॥
ते प्रवचन निर्ग्रंथ वचनथकी ॥ अरथ विवेके अकंप ॥ स० ॥ ११ ॥

अर्थ–उत्तराध्ययने के० उत्तराध्ययनने विषे कोविद जे कह्यो के० कोविद एटले पंडित कह्यो छे. श्रावक पालित चंप के० चंपानगरीने विषे पालित नामा श्रावकने कह्यो छे. यतः–"चंपाए पालिए नामे,सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ,सीसो सो उ महप्पणो ॥१॥" व्याख्या–चंपानगरीने विषे पालिए नाम सावए के० पालित नामा श्रावक आसि के० होतो हवो. वाणिए के० वणिक जाति ते केवो छे ? महावीरस्स भगवओ सीसो के० महावीर जे चोवीशमा परमेश्वर तेमनो शिष्य छे. महप्पणो के० ते वीर केवा छे ? महात्मा छे. मोटो छे आत्मा जेहनो इति. वली ते श्रावक केवो छे? ते कहे छे.– "निग्गंथे पावयणे, सावए से वि कोविए । पोएण ववहरंते, पिहुंडं नगरमागए ॥२॥" व्याख्या–निग्गंथे पावयणे के०निग्रंथ संबंधी प्रवचन तेहने विषे सावए के०ते श्रावक, कोविए के० पंडित छे. पोएण ववहरंते के०जिहां जे व्यापार करतो, पिहुडं नगरमाग. के० पिहुंड नामा नगरने विषे आवतो हवो इति उत्तराध्ययने एकवीशमे अध्ययने जे कोविद कह्यो छे ते प्रवचन निर्ग्रंथ के० निग्गंथे पावयणे निर्ग्रंथनुं प्रवचन, वचनथकी के० एहज वचनथी जाणीए छैए जे प्रवचन भण्यानो संबंध ते निर्ग्रंथनेज छे. अने श्रावकने कोविद कह्यो ते अरथ विवेके के० अर्थनी धारणाएज होय. अकंप के० अप्रकंप निश्चलपणे श्रावक लद्धट्ठाज कह्या छे. पण लद्धसुत्ता कहींए पाठ नथी. वली श्रावक कोविद कह्यो पण अधीत न कह्यो; तो एहमां शो संदेह आवे छे? आज पण श्रावक सूत्र भण्या विना अर्थे करीने घणा डाह्या दीसे छे. अहींयां वली ढुंढकमति बोल्यो के "उत्तराध्ययनमां कह्युं छे के, सूत्र भणतो सम्यक्त्व पामे, तेवारे मिथ्यात्वी थको भणे एम आव्युं " यतः–" जो सुत्तमहिज्जंतो,सुएण ओगाहइ उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व,सो सुत्तरुइत्ति नायव्वो ॥१॥" व्याख्या–जो सुत्तमहिज्जंतो के० जे सूत्र भणतो,सुएण ओगाहइ उ सम्मत्तं के० श्रुते करीने सम्यक्त्वने अवगाहे. अंगेण के० अंगे करीव के० अथवा बाहिरेण के० अंगबाह्ये करी, सां- सुत्तरुइत्ति नायव्वो के० ते सूत्ररुची जाणवो. इति उत्तराध्ययने अध्ययन अठावीशमे.

हवे ए उत्तराध्ययननी गाथाथी पण श्रावकने सूत्र भणवुं नावे, जे माटे 'सूत्र भण्ये समकित अवगाहे ते त्रापड जल अवगाहे' ए दृष्टांत जाणवुं. एटले जल छतुं छे तेहने अव-

तस्यच तथास-

गाहे. ए दृष्टांते छतां समकितनेज साधुने अवगाहवुं आप्युं, पण मिथ्यात्वीथको सूत्र भणी ये सम्यक्त्व पामे एम तो घेलो वाहेलो होय ते पण न कहे. कांक्षा मोहनीय कर्मना उदयथी शंकित भाव छे, ते साधु भणतो निःशंकित करे, पछी निःशंकित सूत्ररुची नामे सम्यक्त्व अवगाहे; ए सुधो अर्थ मानवो वली मिथ्यात्वी ते अन्य तीर्थी कहए, अने अन्यतीर्थीने सूत्र भणावे तो चार मासनुं प्रायश्चित आवे. एम अहींयांज आगल कहेवाशे; तो भणवुं तो वेगलुं रह्युं; ते विचारजो. इति एकादशमी गाथार्थ ॥ ११ ॥

सूत्रे दीधुंरे सत्य ते साधुने ॥ सुर नरने वली अत्थ ॥
संवर द्वारेरे बीजे एम कह्युं ॥ अंग दशमे समरत्थ ॥ स० ॥ १२ ॥

अर्थ–सूत्रे के० सूत्रथी, दीधुं के० आप्युं, सत्य के० साचुं–बीजुं व्रत, साधुने के० मुनिने, एटले परमेश्वरे मुनिने सूत्रथी सत्य आप्युं. सुर नरने वली के० वली देवता अने मनुष्यने, अत्थ के० अर्थथी सत्य आप्यु, संवर द्वारे बीजे एम कह्युं छे अंग दशमे के० श्रीप्रश्नव्याकरणने विषे, समरत्थ के० समर्थपणे कह्युं छे. तथा च तत्पाठः–"तं सच्चं भगवंततित्थगरसुभासियं दसविहं चउद्दसपुव्वीहिं पाहुडत्थवेइयं महरिसीण य समयप्पदिन्नं देविंदनरिंदे भासियत्थं ॥" इति व्याख्या०–जे सत्य, पूर्वोक्त बीजुं व्रत भगवंत पूज्य तीर्थंकरनुं सुभाष्युं. दसविहं के० दश प्रकार, जणवयसम्मयठवण इत्यादि पूर्वे कह्या छे, ते सिद्धांत प्रसिद्ध जाणवा. तथा चौद पूर्वधर, पाहुडत्थवेइयं के० पाहुडो जे पूर्वगत भाग विशेष जेम अध्ययन उद्देशादिक कहीए तेम तेहने अर्थ विदित जाणवुं तथा, महरिसीणं के० उत्तम साधु तेहने, समय के० सिद्धांत, पदिन्नं के० दीधुं, एतावता सिद्धांत वीतरागे साधुभणी दीधु, सत्यवचन जाणे भाषे ते माटे ए अक्षरे एम जाणीए छैए जे, श्री वीतरागनी आज्ञाए साधुनेज सूत्र भणवुं; पण सूत्र गृहस्थने दीधुं एम न कह्युं. तथा, देविंद नरिंदे भासियत्थ के० देवेंद्र सौधर्मादिक, नरेंद्र राजा भारतादिक तेहने भाष्या प्ररूप्या अर्थ जेहना. एतावता देवेंद्र नरेंद्रादि के० सिद्धांतनो अर्थ सांभली सत्यवचन जाणे. इति. द्वादशमी गाथार्थ ॥ १२ ॥

वली श्रावकने सूत्र भणवानो निषेध देखाडे छे.

वलिय विगयपडिबद्ध ने वाचना ॥ श्रीठाणांगे निषेध ॥
नविय मनोरथ श्रुत भणवातणो ॥ श्रावकने सुप्रसिद्ध ॥ स० ॥ १३ ॥

अर्थ–वलिय के० पूर्वे कह्युं तेहथी बीजुं, विगयपडिबद्धने के० नित्य विगय प्रतिबद्ध होय, तेहने, वाचना के० सूत्रनी वाचना देवी ते, श्री ठाणांगसूत्रे निषेध के० ठाणांग सूत्रने विषे निषेध कर्योछे. तथा च तत्पाठः–"तओ अवायणिज्जा पन्नत्ता तं जहा–अविणीए विगइपडिबद्धे अविओसियपाहुडे । तओ कप्पंति वाइत्तए, तं जहा–विणीए अविगइपडिबद्धे

विओसिय पाहुडे ॥" इति. अर्थ–तओ अवायणिज्जा पन्नत्ता के० त्रण वाचना देवा योग्य नहीं एटले सूत्र न भणाववुं कह्याछे.तं जहा के०ते देखाडेछे.अविणीए के० अविनीत होय –विनयवंत न होय. १ विगइपडिवद्धो के० घृतादिक विगय तेहमां गृद्ध होय एटले योग नथी वहेतो २ अविओसिय के०अव्यवस्थित, अनुपशांत प्राभृत के०नरकपालनी परे क्रोध जेहने–एटले परमाधार्मीनी परे कषायवंतछे. यतः–"अप्पेवि पारमाणिं अवराहे वयइ खामियं तं च । वहुसो उदीरयंतो अविओसिय पाहुडो स खलु ॥ १ ॥" अर्थ–पारमाणिं के० परम क्रोध समुद्घात करे इति. वली, तओ कप्पंति वाइत्तए के० त्रण जनने वाचना देवी कल्पे. तं के० ते देखाडे छे. विनीत होय १ अविगय प्रतिवद्ध होय एटले योगवाही होय विउसविय पाहुडो के० कषाय उपशम्या होय, एवानेज सूत्र भणवुं कह्युं जो श्रावकने सूत्र भणवां होय तो तेहनो मनोरथ कां न होय? ते कहे छे. नविय मनोरथ श्रुत भणवा तणा के० श्रुत भणवानो मनोरथ नहीं कह्यो, श्रावकने सुप्रसिद्ध के० प्रसिद्धपणे श्रावकने नथी कह्यो शामाटे श्रावक अने यतिना मनोरथ त्रण त्रण जूआ जूआ कह्या छे यतः– "तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ,कया णं अहं अप्पं वा वहुं वा सुअं अहिज्जिस्सामि । कया णं अहं एकल्लविहारं पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि । कया णं अहं अपच्छिममारणांतियं संलेहणा जूसणा जूसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाउवगमं कालमणवकंखेमाणे विहरिस्सामि । एवं समणसा सवयसा सकायसा पडिजागरमाणे निग्गंथे महाणिज्जरे पज्जवसाणे भवइ ॥" व्याख्या–तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे के० त्रणे स्थानके श्रमण निग्रंथ, महानिज्जरे के० मोटी कर्मक्षपणा, महापज्जवसाणे के० अत्यंत पर्यवसान एटले समाधिमरण करे. माटे फरी मरवु नहीं माटे ए मोटो अंत, भवइ के० होय–करे. कया णं अहं के० केवारे हुं,अप्पं वा वहुं वा सुअं अहिज्जिस्सामि के०थोडुं घणुं श्रुत भणीश? १ कया णं अहं एकल्लविहारं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि के०केवारे हुं, एकलविहार प्रतिमा अंगीकार करीने विचरीश ? २ कया णं अहं अपच्छिममारणंतिए के० छेली मरण संवंधी, संलेहणा जूसणा जूसिए के० संलेषणा जे तप–ते तपनी जूसणा जे सेवा ते सेवाए करी जूसिए के० रूक्ष थया छे, भत्तपाणपडियाइक्खिए के० भात पाणीनां पच्चक्खाण कर्यांने जेहने–पाउवगमं के० पादपोपगम अणसण करी, कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि के० मरण अणइच्छतो हुं केवारे विचरीश ? ३ एवं के० ए रीते, स के० ते साधु, समणसा के० मने करी सहित, सवयसा के० ते साधु, वचने करी, सकायसा के० ते साधु कायाए करी एटले त्रिकरणे करी, पडिजागरमाणे के० प्रतिजागरण करतो थको, निग्गंथे के० निग्रंथ, महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ एहनो अर्थ पूर्वनी परे, ए साधुना त्रण मनोरथ कह्या. हवे श्रावकना कहीए छैए–"तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ, तं जहा, कया णं अहं अप्पं वा वहुं वा परिग्गहं चइस्सामि? कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि २ कया णं अहं अपच्छिममारणांतियं संलेहणाजूसियभत्तपाणपडिआइक्खिए पाउवगमं कालमणव

कंखमाणे विहरिस्सामि ३। एवं समणसा सवयसा सकायसा पडिजागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥" अस्यार्थः-त्रण स्थानके समणोवासए के० श्रावक महा निर्ज्जरा महा पर्यवसान करे. तेहज त्रण स्थानक कहे छे केवारे हुं थोडो घणो परिग्गहं के० धन धान्यादिक नव प्रकारनो परिग्रह छांडीश ? केवारे हु, मुंडे भवित्ता के० मुंड थइने अगाराओ अणगारयं पव्वइस्सामि के० अगार जे घरवास छांडीने अणगारवास अंगीकार करीश ? त्रीजो मनोरथ सुगम छे. पूर्वनी परे जाणवो. इति ठाणांग त्रीजे ठाणे. तथा वली कह्युं छे.-" महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे । जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इहुज्जयंते समणोमि जाओ ॥१॥" अस्या व्याख्या-ब्रह्मदत्तने चित्रमुनि कहे छे-महत्थरूवा के० मोहोटो छे अर्थ जेनो, वयणप्पभूया के० वचन अल्पभूत एवी गाथा, एटले धर्मोपदेशनी गाथा. अणुगीया के० अनुकूलपणे कही, तित्थयरे के० तीर्थकरे कही; एटलुं बाहेरथी लेइए, नरसंघमज्झे के० मनुष्यना संघ मध्ये कही छे, जं के० जे गाथा सांभलीने -एटलुं बाहेरथी लेइए, भिक्खुणो के० मुनि, सीलगुणोववेया के० शील ते क्रिया, गुण ते ज्ञान-तेणे उववेया के० युक्त थइने इहुज्जयंते के० जिन प्रवचनने विषे यत्न करे छे. बाहारथी अर्थ लेइने सूत्र व्याख्यान करवुं माटे एम कहीए. में पण ते गाथा सांभलीने, समणोमि जाओ के० हुं श्रमण थयो. इति-ए उत्तराध्ययनने तेरमे अध्ययनने मेळे पण साधुनेज सूत्र भणवुं इति त्रयोदशमी गाथार्थ ॥ १३ ॥

हवे जे ग्रहस्थने भणावे तेहने दोष देखाडे छे,

वाचना देतांरे गिहीने साधुने ॥ पायच्छित्त चउमास ॥
कह्युं निशीथेरे तो शुं एवडी ॥ करवी होंस निराश ॥ स० ॥ १४ ॥

अर्थ-वाचना देतांरे गुरुने साधुने एहवो पाठ कोइ लेखकना दोष थकी जणाय छे. शामाटे जे निशीथनो तादृश अर्थ बेसतो नथी. माटे वाचना देतांरे गिहीने साधुने ॥ एवो पाठ माये हशे, एम गुरुनो उपदेश छे. हवे अर्थ-वाचना देतां गिहीने के० गृहस्थने वाचना देतां एटले गृहस्थने सूत्र भणावतां साधुने पायश्चित्त, चउमास के० साधुने चतुर्मास प्रायश्चित्त आवे, कह्युं निशीथे के० निशीथ सूत्रमां कह्युं छे, तो शुं एवडी करवी होंस निराश के० तो एवडी आशा विना होंस शी करवी ? एटले कोइ ठेकाणानी सूत्र साखनी आशा विना शी वात करवी ? यतः-" से भिक्खु अणउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ वायंतं वा साइज्जइ तस्स णं चाउम्मासियं ॥"व्याख्या-से भिक्खु के० जे मुनि अणउत्थियं वा के० अन्य तीर्थने, गारत्थियं वा के० गृहस्थने, वाएइ के० वाचना आपे, वायंतं वा-साइज्जइ के० वाचना आपतां सहाय दीए, तस्स णं चाउम्मासियं के० तेहने चार मासनुं प्रायश्चित्त ॥ इति निशीथ सूत्रे ओगणीशमे उद्देशे अहींयां मूर्ख ढुंढिआ गृहस्थ ते अन्य तीर्थीना गृहस्थ कहेवा जाय पण अन्य तीर्थमां ते तो आवी गया. इति चउदमी गाथार्थ

वली कोइक कहेशे जे पोतानी मेळे सूत्र वांचीने भणतां शो दोष? तेहने कहीए जे ॥ "गुरुवायणोवागयं ॥" एवुं अनुयोगद्वार मध्ये कह्युं छे. त्यां गुरुवाचनोपगत गुरु वाचनाए आव्युं. इति. तथा वली जे ॥ "आयरियउवज्झायाणं अदिण्णे गिरं आइअइ आयायंतं वा-साइज्जइ ॥"- इति–आचार्य उपाध्यायनुं अदिण्णं के० अणदीधुं, गिरं के०वाणी आइयइ के० ग्रहे अथवा तेहनी सहाय करे तो प्रायश्चित्त लागे. एम निशीथसूत्र मध्ये पण पोतानी मेळे भणतां प्रायश्चित्त कह्युं छे.

हवे पंचांगीनी वात आवी. त्यजिय गाथा.

त्यजिय असज्झाइ गुरुवाचना ॥ लेइ योग गुणवंत ॥
जे अनुयोग त्रिविध साचो लहे ॥ करे ते कर्मनो अंत ॥ स० ॥१५॥

अर्थ–त्यजिय असज्झाइ के० सूत्र भणे ते एवी विधि भणे जे, असज्झाय तजीने गुरु वाचना लेइ के० गुरुनी वाचना पामीने, योग के० योग वहीने, गुणवंत के० जे गुणवंत होय ते, अनुयोग त्रिविध लहे के० ते प्राणी त्रण प्रकारनो अनुगम पामे. करे ते कर्मनो अंत के० ए रीते भणे तेहज प्राणी कर्मनो अंत करे–एटले सिद्धि पामे. अहींयां असज्झाय तजे एम कह्युं. माटे असज्झायना अक्षर देखाडे छे–" णो कप्पइ निग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउपाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा–आसाढिपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तिय-पाडिवए सुगिम्हपाडिवए ॥" अर्थ–णो कप्पइ इत्यादि न कल्पे निग्रंथ तथा निग्रंथीने चउ-पाडिवएहिं सज्झायं करित्तए के० चार पडवाने दिवसे सज्झाय करवो. तं जहा के० तेहज कहे छे. आषाढ शुदि पूनेमने अनंतर पडवो कहीए. ते आषाढी पडवो, इंदमहापडि वाए के० इंद्र महोच्छवने पडवे, आसोनी पूनेम पछी पडवो आवे ते कहीए, कत्तियपा-डिवए के० कार्तिक शुद पूनेम लगतो पडवो आवे ते कार्तिक पडवो कहीए,सुगिम्हपाडि-वए के० चैत्री पूनेम पछी आवे ते कहीए, तथा०–"णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउहिं संज्झाइं सज्झायं करित्तए, तं जहा–पढमाए पच्छिमाए मज्झण्हे अड्ढरत्ते ॥" व्याख्या–न कल्पे निग्रंथ निग्रंथीने, चउहिं संज्झाइं सज्झायं करित्तए के० चार संध्याए सज्झाय करवी, तं जहा के० तेहज देखाडे छे, पढमाए के० पहेली प्रातःकालनी संध्या, पच्छिमाए के० सांझनी संध्या, मज्झण्हे के० मध्यान्हनी संध्या, अड्ढरत्ते के० मध्यरातनी संध्या, इति ठाणांगे चोथे ठाणे. तथा–"दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए पन्नत्ते,तं जहा–उक्कापाए १, दिसादाहे २, गज्जिए ३, विज्जुए ४, गंधव्वनगरे ५, णिग्घाए ६, जक्खा-लित्ते ७, धूमिआ ८. महिया ९, रउग्घाए १०. व्याख्या–"दसविहे के० दश प्रकारनी, अंतलिक्खिए के० आकाश संबंधी, असज्झाइए पन्नत्ते के० असज्झाय कह्या छे, तंजहा के० तेहज कहे छे, उक्कापाए के० उल्कापात, लोकप्रसिद्ध छे दिसादाहे के०हरकोइ एक दिशाने विषे महा नगर बलतुं होय; ते रीते भूमिकाए अणफरसित आकाशतलवर्त्ती उद्योत दे-

खाय २, गज्जिए के० मेघनुं गाजवुं ३, विज्जुए के० वीजलि ४, गंधव्वनयरे के० आकाशे गांधर्व देवविशेष तेहनां नगर देखाय. अहींयां गांधर्वनगरने ठेकाणे जूवए एहवो पाठछे. त्यां, जुवए के० ज्यां संध्यानी कांति अने चंद्रकांति ए युगपत्समकाले मेली थाय ते अजवाला पक्षना पडवे, वीजे अने पुनेम ए त्रण दिन–ए वेला सांजे असज्झाय ५, णिग्घाए के० वादलां होय अथवा न होय पण व्यंतरकृत महा गर्ज्जारव शब्द ते निर्घात कहीए ६, जक्खालित्ते के० कोइ जक्ष आकाशे देदीप्यमान देखाय ७, धूमिआ के० धूमरी वरसे ८, महिआ के० ते धूमरीमां पण धूमर अने महिकामां कांइक वर्णकृत भेद जाणवो ९, रउग्घाए के० सहेजे विश्रसा परिणामे रजोवृष्टि थाय १०,इति. तथा वली–" दसविहे ओरालिए असज्झायं पन्नत्ते, अट्ठि मंसे सोणिए असुइसामंते सुसाणसामंते चंदोवरागे सूरोवरागे पडणे रायवुग्गहे उवस्सयस्स अंतो ओरालियसरीरे ॥" व्याख्या–दश प्रकारनी ओरालिए के० औदारिक जे तिर्यंच मनुष्य संबंधी असज्झाइ, अट्ठि के० हाड १, मंसे के० मांस २, सोणिए के० रुधिर ३, ग्रंथांतरे चर्म पण कह्युं छे. तिर्यंचनी साठ हाथ प्रमाण, मनुष्यनी सो हाथ प्रमाण, ऋतुकाल स्त्रीनी दिन त्रण, पुत्री जन्मे दीन आठ, पुत्र जन्मे दिन सात, अने हाडनी जीव रहित थया पछी वार वरस लगे असज्झाइ । तथा असुइसामंते के० अत्यंत दुर्गंध अशुचि–विष्टा प्रमुख पासे उकरडी होय तो असज्झाइ४, सुसाणं सामंते के० श्मशान पासे असज्झाइ ५, चंदोवरागे के० चंद्रनुं ग्रहण ६, सूरोवरागे के० सूर्यनुं ग्रहण ७, पडणे के० मरवुं–ते अहींयां राजा प्रधान सेनापति प्रमुख महर्द्धिकनुं लेवुं ८, रायवुग्गहे के० राजाना संग्राम थता होय तेवारे असज्झाय ९, उवस्सयस्स अंतो ओरालियसरीरे के० उपाश्रयमां औदारिक शरीर जे मनुष्यादिकनुं शरीर होय ते असज्झाइ १०–ए सर्व असज्झायना विशेषप्रकार निर्युक्ति प्रमुखथी तथा गुरुपरंपराथी जणाय ॥ १५ ॥

सूत्र अरथ पहेलो बीजो कह्यो । निज्जुत्तीएरे मीस ॥
निरवशेष त्रीजो अंग पंचमे । एम कहे तुं जगदीश ॥ स० ॥ १६ ॥

अर्थ–सूत्र अरथ पहेलो के० प्रथम सूत्रार्थ आपे, एटले गुरु, शिष्यने जेवारे अर्थ आपे, तेवारे प्रथमथी शब्दार्थ मात्र आपे. ते रूडी रीते आवड्या पछी, बीजो कह्यो निजुत्तिए मीस के० बीजीवार तेज सूत्रनो निर्युक्ति सहित ते निक्षेपा सहित व्याख्यान करी शीखवे. निरवशेष त्रीजो के० बीजी वार अर्थ आवड्या पछी त्रीजो समस्त कहे. एटले त्रीजीवार प्रसंगे प्रसंगे दृष्टांत हेतु नय प्रमुख सर्व कहे. एटले भाष्य, टीका, चूर्णि, ए त्रीजी व्याख्यामां समाणां ए सूत्रनिर्युक्ति प्रमुख पंचांगी मानवी देखाडी. अंग पंचमे के० श्री भगवती सूत्रमध्ये एम कहे तुं जगदीश के०हे जगदीश ? एम तुं कहेछे. अहींयां भक्ति वचन माटे तुंकार शब्द कह्यो छे. यतः–"सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।

तइओ य निरवसेसो, एसविही होइ अणुओगो ॥१॥ अर्थ सुत्तत्थो खलु पढमो के० पहेलो सूत्रार्थ निश्चये देवो. बीओ निज्जुत्तिमीसिओ के० बीजो निर्युक्ति मिश्र ते सहित देवो. भणिओ के० कह्यो छे. तइओ य निरवसेसो के० त्रीजो निरवशेष संपूर्ण कहेवो. एसविही होइ अणुओगो के० एविधि अनुयोग ते अर्थ कहेवानो जाणवो. इति भगवती शतक पचीशमे.

हवे कोइ ढुंढक बोल्यो जे "निर्युक्ति प्रमुख सूत्रथी मलती नथी; तो शुं माने? जे माटे ठाणांग मध्ये सनत्कुमारने अंतक्रिया कही; अने आवश्यक मध्ये त्रीजे देवलोके गया. ए केम मले?" तेहने उत्तर कहेछे के हे देवाणुप्रिय! निर्युक्तिकार चौद पूर्वधर समुद्र सरखी बुद्धिना धणी हता; तम सरखा मंदमति न हता. ठाणांगनी टीका मध्ये 'भवांतरे सेत्स्यमानत्वात् ॥' एम कह्युं छे. माटे मलतुंज छे. तथा तेहज भवमां अंतक्रिया मानीए तो नारकीने पण कह्युं छे—'अत्थे गइए करेज्जा अत्थे गइए नो करेज्जा ॥' ए पाठ केम मलशे? अने कहेशो जे, सूत्रज प्रमाण तो भलुं, आज वर्त्तता तो घणां सूत्र छे, तेम छतां तमे बत्रीशज कां मानोछो? वली कहेशो जे बत्रीश सूत्रो मांहोमांहे मलेछे; बीजां मलतां नथी. तोय भलुं पण अमे जाणीए छैए जे तमारे परस्परे मलवानुं प्रयोजन नथी. तमे केवल जिनप्रतिमाने द्वेषे बीजां सूत्र नथी मानता. पण भला बत्रीश तो मानोछो. तेपण तमारी मतिए जाणोछो जे ते मले छे तो ते मेलवी आपो ते माटे प्रसंगोपात कांइक लखीए छैए ॥ समवायांगे मल्लिनाथ प्रभुजीने पांच हजार सातसें मनपर्यवज्ञानी अने श्रीज्ञातामां तो आठसें कह्या. ते केम मले? तथा च सूत्रं—"मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणी सया होत्था॥" इति समवायांगे॥ "अट्ठसय मणपज्जवनाणीणं॥" इतिश्रीज्ञातायां ए केम? समवायांगे श्री मल्लिप्रभुने पांचहजार नवसे अवधिज्ञानी, अने ज्ञातामांहे बेहजार अवधिज्ञानी. ए केम? २ ज्ञातामां अध्ययन पांचमे श्रीकृष्णने बत्रीश हजार स्त्रीओ कही; अने अंतगडदशांगमां प्रथमाध्ययने तो सोलहजार कही. ए केम? ३ श्रीराजप्रश्नीयमांहे केशीकुमारने चार ज्ञान कह्यां, अने उत्तराध्ययने बत्रीशमे अध्ययने अवधिज्ञानी कह्या. ए केम? ४ भगवतीमां शतक पहेले उद्देशे बीजे विराधित संजमी जघन्यथी भवनपतिमां जाय, उत्कृष्टे सौधर्मे जाय एवुं कह्युं छे; अने ज्ञातामां तो अध्ययन सोलमे सुकमालिका विराधित संजमी ईशान देवलोके गइ ए केम? ५ उववाइमां तापस उत्कृष्टा ज्योतिषी लगे जाय एम कह्युं छे, तो श्री भगवतीमां तामलीतापस ईशानेंद्र थयो. ए केम? ६ उववाईमां चौदपूर्वी उत्कृष्टा लांतके जाय एम कह्युं, तो भगवतीमां कार्तिकशेठ चौदपूर्वी सौधर्मेंद्र थया. ए केम? ७ श्री भगवती मध्ये श्रावक होय ते त्रिविध त्रिविध कर्मादाननां पच्चक्खाण करे एम कह्युं; तो श्री उपासकदशा मध्ये आणंदे हल मोकलां राख्यां ते केम? ८ तथा उपासकदशामां कुंभार श्रावके नीम्हाडा मोकलां राख्या ए केम? ९ वेदनीयकर्मनी जघन्य स्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमां बार मुहूर्तनी कही, तो उत्तराध्ययनमां अंतर्मुहूर्तनी कही. ए केम? १० श्री भगवतीमां शतक बीजे उद्देशे पहेले खंधाने अधिकारे बार प्रकारनां बाल मरण करतो जीव अनंता नारकी,

तस्यच

तिर्यंच, मनुष्य अने देवताना भव करे; अनादि अनंत चार गतिमांज रझले, तेमांनाज वारमां वेहाणस मरण, तथा गीद्धपृष्ठ मरण ए वे कह्यां छे; तो ठाणांगे ठाणे वीजे उद्देशे चोथे ए वे मरणनी कारणे आज्ञा करी. ए केम ? ११ भगवतीमां महावल चौदपूर्वी ब्रह्म देवलोके गया, एम कह्युं; तो उववाइमां लांतकथी हेठा जाय नहीं.एम कह्युं ते केम? १२ श्री-उत्तराध्ययन छत्रीशमे पान पलांडु लसण कंदे अनंतकाय कह्यां छे; तथा पन्नवणा प्रथमपदे लसण प्रत्येके कह्युं छे. ए केम ? १३ श्री पन्नवणामां चार भाषा वोलतां आराधक कह्यो. तथा दशवैकालिक अध्ययन सातमे वे भाषा वोलवी कही. ए केम ? ४ दशवैकालिके अध्ययन आठमे हाथ पग छेद्या होय, कान नाक काप्यां होय, सो वरसनी डोसी होय तेने पण ब्रह्मचारी वर्जे एम कह्युं छे; अने श्री ठाणांगमां पांचमे ठाणे उद्देशे वीजे तो साधु पांच प्रकारे साध्वीने ग्रहतो अवलंबतो आज्ञा न अतिक्रमे. ए केम ? १५ उत्तराध्ययन वीजे अध्ययने रोग उपन्ये औषध न करे एवुं कह्युं; अने भगवतीमां तो वीजोरापाक प्रभुए लीधो. ए केम ? १६ दशवैकालिके छठे अध्ययने एकभक्त भोजन कह्युं; अने कल्पसूत्रमां तो विकृष्ट तपवालाने सर्व गोचर काल कल्पे. ए केम ? १७ कल्पसूत्रे थोडी थोडी वृष्टि थातां वहोरवा जाय एम कह्युं छे, अने दशवैकालिके अध्ययन पांचमे उद्देशे पहेले वरसतां वहोरवा न जाय. एम कह्युं ते केम ? १८ भगवतीमां शतक चौदमे उद्देशे सातमे भात पाणीनां पच्चक्खाण करीने आहार करे एम कह्युं, अने सिद्धांतमां तो व्रतभंगे महा दोष लागे एम कह्युं. ए केम? १९ पन्नवणामां अढारमा कायस्थिति पदे स्त्री वेदनी कायस्थितिना पांच आदेश कह्या; ने सर्वज्ञना मतमां पाच वात शी ए केम ? २० ठाणांगे पांचमे ठाणे उद्देशे वीजे राजपिंड न लेवो एम कह्युं, अने अंतगड वर्ग छठे अध्ययन पांचमे गौतमजीए श्रीदेवीने घेर आहार लीधो. ए केम? २१ समवायांगमां ज्यां प्रभु विचरे त्यां चारे दिशाए ईति न होय एम कह्युं छे; अने विपाकसूत्रमां तो पोते समोसर्या थका अभयसेन प्रमुख केम मार्या गया ? २२ एम विपाकमां अध्ययन वीजे पण छे. ते केटला लखाय ? एम श्री भगवतीमां सुनक्षत्र अने सर्वानुभूति समोसरणमां वल्या, पोताने लोहीखणवाडो थयो. ए केम ? २३ तथा समवायांगमां उपासकनी नोंध छे, तेमां श्रावकनां चैत्य कह्यां छे अने उपासकमां तो नथी. ए केम ? २४ भगवतीमां शतक आठमे उद्देशे छठे साधुने अप्रासुक अनेषणीक वहोरावतो घणी निर्जरा करे, अल्प पाप कर्म वांधे, एम कह्युं छे; अने ठाणांगे ठाणे त्रीजे उद्देशे पहेले साधुने अप्रासुक आपतो अल्प आयुष वांधे. ए केम ? २५ ठाणांगे ठाणे पांचमे उद्देशे वीजे पांच महा नदी उतरवी ना कही, अने वली वीजा लगता सूत्रमां हा कही. ए केम ? २६ वली त्यांज वर्षाकाले रह्या तेहने ग्रामानुग्राम विचरवुं न कल्पे; वली कथन छे जे पांच कारणे कल्पे. ए केम? २७ दशवैकालिके तथा आचारांगे त्रिविधे त्रिविधे प्राणातिपात पच्चक्खे; तथा समवायांग दशाश्रुतस्कंधे नदी उतरवी कही ते मोकली राख्या विना उतरे. ए केम? २८ कल्पसूत्रमां वर्षाकालमां निग्रंथने नवविगइ वारे

वारे छेवी न कल्पे, एटले कोइक वेला लीए एम कह्युं छे; अने सूगडांगना बीजा श्रुत स्कंधमां अध्ययन बीजे साधुवर्णने कह्युं जे न कल्पे ए केम? २९ वर्षाकालमां निग्रंथने नव विगइ वारे वारे छेवी न कल्पे तेम कल्पसूत्रे कह्युं छे. तथा भगवती सूत्रना शतक आठमे उद्देशे नवमे कुरमाहारे नारकीनुं आयु बांधे? ए केम? ३० दशवैकालिके अध्ययन त्रीजे लुण प्रमुख अनाचीर्ण कह्युं, अने आचारांगमां द्वितीयश्रुतस्कंध अध्ययन पहेले उद्देशे दशमे लुण वहोर्युं होय तो पोते वावरे, सांभोगिकने वहेंची आपे. एम कह्युं ए केम? ३१ भगवती सूत्रे शतक अढारमे नींब तीखो कह्यो अने उत्तराध्ययनना चोतरीशमे अध्ययने नींब कडवो कह्यो ए केम? ३२ आचारांगना द्वितीयश्रुतस्कंधे ईर्याध्ययनमां जाणतो थको कहे जे नथी जाणतो; तथा दशवैकालिके त्रिविधे मृषावाद वर्जे. ए केम? ३३ समवायांगे त्रेवीश तीर्थंकरने सूर्योदयकाले केवलज्ञान उपन्युं कह्युं छे ने दशाश्रुतस्कंधमां नेमिस्वामिने पाछले पहोरे केवलज्ञान उपन्युं. ए केम? ३४ वली समवायांगे तेमज ज्ञातामां मल्लिनाथने दीक्षादिनने पाछले पहोरे केवलज्ञान उपन्युं कह्युं. ए केम? ३५ उत्तराध्ययन बारमे अध्ययने जक्षे ब्राह्मणने हण्या कह्युं छे ने उववाइमां दश प्रकारनुं वैयावच्च कह्युं तो हण्या तेहने वैयावच्च कह्युं. ए केम? ३६ ज्ञातामां कह्युं जे मल्लिनाथे त्रणसें स्त्रीओ, त्रणसें पुरुषो तथा आठ ज्ञातकुमार--ए लेखे छसें आठ साथे दीक्षा लीधी, अने ठाणांगमां सातमे ठाणे तो पोते सातमां एटले छ पुरुष साथे दीक्षा लीधी एम कह्युं छे ए केम? ३७ ठाणांगमां कह्युं जे छ मित्र साथे दीक्षा लीधी, अने ज्ञातामां केवलज्ञान उपन्या पछी छ मित्रोए दीक्षा लीधी. ए केम? ३८ उत्तराध्ययन सोलमे अध्ययने पशु पंडगरहित वसति सेवे तो ठाणांगे पांचमे स्थानके साध्वी भेला वसे कह्युं. ए केम? ३९ सूयगडांग सूत्रमां द्वितीय श्रुतस्कंधे पांचमे अध्ययने कह्युं जे दानने प्रशंसे ते प्राणी वृद्धिने पामे छे. तथा निषेध करे तो सामानी वृत्ति छेद थाय माटे न बोलवुं, एम कह्युं; अने भगवतीना शतक आठमे उद्देशे छट्ठे श्रमणोपासक असंजतने आपतो एकांते पापकर्म करे, पण निर्ज्जरा कांइ नथी. ए लेखे मूलगी ना कही ए केम? ४० जंबुद्वीपपन्नत्तीमां योजन पांचसेंनुं नंदनवन तेहमां हजार योजननो बलकूट पहोलो मूले छे. ए केम? ४१ एम समवायांगे गजदंता उपर हजार योजन पहोला तेमां हरि तथा हरिस्सहकूट केम समाया? ए केम? ४२ जंबुद्वीपपन्नत्तीमां ऋषभकूट मूले आठ योजन विस्तारे कह्यो, आगल एमांज पाठांतरे बार योजन कह्यो. सर्वज्ञना भाष्यामां पाठांतर शो? ए केम? ४३ जंबुद्वीपपन्नत्तीमां भरतार्द्धनी जीवा नव हजार सातसे अडतालीश ने ओगणीआ बार भाग कही अने समवायांगे नवहजार कही. एटलो फेर केम? ४४ समवायांगे विजयादिक चारनी स्थिति जघन्ये बत्रीश सागरोपम, उत्कृष्ट तेतरीश सागरोपम कही छे, अने पन्नवणाना चोथा पदे जघन्ये एकतरीश, अने उत्कृष्ट तेतरीश कही ए केम? ४५ समवायांगे ऋषभदेवजीने तथा महावीरने एक कोडाकोडीनो आंतरो कह्यो; तथा दशाश्रुतस्कंधमां ऋषभदेवजी काल करी गया पछी नेव्यासी पखवाडीयां गया पछी बेतालीस हजार वर्ष अधिक नेव्यासी पख-

वादीओं ओछां एक कोडाकोडी सागरोपमे वीर मोक्षे गया ए केम? ४६. सूयगडांग सूत्रमां कह्युं जे आधाकर्मी आहार करतो कर्मे लेपाय पण खरो, तथा न पण लेपाय. ए एक गाथामां वे वात. ए केम? ४७ वली एहज सूत्रे कर्मे न लेपाय कह्युं; अने भगवतीमां श-तक पहेले उद्देशे नवमे आधाकर्मी आहार करतो सात कर्म बांधे. शिथिल होय तो गाढ करे. इत्यादि ए केम? ४८ समवायांगे तेतरीश हजार योजन कांइक ऊणुं चक्षुस्पर्शे सूर्य आवे एम कह्युं; अने जंबुद्वीपपन्नतीमां वतरीश हजार एक योजन झाझेरो चक्षुस्पर्शे सूर्य आवे. ए केम? ४९ समवायांगे मेरुनी तलेटी दशहजार योजन पहोली छे एम कह्युं छे, अने जबुद्वीपपन्नतीमां दश हजार नेवु झाझेरी कही छे. ए केम? ५० भगवती सूत्रना श-तक आठमे उद्देशे दशमे जीवने पुद्गल कहीए तथा पुद्गली कहीए. एम कह्युं छे ए केम? ५१ समवायांगे मेरुनां सोल नाम कह्यां छे, तेमां आठमुं प्रियदर्शन कह्युं छे तथा चौदमुं उत्तर कह्युं छे, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां सोल नाम छे तेमां आठमुं शिलोच्चन कह्युं छे अने चौदमु उत्तम कह्यु छे. ए केम? ५२ पन्नवणामां ओगणीशमे पदे छद्मस्थने अणाहारी उत्कृ-ष्ट बे समय कह्या छे, ने भगवतीमां उत्कृष्टा अणाहारीना त्रण समय कह्या छे. ए केम? ५३ एमज जीवाभिगमे बे समय, भगवतीए समय त्रण. ए केम? ५४ समवायांगे श्रमण भगवान महावीरने बेतालीश वरस झाझेरो साधुपर्याय कह्यो, अने पर्युषणाकल्पमां बेतालीश पूरां कह्यां. ए केम? ५५ जीवाभिगमे रुचकद्वीपथी असंख्यातु मान कह्युं अने जीवाभिगमने लेखे ठाण बमणां गणतां एक निखर्व चार अबज पंचाशी करोड छोतेर लाख मान आवे. वली त्रिप्रत्ययावतार गणे तो रुचकद्वीपनुं मान ११००८२२३४७७७६००००० थाय; अने भगवती सूत्रमां शतक छठे उद्देशे सातमे तथा अनुयोगद्वारे एकसो चोराणु आंक ल-गे तो संख्यातु गण्युं, वली पालाने माने संख्यातु तो वेगलुं रह्युं; पछी असंख्यातु आवे तो रुचकद्वीप असंख्यातो केम थयो? ५६ समवायांगे आडतरीशमे समवाए मेरुनो त्रीजो कांड आडतरीश हजार योजन उंचो कह्यो; तथा सोलमे समवाये प्रथम कांड एकसठ ह-जार योजननो उंचो कह्यो; जंबुद्वीपपन्नतीमां हेठलो कांड एकहजार योजननो बाहुल्ये क-ह्यो छे; मध्य कांड त्रेसठहजार योजननो बाहुल्य कह्यो, उपरलो कांड छत्रीसहजार जोज-ननो बाहुल्य कह्यो, एम सर्व पूर्व अपरे थइ एक लाख योजन बाहुल्य छे. ए लाख योजन बाहुल्यपणे जंबुद्वीपपन्नतिमां कह्यो तेवारे बीजां नदीओ, पर्वत, अने सात क्षेत्र ए सर्व केम मायां? ५७ तथा कहेशो के बाहुल्य ते उंचपणुं हशे तो पूर्व अपरनो शो अर्थ? तथा उंचपणुं कहेतां पण समवायांगे नव्वाणु हजार योजन बे भागे वहेंच्यो तेहमां प्रथम एकशठ हजार अने बीजो आडत्रीस हजारनो कह्यो. जंबुद्वीपपन्नतीमां कांदा सहित त्रणे भागे वहेंच्यो; तेमां प्रथम एकहजारनो, बीजो त्रेसठहजारनो अने त्रीजो छत्रीशहजारनो. ए सर्व केम? ५८ समवायांगे नंदनवननुं विष्कंभ नवहजार नवसें योजननुं कह्युं, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां नवहजार नवसे चोपन योजन झाझुं कह्युं. ए केम? ५९ प्रश्नव्याकरणे तथा समवायांगे भव-नपति वीश, चंद्र सूर्य बे, अने सौधर्मादिक दश एव बत्रीश इंद्र कह्या, अने जबुद्वीपपन्नतीमां

ऋषभनिर्वाणे सौधर्मादिक दश, भवनपति वीश, व्यंतर सोल, अने चंद्र सूर्य बे-एवं अडतालीश इंद्र कह्या. ए केम ? ६० ठाणांगे ठाणे बीजे इंद्र चोसठ कह्या. ए केम ? ६१ उववाइमां जघन्यथी सात हाथनी कायावाला मोक्षे जाय; वली कह्युं जे जघन्यथी बत्रीश अंगुल सिद्धनी अवगाहना होय. ए लेखे बे हाथनी जघन्य थई. ए केम ? ६२ भगवती सूत्रना शतक चउदमाना उद्देशे आठमे सिद्धशिलाथी अलोक देशे उणु योजन कह्युं, अने उववाइमां संपूर्ण योजन कह्युं ए केम ? ६३ समवायांगे छठ्ठा नरकना मध्यभागथी छठ्ठा घनोदधिनो चरमांत ओगणाएसीहजार योजन कह्यो; जीवाभिगमे पृथ्वी उपरना घनोदधिनो चरमांत एक लाख छत्रीश हजार योजन अंतर कह्यो. तो जीवाभिगमे एक लाख छत्रीश हजारनुं अर्ध करतां अडसठ हजार योजन थाय. ए केम ? ६४ समवायांगे अठ्ठाणुमे समवाये रेवती नक्षत्रथी जेष्ठा लगी ओगणीश नक्षत्रना तारा अठ्ठाणुं छे; अने समवायांगमांज भिन्न भिन्न भेला करतां सत्ताणु थाय छे. ते एम के रेवती नक्षत्रना बत्रीश, अश्वनीना त्रण, भरणीना त्रण, कृत्तिकाना छ, रोहिणीना पांच, मृगशिरना त्रण, आर्द्रानो एक, पुनर्वसुना पांच, पुष्यना त्रण, अश्लेषाना छ, मघाना सात, पूर्वाफाल्गुनीना बे, उत्तराफाल्गुनीना बे, हस्तना पांच, चित्रानो एक, स्वातिनो एक, विशाखाना पांच, अनुराधाना चार, अने जेष्ठाना त्रण, एवं सत्ताणुं ए केम ? ६५ पन्नवणामां पंदरमें पदे घ्राणेंद्रियनो नव योजननो उत्कृष्टो विषय कह्यो, अने रायपसेणीमां चारसें तथा पांचसेंनो कह्यो. ए केम ? ६६ भगवती शतक छठे उद्देशे सातमें पल्योपमनुं मान कह्युं, तेम अनुयोगद्वारे पण कह्युं; पण भगवतीमां असंख्याता खंडविना कुओ भर्यो. तेणे करी आरानां मान कह्यां. सप्रयोजन कह्युं; अने अनुयोगद्वारे भगवतीउक्त ने निःप्रयोजन कह्युं. सूक्ष्म अद्धापल्योपम सप्रयोजन कह्युं तेणे नारकी प्रमुखना आयु मविए. इत्यादिक घणी वातो छे. ए केम? ६७ पन्नवणामां तेत्रीशमे पदे असुरकुमारनी जघन्यथी पचीश योजन अवधि तथा सौधर्मादिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग कह्यो ए केम? ६८ पन्नवणा सूत्रमां बादर तेउकाय मनुष्य क्षेत्रमां होय तो उत्तराध्ययन ओगणीशमे अध्ययने नरकमां अग्निकाय कह्यो ए केम ? ६९ वली उत्तराध्ययनना बावीशमा अध्ययनमां शौरीपुरमां धुरे श्री नेमिनाथ कह्या; दीक्षा लेतां द्वारिकानगरीमांथी नीकल्या; तथा रामकृष्ण वंदना करी द्वारिकामां गया. तो शौरीपुर पूर्वमां अने द्वारिका पश्चिममां—ए केम ? ७० ठाणांगे ठाणे सातमे अतीतउत्सर्पिणीमां आ भरतने विषे सात कुलगर थया, वली ठाणे दशमे कह्युं के दश कुलगर थया. ए केम? ७१ वली एमज आवती उत्सर्पिणीमां सातमे ठाणे कह्युं के सात थशे. अने दशमे ठाणे कह्युं के दश थशे. ए केम ? ७२ जीवाभिगमे सौधर्म ईशान देवलोक बराबर रह्या छे अने भगवती सूत्रना एकत्रीसमा शतके सौधर्म थकी ईशान देवलोक लगारेक उंचुं छे ए केम ? ७३ भगवती सूत्रमां शतक त्रीजे उद्देशे बीजे असुरकुमारनो तीर्च्छयोगति विषय, असंख्याता द्वीपसमुद्रनो कह्यो. नंदीसर लगे गया अने जशे एम कह्युं तथा शतक बीजे उद्देशे सातमे चमरानी सुधर्म सभाने विषे पुछयुं त्यां कह्युं जे मेरु पर्वतथी दक्षि-

वादीओ ओछां एक कोडाकोडी सागरोपमे वीर मोक्षे गया ए केम ? ४६. सूयगडांग सूत्रमां कह्युं जे आधाकर्मी आहार करतो कर्मे छेपाय पण खरो, तथा न पण छेपाय. ए एक गाथामां बे वात. ए केम ? ४७ वली एहज सूत्रे कर्मे न छेपाय कह्युं; अने भगवतीमां शतक पहेले उद्देशे नवमे आधाकर्मी आहार करतो सात कर्म बांधे. शिथिल होय तो गाढ करे. इत्यादि ए केम ? ४८ समवायांगे तेतरीश हजार योजन कांइक ऊणुं चक्षुस्पर्शे सूर्य आवे एम कह्युं; अने जंबुद्वीपपन्नतीमां बतरीश हजार एक योजन झाझेरो चक्षुस्पर्शे सूर्य आवे. ए केम ? ४९ समवायांगे मेरुनी तलेटी दशहजार योजन पहोली छे एम कह्युं छे, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां दश हजार नेवु झाझेरी कही छे. ए केम ? ५० भगवती सूत्रना शतक आठमे उद्देशे दशमे जीवने पुद्गल कहीए तथा पुद्गली कहीए. एम कह्युं छे ए केम ? ५१ समवायांगे मेरुनां सोल नाम कह्यां छे, तेमां आठमुं प्रियदर्शन कह्युं छे तथा चौदमुं उत्तर कह्युं छे, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां सोल नाम छे तेमां आठमुं शिलोच्चन कह्युं छे अने चौदमुं उत्तम कह्युं छे. ए केम ? ५२ पन्नवणामां ओगणीशमे पदे छद्मस्थने अणाहारी उत्कृष्ट बे समय कह्या छे, ने भगवतीमां उत्कृष्टा अणाहारीना त्रण समय कह्या छे. ए केम ? ५३ एमज जीवाभिगमे बे समय, भगवतीए समय त्रण. ए केम ? ५४ समवायांगे श्रमण भगवान महावीरने बेतालीश वरस झाझेरो साधुपर्याय कह्यो, अने पर्युषणाकल्पमां बेतालीश पूरां कह्यां. ए केम ? ५५ जीवाभिगमे रुचकद्वीपथी असंख्यातु मान कह्युं अने जीवाभिगमने लेखे ठाण बमणां गणतां एक निखर्व चार अबज पंचाशी करोड छोतेर लाख मान आवे. वली त्रिप्रत्ययावतार गणे तो रुचकद्वीपनुं मान ११००८२२३४७७७६००००० थाय; अने भगवती सूत्रमां शतक छठे उद्देशे सातमे तथा अनुयोगद्वारे एकसो चोराणु आंक लगे तो संख्यातु गण्युं, वली पाल्याने माने संख्यातु तो वेगलुं रह्युं; पछी असंख्यातु आवे तो रुचकद्वीप असंख्यातो केम थयो ? ५६ समवायांगे आडतरीशमे समवाए मेरुनो बीजो कांड आडतरीश हजार योजन उंचो कह्यो; तथा सोलमे समवाये प्रथम कांड एकसठ हजार योजननो उंचो कह्यो; जंबुद्वीपपन्नतीमां हेठलो कांड एकहजार योजननो बाहुल्ये कह्यो छे; मध्य कांड त्रेसठहजार योजननो बाहुल्य कह्यो, उपरलो कांड छत्रीसहजार जोजननो बाहुल्य कह्यो, एम सर्व पूर्व अपरे थइ एक लाख योजन बाहुल्य छे. ए लाख योजन बाहुल्यपणे जंबुद्वीपपन्नतिमां कह्यो तेवारे बीजां नदीओ, पर्वत, अने सात क्षेत्र ए सर्व केम मायां? ५७ तथा कहेशो के बाहुल्य ते उंचपणुं हशे तो पूर्व अपरनो शो अर्थ? तथा उंचपणुं कहेतां पण समवायांगे नव्वाणु हजार योजन बे भागे वहेंच्यो तेहमां प्रथम एकशठ हजार अने बीजो आडत्रीस हजारनो कह्यो. जंबुद्वीपपन्नतीमां कांदा सहित त्रणे भागे वहेंच्यो; तेमां प्रथम एकहजारनो, बीजो त्रेसठहजारनो अने त्रीजो छत्रीशहजारनो. ए सर्व केम ? ५८ समवायांगे नंदनवननुं विष्कंभ नवहजार नवसें योजननुं कह्युं, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां नवहजार नवसे चोपन योजन झाझुं कह्युं. ए केम? ५९ प्रश्नव्याकरणे तथा समवायांगे भवनपति वीश, चंद्र सूर्य बे, अने सोधर्मादिक दश एव बत्रीश इंद्र कह्या, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां

ऋषभनिर्वाणे सौधर्मादिक दश, भवनपति वीश, व्यंतर सोल, अने चंद्र सूर्य बे-एवं अडतालीश इंद्र कह्या. ए केम ? ६० ठाणांगे ठाणे वीजे इंद्र चोसठ कह्या. ए केम ? ६१ उववाइमां जघन्यथी सात हाथनी कायावाला मोक्षे जाय; वली कह्युं जे जघन्यथी बत्रीश अंगुल सिद्धनी अवगाहना होय. ए लेखे बे हाथनी जघन्य थई. ए केम ? ६२ भगवती सूत्रना शतक चउदमाना उद्देशे आठमे सिद्धशिलाथी अलोक देशे उणु योजन कह्युं, अने उववाइमां संपूर्ण योजन कह्युं ए केम ? ६३ समवायांगे छठा नरकना मध्यभागथी छठा घनोदधिनो चरमांत ओगणाएसीहजार योजन कह्यो; जीवाभिगमे पृथ्वी उपरना घनोदधिनो चरमांत एक लाख छत्रीश हजार योजन अंतर कह्यो. तो जीवाभिगमे एक लाख छत्रीश हजारनुं अर्ध करतां अडसठ हजार योजन थाय. ए केम ? ६४ समवायांगे अठाणुमे समवाये रेवती नक्षत्रथी जेष्ठा लगी ओगणीश नक्षत्रना तारा अठाणुं छे; अने समवायांगमांज भिन्न भिन्न भेला करतां सत्ताणु थाय छे. ते एम के रेवती नक्षत्रना बत्रीश, अश्वनीना त्रण, भरणीना त्रण, कृत्तिकाना छ, रोहिणीना पांच, मृगशिरना त्रण, आर्द्रानो एक, पुनर्वसुना पांच, पुष्यना त्रण, अश्लेषाना छ, मघाना सात, पूर्वाफाल्गुनीना बे, उत्तराफाल्गुनीना बे, हस्तना पांच, चित्रानो एक, स्वातिनो एक, विशाखाना पांच, अनुराधाना चार, अने जेष्ठाना त्रण, एवं सत्ताणुं ए केम ? ६५ पन्नवणामां पंदरमें पदे घ्राणेंद्रियनो नव योजननो उत्कृष्टो विषय कह्यो, अने रायपसेणीमां चारसें तथा पांचसेंनो कह्यो. ए केम ? ६६ भगवती शतक छठे उद्देशे सातमें पल्योपमनुं मान कह्युं, तेम अनुयोगद्वारे पण कह्युं; पण भगवतीमां असंख्याता खंडविना कुओ भर्यो. तेणे करी आरानां मान कह्यां. सप्रयोजन कह्युं; अने अनुयोगद्वारे भगवतीउक्तने निःप्रयोजन कह्युं. सूक्ष्म अद्धापल्योपम सप्रयोजन कह्युं तेणे नारकी प्रमुखना आयु प्रविए. इत्यादिक घणी वातो छे. ए केम? ६७ पन्नवणामां तेत्रीशमे पदे असुरकुमारनी जघन्यथी पचीश योजन अवधि तथा सौधर्मादिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग कह्यो ए केम? ६८ पन्नवणा सूत्रमां बादर तेउकाय मनुष्य क्षेत्रमां होय तो उत्तराध्ययन ओगणीशमे अध्ययने नरकमां अग्निकाय कह्यो ए केम ? ६९ वली उत्तराध्ययनना बावीशमा अध्ययनमां शौरीपुरमां घुरे श्री नेमिनाथ कह्या; दीक्षा लेतां द्वारिकानगरीमांथी नीकल्या; तथा रामकृष्ण वंदना करी द्वारिकामां गया. तो शौरीपुर पूर्वमां अने द्वारिका पश्चिममां–ए केम ? ७० ठाणांगे ठाणे सातमे अतीतउत्सर्पिणीमां आ भरतने विषे सात कुलगर थया, वली ठाणे दशमे कह्युं के दश कुलगर थया. ए केम? ७१ वली एमज आवती उत्सर्पिणीमां सातमे ठाणे कह्युं के सात थशे. अने दशमे ठाणे कह्युं के दश थशे. ए केम ? ७२ जीवाभिगमे सौधर्म ईशान देवलोक बराबर रह्या छे अने भगवती सूत्रना एकत्रीसमा शतके सौधर्म थकी ईशान देवलोक लगारेक उंचुं छे ए केम ? ७३ भगवती सूत्रमां शतक त्रीजे उद्देशे वीजे असुरकुमारनो तीर्च्छगति विषय, असंख्याता द्वीपसमुद्रनो कह्यो. नंदीसर लगे गया अने जशे एम कह्युं तथा शतक वीजे उद्देशे सातमे चमरानी सुधर्म सभाने विषे पुछयुं त्यां कह्युं जे मेरु पर्वतथी दक्षि-

ण दिशा तीछर्वी असंख्याता द्वीपसमुद्र ओलंघीए त्यां अरुणवर द्वीपनी बाहेरनी वेदिकाथी अरुणवर समुद्र बेतालीश हजार योजने तिगिच्छकूड नामे उत्पात पर्वत आवे. इत्यादि-एमां असंख्याता द्वीपसमुद्र उल्लंघी अहींयां आवे ए केम ? ७४ श्री भगवती सूत्रना शतक पहेले उद्देशे बीजे सम्यक्दृष्टि नारकीने महावेदना कही. अने भगवती सूत्रना शतक अढारमे उद्देशे पांचमे समकिती नारकोने अल्पवेदना कही. ए केम ? ७५ अंतगडे कृष्णने नेमिनाथे बारमो अमम नामे तीर्थंकर थइश एम कह्युं, अने समवायांगने विषे चोवीश तीर्थंकरना पूर्व भवनां चोवीश नाम कह्यां तेमां श्रेणिक १, सुपार्श्व २, उदय ३, इत्यादिक गणनाए कृष्ण वासुदेव तेरमा कह्या. ते केम ? ७६ भगवतीना शतक आठमे उद्देशे नवमे पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यने विकुर्वणा काल अंतर्मुहूर्त्तनो कह्यो, अने जीवाभिगमे चार मुहूर्त कह्या ए केम ? ७७ भगवती सूत्रना शतक आठमे उद्देशे दशमे जघन्य ज्ञान दर्शन चारित्रनी आराधना वालो त्रीजे भवे मोक्षे जाय. सात आठ भव तो न उल्लंघे. तथा शतक बारमे उद्देशे नवमे नरदेवनो आंतरो जघन्यथी सागरोपम झाझेरो, उत्कृष्टो अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्त होय, नरदेवपणुं तो सम्यगदृष्टि चारित्रिया नीपजावे. ए केम ? ७८ भगवती सूत्रना शतक पांचमे उद्देशे चोथे ऊंघतो थको सात आठ कर्म बांधे; उत्तराध्ययनना अध्ययन छव्वीशमे त्रीजे पहोरे रात्रे निद्रा करे. ए केम ? ७९ उत्तराध्ययनना ओगणीशमा अध्ययने कह्युं जे, मांस पोताना शरीरमांथी नरकमां खवराव्यां. जीवाभिगममां असंघयणी कह्या तो संघयणविना मांस क्यांथी ? ए केम ? ८० पन्नवणामां बीजे पदे-" दिव्वेणं संघयणेणं " एम कह्युं अने जीवाभिगमे देवता असंघयणी कह्या. ए केम ? ८१ भगवती सूत्रना शतक पांचमे उद्देशे आठमे समूर्च्छिम मनुष्यने अडतालीश मुहूर्त अवस्थित काल कह्यो; अने पन्नवणामां चोवीश मुहूर्तनो उत्कृष्टो विरह कह्यो. एटले कोइ ऊपजे पण नहीं,अने कोइ चवे पण नहीं, अने भगवतीने लेखे चोवीश मुहूर्त लगे ऊपजे एटला चवे; एम अवस्थिति काल कह्यो, ते अंतर्मुहूर्त आउपावालाने केम घटे ? ८२ भगवती तथा समवायांगे शक्रस्तवना पाठमां फेर केम ? ८३ ठाणांगमां त्रीजे ठाणे उद्देशे पहेले पांच देवलोके त्रण वर्ण कह्या. कृष्ण, नील, अने रक्त. जीवाभिगमे लोहित, पीत अने शुक्ल ए केम ? ८४ पन्नवणामां प्रथम पदे पुद्गलना भेद पांचसें त्रीश थाय छे; उत्तराध्ययनमां चारसें ब्यासी भेद थाय छे. ए केम ? ८५ प्रज्ञापनामां वीशमे पदे किल्विषिआ जघन्यथी सौधर्मे अने उत्कृष्टे लांतके जाय. भगवतीमां किल्विषिया जघन्यथी भवनपति, उत्कृष्टा लांतके जाय. ए केम ? ८६ कल्पसूत्रमां संहरतां वीर प्रभु न जाणे, अने आचारांगमां कह्युं संहरतां जाणे, ए केम ? ८७ आचारांगे कह्युं जे प्रथम देवताने धर्म कही पछी मनुष्यने कहे, अने ठाणांगमां दश अच्छेरामां अभाविया परिसा. ते शुं ? ८८ उववाइमां शुभ मन वचन काया उदेरवां कह्यां अने भगवतीमां एजतो-कंपतो हिंसा करे कह्युं ए केम ? ८९ उपासकदशांग मध्ये आणंद श्रावके भगवंतने कह्युं जे हुं बारव्रत उचरीश; एम करीने सातव्रत उचर्यां; वली

अतीचार वारे व्रतना कह्या. ए केम ? ९० इत्यादिक केटलां लख्यां जाय. ए सर्व टीका निर्युक्ति चूर्णि विना केवल सूत्रे मेलवी आपो तो तमे रांक सरखा शुं मेलवी जाणो? कोइ पाठांतर, कोइ अपेक्षा, कोइ उत्सर्ग, कोइ अपवाद, कोइ नये, कोइ विधिवाद, कोइ चरितानुवाद प्रमुख सूत्रना गंभीर आशय समुद्र सरखी बुद्धिना धणी टीकाकार प्रमुख जाणे. ते टीका प्रमुख तो तमे एक प्रतिमा द्वेषे सर्व उथाप्यां. ए प्रसंगे सर्युं. ॥ १६ ॥

हवे सूत्र अनुसरीए छैए. पूर्वे भगवतीनी साखे त्रण प्रकारनो अनुयोग कह्यो हतो. वली निर्युक्तिना अक्षर देखाडे छे. गाथा कहे छे.

सूत्र निज्जुत्तिरे बेऊ भेदे कहे ॥ त्रीजुं अनुयोगद्वार ॥
कूडा कपटीरे जे माने नहीं ॥ तेह्ने कवण आधार ॥ स० ॥१७॥

अर्थ—सूत्र तथा निर्युक्ति—ए बेऊ भेदे त्रीजो अनुयोग के० त्रीजा अनुयोग द्वारमो कहे छे. एटले ए भाव जे श्रीअनुयोगद्वार सूत्रने विषे चार अनुयोगद्वार कह्या छे. उपक्रम. १, निक्षेप २, अनुगम. ३, अने नय. ४, तेमां त्रीजुं अनुगम नाम अनुयोग द्वार. तेह्मां सूत्रानुगम, तथा निर्युक्ति अनुगम ए बे प्रकारनो अनुगम कह्यो छे. तथा च तत्सूत्रं—"अनुगमे दुविहे पन्नत्ते तं जहा—सुत्ताणुगमे अ णिज्जुत्तिअणुगमे य ॥" एनो अर्थ तो पूर्वे आवी गयो छे. वली निर्युक्ति अनुगम त्रण प्रकारे कह्यो छे. तेमज निक्षेप निर्युक्ति अनुगम १ सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति अनुगम २, उपोद्घात निर्युक्ति अनुगम. ३ तेमां उपोद्घात निर्युक्ति अनुगम २ मूल गाथाए कह्यो छे.—"उद्देसे निद्देसे, निग्गमे खेत्तकालपुरिसे अ । कारण पच्चयलक्खणणए समोयारणाणुमए ॥ १ ॥ किं कइविह कस्स कहिं, केसु कहं केच्चिरं हवइ कालं ॥ कइ संतरमविरहियं, भवागरिसफासणनिरुत्ति ॥ २ ॥" व्याख्या. उद्देशे के० सामान्य नाममात्र कहीशुं. जेम अध्ययन एवुं नाम । निद्देशे के० विशेषे कहेवुं जेम सामायक अध्ययन. २ तथा निग्गमे के० निर्गम कहेवो. यथा सामायक क्यांथी नीकल्युं ? ३. तथा क्षेत्र कहेवुं. ४ तथा काल कहेवो. ५ यथा सामायिक कोण क्षेत्र कोण काले नीकल्युं ? ६ महासेन वनमां वैशाख शुद ११ ने दिने पहेले पहोरे,तथा पुरिसे अ के०कोण पुरुषथी नीकल्युं? ते कहेवुं. तथा कारण के०शा कारणे गौतमादिक भगवंत पासे सामायक सांभले छे? ते कहेवुं. तथा पच्चय के० प्रत्यय कहेवो. श्ये प्रत्यये भगवंते कह्युं ? तथा गौतमादिके सांभल्यु? जेम केवलज्ञानी छुं माटे कहुंछुं. गणधरजीने पण प्रत्यय सर्वज्ञनो थयो माटे सांभले छे. ८ तथा लख्कण के० लक्षण कहेवुं. यथा समकित सामायिके श्रद्धा करे, ए लक्षण. श्रुत सामायिके जाणे, ए लक्षण. देशविरती सामायिके देशथी त्याग थाय. सर्व विरती सामायिके सर्वथी त्याग करे. इत्यादिक लक्षण ९ नए के० नय कहेवा. १० तथा समोयारणा के० समवतार कहेवो. अनुयोग भेला हता तेवारे समवतार हता. आर्यरक्षितजीए अनुयोग भिन्न कर्या पछी समवतार नथी. ११ अणुमए के० कोणने कोण सामायिक अनुमत छे ? १२ इति प्रथमगाथार्थ ॥ १ ॥ किं के० सामायिक ते शुं ? ते

कहेवुं. तथा द्रव्यार्थिकनये जीवगुण प्रतिपन्न ते सामायिक १३ कइविहं के० केटला प्रकारनुं सामायिक ? यथा त्रण प्रकारे. समकित सामायिक १ श्रुत सामायिक २, चारित्र सामायिक ३, इत्यादिक कहेवुं १४. कस्स के० कोण पुरुषने सामायिक होय ? तेहनो उत्तर कहे छे. जेहने आत्मा समता भावे परिणम्यो; तेहने सामायिक. १५ कहिं के० कोने विषे सामायिक, तेहमां तो क्षेत्र दिशि प्रमुख घणां द्वार कह्यां छे. १६ केसुं के० कोण सामायिक द्रव्यपर्यायने कहिए ? १७ कहं के० केम सामायिक पामीए ? त्यां मनुष्य क्षेत्र, जाति कुल इत्यादिक विस्तार घणो छे. १८ केचिरं हवइ कालं के०कोण सामायिक केटलो काल रहे ? ते कहेवुं. १९ कइ के० केटला जीव कोणसामायिकना समकाले नवा पामता तथा पूर्व प्रतिपन्न पामे ? ते कहेवुं. २० संतर के० ए त्रण सामायिकनुं अंतर कहेवुं; जे फरी पामे तो केहुं सामायिक केटले काले पामे ते कहेवुं ? २१ अविरहियं के० ए त्रण सामायिक संतत रहेवो केहुं सामायिक केटला काल लगे रहे ? ते कहेवुं. २२ भव के० केटला भवमां उत्कृष्ट केहुं सामायिक आवे ? ते कहेवुं. २३ आगरिस्स के० आकर्ष–एक भवमां कोण सामायिक केटली वार आवे अने जाय? तथा नाना भवमां कोण सामायिक केटली वार आवे अने जाय ? ते कहेवुं. फासणा के० कोण सामायिकवंत केटलुं क्षेत्र फरसे ? ते कहेवुं. २५ निरुत्ति के० निरुक्ति कहेवी. यथा सम्यग्दृष्टि कहीए, अमोह कहीए. जेम शोधी, सद्भाव, दर्शनबोधि, अविपर्याय अने सुदृष्टि. ए समकितनी निरुक्ति. एम चारित्रनी निरुक्ति पण कहेवी. २६ ए बेउ मूल गाथा अनुयोगद्वारमध्ये छे. तेहनो संक्षेप अर्थ कह्यो. एहना उत्तर सर्व विस्तारार्थ तो आवश्यक निर्युक्ति तथा टीका तथा विशेषावश्यक थकी जाणवो. पण निर्युक्ति तथा टीका तथा भाष्य न माने तेहने ए बे गाथाना अर्थनुं ठेकाणु कीयुं ? ए बे गाथाए निर्युक्ति मानवी कबुल थइज छे. मूर्ख लोक कदाग्रहे न माने तो शुं थयुं? पण मध्यस्थने तरत नजरमां आवे. ते माटे निर्युक्ति न माने तो सर्व सूत्र न मान्या. सूत्रनो अनुयोग निर्युक्तिने हाथे छे. कूडा के० ते कुगति,कूडा छे, जूठाछे. जे माटे सर्व सूत्रना पाठमां वांकु बोले छे. कपटी के० मायावी छे. जे माटे टीका प्रमुखने जोइने सूत्रना अर्थ बंध बेसारे, अने पूछीए ते वारे कहेशे जे अमे टीका प्रमुख न मानीए. इत्यादिक कपटना करणहार छे. जे माने नहीं के० एवा जे कूडा कपटी निर्युक्ति प्रमुख न माने, तेहने कवण आधार के० ते प्राणीने संसार समुद्रमां पडतां कोण आधार थाशे? कोइ नहीं थाय. इति भाव. इति सप्तदशमी गाथार्थ ॥ १७ ॥ वली निर्युक्तिना पाठ देखाडे छे.

बद्ध ते सूत्रेरे अर्थ निकाचिया ॥ निज्जुत्तिए अपार ॥
उपधिमां न गणणादिक किहां लहे ॥ ते विणु मार्ग विचार ॥ स० ॥१८॥

अर्थ–बद्ध के० बांध्यां ते सूत्र जाणवां. अर्थ के० अर्थ, निकाचिआ के० निकाच्या, ते निज्जुत्तिए के० निर्युक्तिने विषे, अपार के० घणा अर्थ–एटले ए भाव जे नंदी सूत्रने

विषे ॥"णिवद्धणिकायया जिणपन्नत्ता भावा"। एवुं सूत्र छे. तेहमां णिवद्ध के०सूत्रे गुंथ्या जे, भाव के० अर्थ तथा, णिकायया के० ते अर्थ निकाच्या ते निर्युक्तिने विषे ए अर्थ छे तो निर्युक्ति केम न माने? वली ॥'असंखिज्झाओ निज्जुत्तिओ' एहवा समवायांग प्रमुखमां पाठ ठाम ठाम छे. उपधिमान गणणादिक के० उपधिनुं प्रमाण, तथा गणती इत्यादिक, किहां लहे के० क्यां पामे ? विणु मार्ग विचार के० निर्युक्ति विना जिनशासनना मार्गनो विचार, एटले ए भाव जे निर्युक्ति विना उपधिमान ते एवडा महोटा पहोला ते क्यां पामीए ? तथा गणतीए केटलां राखवां ? इत्यादिक घणी वातो मार्गनीछे; ते सर्व निर्युक्ति विना न लाभे. इति. एटले एवुं देखाडयुं जे, लांवा लांवा रजोहरण राखे छे, तथा मुगटी पहेरे छे; इत्यादिक कीआ सूत्र उपर करे छे ? मुखे मुहपत्ति बांधी मार्गमां हींडे छे ते कीआ सूत्र उपर बांधे छे? उलटुं सिद्धांतमां तो न बांधवी जणाय छे. जे माटे श्री गौतमजी मृगा पुत्रने जोवा गया ते वारे राणीए कह्युं के मुख बांधो. जो बांध्युं होय तो बांधो एम शुं करवा कहे ? वली मूर्खोने पूछीए छैए जे नाक उघाडुं राखो छो तेमां वायुकायनो घात थाय छे.ते वारे कहे छे जे दशवैकालिके ॥ मूहेण वा ॥ एवो पाठ छे. ॥पण नकेण वा ॥ एहवो पाठ नथी. ते माटे मुखने वायरे वायुकाय हणाय पण नाकने वायरे न हणाय. एम कहे छे तेने कहीए जे, मुख कह्युं तेमां नाक आवी गयुं. नहींतर मृगाराणीए कह्युं जे मुख बांधो; तेवारे नाक बांधो कां न कह्युं ? काम तो नाशिकानुंछे. दुर्गंध आवे माटे कह्युं छे. ते माटे दशवैकालिक मध्ये पण मुख कहेतां नाशिका आवी गइ जाणवी. हवे ते कुमतिने निर्युक्तिनो जवाब देवानुं ठेकाणुं रह्युं नहीं; ते वारे बूडतो फेणना बाचका भरे ए न्याये वोल्यो के निर्युक्ति मानुं तो खरी. सूत्रमां कही ते ना केम कहेवाय ? पण ते विच्छेद गइ एम कहे छे ॥ १८ ॥ तेहने उत्तर वालवा गाथा कहे छे.

जो निर्युक्ति गइ कुमति कहे ॥ सूत्र गयां नहीं केम ॥
जेह वाचनाए आव्युं ते सर्व ॥ माने तो होए खेम ॥ स० ॥ १९ ॥

अर्थ—जो निर्युक्ति गइ एम कुमति कहे छे तेहने उत्तर कहे छे, तो सूत्र गयां नहि केम के० ते वारे सूत्र गयां केम न कहे ? जे माटे ठाणांगसूत्रमां अंतगड सूत्र तथा अनुत्तरोववाइ तथा प्रश्नव्याकरण–ए त्रणनां अध्ययन कह्यां छे. ते हमणांनी वाचनाए नथी जणाता. वली श्री समवायांगसूत्रमां प्रश्नव्याकरणनी हुंडी कही छे; तेमांनुं प्रश्नव्याकरण मध्ये आज कांइ नथी. ते माटे जेह वाचनाए आव्युं के० जे पुस्तकारूढ वाचनाए जे गुरु परंपराए आव्यां सूत्र, ते मानीए तो निर्युक्ति पहेलां मानीए. चारित्र क्रियाना सर्व विशेष भाव निर्युक्ति मध्ये छे, ते माटे वाचनाए आव्युं ते मानीए तो खेम के० कुशल वर्ते. एटले आत्माने हित थाय ॥ १९ ॥

ए रीते शास्त्र वाते समजाव्या जाण पुरुष होशे ते समजशे; बाकी तो जेहवुं थाय तेहवुं कहे छे.

आंधा आगल दरपण दाखवो ॥ बहेरा आगल गीत ॥
मूरख आगेरे कहेवुं युक्तिनुं ॥ ए सवि एकज रीत ॥ स० ॥२०॥

अर्थ–आंधलाना मुख आगल दर्पण देखाडवुं, 'बहेराना मुख आगल गीत गान करवुं अने मूर्खना आगल युक्ति कहीने समजाववुं. ए सर्व एकज रीति जाणवी ॥ २० ॥

मारग अरथीरे पण जे जीवछे ॥ भद्रक अतिहि विनीत ॥
तेहने ए हितशीख सोहामणी॥ वली जे सुनय अधीत॥स०॥२१॥

अर्थ–पण जे मार्गना अर्थी लोक छे.एटले जे लोक जाणे छे जे शुद्ध मार्ग समजीए. वली जे लोक भद्रक छे एटले कुवासनाए वासित नथी, वली अति विनीत छे, तेहने ए सोहामणी के० मनोहर हितशिक्षा छे. वली जे सुनय के० भले नये करी भण्या छे; एटले भद्रक अथवा समजु छे तेहने माटे कह्युं छे पण अर्द्धदग्धने माटे नथी कह्युं ॥ इति गाथार्थ

प्रवचनसाखेरे एम ए भाषिया ॥ विगते अरथ विचार ॥
तुज आगमनीरे ग्रहिए परंपरा ॥ लहिए जग जयकार ॥ स०॥२२॥

अर्थ–प्रवचन के० सिद्धांत साखे एम भाख्या, विगते के० प्रगटपणे अर्थना विचार, तमारी आगमनी परंपराए ग्रहीए, तो जगतने विषे जयकार पामीए ॥ २२ ॥

गुण तुज सघलारे प्रभु कोण गणी शके ॥ आणा गुण लव एक॥
एम में थुणतांरे समकित दृढ करयुं॥ राखी आगम टेक ॥स०॥२३॥

अर्थ–हे प्रभु ! तमारा सघला गुणो कोण प्राणी गणी शके? अनंता छे माटे न गणाय' पण तमारी आणा कबुल करवी, तद्रूप जे गुण–तेहनो जे लेश, ते स्तवतां थकां में समकित दृढ कर्युं. एटले कदापि काले चलुं नहीं. एम करीने आगमनी टेक राखी ॥ इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

आंणा ताहरीरे जो में शिरधरी॥तो शुं कुमतिनुं जोर ॥
तिहां नवि पसरे रे बल विषधरतणुं॥ किंगारे ज्यहां मोर ॥स०।२४।॥

अर्थ–तमारी आज्ञा जो में मस्तके धरी तो कुमति कदाग्रहीनुं शुं जोर चाले? ते दृष्टांते दृढ करे छे त्यां विषधर जे सर्प–तेनुं बल विस्तार न पामे के ज्यां मोर किंगारे के० केकारे शब्द करे ॥ इति गाथार्थ ॥ २४ ॥

पवित्र करीजेरे जीहा तुज गुणे ॥ शिर धरीए तुज आंण ॥
दिलथी कहीएरे प्रभु न विसारीए ॥ लहीए सुजश कल्याण ॥ स० ॥२५॥

अर्थ–तमारा गुण गाइने जिव्हा पवित्र करीए अने मस्तके तमारी आज्ञा धरीए.

एटले आज्ञाए मस्तक पवित्र करे. दिलथी प्रभुने कदीए विसारीए नहीं. ए रीते हृदय पवित्र करीए. एम करतां सुजश कल्याण पामीए एटले भला यशरूप कल्याण पामीए. एमां कर्ताए पोतानुं जशोविजय एवुं जे नाम–ते पण सूचव्युं ॥ २५ ॥

कलश ॥ राग धनाश्री ॥

वर्त्तमान शासननो स्वामी ॥ चामीकरसम देहोजी ॥
वीरजिनेश्वर में एम थुणिओ ॥ मन धरी धर्म सनेहोजी ॥
एह तवन जे भणशे गणशे ॥ तस घर मंगलमालाजी ॥
समकितभाण होशे घट तेहने ॥ परगट झाकझमालाजी ॥ १ ॥

अर्थ–वर्त्तमान शासनना धणी श्री वीरस्वामी, चामीकर के० सोना सरखी जेमनी काया छे एवा श्री वीरस्वामी, जिनेश्वर के० सामान्य केवलीमां ईश्वर एटले तीर्थंकर प्रते स्तव्यो. मनमां धर्मस्नेह आणी. भक्ति माटे एक वचन छे. ए स्तवन जे प्राणी भणशे भणीने गणशे; तेहने घरमां मंगलीकनी माला थशे. तेहना घटने विषे प्रगटपणे झाकझमाल करतो थको सम्यक्त्वरूप सूर्य प्रगट थाशे ॥ १ ॥

अरथ एहना छे अति सूक्षम ॥ ते धारो गुरु पामेजी ॥
गुरुनी सेवा करतां लहीए ॥ अनुभव निज अभ्यासेजी ॥
जेह बहुश्रुत गुरु गीतारथ ॥ आगमना अनुसारीजी ॥
तेहने पूछी संशय टालो ॥ ए हितशिख छे सारीजी ॥ २ ॥

अर्थ–एहना अर्थ घणा सूक्ष्म छे. ते गुरु पासे आम्नाय धारी जोव्यो. गुरुनी सेवा करतां पामीए. शुं पामीए ? ते कहे छे. अनुभव पामीए. शुं करतां ? ते कहे छे. ए तवननो नित्य अभ्यास करतां. जे बहुश्रुत होय, गीतार्थ होय आगमना अनुसारी होय, एटले पापभीरु, सत्यभाषी होय; तेहने पूछी संशय टालो. ए अमारी रूडी हितशिक्षा छे. इति गाथार्थ ॥ २ ॥

इंदलपुरमां रहिय चोमासुं ॥ धर्मध्यान सुख पायाजी ॥
संवत सत्तर तेत्रीशा वरसे ॥ विजयदशमी मन भायाजी ॥
श्री विजयप्रभसूरि सवाया ॥ विजयरतन युवरायाजी ॥
तस राजे भविजनहित काजे ॥ एम में जिनगुण गायाजी ॥३॥

अर्थ–इंदलपुर अहम्मदावादनुं परु, त्यां चोमासुं रहीने धर्मध्याननुं घणुं सुख पाम्या. संवत १७३३ मे वर्षे विजयदशमी ते आसो सुद दशमे मन भाया के० मनने विषे भाव्या.

हवे कवि पोताना आचार्यनी प्रशस्ति कहे छे. श्रीविजयप्रभसूरि तपगच्छनायक सवाइ थया. तेहने पाटे विजयरत्नसूरि युवराज पदे वर्त्तता एटले विजयप्रभसूरि थकां आचार्यपदे वर्त्तता भविजनना हितने काजे एम में जिनगुण गाया. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

हवे पोतानी प्रशस्ति कहे छे.

श्री कल्याणविजय वर वाचक ॥ तपगच्छ गयणदिणिंदाजी ॥
तास शिष्य श्रीलाभविजय बुध ॥ भविजनकैरवचंदाजी ॥
तास शिष्य श्रीजितविजय बुध ॥ श्री नयविजय मुणिंदाजी ॥
वाचक जशविजये तस शिष्ये ॥ थुणीया वीरजिणंदाजी ॥ ४ ॥

अर्थ—श्री कल्याणविजय उपाध्याय तपगच्छरूप गगनने विषे दिनेंद्र के० सूर्यसरखा तेओना शिष्य श्री लाभविजय थया. बुध के० पंडित थया. भव्यप्राणीरूप, कैरव के० चंद्र विकासी कमल—तेहने विषे चंद्रमा सरखा. तेमना शिष्य बे थया. एक श्री जितविजय पंडित अने बीजा श्री नयविजय—ते मुनिमां इंद्र सरखा. तेमना शिष्य वाचक उपाध्याय यशोविजय थया. तेमणे वीर जिनेंद्र थुण्या ॥ ४ ॥

दोसीमूलासुत सुविवेकी ॥ दोसी मेघा हेतेजी ॥
एह तवन में कीधुं सुंदर ॥ सिद्धांत अक्षर संकेतजी ॥
ए जिनगुण सुरतरुनो परिमल ॥ अनुभव तो ते लेशेजी ॥
भमर परे जे अरथी होइने ॥ गुरुआणा शिर वहेशेजी ॥ ५ ॥

अर्थ—दोसी मूलानो पुत्र घणो विवेकी जे दोसी मेघो तेने माटे कर्युं. ए सुंदर तवन एटले मेघजी दोसी ढुंढीआ हता ते उपाध्यायजीए प्रतिबोध्याने शुद्ध श्रद्धा करावी—सिद्धांतने अक्षर संकेते. ए जिनेश्वरना गुणरूप सुरतरु के० कल्पवृक्ष तेहनो परिमल एटले सुगंधतानोज अनुभव ते लेशे; के जे प्राणी भमरानी पेरे अरथी थइने गुरुनी आज्ञा मस्तके वहेशे ॥ इति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥

॥ इति महोपाध्यायश्रीजशोविजयविरचितं श्रीवीरजिनस्तवनं संपूर्णतामगमदिति ॥

॥ अथ प्रशस्ति ॥

सूरिर्विजयदेवाख्यस्तपोगच्छाधिनायकः ॥ विख्यातस्त्रिजगत्यासीद्धियया गुरुसन्निभः ॥ ॥ १ ॥ तस्य पट्टोदयाद्रौ श्रीविजयप्रभसूरिराट् ॥ आदित्य इव तेजस्वी सिंहवच्च पराक्रमी ॥ ॥२॥ यः सत्यविजयस्तस्यांतेवासीत्यभिभाषकः ॥ क्रियोद्धारः कृतो येन प्राप्यानुज्ञां गुरोरपि ॥ ३ ॥ विनेयस्तस्य कर्पूरविजयस्तात्विकः सुधीः ॥ कीर्तिः कर्पूरवद्यस्य प्राप्त सर्वत्र विश्रुता ॥ ४ ॥ क्षमादिगुणसंदर्भः क्षमाविजय इत्यभूत् ॥ तस्य शिष्यो विनी-

ताता, शिष्यानेकसमन्वितः ॥ ५ ॥ शब्दशास्त्रादिशास्त्राणां, वेत्ता शिष्यगणान्वितः ॥ जिनादिविजयाद्दानस्तस्य शिष्यः सुरूपभाक् ॥ ६ ॥ कर्मप्रकृतिप्रभृतिशास्त्रतत्त्वविचारवित् ॥ उत्तमाद्विजयस्तस्य, शिष्योऽभूद् भूरिशिष्यकः ॥ ७ ॥ तस्य पादयुगांभोजभृंगतुल्येन चारुणा ॥ पद्मविजयशिष्येण, स्वपरानुग्रहाय वै ॥ ८ ॥ नंदो वेदस्तथा नागचंद्राविति च वत्सरे ॥ वसंतपंचमीघस्रे, विक्रमाद् बुधवासरे ॥ ९ ॥ मया वीरस्तवस्यायं, कृतो बालावबोधकः ॥ गुरुप्रसादतः सम्यग्, गंभीरस्याल्पबुद्धिना ॥ १० ॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥ श्रीविजय जिनेंद्राख्यसूरे राज्ये कृतोद्यमः ॥ स्थित्वा गच्छाधिनाथस्य, राजधन्यपुरे वरे ॥ ११ ॥ यत्किंचिद्वितथं प्रोक्तं, मतिमांद्यादजानता ॥ तत्सर्वं विबुधैः शोध्यं, विधाय मयि सत्कृपां ॥१२॥ वीरस्य शासनं यावद्, वर्तते विश्वदीपकं ॥ तावद्बालावबोधो यं, तिष्ठताच्छुद्धवासनः ॥१३॥

॥ इति ढुंढकमतनिराकरणरूपा श्रीवीरजिनस्तुतिः संपूर्णा ग्रंथाग्रंथ ८३८ अक्षर ८ समग्र बालावबोध मीलने ग्रंथाग्रंथ ३०७२ अक्षर १८ सूत्र ग्रंथाग्रंथ २२८ अक्षर ५. उभयोर्मिलने ग्रंथाग्रंथ ३३०७ अक्षर–२३–

॥ इति महोपाध्यायश्रीमद्यशोविजयगणिविरचितं श्रीमहावीरजिनस्तुतिगर्भितं ढुंढकमतनिराकरणरूपं सार्द्धशतगाथास्तवनम् ॥

॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

॥ श्रीमद्विजयानन्द सूरीश्वर पादपद्मेभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभ.

॥ प्रथम अर्थकर्तानुं मंगलाचरण ॥

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम् ॥
स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै ॥ १ ॥

॥ हवे अर्थकर्तानी सूचना ॥

आ स्तवन मांहेली गाथाओना अर्थ अन्वये करी कहीशुं पण पाधरो नहीं कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धिए विचारी जोशो तो खरो अर्थ बेसशे.

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहांराखी ॥ ए देशी ॥

श्रीसीमंधर साहिब आगें । वीनतडी एक कीजें ॥
मारग शुद्ध मयाकरी मुझने । मोहन मूरति दीजेंरे ॥
जिनजी, वीनतडी अवधारो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

अर्थ—श्री के० चोत्रीश अतिशय अने आठ प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथा केवल ज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरी युक्त एहवा सीमंधर नामे साहिब ते आगल एकज शुद्ध मार्ग ओलखवारूप अद्वितीय वीनति करीयें ते माहरा ऊपर मया के० कृपा करीने शुद्ध मार्ग जे रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग अथवा अनेक दर्शनी वितत्थसंवादी तथा विपरीत भाषण करनारा स्वदर्शनीने साचा मानवा ते अशुद्धमार्ग कहीयें ते सर्व उवेखीने स्याद्वादशैलीयें जैनमार्ग ओलखवो ते शुद्ध मार्ग कहीयें ते शुद्ध मार्ग सेवी अनेक भव्यजीव स्वसंपदा भोगी थया एहवो शुद्ध मार्ग ते हे मोहनमूरति के० वल्लभमूरति ! मुझने दीजे के० मुझने द्यो आपो ए वीनती करीयें छैयें माटे हे रागद्वेषना जीतणहार जिनजी ! ते अमारी वीनती अवधारो के० केवलज्ञाने करी जाणो ॥१॥

चाले सूत्र विरुद्धाचारें । भाषे सूत्र विरुद्ध ॥ एक कहे अमे
मारग राखूं । ते केम मानूं शुद्धरे ॥ जिन० वी० २ ॥

अर्थ—कोइक प्राणी सूत्रथी विरुद्ध आचारे चाले छे, तथा भाखे के० परुपणा करे छे ते पण सूत्र विरुद्ध, वली लोकने कहेशे जे अमे मार्ग राखीयें छैयें, जो अमे छैयें तो मार्ग चाले छे एहवुं बोले छे माटे हे प्रभु ते वातने अमे शुद्ध केम करी मानियें. इहां सूत्र ते शुं? ते लखेछे.–११ अंग, १२ उपांग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूलसूत्र, १ नंदी, १ अनुयोगद्वार, एवं ४५ आगम जाणवा. यतः–"एक्कारस तहा बारस। अंगुवंगाणि दसपयन्नाणी ॥ छच्छेया चउमूला। नंदीअणुओगपणयाला ॥ १ ॥" तथा तेनी भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, वृत्ति अने मूलसूत्र ए पंचांगीने सम्मत जे पूर्वाचार्य प्रणीत धर्मरत्नादि प्रकरण तथा जे नंदीसूत्रगत पयन्ना अने हरिभद्रसूरि उमास्वाति वाचक प्रमुख कृत ग्रंथादिक ते सर्व सूत्र मांहेज आवे, केमके दुर्भिक्ष पडया ते काले सूत्र विसरया हता ते मांहे जेटला सांभरया ते सूत्र लख्या अने जे अर्थ सांभरया तेहना प्रकरण प्रमुख बांध्या ते पण सूत्रानुजायी होवाथी सूत्रज कहीयें तो तेथी विरुद्ध करे छे तथा बोले छे तेवाने शुद्ध केम मानुं ॥ २ ॥

आलंबन कूडां देखाडी । मुगध लोकने पाडे ॥ आणा भंग तिलक ते कालुं । थापे आप निलाडेरे ॥ जिन० वी० ३॥

अर्थ—हवे ते विपरीत चालतां कोइक कहेशे जे आम कां चालो छो तेहने पाछो जवाब आपतां कूडां के० खोटां आलंबन देखाडे जे आ पंचमकाले संघयण धृति प्रमुख पूर्व पुरुष जेहवा किहां छे एम कहिने मुगध के० मूर्ख लोकने पाडे के० अज्ञान मार्गे पाडे छे एहवा पुरुष ते आणा के० जिनाज्ञा तेहनो जे भंग तद्रूप जे कालुं तिलक ते पोतानें कपालें थापे छे एटले जिनाज्ञा लोपे छे. ते वारे कोइक बोल्यो जे आज्ञा भंगनुं दूषण दीधुं ते खरुं पण सर्वथा विधि तो कोइ करी शके नहीं ॥ ३ ॥

विधि जोतां कलियुगमां होवे । तिरथनो उच्छेद ॥ जिम चाले तिम चलवे जइयें । एह धरे मति भेदरे ॥ जिन० वी० ४ ॥

अर्थ—अने विधि जोतां तो कलियुग के० पांचमो आरो जेने अन्यतिर्थी कलियुग कहे छे अने जैन पांचमो आरो कहे छे ते कलियुगमां तीर्थनो उच्छेद थाय केमके तमे अविधिनी तो ना कहो छो अने विधियें तो थाय नहीं तेथी तिर्थ विच्छेद जाय माटे जेम चाले तेम चलाव्या जैयें एटले झाझी चापाचिपी करीयें नहीं नरम गरम चलाचियें ए रीते कोइक पोतानी मतिनो भेद धरे छे ॥ ४ ॥

इम भाषि ते मारग लोपे । सूत्रक्रिया सवि पीसी ॥ आचरणा शुद्धि आचरिये । जोइ योगनी वीसीरे ॥ जिन० वी० ५ ॥

अर्थ—एहवां वचन बोलीने जे विधिमार्गने लोपे छे ते प्राणीये सूत्रक्रिया सर्व पी-

सी के० दली नाखी ते माटे आचरणा के० क्रिया ते शुद्ध आदरीये ते श्री हरिभद्रसूरियें योगनी वीस वीसी करेली छे ते मांहेली सत्तरमी वीसी मांहे कह्युं छे. यतः–"तित्थस्सुच्छेआइ, विणालंवणं जस्स एमेव। सुत्तकिरियाइनासो, एसो असमंजसविहाणो ॥१" ॥५॥

पंचमे आरे जिम विष मारे । अविधि दोष तिम लागे ॥ इम उपदेश पदादिक देखी । विधि रसिओ जन जागेरे ॥ जिन० वी० ॥६॥

अर्थ—पांचमा आरामांहे जेम विष मारे छे तेम पांचमा आरामांहे अविधि दोष पण लागे छे एटले ए भाव जे पांचमा आरामां पांच विष कह्या छे ते पण जीवने असत्य प्रवृत्तिना हेतु छे. यतः–" १ दुस्सम २ हुंडासप्पिणि, ३ दाहिणपासंमि ४ भासगहजोओ। ५ तह कण्हपक्खीजीवा, पंचविसं पंचमे अरए ॥१॥" ए गाथा सूयणा सीत्तरीनी छे ए जिम पांच विष कह्यां ते मारे छे तिम पांचमे आरे जे अविधि दोष लागे ते पण मारेज छे. अथवा चोथे आरे जिम विष खाधुं मारे तेम पांचमे आरे पण विष खाधुं मारे, तेम ज अविधि दोप पण जेम चोथा आरामांहे लागे तेम पांचमे आरे पण लागे. यतः–"मारेइ विसं भुत्तं, जहा चउत्थारए तहा दुसमंमि। तह अविहिदोपजणीओ, धम्मोवि य दुग्गइहेऊ॥१॥" इति हितोपदेशमालायां एम उपदेशपदादिक ग्रंथ मांहे पाठ देखीने विधिनो रसियो जन के० लोक होय ते जागे के० विधि करवाने सावधान थाय ॥ ६ ॥

कोइ कहे जिम वहु जन चाले। तिम चलियें सी चर्चा॥ मारग महाजन चालें भाष्यो। तेहमां लहीयें अर्चारे ॥ जिन० वी० ७ ॥

अर्थ—वली केटलाक तो एम कहे छे के जेम वहु जन के० घणा लोक चाले ते रीते चालीयें केमके जे घणा करता हशे ते रुडुंज करता हशे तो झाझी चर्चा शी करो छो अमे पोतानी मतियें करता हइयें तो भले चर्चा करो कारण के मार्ग तो तेहनेज कहीयें के जे मार्गे महाजन के० महोटा लोकना समुदाय चाले छे तेहनी चालें चालीए तेने मार्ग कहीयें इम भाष्यो के० ग्रंथ मांहे कह्यो छे. यतः–"महाजनो येन गतः सपंथा" इति ॥ तो ते महाजननी चालें चालतां थकां लहीयें के० पामीयें अर्चा के० पूजा इति ॥ ७ ॥

ए पण वोल मृषा मन धरीयें। वहुजन मत आदरतां ॥ छेह न आवे वहुल अनारय। मिथ्या मतमां फिरतांरे॥ जिन० वी० ८ ॥

अर्थ—हवे उत्तर आपे छे के ए वोल जे कह्यो ते पण मृषा के० जूठो चित्तमांहे धारीये तेहनो हेतु कहे छे एटले वहु जन मत आदरतां के० घणा लोकनो मत आदरतां तो वहुल अनारय के० घणा जनतो अनार्य छे तेहनो छेह के० पार पामीयें नहीं मिथ्या मत मांहे फिरतां के० अनार्य छे ते सर्व मिथ्यामति छे माटे ते मांहे भमतां पार न पामीयें इति भाव ॥ ८ ॥

थोडा आर्य अनार्य जनथी । जैन आर्यमां थोडा ॥ तेमां पण परि-
णतजन थोडा । श्रमण अलप बहु मो(मुं)डारे ॥ जिन० वी० ९ ॥

अर्थ—थोडा आर्य अनार्य जनथी के० अनार्य लोकथी आर्य लोक थोडा छे केमके बत्रीस हजार देशमांहे आर्य देश तो साडीपचवीसज छे ते वली आर्य देशमां पण जैन नाम धरावे एहवा लोक थोडा छे वली जैन नाम धरावे तेमांहे पण परिणत के० जैन शासनाये परिणम्या होय एहवा श्रद्धावंत स्याद्वादशैलीना जाण थोडा वली ते परिणतजन मांहे पण श्रमण के० मुनिराज ते अलप के० घणा थोडा अने बहु मो(मुं)डा के० मात्र मस्तक मुंडन कराव्यु पण गुण विनाना एहवा लोक बहु जाणवा ॥९॥

भद्रबाहु गुरु वदन वचन ए । आवश्यकमां लहियें ॥ आणा शु-
द्ध महाजन जाणी । तेहनी संगे रहियेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥१० ॥

अर्थ—भद्रबाहुस्वामीना मुखनुं ए वक्ष्यमाण वचन छे ते आवश्यकसूत्रमांहे कह्युं छे तिहांथी लहियें के० पामीयें जे आज्ञा शुद्ध तेहिज महाजन एटले जिनाज्ञा पाले तेहिज संघ एहवुं जाणीने तेवा महाजननी पासें वसीयें. गाथा—"एगो य साहु एगा, य साहुणी सावओ य सड्ढी वा । आणाजुत्तो संघो, सेसा पुण अट्ठिसंघाओ ॥ १ ॥" इति आवश्यक वचनात् ॥१०॥

अज्ञानी नवि होवे महाजन । जो पण चलवे टोलुं ॥ धर्मदासग-
णी वचन विचारी । मन नवि कीजे भोलुंरे ॥ जिन० वी० ११ ॥

अर्थ—पण जे अज्ञानीनो समुदाय होय अने जो ते टोलुं के० गच्छने चलावे तोहे पण तेहने महाजन न कहीयें एहवुं धर्मदासगणीनुं वचन विचारीने मनने भोलुं न करीयें एटले अज्ञाने धर्माधर्म न करीयें. यतः—"जं जयइ अगीयत्थो" इति वचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानी निज छंदे चाले । तस निश्रायें विहारी ॥ अज्ञानी जे
गच्छने चलवे । ते तो अनंत संसारीरे ॥ जिन० वी० १२ ॥

अर्थ—जे अज्ञानी पुरुष ते निज छंदे के० पोताना अभिप्राये चाले तथा ते अज्ञानीनी निश्राये जे विहारी के० विचरे ते पण अज्ञानीज होय तो एहवो अज्ञानी अगीतार्थ थको जे गच्छने चलावे ते तो अनंत संसारी जाणवो. यतः—"जं जयइ अगीयत्थो जं, च अगीय-त्थनिस्सिओ जयइ । वट्टावेइय गच्छं, अणंत संसारिओ होइ ॥१॥" इत्युपदेशमालायां ॥१२॥

खंड खंड पंडित जे होवे । ते नवि कहीयें नाणी ॥ निश्चित समय
लहे ते नाणी । संमतिनी सहिनाणीरे ॥ जिन० वी० १३ ॥

अर्थ—जे खंड खंड पंडित के० ग्रंथ ग्रंथ मांहेथी थोडी थोडी वात शीखीने पंडितपणुं जेहने होय ते गुरुपने ज्ञानी न कहीयें, यतः—" जो सुत्तमत्थमुभयं, समहीजंते गुरुकम्मविहिणो । नो भन्नइ सो नाणी, अट्ठमयट्ठाणमूढमणो ॥ १ ॥" इति आवश्यकमाहाभाष्ये । माटे निश्चित समय के० निश्चें सिद्धांतनी वातने लहे के० जाणे ते नाणी के० ज्ञानी कहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चय व्यवहार सहित स्याद्वादशैलीयें ज्ञान थयुं होय ते सिद्धांत निश्चितज्ञान कहियें ए वात संमतिनी के० संमतितर्कशास्त्रनी सहिनाणी के० निसानी छे. गाथा—" जो निच्छय समयन्नू, स व्ववहारसमयमासज्ज । गुरुपारतंतलद्धह, नयनिउणोगाहणा कुसलो ॥१॥" इति ॥ १३ ॥

जिम जिम बहुश्रुत बहुजन संमत । बहु शिष्यें परवरिओ ॥ तिम तिम जिनशासननो वयरी । जो नवि निश्चय दरीओरे ॥ जिन० वी० १४ ॥

अर्थ—जिम जिम बहुश्रुत के० घणो भण्यो अने बहु जन संमत के० घणा लोकने मानवा योग्य थयो वली बहु शिष्यें परवरिओ के० घणा चेला चांटि कर्यां तिम तिम जिनशासननो वयरी के० सिद्धांतनो शत्रु जाणवो जो निश्चय ज्ञाननो दरिओ के० समुद्र न होय तो. अने जे निश्चें ज्ञानी होय तेहने तो सर्व लेखे छे. यदुक्तं—"जह जह बहुसुओ संमओ अ, सीसगणसंपरिवुडो य । अविणिच्छिओ अ समए, तह तह सिद्धंतपडिणीओ ॥१॥ इत्युपदेशमालायां तथा पंचवस्तुके पि च (तथा संमतावपि) ॥ १४ ॥

कोइ कहे लोचादिक कष्टें । मारग भिक्षावृत्ति ॥ ते मिथ्या नावि मारग होवे । जनमननी अनुवृत्तिरे ॥ जिन० वी० १५ ॥

अर्थ—केटलाएक तो एमज कहेछे जे लोचादिक कष्टें के० लोच कराववा उघाडे पगे तथा उघाडे माथें हिंडवुं इत्यादिक कष्ट करवे करीने मारग के० मुनिमारग जाणवो वली भिक्षायें वृत्ति के० आजीविका करवी ते मार्ग छे एहवुं जे कहे छे ते मिथ्या के० खोटुं कहे छे ए रीते मार्ग न होय केमके आत्मार्थ विना जन मननी अनुवृत्ति के० लोकना मननी अनुजायीये प्रवर्त्ततां मार्ग न होय इति भाव. गाथा—" कहंकरेइ तिव्वं, धम्मं धारेइ जणाणुवित्तीए । सो पवयणमग्गस्स, वेरीभूओ अहाछंदो ॥ १ ॥" ॥१५ ॥

जो कष्टे मुनि मारग पावे । बलद थाए तो सारो ॥ भार वहे जे तावडे भमतो । खमतो गाढ प्रहारोरे ॥ जिन० वी० १६ ॥

अर्थ—जो ए रीते प्रभुनी आज्ञा विना कष्ट करतां मुनिनो मारग पामे तो तिर्यंच बलद तथा उपलक्षणथी बीजा ढोर पण लइयें ते ढोरज सारा के० भला थाय केमके बलद ऊपर जेटलो भार भरीयें तेटलो सुखे दुखे पण वहे निरवाह करे वली तावडे के० तडके भमतो थको गाढ के० आकरा कोरडा पोंणा प्रमुखना प्रहारने खमतो के० सहन करे छे ॥१६॥

लहे पाप अनुबंधी पापें । बलहरणी जन भिक्षा ॥ पूरव भव व्रतखंडन फल ए । पंच वस्तुनी शिक्षारे ॥ जिन० वी० १७ ॥

अर्थ—माटे ते प्राणी वर्त्तमानकाले पण अशुभ अने अनागत काले पण अशुभ ते पापानुबंधी पाप कहीये तेणे करीने लहे के० पामे बलहरणी के० वीर्यने हणे एहवी जन भिक्षा के० लोकनी भिक्षा पामे एटले संयम योग साधी न शके ते बलहरणी भिक्षा कहीयें ए पूरव भव के० पाछला भवे व्रतखंडन कर्या होय तेहनां फल छे ते पापानुबंधी पापे बलहरणी भिक्षा पामें एम पंचवस्तु ग्रंथ श्रीहरिभद्रसूरि कृत छे ते मांहे कह्युं छे. गाथा—"चारित्तविहीणस्स, अभिसंगपरस्स अ कलुसभावस्स । अण्णाणिणो य जा पुण, सा पडिसिद्धा जिणवरेहि ॥ १ ॥ भिक्खं अडंतिआरंभसंगया अपरिसुद्धपरिणामा । दीणा संसारफलं, पावाउ ज्जुत्तमेयं तु ॥ २ ॥ इसि काऊण सुहं, निवाडीया जेहि दुक्खगहणंमि । मायाए केइ पाणी, तेसि एयारिसं च होइ ॥ ३ ॥ चइऊण घरावासं, तस्स फलं चेव मोहपरतंता । न गिहि न पव्वइया, संसारपव्वड्डगा भणिया ॥ ४ ॥" १७ ॥

कोइ कहे अमें लिंगे तरशुं । जैन लिंग छे वारु ॥ ते मिथ्या नावि गुणविणुं तरियें । भुजाविण न तरे तारुरे ॥ जिन० वी० १८ ॥

अर्थ—हवे कोइक कहेशे जे द्रव्यलिंग तेहिज प्रमाण छे एटले लिंग जे ओघो मुहपती तेथी तरी संसार पार पामीशुं केमके जैननो लिंग ते वारु के० सुंदर छे तेने गुरु उत्तर कहे छे के ते मिथ्या के० खोटुं छे कारण के गुण विना एकलुं मात्र लिंग धारण करेथी तराय नहीं तेहनो दृष्टांतः—जेम तारु पुरुष ते भुजा विना नदी प्रमुख तरी शके नहीं ॥ यदुक्तं—वंदनावश्यके शिष्य वचनं—"सुविहिय दुविहीयं वा, नाहं जाणामि यं खु छउमत्थो । लिंगं तु पूययामि, तिगरण सुद्धेण भावेण ॥१॥ प्रत्युत्तरमाह—जइ ते लिंगपमाणं, वंदाहि निन्हए तुमे सव्वे । एए वंदमाणस्स, लिंगमवि अप्पमाणं ते ॥२॥" इत्यादि ॥१८॥

कुटलिंग जिम प्रगट विडंबक । जाणी नमतां दोष ॥ निद्धंद्धस जाणीने नमतां । तिमज कह्यो तस पोषरे ॥ जिन० वी० १९ ॥

अर्थ—जेम विडंबक जे नाटकीआ प्रमुख तेहनो जे कुटलिंग के० खोटो वेष ते प्रगट पणे जाणीनें एटले कोइक नाटकीयो साधुनो वेष लाव्यो ते खोटो वेष छे एम जाणतां थकां जो तेहने नमीयें तो दोष लागे तथा लोक हांसी प्रमुख पण करे ते माटे निद्धंद्धस जे प्रवचनोपघातक निरपेक्षक केवल लिंगधारी पासत्थादिक जाणीने तेहने नमीयें तो तिमज के० ते पूर्वोक्त नाटकीया साधुनी परे तस पोष के० ते दोषनो पोष कह्यो छे यदुक्तं—"जह वेलंबगलिंगं, जाणंतस्स नमउ हवइ दोसो । निद्धंद्धसुत्ति नाऊण, वंदमाणे धुवं दोसो ॥ १ ॥" इति वंदनावश्यके ॥ ए रीते आचार्यें लिंग अप्रमाण कह्युं ॥ १९ ॥

शिष्य कहे जिम जिन प्रतिमाने । जिनवर थापी नमियें ॥ साधुवेस थापी अतिसुंदर । तिम असाधुने नमियेंरे ॥ जिन० वी० २० ॥

अर्थ—तेवारे शिष्य बोल्यो जे जिम जिनेश्वरनी प्रतिमामांहे ज्ञानादिक गुण नथी अने तेहने तीर्थंकरनी बुद्धियें नमस्कार करतां महोटो लाभ थाय छे महोटी निर्ज्जरा थाय छे. यथा आवश्यके शिष्य वचनं-" तित्थयरगुणा पडिमासु नत्थि निस्संसयं वियाणंतो । तित्थयरुत्ति नमंतो, सो पावइ निज्जरं विउलं ॥१॥" इति ॥ तेम अति सुंदर एहवो साधु वेष थापी असाधुने पण नमियें एटले गुण विनानी जिम जिन प्रतिमा छे तेहने नमतां निर्ज्जरा थाय तेम पासत्थादिकमां जो साधुनो गुण नथी तो पण साधुनो वेप तो छे माटे जो पोतानुं मन शुद्ध छे तो तेहवाने नमतां लाभ थाय कारण के लाभ अथवा खोट ते तो पोताना अध्यवसाय आश्री छे. उक्तंच-"लिंगं जिणपन्नत्तं, एअं नमंतस्स निज्जरा विउला । जइवि गुणविप्पहिणं, वंदइ अज्झप्पसोहिए ॥ १ ॥" इति शिष्य वचनं ॥ २० ॥

भद्रबाहु गुरु बोले प्रतिमा । गुणवंती नहीं दुष्ट ॥ लिंग मांहे बे वानां दीसे । ते तुं मान अदुष्टरे ॥ जिन० वी० २१ ॥

अर्थ—हवे आचार्य उत्तर आपे छे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एम कहे छे के प्रतिमा गुणवंती नथी तेम दुष्ट पण नथी माटे तेहने गुणवंती मानियें एटले अदुष्टपणानो आरोप करियें तो थाय अने लिंगमांहे तो गुण तथा दोष ए बे वानां देखाय छे ते तुं हे अदुष्ट के० गुणवंत शिष्य मान. इति गाथार्थ । हवे एनो भावार्थ कहे छे जे जिनप्रतिमामांहे गुण नथी तेम दोप पण नथी माटे पोताना अध्यवसायनी शुद्धियें नमतां लाभ थाय, इहां कोइ कहेशे जे परिणामे लाभ थाय छे तेवारे प्रतिमानुं शुं काम छे? तेहने कहीयें जे शुद्ध परिणामनो हेतु ते प्रतिमाज छे तेवारे ते कहेशे जे साधुनो वेप ते पण शुद्ध परिणामनो हेतु छे तेहने कहेवुं जे साधु वेप पुरुपपणुं ते प्रतिमाने बराबर न थाय केमके प्रतिमा हजारोगमें जोइयें पण सर्व एकाकार छे सावद्य क्रिया नथी करती तेम निरवद्य क्रिया पण नथी करती अने साधुलिंग तो कोइक स्थानकें सावद्य कर्म करतो देखीयें तथा कोइक स्थानके निरवद्य शुद्ध चारित्र पालतो देखीयें माटे बराबर न थाय अने जिनप्रतिमामांहे जिन गुणनो आरोप करीने परिणाम करतां निर्ज्जरा थाय पण पासत्थादिकने वंदना करतां कोना गुण संभारीश तेवारे ते बोल्यो जे बीजा रुडा साधुना गुण आरोप करीने प्रणाम करिशुं तेहने कहे छे जे निर्गुणीने विषे गुणनो आरोप थाय नहीं अने जो गुणनो आरोप करीयें तो विपर्यास थाय अने जे विपर्यास तेतो कर्मबंधनो हेतु छे ते माटे जिहां गुण तथा दोप न होय तिहां आरोप थाय पण अन्यथा आरोप न थाय यदुक्तं वंदनावश्यके-"संतातित्थयरगुणा, तित्थयरे तेसिमं तु अज्झप्पं । न य सावज्जा किरिया, इयरेसु धुवा समणुमन्ना ॥१॥ चो० ॥ जइ सावज्जा किरिया, नत्थि उ पडिमासु एवमियराविं । तयभावे नत्थि

फलं, अह होइ अहेउयं होइ ॥२॥ आचा० कामं उभयाभावो, तहवि फलं अत्थि मणविसुद्धीए । तिए पुण मणविसुद्धीए, कारणं हुंति पडिमाओ ॥३॥ जइवि य पडिमाउ गुणा, मुणिगुणसंकप्पकारणं लिंगं । उभयमवि अत्थि लिंगे, न य पडिमासूभयं अत्थि ॥४॥ नियमा जिणेसु अ गुणा, पडिमाउदिस्स जे मणे कुणइ । अगुणो उ वियाणंतो, कं नमउ मणे गुणं काउं ॥ ५ ॥" इत्यादि वली एहनो विचार वृहत्वृत्तिथी विचारजो ॥ २१ ॥

कोइ कहे जिन आगे मागी । मुक्ति मारग अमे लेशुं ॥ निरगुणने पण साहेब तारे ॥ तस भक्ते गहगहिशुंरे ॥ जिन० वी० २२ ॥

अर्थ—हवे कोइक एम कहे छे जे जिनेश्वर आगें मुक्तिमार्ग अमे मागी लेशुं केमके निर्गुणने पण साहेब तारशे तथा तेहनी भक्तिमां गहगहिशुं के० हरप पामिशुं इति गाथार्थ. भावार्थ तो एम छे जे केटलाक एम कहे छे आ भवमां तो शक्ति नथी पण जन्मांतरे वोधिबीजनी सामग्री पामीशुं त्यारे करिशुं एहवुं प्रभु पासे मागी लइये छीयें. इति भावः ॥२२॥

पामी बोध न पाले मूरख । मागे बोध विचाले ॥ लहियें तेह कहो कुण मूले । बोल्युं उपदेशमालेरे ॥ जिन० वी० २३ ॥

अर्थ—तेहने उत्तर कहे छे जे आ भवमां वोध के० वोधिवीजनी सामग्री पामीने पण जे मूरख के० अज्ञानी संयम अनुष्ठान तो पालतो नथी अने विचाले के० विचमां वोध मागे जे आगल पालिशुं तो तेह के० ते वोधिवीज कहो कुण मूले के० शेमूले लहियें के० पामीयें एटले ए भाव जे कोइक वस्तु लेवा जइयें ते वस्तु जो पासे द्रव्य होय तो जडे अने द्रव्य न होय तो स्या मूले जडे, तेम आ भवमांहे जो संयमादिक पाल्या होय तो आवते भवे पण वोधिवीजनी सामग्री मले पण न पाल्या होय तो शे मूले पामे अर्थात् वोधि सामग्री नज पामे, एम उपदेशमाला मध्ये कह्युं छे. यतः—"लद्धिल्लियं च वोहिं, अकरितोऽणागयं च पत्थितो । अन्नंदाइं वोहिं, लब्भिहिसि कयरेण मुल्लेण ॥१॥" इत्युपदेशमालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययने पि च ॥ २३ ॥

आणा पाले साहेब तूसे । सकल आपदा कापे ॥ आणाकारी जे जन मागे । तस जसलीला आपेरे ॥ जिन० वी० २४ ॥

अर्थ—ते माटे आज्ञा पालतां थकां साहेब के० परमेश्वर तुष्टमान थाय अने समस्त आपदाने कापे, माटे आज्ञाकारी जे जन के० लोक ते मागे एटले आ भवमांहे प्रभु आज्ञा पाले ते प्राणी जे मागे तस के० ते प्राणीने जशनी लीला आपे एटले प्रभु आज्ञाथी जशलीला पामे ॥ २४ ॥ ए प्रथम ढाल मांहे एम कह्युं जे अमे निर्गुणी थकां प्रभु पासेथी मागी लेशुं एवुं वोलनारने शिखामण दीधी ॥ २४ ॥



॥ ढाळ बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

कोइ कहे अमे गुरुथी तरसुं, जिम नावाथी लोहारे।
ते मिथ्या न लहे सहवासे, काच पाचनी सोहारे ॥ १ ॥
श्रीसीमंधर साहेब सुणजो, भरतखेत्रनी वातोरे।
लहुं देव केवल रति इणे युगे, हुंतो तुज गुणरातोरे ॥ श्रीसी० २ ॥

अर्थ—हवे बीजी ढालमां जे एम कहे छे के अमे निर्गुणी थकाज गुरुथी तरीशुं तेमने शिखामण देवा संबंधी आ बीजी ढाल कहे छे.–कोइक एम कहे छे जे अमारामां तो गुण नथी पण अमारा गुरु गुणवंत छे तो तेथीज संसारसमुद्र तरी पार पामिशुं. जेम नावा के० जिहाज तरेछे ते मांहे लोहा के० लोखंडना खीला जड्या होय ते पण तरे छे, ए दृष्टांते तरीशुं. यतः–"सव्वं जंपेइ जणो, उत्तमसंगेण उत्तमो होइ। लोहो कठविलग्गो, संजोगे सायरं तरइ ॥ १ ॥" इति पाठात् तेहने उत्तर जे–ए रीतना बोलनारा ते पण मिथ्या के० खोटुं कहे छे केमके सारा गुरुने सहवासे के० मात्र भेला वसवाथीज न लहे के० न पामे, जेम काच ते पाच के० पानानी शोभा पामे नहीं. उक्तंच–"मणिर्लुठतिपादाग्रे काचः शिरसि धार्यते । परीक्षककरे प्राप्ते, काचः काचो मणिर्मणिः ॥ १ ॥" तथा ओघनिर्युक्तावपि–सुचिरंपि अच्छमाणो, वेरुलिओ कायमणीयओ मीसो, न उवेइ कायभावं, पाहन्नगुणेण नियएणं ॥ १ ॥" माटे हे श्रीसीमंधर साहेब! आ भरतखेत्रनी वातो के० चरित्र ते सुणजो के० सांभलजो. हे देव! हे आत्मगुणरमणि इणे युगे के० आ विषमकाल पंचम आरो, हुंडावसर्पिणीनें विषे केवल के० निःकेवल जे हुं रति लहुं के० साता पामुंछुं ते तुज गुण रातो के० तमारा गुणने विषे तत्परथको एटले तमारा गुणनो रंग छे एटलीज शाता छे, बाकी मतभेद कदाग्रह देखीए तो कांइपण शातानुं कारण नथी. इति भाव ॥२॥

कोइ कहे जे गच्छथी न टल्या, ते निरगुण पण साधोरे।
नातिमांहे निरगुण पण गणीयें, जश नहीं नाति बाधोरे ॥ श्रीसी० ३ ॥

अर्थ—हवे केटलाएक एम कहेछे के, जे गच्छथी बाहीर नीकल्या नथी अने आचार्यना संघाडामांहे रह्या छे ते जो निर्गुण छे तो पण ते गच्छमां रह्या माटे साधो के० साधु कहियें. तेहनुं दृष्टांत कहेछे–जेम न्यातिना सर्वलोक उत्तम होय अने ते मांहे कोइक निर्गुण होय पण तेहने जिहांलगें न्याति बाहेर कर्यो न होय तिहां लगे ते न्याति मांहेज गणाय छे, जश के० जे गुणरहित पुरुषनो नाति बाधो के० न्यातिनो बाध नहीं के० नथी एटले ते पुरुषनो जिम न्यातिमांहे बाध नथी, तेम साधु पण गच्छमांहे छे माटे रुडो जाणवो ॥३॥

गुण अवगुण इम सरिखा करतो, ते जिनशासन वैरीरे ।
निरगुण जो निज छंदे चाले, तो गच्छ थाए स्वैरीरे ॥ श्रीसी० ४॥

अर्थ—हवे पूर्वोक्त कहेनारने शिखामण आपे छे के, जे ए रीते गुण अने अवगुणने सरखा करे ते जिनशासननो वैरी जाणवो. तेनो हेतु देखाडे छे के, ते गच्छमांहे रह्या जे निर्गुण पुरुष ते जो निज के० पोताने छंदे चाले तो गच्छ थाय स्वैरी के० ते सर्व गच्छ स्वेच्छाचारी थाय, केमके एकने हीणो देखीने बीजा पण हीणाचारी थाय. इतिभाव ॥४॥

निरगुणनो गुरु पक्ष करे जे, तस गच्छ त्यजवो दाख्योरे ।
ते जिनवर मारगनो घातक, गच्छाचारें भाख्योरे ॥ श्रीसी० ॥५॥

अर्थ—वली जे निर्गुण होय तेनो पक्षपात जे गुरु करे तो ते गुरुनो गच्छ बीजा साधुयें त्यजवो के० छांडवो एम दाख्यो के० कह्यो छे. एटले ते गच्छमां रहेवुं नहीं अने ते गुरु जिनेश्वरना मार्गनो घात करनार जाणवो. ए रीते गच्छाचारपयन्ना मध्ये कह्युं छे. यतः—"जहिं नत्थि गुणाणपख्खो, गणी कुसीलो कुसीलपख्खधरो । सो य अगच्छो गच्छो, संजम कामीहिं मुत्तव्वो ॥१॥ जहिं नत्थि सारणा वारणा य, चोयणाय सगच्छंमि । सो य अगच्छो गच्छो संयमकामीहिं मुत्तव्वो ॥ २ ॥" इति गच्छाचारे ॥ ५ ॥

विषमकालमां निरगुण गच्छें, कारणथी जो वसीयेंरे ।
द्रव्यथकी व्यवहारें चलीयें, भावे नवि उल्लसीयेरे ॥ श्रीसी० ६॥

अर्थ—यद्यपि विषमकालमां एटले पांचमा आरामां पोतानी मनोबल शक्तिने अभावें निर्गुण गच्छे एटले गुणरहित गच्छने विषे जो कोइ कारणे वसवुं पडे तो द्रव्यथकी एटले बाह्यथी तो ते गच्छने व्यवहारें चलियें के० प्रवृत्तियें पण भावथकी उल्लास पामियें नहीं, एटले अंतरथी हरपीयें नहीं पण जो शुद्धाचारीनी संगत मले तो निर्गुण गच्छने तुरत छोडीआपियें. यतः—"गीयत्थो गुणजुत्तो, निग्गुणगच्छंमि संवसित्ता य । नो निगुणाणपख्खं, कुज्जा सो गणहरसरिच्छो ॥१॥" इत्युपदेशपदे ॥ ६ ॥

जिम कुवृष्टिथी नगर लोकने, घहेला देखी राजारे ।
मंत्री सहित घहेला होई बेठा, पण मनमांहे ताजारे ॥ श्रीसी० ७॥

अर्थ—जेम घहेलापणानी करनारी कुवृष्टि थइ ते कुवृष्टिनुं पाणी ते नगरना सर्वलोक पान करीने घहेला थया. मात्र एक राजा अने प्रधान ए बेजणे पाणी पीधुं नहीं माटे डाह्या रह्या. पछी ते बेहुने विप सदृपाचारी घहेला लोकोए मारवानो उपाय कर्यो, तेवारें राजा पोताना जीववाना उपायने माटे प्रधान सहित पोते घहेला थइ बेठा, पण मनमां तो ताजा . ० डाह्या छे. एम जाणे छे जे सारी वृष्टि थाय तो सहु डाह्या थइयें. एम ए दृष्टांते इहां पण

जाणवुं जे निर्गुण गच्छमां वसे तथा तेहनी पेठें चाले तोपण मनमां तो एम जाणे जे सुविहित मळे तो तेहने संगे रहुं अने शुद्धाचारी थाउं. इति भाव ॥ ७ ॥

इम उपदेश पदे ए भाख्युं, तिहां मारग अनुसारिरे ।
जाणीने भावें आदरीयें । कल्पभाष्य निरधारिरे ॥ श्रीसी० ८ ॥

अर्थ—ए रीते श्रीहरिभद्रसूरिकृत उपदेशपदनामा ग्रंथमां भाख्युं छे–"गीयत्थो गुणजुत्तो इत्यादि" पूर्वोक्त गाथा जाणवी तथा एम कह्युं जे द्रव्यथकी व्यवहारे चालीयें. पण भावथी उल्लास पामीयें नहीं तो पण तिहां के० ते गच्छमां जो कदाचित सर्व क्रिया व्यवहारमां सावधान न होय पण जो मार्गानुसारी शुद्धप्ररुपक होय अने गुण पक्षपाती होय तेवा मार्गानुसारी जाणीने तेहने भावथी पण अंगीकार करीयें. एहवुं बृहत्कल्पभाष्यमां कह्युं छे. यतः–" सिढिलो अणायारकओ, चोयणपडिचोयणाइगुणहीणो ।' गुणपक्खकरो गच्छो । सीलेयव्वो वि भावेण ॥ १ ॥" इति ॥ ८ ॥

ज्ञानादिक गुणवंत परस्पर, उपगारें आदरवोरे ।
पंच वस्तुमां गच्छ सुगुणने, अवर कह्यो छे त्यजवोरे ॥श्रीसी०॥९॥

अर्थ—वळी परस्पर के० माहोमांहे ज्ञानादिक गुणवंत के० ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुणवंत होय वळी उपगारे के० उपकारी होय एटले मांहोमांहे कोइनो ज्ञानउपकार, कोइनो दर्शन उपकार इत्यादिक उपकारवंत होय तो आदरवो, एम श्रीहरिभद्रसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां कह्युं छे. यतः–"मुत्तूण मिहुवयारं,अन्नुन्नगुणादिभावसंवंधं । छत्ततुल्लो वासो, अन्नेउ ण गच्छवासोत्ति ॥१॥" ते माटे सुगुण जे गुणवंत होय तेणे पूर्वोक्त ज्ञानादिकना उपकारी गच्छ विना अवर के० बीजो जे गच्छ ते त्यजवो कह्यो छे ॥ ९ ॥

जे निरगुण गुण रत्नाकरने, आप सरिखा दाखेरे ॥
समकितसार रहित ते जाणो, धर्मदासगणी भाखेरे ॥ श्रीसी० १०॥

अर्थ—वळी जे पोते निर्गुण छतां बीजा जे गुणना रत्नाकर के० समुद्र होय तेहने आप के० पोतासरिखा दाखे के० कहे, एटले एम कहे जे अमारामां तथा एमां शो फेर छे? एम गुणी अवगुणीने सरिखा करे तो ते प्राणी सार के० प्रधान एहवो जे समकित तेथी रहित जाणवो. ए रीतें उपदेशमाला मध्ये धर्मदास गणियें कह्युं छे. यतः ॥ "गुणहीणो गुणरयणायरेसु जो कुणइ तुल्लमप्पाणं । सुतवस्सीणो यो हिलइ, सम्मत्तं कोमलं तस्स ॥१॥" ॥१०॥

कोइ कहे जे वकुस कुशीला, मूलोत्तर पडिसेवीरे ।
भगवईअंगे भाख्या तेथी, अंत वात नावि लेवीरे ॥श्री सी० ११॥

अर्थ—ए रीतें ग्रंथकारनां कहेवा प्रमाणें सर्वथा गुणवंत होय तोज आदरवो एम ठरयुं. ते उपर शिष्य प्रश्न करे छे के, कोईक एम कहे छे जे वकुस कुशीला के० वकुस चारित्रीया तथा कुशील चारित्रीया ए मूल उत्तरगुणना प्रतिसेवी कह्या छे. पडीसेवी के० प्रतिकूलपणे सेववुं–दोष लगाडवो एटले ए भाव जे १ पुलाक, २ वकुस, ३ कुशील, ४ निर्ग्रंथ, ५ सनातक ए पांच निर्ग्रंथ कह्या छे, तेमां वकुस चारित्रीया ते उत्तरगुणना एटले मात्र दशविध पच्चखाणनाज प्रतिसेवी होय, तथा कुशील चारित्रीया ते मूलगुणना तथा उत्तरगुणना प्रतिसेवी होय, यद्यपि "मूलुत्तर पडिसेवी" इहां सामान्ये कह्या तोपण अर्थ पूर्वोक्त रीते करवो. केमके पंचनिग्रंथी प्रकरण तथा भगवतीसूत्रमां ए रीते छे ते रीते अमें पण अर्थ लख्यो छे. यदुक्तं, पंचनिग्रंथी प्रकरणे ॥ यतः–"मूलुत्तरगुणविसया, पडिसेवा सेवए कुसीलो य। उत्तरगुणेसु वउसो। सेसा पडिसेवणा रहिया ॥१॥" वली भगवती अंगे भाख्या के० कह्या छे तथाच तत्पाठः–"वउसेणं पुच्छा गोयमा! पडिसेवए होजा, अप्पडिसेवए होज्जा? जदि पडिसेवएहोज्जा, किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तर गुणपडीसेवए होज्जा? गोयमा! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा. इत्यादि. तथा पडिसेवणाकुसीले जहा पुलाए० एटले पुलाकने मूलगुणपडिसेवए होज्जा उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा. एम कह्युं छे माटे कुशील पण मूलोत्तर गुणनां पडिसेवी थया. इति भगवती सूत्रे सतक (२५) में उद्देसे ६ ठें कह्युं छे तेथी एम ठर्युं जे मूलगुणना प्रतिसेवी थाय तिहां लगे चारित्रीया कह्या तेथी अमने दोष लागतां छतां पण अमारुं चारित्र कांई जतुं नथी माटे वातनो अंत लेवो नहीं. शांह्युं अमनें बोलावी अंत शुं ल्यो छो. इति शिष्य वचनं ॥ ११ ॥

ते मिथ्या निकारण सेवा, चरणघातीनी भाषीरे ॥
मुनिने तेहने संभव मात्रें, सत्तमठाणुं साखीरे ॥श्रीसीं० १२॥

अर्थ—हवे गुरु कहे छे के एम भगवतीसूत्रनी साख आपीने जेम तेम प्रतिकूल सेवा वालानें जे चारित्र ठरावे छे ते मिथ्या के० खोटुं कहे छे, केमके निःकारण सेवा के० कारण विना जे प्रतिकूलपणे सेवा अपवादरूप तेहने मुख्य करीने जे प्रतिसेवा करे ते प्रतिसेवा तो चरणघातीनी भाषी के० चारित्रने घात करनारी कही छे. यतः–"संथरणंमि असुद्धं, दोण्हविगिण्हतदितगाणहियं। आउरदिट्ठं तेणं, तं चेव हियं असंथरणे ॥१॥" इति बृहत्कल्प भाष्ये। ते प्रतिसेवा मुनिने तेहने के० ते मुनिने संभवमात्रें के० लागवा रूप संभव पण उपयोगपूर्वक प्रतिसेवा करे नहीं कदाचित उपयोग पूर्वक करे तो ते अपवादें करे, पण उत्सर्गे करे नहीं, ए पण संभवज कहीयें. तिहां सत्तमठाणु साखी के० ठाणानामा प्रकरणमां सातमे ठाणे कह्युं छे ते ठाणाप्रकरण मारा हाथमां प्राप्त थयु नथी पण मारा वचने जाणुं छुं के ठाणाप्रकरण छे अन्यथा इहां कोइक ठाणांगसूत्र कहे छे पण ते मध्ये ए पाठ जडतो नथी ते माटे गुरुवचन सत्य, इति ज्ञेयं ॥ १२ ॥

पडिसेवा वचनें ते जाणो, अतिचार बहुलाईरे ॥
भाव बहुलतायें ते टाले, पंच वस्तु मुनि ध्याईरे ॥श्रीसी०१३॥

अर्थ—हवे तिहां पंचवस्तुनी साख लखियें छैयें. गाथा—"ते उ पडिसेवणाए, अणुलोमा होंति विअडणाए । अपडिसेवणाविअडणाए, इत्थं चउरो भवे भंगो ॥१॥ व्याख्या-ते तु दोषाः प्रतिसेवनया आसेवनारूपया अनुलोमा भवंत्यनुकूला भवंति विकटनयालोचनया च प्रतिसेवनायां आलोचनायां च पदद्वये चत्वारो भंगा भवंति तद्यथा, प्रतिसेवनया अनुलोमा विकटनया च १ तथा प्रतिसेवनया न विकटनया, २ तथा न प्रतिसेवनया विकटनया ३ तथा न प्रतिसेवनया न विकटनयेति ४ गाथार्थः—"ते चेव तत्थ नवरं, पायच्छित्तंति आह समयण्णू । जम्हा सइ सुहजोगो, कम्मक्खय कारणं भणीओ ॥२॥" "व्याख्या ते एव नवरं केवलं सामुदानिका अतिचाराश्चिंत्यमानाः संतः तत्र कायिका दीर्घपथिकायां प्रायश्चित्तमित्येवमाहुः समयज्ञाः सिद्धांतविदः किमिति अस्मात् सदा सर्वकालमेवसुभयोगः कुसलव्यापारः कर्मक्षयकारणं भणितस्तीर्थंकरगणधरैरिति गाथार्थः । ततः किमित्याह गाथा । सुहजोगो य अयं जं, चरणाराहणनिमित्तमणुअंपि । मा होज्ज किंचि खलियं । पेहेइ तओवउत्तोवी ॥३॥ व्याख्या-सुभयोगश्चायं सामुदानिकातिचारचिंतनरूपः कथमित्याह यद्यस्माच्चरणाराधननिमित्तं स्खलितं चारित्रपालनार्थमणुअंपि सुक्ष्ममपि मा भूत् किं तत् स्खलितं प्रेक्ष्यते पर्यालोचयति ततः उपयुक्तोपि भिक्षाग्रहणकाले ॥ इतिगाथार्थः—आ ठेकाणे एज अर्थनी सूचक गाथा ज्ञानविमलसूरियें टबामां लखीछे ते कहे छे. गाथा—"सव्वावि य पडिसेवा, उक्कडभावेण होइ सा सिढिला । अइयारबाहूलत्तं, पडिसेवा विय पयसेढी ॥ १ ॥" ए गाथा पण रुडी छे. ए ठेकाणे एहवी गाथा जोइयें पण ए गाथा पंचवस्तु ग्रंथमां जडी नहीं माटे अमे लखी नहीं तथा मूलगुण उत्तरगुणना प्रतिकूलपणे सेवी होय ते पडिसेवा वचने के० प्रतिसेवा शब्दें करी जाणो के० जाणवी, एटले मूलगुणमां तथा उत्तरगुणमां अतिचार घणा लागे ते अतिचार भावनी तीव्रतायें करीनें टाले एम पंचवस्तु ग्रंथमां मुनिध्यायी के० मुनिराजे अतिचारनी बहुलता ध्यायी भावी छे ॥ १३ ॥

सहसा दोष लागे ते छुटे, संयतने ततकालेंरे ।
पच्छितें आकुट्टियें कीधुं, प्रथम अंगनी भालेंरे ॥ श्रीसी० १४॥

अर्थ—सहसा के० सहसात्कारें अनाभोगथकी जे दोष लागे ते छुटे, एटले तद्भव वेदवायोग्य कर्म बांध्युं होय ते छुटे,संयतने के० मुनिराजने ततकालें के० तेज भवमां छुटे इतिभाव. श्री आचारांगे पंचमाध्ययने चतुर्थोद्देशके गाथा—"एगया गुणसमितियस्स रीयतो कायसंफासमणुचिन्ना । एगतिया पाणा उद्दायंति, इहलोगवेदणविज्जावडीअं । अस्यार्थ लेशः कदाचित् गुणसमित्त के० गुणसहित अप्रमत मुनिने चालतां थकां काय संफासं के० कायस्पर्श थयाथी कोइ जीव हणाणो, तेवारे इहलोके वेदनानो जे वेद्य के० अनुभव तेहने आवडिअं के० पाम्युं एटले आ भवें भोगववा योग्य कर्म बंधाय तथा आकुट्टियें के० विना

प्रयोजने कारण विना पापकर्म करयुं ते कर्म पच्छिते के० दश प्रकारनुं प्रायश्चित छे तेमां हरकोइ प्रायश्चित आवे एम प्रथम अंगनी भाखें के० आचारांगनी भलामण छे. पांचमा अध्ययनना चोथा उद्देशामां "जं आउट्टीकयं कम्मं, तं परिन्नाय विवेगमेति इति एतद्वृत्त्यैकदेशः जं आउट्टि इत्यादि यत्तु पुनः कर्माकुट्या कृतमागमोक्तकारणमंतरेणोपेत्य प्राण्युपमर्दनेन विहितं तत् परिज्ञाय ज्ञपरिज्ञया विवेकमेति विविच्यते अनेनेति विवेकः प्रायश्चित्तं दशविधं तस्यान्यतरं भेदमुपैति तद्विवेकं वा अभावाख्यमुपैतीति तत् करोति येन कर्मणो अभावो भवतीति । ते कारण माटे पाप जाणीने सेववुं तेहनो महादोष छे इतिभावः ॥ १४ ॥

पायच्छित्तादिक भाव न राखे, दोष करी निःसूकोरे ।
निद्धंधस सेढीथी हेठो, ते मारगथी चूकोरे ॥ श्रीसी० १५॥

अर्थ—माटे ते अतिचार सेवीने पण पायच्छित्तादिक के० विशुद्ध थाय तेवुं गुरु आदिक पासेंथी प्रायश्चित्त प्रमुख लेवानो अभिप्राय राखेज नहीं तो ते प्राणी दोष करीने पण निःसूको के०निर्दयी जाणवो. यतः—"जो चयइ उत्तरगुणे, मूलगुणेवि अचिरेण सो चयइ। जह जह कुणइ पमायं, पिल्लिज्जइ तह कसाएहिं ॥ १ ॥" इत्युपदेश मालायां. तथा ते प्राणी निद्धंधस के० गतधर्मा छे एटले प्रवचनरूप धर्मनी हानी थाय तेहनी अपेक्षा राखे नहीं ते जीव सेढीथी हेठो के० गुणश्रेणीथकी अधोवर्त्ती अथवा संयमश्रेणी थकी हेठो जाणवो. वली ते प्राणी साधुना मार्गथी चूक्यो एम जाणवुं. यतः—"अइयारं जो निसेवी ता पायच्छित्तं न गिण्हए । अणुज्जुओय तब्भावो, निधम्मो सो गणीधाम्रु ॥१॥" इति श्रीहरिभद्रसूरिकृत संबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥

कोई कहे जे पातिक कीधां, पडिकमतां छूटीजेंरे ॥
ते मिथ्या फल पडिकमणानुं, अपुणकरणथी लीजेंरे ॥श्रीसी० १६॥

अर्थ—वली केटलाक एम कहे छे के जे पाप करयां होय ते सर्व पापथी पडिकमतां के० पडिकमणुं करतां छुटीयें ॥ यतः—"अन्नाणओकयं पावं, पडिकमणाओ विसुज्झइ । इति वचनात्. पडिकमणं पापहरणं इति लोकोक्तिः एम कहे छे ते मिथ्या के० खोटुं कहे छे केमके फल पडिकमणानुं के० पडिकमणानुं जे फल ते तो अपुणकरणथी लीजे के० फरी अण करवाथी पामीयें एटले पापने पडिकमीने फरी पाप नहीं करे तोज पडिकमणानुं फल पामे. इतिभाव. यतः—"पुण पावस्स अकरणे, पडिकमणं होइ भावसारं च । पुण पावाणं करणं, नहुत्व दव्वं पडिकमइ ॥ १ ॥" इति वचनात् ॥ १६ ॥

मिथ्या दुक्कड देई पातिक, ते भावे जे सेवेरे ॥
आवश्यक साखे ते परगट, माया मोसने सेवेरे ॥ श्रीसी० १७॥

अर्थ—माटे जे मिथ्यादुकड के० मिच्छामिदुकडं देइने वली तेहिज पापभावें करीने

सेवे छे ते प्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनी साखे माया मृषाने सेवे छे. शामाटे जे गुरुआदिकने राजी करवाने अर्थे मिच्छामि दुक्कडं दिए छे पण परमार्थें शुन्य छे. यतः—"जं दुक्कडं ति मिच्छा, तं चेव निसेवेइ पुणो पावं । पच्चक्खमुसावाइ, मायानियडीपसंगो य ॥ १ ॥" इत्यावश्यके ॥१७॥

मूळ पदें पडिकमणुं भाख्युं, पापतणुं अण करवुंरे ।
सक्ति भावतणे अभ्यासें, ते जस अर्थें वरवुंरे ॥ श्रीसीं० १८ ॥

अर्थ—मूलपदें के० उत्सर्गमार्गे अथवा प्रथमथी पडिकमणुं भाख्युं के० कह्युं छे. केम कह्युं छे ते कहे छे के जे पापतणुं अण करवुं के० पापनुं जे न करवुं तेनुं नाम पडिकमणुं कहीयें. यतः—"जइय पडिकमियव्वं, अवस्स काऊण पावयं कम्मं । तं चेव न कायव्वं । तो होइ पए पडिकंतो ॥ १ ॥" इति आवश्यके. पए के० उत्सर्गपदें अथवा पए के० प्रथमथी पडिकम्या. इति. ते माटे शक्ति के० शक्तिमाफक भावे करीने अभ्यास करे एटले शक्तिभावथी अभ्यास करे ते पण जश के० जेहने अर्थे पाप अण करवाने अर्थे वरवुं के० आदरवुं एटले शक्ति अभ्यास करे ते पण पछे पाप न करे. इति भावः अथवा परमार्थें जश ते मोक्ष तेने अर्थे वरवुं के० आदरवुं अने कर्तानुं नाम पण जशविजयछे ते पण सुचव्युं ॥१८॥

॥ ढाळ त्रीजी ॥

॥ तुंगीयागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

देव तुझ सिद्धांत मीठो, एक मने धरियें ।
दुष्ट आलंबन निहाली, कहो केम तरीयें ॥ देव तुझ० १ ॥

अर्थ—हवे त्रीजी ढाल कहे छे एने बीजी ढाल साथें ए संबंध छे जे बीजी ढालमां एम कह्युं के पाप न करवुं ते पडिकमणुं. माटे त्रीजी ढालमां कहे छे के पाप शी रीतें थाय. जो हीणा आलंबन न होय तो पाप न थाय ते कहे छे. जे हे देव ! हे परमानंद विलासी ! तुझ सिद्धांत के० तहारुं जे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुझने अत्यंत मीठुं लागे छे. इतिभाव । ते एक मने धरिएं के० एकाग्र चित्तें करी धरी राखीयें अने दुष्ट जे हिणा आलंबन ते निहाली के० जोइने एटले कोइकें कोइ कारणे कांइ विपरीत अंगीकार करयुं होय ते पोते धारी राखे तो ते धारीने हे सज्जन पुरुषो तमे कहो जे केम के० केवी रीतें संसारसमुद्र तरीयें ॥ १ ॥

दुष्ट आलंबन धरे जे, भग्न परिणामी ।
तेह आवश्यकें भाख्या, त्यजे मुनि नामी ॥ देव तुझ० २ ॥

अर्थ—माटे दुष्ट के० दूषणसहित जे अपवादे सावन होय ते जे कोइ चित्तमां धरे ते तो भग्नपरिणामी के० संयम क्रियाथी भाग्या छे परिणाम जेहना एहवा जे लिंगी होय तेहने आवश्यकने विषे भाख्या के० कह्या छे. केवा कह्या छे ? के मुनिनामी के० मुनि नामना धणी एटले जे मुनीश्वर होय ते तेवा लिंगीने त्यजे के० छांडे ॥ २ ॥

नियतवास विहार चेईय, भक्तिनो धंधो ॥
मूढ अज्जालाभ थापे. विगय पडिबंधो ॥ देव० ३ ॥

अर्थ—हवे दुष्ट आलंबन देखाडवा माटे द्वार बांधे छे ते एक नियतवास विहार के० नित्यवासे विचरवुं एटले नित्यवास कल्प इतिभाव. एक स्थानके रहेवुं एम कोइक स्थापे छे. बीजो चेइय भक्तिनो धंधो एटले चैत्य जे देरं तथा जिनप्रतिमा तेनी भक्तिनो धंधो जे कार्य व्यग्रता ते साधुने करवो एटले जिनपूजादिक करवी. इतिभाव, वली त्रीजो मूढ के० मूर्ख ते अज्जालाभ थापे के० आर्यानो लाभ थापे छे एटले साध्वी वोहोरी लावे ते साधुने खपे एम थापे छे: चोथो विगय जे दूध दही प्रमुख अने कडाविगयने विषे पडिबंधो के० प्रतिबंध एटले विगयना लोलुपी ते एम कहे छे के विगय खातां दोष नथी. यतः—"नीआवासविहारं. चेइयभत्तिं च अज्जोयालाभं । विगईसु अ पडिबद्धं. निद्दोसं चोइया बिंति ॥१॥" ॥३॥

कहे उग्र विहार भागा, संगमआयरिओ ।
नियतवास भजे वहु श्रुत, सुणिओ गुणदरिओ ॥ देव० ४ ॥

अर्थ—हवे उग्रविहाररूप द्वार दृष्टांते करी देखाडे छे. जे कोईक एम कहे छे के उग्रविहारथी थाक्यांथकां संगमआयरिओ के० संगमाचार्य नियतवासभजे के० नित्यवासीपणुं भज्युं छे. ने संगमाचार्य बहुश्रुत के० ज्ञानी पुरुष हता एवुं अमे सुणिओ के० आगममांहे सांभल्युं छे एटले गुणसमुद्र तथा बहुश्रुत एवा संगमाचार्ये नित्यवास कबुल कर्यो तेथी अमे पण जाणीयें छैयें जे एक ठामे रहेतां दोष देखातो नथी एम कहीने नित्यवास थापे छे. यतः—"संगमथेरायरिओ । सुहुतवस्सी तहेव गीयत्थो । पेहित्ता गुणदोसं । नियावासं पवन्नोऊ ॥ १ ॥" इतिवंदनकनिर्युक्तौ ॥ ४ ॥

न जाणे ते खण जंघा, वल थीविर तेहो ।
गोचरीना भाग कल्पी, वहु रह्यो जेहो ॥ देव० ५ ॥

अर्थ—ए रीते जे कहे छे तेने उत्तर करे छे के जे एम कहे छे ते पुरुष न जाणे के० नथी जाणता एटले नथी गणता जे खीण के० ओछुं थयुं हतुं जंघाबल के० जंघानुं बल एटले हिंडवानी शक्ति हती नहीं, वली थिविर के० घडपण हतुं एवा तेहो के० ते संगमाचार्य हता तथा दुनकालपणथी दुर्भिक्ष हतो. शिष्यने विहार कराव्यो हतो. वली ते अप्रतिबंधपणे रह्या हता. ने पण गोचरीना भाग गाममां कल्पीने रह्या हता, एटले एक घरे आहार न लेता

एवो थको वहु रह्यो जेह्यो के० जे संगमाचार्य. यतः—"ओमे सीसपवासं, अपडिवंध अजंगमत्तं च । न गणंति एग खित्ते. गणंति वासं नियययवासी ॥१॥" एटले नित्यवास न करवो इतिभाव. ते संगमाचार्यनुं कथानक आवश्यकसूत्रथी जाणवुं ॥ ५ ॥

चैत्यपूजा मुक्ति मारग, साधुने करवी ॥
जिणे कीधी वयर मुनिवर, चैत्यवास ठवी ॥ देव० ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे चैत्यपूजा के० प्रभुपूजा ते मोक्षनो मार्ग छे ते माटे साधुने करवी. केमके अमे न करीयें तो ए देरासरनी संभाल कोण करे. जो मूकी दइयें तो विच्छेद जाय तेमाटे अमे असंयम अंगीकार करयुं छे. ते उपर दृष्टांत देखाडे छे के जिणे के० जे कारण माटे श्रीवयरस्वामी आचार्ये पूजा भक्ति करी छे माटे निर्दोष छे इतिभाव. यतः—" चेइयपूया किं वयरसामिणा मुणियपुव्वसारेणं । न कया पुरियाइ तओ, मुक्कंगं सावि साहूणं ॥ १ ॥" इत्यावश्यके । एक पुष्पादिक लाव्या एटलुंज देखे छे पण आवां कारण हतां ते देखता नथी ॥ ६ ॥

तीर्थउन्नति अन्यशासन । मलिनता टाणे ॥
पूर्व अविचित पुष्प महिमा । तेह नवि जाणे ॥ देव० ॥ ७ ॥

अर्थ—जे तिहां तो तीर्थ के० जिनशासननी उन्नति थती हती वली अन्य शासन के० अन्य तीर्थिनी मलिनता के० मलाश करवाने टाणे के० अवसरे ते पण पूर्व अविचित के० पूर्वे पुष्प उतारी भेला करयां हतां एवां फूल हतां तेहनो महिमा के० महात्म्य हतुं ते नविजाणे के० एहवी वातनी जेने खवर नथी ते भूले छे, ए वयरस्वामीनुं चरित्र आवश्यकथी जाणवुं. यतः—"ओहावणा परेसिं, सतित्थउब्भावणं च वच्छलं । न गणंति गणेमाणा, पुव्वचियपुप्फमहिमं च ॥ ५ ॥" इत्यावश्यके ॥ ७ ॥

चैत्यपूजा करत संयत । देव भोई कह्यो ॥
शुभमने पण मार्गनाशि । महानिशीथें लह्यो ॥ देव० ॥ ८ ॥

अर्थ—चैत्य के० जिनप्रतिमा तेनी पूजा करतां थकां संयत के० द्रव्यलिंगी साधु ते देवभोइ के० देवना द्रव्यनो भोगवनारो कह्यो छे, एटले संयतने पूजा करतां देव द्रव्यनी शंका रहे नहीं माटे देवद्रव्यनो भोगी कहीयें जिनपूजा करे, एवा परिणाम ते शुभ मन कहीयें, पण एवी करणी करतो थको मार्ग जे जैनमार्ग तेनो नाश करे छे एटले उन्मार्गे प्रवर्त्ते छे ए रीते महानिशीथसूत्रमां कह्युं छे. तथाच तत्सूत्रं—"एवंचणं गोयमा केइ अमुणियसमयसब्भावे ओसन्नविहारी णीयवासीणो अदिट्ठपरलोगपच्चवाएसयंमती इड्ढीरससायगारवाइमुच्छिए रागदोसमोहाहंकारममीकाराइसु पडिवद्धो कसिणसंजमसधम्मपरम्मुहे निद्दयनित्तिसनिग्घिणअकलुणनिक्किवे पावायरणेकनिविट्ठवुद्धी एगंतेणं अइचंडरोद्दकूराभिग्गहिओ मिच्छदिट्ठीणो

कयसव्वसावज्जजोगपच्चक्खाण विप्पमुक्कासेससमारंभपरिग्गहे तिविहेणं पडिवन्नसामाइए य द-व्वचाए न भावत्ताए नाममेत्तमुंडे अणगारे महव्वयधारी समणे विथवित्ताणं एवं भन्नमाणे स-व्वहा उमग्गं पवत्तंति तहा किल अम्हे अरहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपदीवसमज्जणोवलेवण-विचित्तवत्थबलीधुवाइएहिं पूयासक्कारेहिं अणुदियहमभ्भच्चणं पकुव्वाणा तित्थुच्छपणं करेमो तंच णोणं तहत्ति गोयमा समणुजाणेज्जा से । भयवं केणंअट्ठेणं एवं वुच्चइ जहाणं तंच णोणं तहत्ति समणुजाणिज्जा? गोयमा तियत्थाणुसारेणं असंजमबाहुल्लेणं च थूलंकंमासयं थूलंकंमासव्वाआय अज्झवसायं पडुच्च थूलयरसुहासुहकम्मपयडिबंधो सव्वसावज्जविरयाणं च वयभंगो वयभंगेणं च आणाईकम्मो आणाईकम्मेणं तु उमग्गगामित्तं उमग्गगामित्तेणं च समग्गपल्लोयणं उमग्गप-वत्तणं समग्गविप्पलोयणेणं च जईणं महतिआसायणा तओ अणंतसंसाराहिंडणं एएणं अट्ठेणं गोयमा णोणं तं तहत्ति समणुजाणिज्जा ।" इत्यादिक महानिशीथे तृतीयाध्ययने अथवा म-हानिशीथे पंचमाध्ययने पण पाठ छे. यथा—"से भयवं जेणं केई साहू वा साहूणी वा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा सेणं किमालवेज्जा! गोयमा जेणं केई साहू वासा हूणी वा निग्गं-थे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा सेणं अजए वा असंजए वा देवभोएइ वा देवच्चगेइ वा जावणं उमग्गपयईए वा दुरुज्झियसीलेई वा कुसीलेई वा सछंदयारिएई वा आलवेज्जा ॥" इत्यादि ॥८॥

पुष्टकारण विना मुनि नवि द्रव्य अधिकारी ॥
चैत्य पूजायें न पामे । फल अनधिकारी ॥ देव० ॥ ९ ॥

अर्थ—माटे कोइ शासनना उद्योत प्रमुख मोहोटा पुष्ट कारण विना मुनीश्वर ते द्रव्य-अधिकारी के० द्रव्यस्तवना अधिकारी नवि के० न होय जे कारण माटे चैत्यपूजा करता सर्व फल न पामे केमके अनधिकारी के० जेहनो जेहने अधिकार नहीं अने ते करे तो तेहनुं फल न पामे अन्यथा अधिकारी तो फल पामे. यतः—"अकसिणपवत्तगाणं, विरया-विरयाण एस खलु जुत्तो । संसारपयणुकरणे, दव्वथए कूवदिट्ठंतो ॥ १ ॥" इति वचनात् । अने वयरस्वामी तो कारणे प्रवर्त्या माटे तेने तो पूजा फलवंतज छे ॥ ९ ॥

मार्ग अनियपुत्त अज्जा, लाभथी लागा ।
कहे निज लाभे अतृप्ता, गोचरी भागा ॥ देव० ॥ १० ॥

अर्थ—कोइक प्राणी निज लाभें अतृप्ता के० पोताने लाभे अतृप्त थका तथा अज्जा लाभथी लागा के० आर्याने लाभे लग्न छे गृद्ध छे वली गोचरी भागा के० गोचरीना आ-लसु छे तेहने कोइक प्रेरणा करे जे आर्यानो आण्यो आहार किम करो छो ते वारे एम कहे जे मार्ग अनियपुत्त के० अर्णिकापुत्रने मार्गे एटले ए भाव जे अर्णिकापुत्रे साध्वीनो आण्यो आहार लीधो छे ते मार्ग अमे पण लइयें छैयें जो दोष होय तो ते अरणिकापुत्र केम लीये, माटे आर्यानो आण्यो आहार निर्दोष छे, परवचनं आवश्यके, यतः—"अज्जियलाभे गिद्धा, सएण लाभेण जे असंतुट्ठा । भिक्खायरियाभग्गा, अनियपुत्तं च वइसंति ॥१॥"॥१०॥

न जाणे गत शिष्य अवमे, थिविर बलहीणो ।
सुगुण परिचित संयतिकृत, पिंडविधि लीणो ॥ देव० ॥११॥

अर्थ—हवे जे एम कहे छे तेहने ठपको देतां सहुने उपदेश दे छे के जे अर्णिका-पुत्रनो दृष्टांत आपे छे ते न जाणे के० नथी जाणता जे ते अरणिकापुत्र आर्यानो आण्यो आहार लेता पण केवा हता जे गतशिष्य के० शिष्यनो समुदाय पासे नहतो वली अवमे के० दुकाल हतो एटले ए भाव जे दुकाल जाणी शिष्यने विहार कराव्यो हतो वली पोतानी पण थिविर के० वृद्धावस्था हती तथा बलहीणो के० शक्तिहीण हता, गोचरीयें फरवाने असमर्थ हता तथा आर्या जे पुष्पचूला नामे साध्वी ते पण भला गुणनी परिचयवान हती ते संयति के० साध्वी तेणे कृत के० कर्यो एटले आण्यो एवो जे पिंड के०आहार ते वली विधि के० विधि सहित लीणो के० लीधो छे, ते कारण तो कोइ गणता नथी अने केवल आर्या लाभ गवेषे छे. यतः—"अन्नियपुत्तायरिओ, भत्तंपाणं च पुप्फचूलाए । उवणीयं भुंजंतो, तेणेव भवेण अंतगडो ॥१॥ गयसीसगणं ओमे, भिक्खायरियाअपच्चले थेरं न गणंति सहावि सढा अज्जियलाभं गवेसंतो ॥२॥" तो सहावि के० सखाइ शिष्यादिक छतां पण शठ मूर्ख एम कहे छे इतिभाव ॥ ११ ॥

विगय लेवी नित्य सूजे, लष्ट पुष्ट भणे ।
अन्यथा किम दोष एहनो, उदायन न गणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ—हवे केइक एम कहे छे जे विगय वावरवी निरंतर कल्पे एम पोते लष्ट पुष्ट थका भणे के० कहे छे, एटले निरंतर विगय वावरतां दोष नथी एवुं बोलनारने कोइक रूडा साधु ठपको आपे के भाई विगय तो साधुने निरंतर लेवी कल्पे नहीं. यतः—"विगई विगई भीओ, विगइगयं जो उ भुंजए साहू । विगई विगइसहावा, विगई विगइं बला नेइ ॥१॥" इति वचनात् । एम कहे तेने पाछो आवी रीते उत्तर आपे जे अन्यथा के० जो विगय वावरतां दोष होय तो ते उदायन राजऋषियें केम गण्यो नहीं एटले ए भाव जे विगय लेतां दोष होय तो उदायन ऋषियें केम वावरी हती. यतः—"भत्तं वा पाणं वा, भुत्तूणं लावलवियम-विसुद्धं । तो वज्जए पडिछन्नं, उदायणरिसिं च वइसंति ॥ १ ॥" इत्यावश्यके ॥ १२ ॥

उदायन राजर्षि तनु नवि, सीत लुक्ष सहे ।
तेह व्रजमां विगय सेवे, शुं ते न लहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ—हवे उत्तर कहे छे जे उदायन राजऋषिना तनु के० शरीरने विषे शीत के० टाढुं अने लुक्ष के० लुखुं ते नवि के० नथी सहेवातुं एटले राजवी थकां दीक्षा लीधी छे अने रोगीष्ट शरीर छे ते माटे सहन नथी थातुं इतिभाव. माटे उदायनरुषियें व्रजमां के० श्रीगोकुलमां विगय वावरी छे एहवुं विगय वावरवानुं कारण ते मूढ न लहे के० शुं नथी

जाणता एके कोइए कारणे विगय वावरी एटले ते ओठु लेइने पोते वावरनार उजमाल थाय छे. यतः—सीयलल्लुक्खाणुचियं, वएसु विगईगएण जाविंत्तं । इट्ठावि भणंति सढा, किमासि उद्दायणो न मुणी ॥१॥ ए कथाओ सर्व आवश्यक बृहद् वृत्तियें वंदनावश्यके छे ॥१३॥

लोक आलंवन भरिओ, जन असंयतने ।
तेह जगमां कांइ देखे, धरे तेह मने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ—एम लोक के० मनुष्य लोक तो आलंवने भर्यो छे. बाल, वृद्ध, सूत्र, अर्थ, द्रव्यादिक आपद प्रमुख आलंवन करे. जेम हुं बालक छुं, अथवा वृद्ध छुं तेमज सूत्र भणुं छुं, अर्थ भणुं छुं, आ द्रव्य दोहिलु छे अथवा आ क्षेत्र नानु छे इमणा दुर्भिक्षादिकछे तथा हुं आजारी छुं इत्यादिक निश्रापद करीने पछे आलंवन खोले. यतः—“सुत्तत्थवालवुड्ढे, असहूदव्वाइआवईओय । निस्साणपयं काउं, संथरमाणा विसीयंति ॥१॥” इत्यावश्यके एम असंयतने आलंवने जे भर्चो छे तेहवा अयत्नायें चालवानी इच्छा करनार जनने आलंवन घणा छे ते प्राणी जगतमां जे कांइ नियत वासादिक देखे ते मने के० मन मांहे धरे के० धारी राखे, अने कोइ पुछे त्यारे ते दृष्टांत देखाडे इतिभावः यतः—“ आलंवणाण लोगो, भरिओ जीवस्स अज्जवकामस्स । जं जं पिच्छइ लोए, तं तं आलंवणं कुणइ ॥ १ ॥” इत्यादि ॥ १४ ॥

शिथिल आलंवन गहे मुनि, मंद संवेगी ।
संयतालंबन सुजस गुण, तीव्र संवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ—ते माटे जे मंदसंवेगी के०अल्प संवेगवंत मुनि होय ते शिथिल विहारीना ओठां ले छे जेम मथुरामां मंगुआचार्य सुगालमां पण एक ठामे रह्या प्रतिबंध तज्यो नहीं पासत्था थया ते माटे एम करतां पण प्रभुयें धर्म दीठो एम जणाय छे. गाथा—“जे जत्थ जया जइया, वहुस्सुआ चरणकरणपब्भट्ठा । जं ते समायरंती आलंवणं मंदसड्ढाणं॥१॥” इत्यावश्यके तथा तीव्र संवेगी के० आकरा वैराग्यवंत तेतो संयतालंवन के०संयतमुनिराज तेमनुं आलंवन करे छे अमुक मुनिराजे भिक्षुक प्रतिमा वही तथा अमुक मुनिराजे उपसर्ग परिसह सहन कर्या तो हु पण तेवा सहन करुं अथवा तप करुं एवी रीते करतां सुजस गुण के० भला जसनो गुण वधारे गाथा—“जे जत्थ जया जइया, वहुस्सुआ चरणकरणमाउत्ता । जं ते समायरंती, आलंवणतीव्वसड्ढाण ॥१॥” इत्यावश्यके ए ढालमां घणो वंदनक निर्युक्तिनो अधिकार छे ए त्रीजी ढालमां एम कह्युं जे हीणा आलवन लेइने पोते हीणाचारी थाय पछी जे पोते हीणाचारी होय ते शुद्धाचारीनां छिद्र काढे ते वात चोथी ढालमां कहे छे ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रभुपासनुं मुखडुं जोवां, भवभवनां पातीक खोवां—ए देशी ॥

सुणजो सीमंधरस्वामी, वली एक कहुं सिरनामी ।
मारग करताने प्रेरे, दुर्जन जे दूषण हेरे ॥ १ ॥

अर्थ—हवे हे श्रीमंधर साहेब तुमे सुणजो के० अवधारजो वली के० पूर्वे कही तेथी बीजी वात एक कहुं छुं सिरनामी के० मस्तकवडे तमने नमस्कार करीने जे शुद्ध मार्गना करता के० पालता एवाने प्रेरे के० उदीरे एवा जे दुर्जन के० खल पुरुष छिद्रान्वेषी छे ते दूषण हेरे के० पारका अछता दूषण जूए ॥ १ ॥

कहे निज साखे व्रत पालो, पिण धर्मदेशना टालो ।
जनमेल्यानुं सुं काम, बहु बोल्युं निंदा ठाम ॥ २ ॥

अर्थ—हवे ते एम कहे छे जे पोतानी साखे व्रत पालो अने धर्म करो पण लोक भेला करीने धर्मदेशना आपवानुं शुं काम छे माटे ए वातने टालो एम उपदेश करी लोक भेला कर्यानुं शुं काम छे केमके घणुं बोलतां कोइ अवसरे निंदानुं स्थानक पण थाय ॥ २ ॥

एम कहेतां मारग गोपे, खोटुं दूषण आरोपे ।
जे निर्भय मारग बोले, ते कह्यो द्वीपने तोले ॥ ३ ॥

अर्थ—एवी रीतना बोलनारा ते मार्ग गोपे के० शुद्ध मार्गने ओलवे छे खोटुं दूषण के० खोटा दूषणनो आरोप करे छे केमके जे प्राणी निर्भय के० कोइनो भय न राखे अने शुद्ध मार्ग भाषे ते द्वीपने तोले शास्त्रमां कह्यो छे ॥ उक्तंच-"जो सम्मं जिणमग्गं, पयासए निब्भए णिरासंसो । सो भव्वाण जणाणं, दीवसमो भवसमुद्दंमि ॥ १ ॥" इति ॥ ३ ॥

अज्ञानी गारव रसिया, जे जन छे कुमतें ग्रसीयां ।
तेहनो कुण टालणहार, विण धर्म देशनासार ॥ ४ ॥

अर्थ—जे अज्ञानि के० मिथ्या ज्ञानी होय अथवा गारवरसिया के० ऋद्धिगारव, रस-गारव, शातागारव मांहे मग्न थया होय वली जे प्राणी कुमतेंग्रसिया के० कदाग्रहे कुश्रद्धायें ग्रसायी रह्या छे एटले अन्य अन्यदर्शनना आग्रहवंत छे इत्यादिकनी कुमति ते सार के० प्रधान एहवी जे धर्मदेशना ते दीधा विना तेओनी कुमतिने बीजो कोण टालणहारछे अने सार धर्मदेशना विना कुमार्ग सुमार्गनी शी खबर पडे ॥ ४ ॥

गीतारथ जयणावंत, भव भीरु जेह महंत ।
तसवयणे लोकें तरीयें, जेम प्रवहणथी भरदरीयें ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे ते देशना केवा पुरुष आपे ते कहे छे जे गीतार्थ होय ॥ गाथा—"गीयं भण्णइ सुत्तं, अत्थो तस्सेव होइ वक्खाणं । उभएण य संजुत्तो, सोगीयत्थो मुणेयव्वो ॥ १ ॥" तथा जयणावंत एटले छकायना रक्षक होय वली भवभीरु के० संसारनी बीक राखनार होय के० रखे खोटुं बोली जवाय, खोटुं बोलीये तो संसार वधे अने महंत के० महोटा होय एटले गुणे गिरुआ होय तेवा उत्तम पुरुषोनां वचनथकी लोकमांथी तरीयें जेम भरसमुद्रमां प्रवहण के० जहाजथी पार पामीयें तेम गीतार्थनी देशनायें संसारसमुद्रथी तरीयें॥

बीजो तो बोली बोले, सुं कीजे निर्गुण टोले ।
भाषा कुशीलनो लेखो, जन महानिशीथें देखो ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे जे गीतार्थ विना डाही डाही वातो करे छे तेने शीखामण आपे छे के गीतार्थ विना जे बीजो ते तो बोलीने के० देशनाप्रमुख आपीने श्रोताने संसारसमुद्रमां बोले के० बुडाडे छे माटे एवा निर्गुण टोलाने शुं करीयें गीतार्थ विना घणुं टोलुं मल्युं होय पण ते शा कामनुं ? केमके जे अगीतार्थ छे ते घणुं बोले उन्मार्ग परुपे तो तेहने भाषा कुशीलने लेखे जाणवा. जन के० हे जन हे लोक (एम लौकिक भाषा छे तेथी एक वचन छे माटे एम कहेवुं जे) हे लोको ए वात महानिशीथ सूत्रमां देखो के० जूओ. यथा—"कुसीलोसन्नपासत्थे, सच्छंदे सवले तहा दिट्ठी । एवइमे पंच, गोयमा न निरिक्खए ॥१॥ पंचेए सुमहापावे, जो न वजीज्ज गोयमा । सलावाइकुसीलेहिं, भमीहि सो सुमई जहा ।२॥" इति महानिशीथे, एमां एम कह्युं जे पासत्थादिक पांचने जे नवरजे तेमां सलाप कुशीलादिक दोष आवे अने ते दोषथी सुमतिनीपरें ससार भमे,तथा । "तहा जिब्भाकुसीले सेणं अणेगहा तंजहा तित्त कडुअ कसाय महुराइं लवणाइं रसाइं आसायंते अदिट्ठासुयाइं इहपरलोगोभय विरुद्धाइं सदोसाइं मयारजयारुच्चारणाइं अयसंब्भक्खाणं संताभिओगाइं वा भणंते असमय सूधम्मदेसणावत्तणाणयजिब्भाकुसीलेणेए । से भयवं किं भासाए कुसीलत्तं भवइ ? गोयमा भवइ से भयवं जइ एवं ता धम्मदेसणं न कायव्वं गोयमा सावज्जणवज्जाणं वयणाणं जो न जाणइ विसेसं वुत्तुंपि तस्स न खमं क्रिमंग पुण देसणं काउं" इति महानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेलननी नहीं ईहा, मुनि भाषे मारग नीरीहा ।
जो वहु जन सुणवा आवे, तो लाभ धर्मनो पावे ॥ ७ ॥

अर्थ—जनमेलन के० लोक मेला करवानी नहीं ईहा के० इच्छातो नथी पण धर्मनी प्राप्ति जाणीने लोक आवी बेसे छे तेने मुनीश्वर जैनमार्ग भाषे पण निरीहा के० आशा-रहितथका कहे पण कोडी मात्रनी आशा न राखे अने यश तथा माननी इच्छा न राखे.

ए रीते धर्मदेशना देतां कदाचित् घणा लोक सांभलवा आवे तो धर्मनो लाभ घणो थाय घणा लोक धर्म पामे संसार तरे ॥ ७ ॥

तेहने जो मारग न भाषे, तो अंतराय फल चाखे।
मुनि शक्ति नवि गोपे, वारे तेहने श्रुत कोपे ॥ ८ ॥

अर्थ—तथा जे लोक धर्म सांभलवा आव्या तेहने धर्ममारग नभाषे के० न समलावे तो ते मुनियें ज्ञाननो अंतराय कर्यो तथा विघ्न कर्युं तेहनां फल चाखेके० भोगवे एटले ज्ञानावरणी कर्म बांधे. गाथा—"अन्नाणी वक्खाणं, करेइ जो तस्स होइ पाव फलं। नाणी-वि जो न भासइ, सो लहए नाणविग्घं खु ॥१॥" इति हितोपदेशमालायां. ते माटे मुनिमां जो देशना आपवानी छती शक्ति होय तो गोपवे नहीं अथवा देशना आपतो थको थाके नहीं तथा धर्मदेशना देता थकाने जे वारे छे ना कहे छे ते प्राणीने श्रुत कोपे के० भवां-तरे ज्ञानावरणी बांध्युं होय ते उदय थाय अज्ञानपणुं आवे एटले श्रुत कोप्युं ॥ ८ ॥

नवि निंदा मारग कहेतां, समपरिणामें गहगहतां।
मुनि अद्दचरित मन रंगे, जोई लीजें बीजे अंगे ॥ ९ ॥

अर्थ—एटले शुद्धमार्ग के० निंदा नथी केमके देशना ते ज्ञाननो हेतु छे समपरिणामें के० रागद्वेषरहितपणे एटले कोइ उपर रागद्वेष न करे अने कोइनुं नाम लेइ तेना अवरण-वाद न बोले ए रीते गहगहतां के० हर्ष पामी भावें एम आद्रकुमारनुं चरित्र बीजे अंगे श्री सुयगडांगसूत्रना बीजा श्रुत स्कंधना छठ्ठा अध्ययने जोइ लेजो. यथा—"इमं वयंतं तुमं पाउ कुव्वं, पावाईणो गरिहसि सव्वमेव। पावाईणो पुढो पुढो किट्टयंता, सयं सयं दिट्ठिं करेंति पाउं ॥१॥ ते अन्नमन्नस्स गरहमाणा, अक्खंतिउ समणा माहणाय। सतोय अत्थी असतो अ नत्थी, गरहामो दिट्ठिं न गरहामो किंचि ॥ २ ॥ न किंचि रूवेणभिधारयामो, सदिट्ठि-मग्गं तु करेमि पाउं"। इत्यादिक अधिकार मनने रंगे करीने जोजो ॥ ९ ॥

कोई भाषे नवी समजावो, श्रावकने गूढा भावो।
ते जुठ कह्या लद्धट्ठा, श्रावक सूत्रें गहियट्ठा ॥ १० ॥

अर्थ—वली कोइ एम कहे छे जे श्रावकने गुढाभावो के०सूक्ष्म अर्थ शुं समजावो छो ए नहीं समजावो जो तमे समजावशो तो सर्वने पूछता फरशे सामा आपणां छिद्र जोशे एवी रीते जे कहे छे ते जुठुं कहे छे केमके श्रावकने तो श्रीभगवतीसूत्रमध्ये "लद्धट्ठा, ग-हियट्ठा, पुच्छीयट्ठा, अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा" इत्यादिक पाठ कह्यो छे माटे जो श्रावकने गूढ अर्थ न समजाव्या होय तो ए पाठ केम कह्यो छे इतिभाव ॥ १० ॥

कहे कोई नवी सि जोडी, श्रुतमां नहीं कांई खोडी ।
ते मिथ्या उद्धत भावा, श्रुत जलधि प्रवेशें नावा ॥ ११ ॥

अर्थ—वली केटलाक असमंजस एम बोले छे के नवी सी जोडीके० नवा ग्रंथ अथवा स्तवन सज्झाय जोडवानुं शुं काम छे केमके श्रुत के० सिद्धांतमां तो कांइ खोड नथी एटले सिद्धांतमां छे ते करतां तमे अधिक शुं कहेशो एवुं कहे छे ते पण मिथ्या के० खोटुं कहेछे कारणके सिद्धांतमांथी ऊद्धरीने जे ग्रंथ करया छे ते भाव छे ते श्रुतजलधि के० श्रुतरूप समुद्रमां प्रवेश करवाने नावासरिखाछे एटले समुद्रमां जो नावा होय तो प्रवेश थाय तेमज सिद्धांतरूप समुद्रमां पण जो ए ग्रंथ प्रकरणरूपी नावडां होय तोज प्रवेश थाय ॥ ११ ॥

पूरव सूरियें कीधी, तेणे जो नवि करवी सिद्धि ।
तो सर्वे कीधो धर्म, नवी करवो जोयो मर्म ॥ १२ ॥

अर्थ—एवुं सांभली वली प्रतिवादी बोल्या के तो पूर्वाचार्ये जे जोडी कीधी छे तेहज भणो तेणे के० ते माटे जो नवी करवी सिद्धि के० नवी जोडी न करवी एम वात सिद्ध थई एटले नवा प्रकरण प्रमुख जोडवा नहीं एम सिद्ध थयुं एवुं बोलनारने उत्तर कहे छे के तो पूर्वे सर्व उत्तम जीवो थया तेणे सर्वे धर्म करयो छे ते माटे तमे वली धर्म शुं करवा करो छो, तमारे पण न करवो केमके पूर्वाचार्ये जोडी करी छे माटे आपणे न करवी तो पूर्वे धर्म पण घणा जीवें करयो छे माटे आपणे न करवो ए मर्म के० ए भाव ॥ १२ ॥

पूरव बुधने बहु माने, निज शक्ति मारग ज्ञाने ।
गुरुकुलवासीने जोडी, युगति एहमां नहीं खोडी ॥ १३ ॥

अर्थ—माटे जो ग्रंथनो जोडनार आवो थइने नवा ग्रंथ जोडे तो तेमां कांइ दोष नथी पूर्व बुधने बहु माने के० पूर्वे पंडित गीतार्थ थया तेहनुं बहु मान करे जे पूर्वाचार्य आगलें हुं ते शा हीसाबमां छुं पण तेनुं वचन खंडे नहीं तथा पोतानी शक्ति प्रमाणे योजना करे पण अधिक योजना न करे जो अधिक योजना करे तो कोइक ठेकाणे खोटुं आवी जाय माटे शक्ति प्रमाणे जोडे वली मार्गज्ञाने के० जैनमार्गनुं ज्ञान चोखुं निर्मल होय तो जोडे वली गुरुकुलवासी होय ते संप्रदाय शुद्ध जाणे तेवारें यथार्थजोडाय एवा पुरुषे जोडवुं युक्त घटमान छे एमां कांइ खोडी के० हाणी नथी ॥ १३ ॥

एम श्रुतनो नहीं उच्छेद, ए तो एक देशनो भेद ।
ए अर्थ सुणि उल्लासें भवी वरते श्रुत अभ्यासें ॥ १४ ॥

अर्थ–ए रीते नवी जोडी करतां श्रुतज्ञाननो उच्छेदनथी थातो पण श्रुतवृद्धि थाय छे एतो एक देशे भेद छे एटले ग्रंथ नामे भेद छे पण आत्यंतिक भेद नथी वली ए ग्रंथनो जे अर्थ के० भाव ते उल्लासें के० हर्षे सांभलीने भव्यप्राणी ते श्रुतज्ञान भणवाना अभ्यासमां

वर्त्ते केमके तेहना मनमांहे एम उपजे के आ ग्रंथमां आटली वात कही छे तो सिद्धांतमां तो घणा सूक्ष्मभाव कह्याहशे तेसारु वधारे भणवानो अभ्यास करे माटे नवी जोडी करवी ते सिद्धांतनी वृद्धि करे छे पण उच्छेद करती नथी इतिभाव ॥ १४ ॥

इहां दूषण एक कहाय, जे खलने पीडा थाय।
तो पण ए नवी छोडीजें, जो सज्जनने सुख दीजें ॥ १५ ॥

अर्थ—इहां एक दूषण कहेवाय छे ते आवी रीते के पंडितलोक जे ग्रंथ करे छे तेथी पंडितनो यशवाद बोलाय छे ते जे खललोक होय तेथीं खमातुं नथी माटे ते खललोकोने पीडा थाय छे तोपण ए नवी जोडी करवी ते नवी छोडीजें के० न मूकीयें जो सज्जन पुरुषने सुख आपीयें तो नवा ग्रंथ जोडताज जइयें पण थाकीयें नहीं इति भाव ॥ १५ ॥

ते पुण्ये होसे तोष, तेहने पण इम नहीं दोष।
उजमतां हीयडे हींसी, जोई लीजें पेहेली वीसी ॥ १६ ॥

अर्थ—ते नवा ग्रंथ जोडतां पुण्य थाशे ते पुण्ये करीने सज्जनलोकोने संतोष उपजशे इहां सज्जनपद वहारथी लइयें तथा तेहने पण के० ते खललोकोने पण एम दोष नथी एटले तेने पण पीडा न थाय. केवी रीते न थाय के जो उजमतांके० उद्यम करीने हीयडे हीसी के० हृदयमां हर्ष पामीने ए अर्थ प्रथम वीसीमां हरिभद्रसूरियें कह्युं छे ते जोइ लेजो. यतः—"इक्को य होइ दोसो, जं जायइ खलजणस्स पीडत्ति । तहवि पयट्टो इत्थं, दिट्ठं सुयणाण अइतोसं ॥ १ ॥ तत्तो चिय जं कुसलं, तत्तो तेसिंपि होइ नहु पीडा । सुद्धासया पवित्ति, सत्थे निद्दोसिया भणिया ॥ २ ॥" ॥ १६ ॥

कहे कोईक जूदी रीतें, मुनि भिक्षा भांजे भीतें।
ते जुठुं शुभ मति ईहे, मुनि अंतरायथी बीहे ॥ १७ ॥

अर्थ—वली कोइक तो जूदीज रीतें कहे छे जे देशना देवानी ना कहीयेछैये तेहनो आशय ए छे जे मुनि देशना देतां अमारी भीक्षा भांगो छो कारणके तमे एवो मार्ग प्ररुपो जे थकी अमने भिक्षा कोइ आपे नहीं ते भीती के० बीकने माटे देशना देवानी ना कहीयें छैयें ते जुठुं के० एम बोलनारा पण खोटुं कहे छे केमके जे यथार्थ देशना आपनार मुनि छे ते शुभ मतिने ईहे के० वांछे छे एटले उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसाय राखनारा छे तो ते एहवा मुनिराज तो अंतरायथी वीहे छे के जो कोईने अंतराय पाडीशुं तो पोताने अंतराय कर्म बंधाशे तो एवा मुनि बीजानी भिक्षा केम भांजे. इतिभाव ॥ १७ ॥

जे जन छे अति परिणामी, वली जेह नहीं परिणामी
तेहने नितें समजावे, गुरुकल्प वचन मन भावे ॥ १८ ॥

अर्थ—माटे जे लोक अति परिणामी छे एटले एक निश्चे मार्गज आदर्यो छे ते पोतेज आ स्तवनमां आगल कहेशे जे-"भेदलव जाणतां केइ मारग तजे, होय अति परिणति परसमय स्थिति भजे।" वली केटलाक लोक ते नहीं परिणामी के०केवल व्यवहारनेज आदरे छे ते क्रिया व्यवहारमां राता पण निश्चे मार्ग जाणताज नथी ते पण पोतेज आ स्तवनमां आगल कहेशे-"केइ नवी भेद जाणे अपरिणतमती, शुद्धनय अतिहि गंभीर छे ते वती।" ए वचनथी तो एम जाणीयें छैयें जे अतिपरिणति ते निश्चयवादी अने अपरिणति ते व्यवहारवादी तथा विशेषावश्यक मध्ये तो वृत्तिकारें एम लख्युं छे जे-"इह शिष्यास्त्रिविधास्तद्यथा अपरिणामा अति परिणामाः परिणामाश्चेति। तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरिणतजिनमतरहस्या अपरिणामाः,अतिपरिणामा अतिव्याप्तापवाददृष्टयोऽतिपरिणामाः, सम्यक्परिणतजिनवचनास्तु मध्यस्थवृत्तयः परिणामाः। तत्र ये अपरिणामास्ते नयानां यः स्वस्वआत्मीयआत्मीयविषयो ज्ञानमेव श्रेयः क्रिया वा श्रेय इत्यादिकस्तमश्रद्धानाः येत्वतिपरिणामाः तेपियदेवैकेन नयेन क्रियादिकं वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणतया गृण्हंतः।" इत्यादिक लख्युं छे इहां तो पूर्वोक्त अर्थ पण लागे छे तथा महाभाष्योक्त अर्थ पण लागे छे वली विशेषें बहुश्रुत कहे ते खरुं इतिभाव-एहवा अतिपरिणामी तथा नहीं परिणामी जे लोक छे तेहने नितें के० न्यायमार्ग स्याद्वादमार्ग देखाडी गुरु समजावे छे अथवा निते के० निरंतर देशनायें करी समजावे छे ते कोण समजावे छे गुरु के० गुरु समजावे छे एम बृहत्कल्पभाष्यमां वचन छे ते मनमां भावीनें कहे छे. यतः-"अइपरिणइ अपरिणइ, दुण्हंवि मग्गं जणो पणासंति। तम्हा देसणमाइक्खई, सुहगुरू मग्गरक्कट्ठा ॥ १ ॥" १८ ॥

खल वयण गणे कुण सूरा, जे काढे पयमां पूरा।
तुज सेवामां जो रहीयें, तो प्रभु जश लीला लहीयें ॥ १९ ॥

अर्थ—ते माटे देशना न देवी विगेरे खललोकनां वचनने कोण शूरवीर पुरुष गणे के०कोण गणतीमां आणे एटले शूरवीर तेने गणतीमां आणताज नथी. जे खलपुरुष छे ते पय के० दूधमांथी पण पूरा काढे छे माटे जे देशना गुणकारी छे तेहने अहितकारी कहेछे तो हे प्रभुजी तेहनां वचन लेखामा गणीयें नहीं अने तुजसेवामां रहीयें के० तमारी आज्ञा पालीयें एटले तमारी आज्ञा एवी रीतें छे जे देशना आपतां लाभज थाय छे माटे देशना आपवी ए आज्ञा पालनरूप तमारी सेवा छे ते सेवामां जो रहियें तो जशलीला पामीये. इतिभाव ॥ १९ ॥ ए चोथी ढालने विषे खललोके गुणवंतने दूषण दीधा तेहना समाधान कर्या. हवे पांचमी ढालमां खललोक निर्गुणी छतां पोताना आत्माने गुणकारी माने छे तेने दोष दीये छे ते संबंधे पांचमी ढाल कहे छे ॥ १९ ॥

—❦—

॥ ढाळ पांचमी ॥

॥ राग रामग्री–मंत्री कहे एक राजसभामां—ए देशी. ॥

विषमकालनें जोरें केई, उठ्या जड मलधारीरे ।
गुरु गच्छ छोडी मारग लोपी, कहे अमें उग्र विहारीरे ॥१॥
श्रीजिन तुं आलंबन जगने, तुज विण कवण आधारोरे ।
भगत लोकने कुमति जलधिथी, बांहिग्रहीने तारोरे ॥श्रीजिन०२॥

अर्थ—विषमकालने जोरें के० पांचमो आरो तथा हुंडाअवसर्पिणीकालनें जोरे केटला एक उठ्या के० प्रगट थया जड के० मूर्ख वली मलधारी के० बाह्यशरीरे पण मेला अने अंतरंग पाप मेले करी मलीन थयेला माटे मेलना धरनारा कह्या एटले ए भाव जे ए ढाल प्राए ढुंढीआ लुंका आश्री छे. वली बीजा जीवोने पण शिखामण दाखल छे. हवे ते ढुढी-आओने माथे गुरु नथी माटे एम कह्युं जे उठ्या जड मलधारी, उक्तंच वंगचूलिकायां श्रुत हीलना अध्ययने "विक्कमकालाओ पन्नरसय पणहत्तरी वासेसु गएसु कोहंडी अपरिग्गहीय-वंतरी पहावाओ भारहे वासे ॥ १ ॥ सुयहीलणा जिणपडिमाभत्तिनिसेह कारया, स-च्छंदाचारा दुमेहा मलिणा दुग्गइगामिणो, बहवे भिख्कायरा समुप्पजिहितित्ति ।" एटले गुरुने तथा गच्छने छांडी मारग लोपी के० उन्मार्ग प्ररुपीने तथा तेमने कोइ पुछे तेने एम उत्तर आपे जे अमे उग्रविहारना करनार छीए तथा अमे अद्भुत मार्ग पाम्या छैयें माटे श्रीजिनके० बाह्य अभ्यंतर लक्ष्मीयुक्त एहवा हे जिनराज तुंज जगतने आलंबनके० आधार छे पण हे प्रभु तमारा विना बीजो कोण आधार छे तमे तमारा भक्तिना करनारा जे भक्त लोक छे तेहने कुमतिरूप जलधि के० समुद्र ते थकी बांहि ग्रहीने तारो के० पार उतारो एटले नव नवा कदाग्रह उपजता वारो ॥ २ ॥

गीतारथ विण भूला भमता, कष्ट करे अभिमानेरे ।
प्रायें गंठी लगें नवी आव्या, ते खूता अज्ञानेरे ॥श्रीजिन०३॥

अर्थ—हवे ते मूर्खलोक गीतार्थ विना भूलाज भमे छे अहंकारे करी जे पोतानो एक मत पकड्यो तेहना अभिमाने करी लोच, भिक्षा, उघाडुं माथुं, उघाडा पग इत्यादिक कष्ट करता फरे छे, पण प्रायें एम जाणीयें छैयें जे ते लोक गंठी लगें पण आव्या नथी एटले गंठीभेद प्रण नथी कर्यो तो समकितनी वात तो वेगली छे ते प्राणी अज्ञानने विषेज खूता छे केमके गुरुआणा विना छे माटे इतिभाव ॥ ३ ॥

तेह कहे गुरु गच्छ गीतारथ, प्रतिबंधे शुं कीजेंरे ।
दर्शन ज्ञान चरित आदरियें, आपें आप तरीजेंरे ॥श्रीजिन०४॥

अर्थ—वली ते पोतानुं एकाकीपणुं थापवा माटे एम कहेछे जे गुरुनो प्रतिबंध गीतार्थनो प्रतिबंध तथा गच्छनो प्रतिबंध राखी ते प्रतिबंधे शुं करीयें केमके प्रतिबंध तेतो दुःखनो हेतु छे माटे प्रतिबंध कोइ साथे न करवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें बीजो कोइ कोइने तारणहार नथी आपे आप तरीजे के० पोतपोतानी मेले तरीयें. यतः—"अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कुडसामलि।" इतिवचनात् ॥ ४ ॥

नवी जाणे ते प्रथम अंगमां, आदि गुरुकुल वासोरे।
कह्यो न ते विण चरण विचारो, पंचाशकनय खासोरे ॥श्रीजिन०५॥

अर्थ—हवे तेने उत्तर आपेछे के ते एम नथी जाणता जे प्रथम अंगमां श्रीआचारांग सूत्रनी आदि के० धुरें गुरुकुलवासो के० गुरुकुलवास कह्यो छे. यतः—"सूयं मे आउसंतेणं, भगवया एवमक्खायं" एम ए सूत्रमांहे कह्युं जे सूय के० सांभल्युं मे के०सुधर्मास्वामी जंबूप्रतें कहे छे के में एम सांभल्युं छे साक्षात् पण करणाघाटे नहीं आउसंतेणं के० आमृशता भगवान वीरना चरण उपासता थकां सांभल्युं ए वचने करीने सुधर्मास्वामीयें एम बताव्युं जे गुरुकुलवासें वसवुं इतिभाव न के० नहीं ते विण के० ते गुरुकुलवास विना चरण के० चारित्र एम विचारो के० चिंतन करो एटले ए भाव जे गुरुकुलवास विना चारित्र न होय एम पंचाशक मांहे श्रीहरिभद्रसूरियें खासो के०उत्तम नय के०न्याय कह्यो छे. यतः—"दंसण नाणचरित्तं, गुरुकुलवासंमि संगयं भणियं। अगुरुकुलवासियाणं, दुप्पडिलंभं खु एयमवि ॥ १ ॥" तथा सिद्धांतमां पण पिंडविशुद्धियें चारित्रनी शुद्धि कहेवाय छे ते पिंडविशुद्धि तो जो गुरुकुलवास होय तो थाय ते माटे गुरुकुलवास विना चारित्र नहीं. यतः—"पिंडं असोहथंतो, अचरित्ती इत्थ संसओ नत्थि। चारित्तंमि असंते, सव्वा दिख्का निरत्थिया ॥ ११॥ इति ॥ ५ ॥

नित्यें गुरुकुल वासें वसवुं, उत्तराध्ययने भाष्युंरे।
तेहने अपमाने वली तेहमां, पापश्रमणपणुं दाख्युंरे ॥श्रीजिन० ६॥

अर्थ—वली निरंतर गुरुकुलवासें वसवुं एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रना अग्यारमा अध्ययने कह्युं छे. यतः—"वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं। पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरीहई ॥ १ ॥" इति वली तेहने के० ते गुरुने अपमाने के० अवज्ञा करे तो तेहने वली तेहमां के० ते उत्तराध्यनना सत्तरमा पापश्रमणिय अध्ययन मध्येज पापश्रमणपणुं देखाड्युं छे एटले गुरु आदिकनी निंदा करतो होय तो तेहने पापश्रमण कहीये. यतः—"आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई। अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ १ ॥" ते माटे गुरुकुले रहेवुं.

दस वैकालिक गुरु शुश्रूषा, तस निंदा फल दाख्यारे।
आवंतिमां द्रहसम सद्गुरु, मुनिकुल मच्छसम भाख्यारे॥श्रीजिन०७॥

अर्थ—वली दशवैकालिक सूत्रने विषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषा के० सेवा करवी ते सेवानां फल घणां कह्यां छे. काव्यम्–"आयरियग्गि मिवाहियग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा । आलोइयं इंगीयमेव नच्चा, जो छंदमाराहयइ स पुज्जो ॥१॥" इत्यादिक आखो त्रीजो उद्देशो जाणवो वली तसनिंदा के० ते गुरुनी निंदानां फल पण ते दसवैकालिक मांहेज नवमाध्ययनना पहेला उद्देशामां कह्यां छे. काव्यम्–"आसीविसो वावि परं सुट्ठो, किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा । आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥१॥" इत्यादिक सपूर्ण प्रथम उद्देशो इहां जाणवो वली आवंतिमां के० आचारांगमां पांचमा अध्ययनना पांचमा उद्देशा मध्ये सद्गुरुने द्रहसमान कह्या छे तथा मुनिना कुल के० समूह ते मच्छसमान कह्या छे–तथा च तत्सूत्रं–"सेवेमि तंजहा अवि हरए पडिपुन्ने चिट्ठइ समंसि भोमे उवसंतरए सारक्खमाणे से चिट्ठइ" इत्यादिक एनी वृत्तिनो वचेथी एकदेश लखीयें छैयें –"इह पुनः प्रथमभंगपतितेनोभयसद्भाविनाधिकारस्तथाभूतस्यैवार्थं दृष्टांतः स च ह्रदो निर्मलजलस्य प्रतिपूर्णो जलजैः सर्वर्तुजे रुपशोभितः समे भूभागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्य मेव तिष्ठति न कदाचिच्छोषमुपयाति सुखोत्तारावतारसमन्वित उपशांतमपगतं रजः कालुष्यापादकं यस्य स तथा नानाविधांस्तु यादसां गणान् संरक्षन् सह वा यादोगणैरात्मानमारक्षयन्–प्रतिपालयन् सारक्षन् तिष्ठत्येषां क्रिया प्रकृतैव । यथा चासो ह्रदस्तथाऽऽचार्योपीतिदर्शयति से चिट्ठइ इत्यादि स आचार्यः प्रथमभंगपतितः पंचविधाचारसमन्वितो अष्टविधाचारसंपदुपेतः षट्त्रिंशद्गुणगणाधारो ह्रदकल्पो निर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समे भूभाग इति संसक्तादिदोषरहिते सुखविहारे क्षेत्रे समो वा ज्ञानदर्शनचारित्राख्यो मोक्षमार्ग उपशमवतां तत्र तिष्ठति समध्यास्ते किं भूत उपशांतमोहनीय इति किं कुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्च सदुपदेशदानतो नरकादिपाताद्वेति स्रोतोमध्यगत इत्यनेन प्रथमभंगपतितं स्थविराचार्यमाह तस्य हि श्रुतार्थदानग्रहणसद्भावात् स्रोतोमध्यगतत्वं स च किं भूतः स्यादित्याह" इत्यादि ॥ ७ ॥

गुरु दृष्टि अनुसारें रहेता, लहे प्रवाद प्रवादेंरे ।
ए पण अर्थ तिहां मन धरियें, बहुगुण सुगुरु प्रसादेंरे ॥श्रीजिन०८॥

अर्थ—वली गुरु दृष्टि के० गुरुना मुख आगल रहेतां तथा अनुसारें के० गुरुने अनुजायी रहेतां लहे प्रवाद प्रवादें के० प्रकृष्ट जे वाद तेने प्रवाद कहिये ते प्रवादें करीने प्रवाद जाणे एटले प्रवाद ते आचार्य परंपरानो उपदेश तद्रूप प्रवादें करीने सर्वज्ञ उपदेशरूप प्रवादने जाणे अथवा प्रवाद जे सर्वज्ञ वाक्य तेणे करीने अथवा प्रवाद जे अन्यतिर्थिओना वाक्य ते प्रते परीक्षा करीने जाणे ए-रीते गुरु पासे रहेतां ज्ञान अंगीकार करे इत्यादिक ए अर्थ. पण तिहां के० ते आचारांगना पांचमा अध्ययनना छठ्ठा उद्देशामां कह्युं छे ते मनमां धरियें तत्सूत्रं–"अणाणाए एगे सोवट्ठाणे आणाए एगे, निरुवट्ठाणे, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं, तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सन्नि तन्निवेसणे अभिभूय

अदक्खू अणभिभूए पहू निरालंवणयाए जे महं अवहिमणे पवाएण पवायं जाणिज्जा । सहसं-मइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा अंतिए सुच्चा निद्देसं नाइवट्टेज्जा, मेहावी सुपडिलेहिय सव्व-तो सव्वआए सममेव समभिण्णाय ।" इत्यादिक एहनो अर्थ टीकामां तो वहु छे पण अहिं शब्दार्थ मात्र लिखीयें छैयें अणाणाए के० प्रभुआज्ञारहित एगे के० केटलाक सोवट्ठाणे के०धर्ममां सदा उद्यमवंत थया तथा केटलाक आणाए के० आज्ञायें निरुवट्ठाणे के० सद् अनुष्टानना उद्यमरहित एयं के० ए वे कुमार्गने सद्मार्गना उद्यमनुं आलस जाणवुं हवे फरि गुरु शिष्यने कहे छे–सुजने ए वे मांहे जो एवं कुसलस्स दंसणं के० ए तीर्थंकरनो दर्शन अभिप्राय छे तद्दिट्ठिए के० विनित शिष्यें ते आचार्यनी दृष्टीयें वर्तवुं तम्मुत्तिए के० ते आचार्यनी मुक्तियें वर्तवुं तप्पुरकारे के० ते आचार्यनी आज्ञा आगल करीने वर्ते तस्सन्नि के० तेओनी संज्ञा जाणे चित्तनो अभिप्राय जाणे तन्निवेसणे के० सदा गुरुकुलवासें वसे एहवो शिष्य केवा गुणने पामे ते कहे छे अभिभूय के० परिसह उपसर्गने जीतीने अदक्खु के० घाति कर्मने उच्छेदे हे शिष्य वली अणभिभूए के० परिसहोपसर्गने अण जित्यो थको पहू के० समर्थ होय निरालंवणयाए के० माता पिता सज्जनादिकना आलंवन रहितपणे विचरवाने कोण समर्थ होय ते कहे छे–जे के० जे कोइ पुरुष महं के० माहरा अभिप्राय थकी अवहिमणे के० मन वाहेर नथी निकल्युं जेहनुं एटले सर्वज्ञ उपदेशें वर्ते छे इतिभाव ते सर्वज्ञ उपदेश केम जाणीयें ते उपदेश कहेछे–पवाएणं पवायं जाणिज्जा ए अर्थ 'लहे प्रवाद प्रवादे' एम कह्युं तिहां कर्यो छे ते जाणवुं. हवे पूर्वोक्त जे प्रवाद ते त्रण प्रकारे जाणे ते कहे छे सहसंमुइयाए के० पोतानी मति अवध्यादिकमते अथवा परवागरणेणं के० सिद्धांते करीने वा के० अथवा अन्नेसिं के० अन्य आचार्यादिक तेहने वा अंतिए सुच्चा के० समीपें सांभलीने यथार्थ जाणीने निद्देसं नाइवट्टेज्जा के०तीर्थंकरना उपदेशने ओलंगे नहीं केमके जे मेहावी के० पंडित सुपडिलेहिय के० भलेप्रकारें जोईने सव्वतो सव्वआए के०सर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रकालभावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनमतें सममेव के० सम्यक् रीते समभिण्णाय के० जाणीने निराकरण करे इत्यादिक वहु अधिकार छे ते माटे वहुगुण सुगुरुप्रसादे के० गुरु आदिकना पसायथी घणा गुण थाय "पुज्जा जस्स पसियंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ । पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥ १ ॥" इत्युत्तराध्ययने प्रथमाध्ययने इहां सूत्र आलावो विषमहतो माटे अर्थ कह्यो छे ॥ ८ ॥

विनय वधे गुरु पासें वसतां, जे जिनशासन मूलोरे ।
दर्शन निर्मल उचित प्रवृत्ति, शुभरागें अनुकूलोरे ॥श्रीजिन०९॥

अर्थ—वली गुरु पासे वसतां विनय वधे अने जे विनय ते जिनशासननुं मूल छे ॥ यतः–"एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो य से मुक्को" इति दसवैकालिक नवमाध्ययनना वीजा उद्देशकें कह्यो तथा "विनयफलं शुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानं । ज्ञानस्य फलं विरतिः, विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥ आश्रवरोधाद्भवसततिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः ।

तस्मात् कल्याणानां, सर्वेषां भाजनं विनयः ।।२।।" इति प्रशमरतौ. वली गुरुकुलवासें दर्शन श्रद्धा निर्मल थाय उक्तं च–"सव्वगुणमूलभूओ, भणिओ आयारपढमसूत्ते जं। गुरुकुलवासो वस्सं। वसिज्जओ तत्थ चरणत्थी ।।१।।" इति धर्मरत्न वचनात् वली गुरुकुलवासें दर्शन श्रद्धा निर्मल थाय. तथा उचित के० योग्य प्रवृत्ति थाय ते पण सुभरागें के० भला राग-सहित प्रवृत्ति करे ते पण अनुकूल के० सन्मुख भावपणे करे पण वेठनी पेठे न करे ।।९।।

वैयावच्चें पातक त्रुटे, खंतादिक गुण शक्तिरे ।
हितोपदेशे सुविहित संगे, ब्रह्मचर्यनी गुप्तिरे ।।श्रीजिन०१०।।

अर्थ—गुरुनो वैयावच्च करतां थकां पातिक के०पाप कर्म त्रुटे. यतः–"वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणइ? वेयावच्चेणं तित्थयरनाम गोयं कम्मं निवंधइ" इति उत्तराध्ययने ओगणत्रीसमाध्ययने कह्युं. वली गुरु आदिक पासे रहेतां खंतादिक के० क्षमा प्रमुख गुणनी शक्ति वधे तथा गुरु पासे रहेतो थको हितोपदेश सांभले तेणेकरी तथा सुविहितना सगे करीने ब्रह्मचर्यनी गुप्ति के० नव वाडो भली रीतें पाले ते गुप्ति पण वधे ।। १० ।।

मन वाधे मृदु बुद्धि केरा, मारग भेद न होवेरे ।
बहु गुण जाणे ए अधिकारें, धर्मरयण जो जोवेरे ।।श्रीजिन०११।।

अर्थ–तथा मृदु बुद्धिकेरा के० जे ऋजुमतिना धणी होय तेहना मन वाधे के० चित्त मांहे उल्लास वधे कारणके जे भोला लोक होय ते गुरु साथे देखीने हर्ष पामे अने गुरुथी जुदा देखीने भडकी जाय तथा मारगनो भेद न थाय अने जे एकाकी मार्ग प्ररुपे ते घणो अपवाद प्ररुपे अने गीतार्थ घणो उत्सर्ग प्ररुपे एवीरीते जुदी जुदी प्ररुपणा सांभलीने लोक पण भिन्नमार्ग समजे तेथी धर्ममार्गनो भेद थाय अने गुरु साथे भेला रहेतां थकां न थाय. इत्यादिक गुरुकुलवास मांहे बहु के० घणा गुण जाणे ए अधिकारें के० ए गुरुकुलवासना अधिकारने विषे धर्मरत्नग्रंथ जे प्राणी जुए ते जाणे एटले ए ग्रंथमां गुरुकुलवासें रहेतां घणा गुण छे ते विस्तारें कह्युं छे इतिभावः ।। ११ ।।

नाण तणो संभागी होवे, थिर मन दर्शन चरित्तेरे ।
न त्यजे गुरु कहिये ए बुध भाख्युं, आवश्यक निर्युक्तेंरे ।।श्रीजिन०

अर्थ—वली ते जीव गुरु पासेथी ज्ञान भणे माटे नाण के० ज्ञाननो संविभागी थाय तेमज दर्शनने विषे तथा चरित्ते के० चारित्रने विषे पण तेहनुं मन थिर रहे ते प्राणी गुरु के० गुरु आदिकने कहियें के० कोइ काले न त्यजे के० न छांडे ए रीते बुध भाख्युं के० पंडित लोके कह्युं एटले भद्रबाहुस्वामी चउद पूर्वधर तेणे आवश्यक निर्युक्तिने विषे एम कह्युं छे ।। यतः–"नाणस्स होइ भागी, थिरयरओ दंसणे चरित्ते य । धन्ना आवकहाए, गुरुकुल-वासं न मुंचंति ।। १ ।।" इति ।। २ ।।

भीतप्रतें जेम वाणे हणता, पग अणफरसी सबरारे ।
गुरु छोंडि आहारतणो खप, करता ते मुनि निवरारे ॥श्रीजिन०१३॥

अर्थ—तथा भीत के० बौधप्रतें जेम पिछुं लेवाने माटे वाणे करीने हणता पण पग अणफरसीने एटले पग फरसतां पाप लागे ते माटे सबरा के० सबरा नामे राजानी पेठे जे गुरुकुलवास छांडीने आहारनो खप करता एटले शुद्धमान आहार खोलता जे मुनि तेहने निवरा जाणवा एटले नकामा जाणवा इति गाथार्थ. भावार्थ तो कथाथी जाणीयें तद्यथा कोइक सन्निवेशने विषे सबर नामे राजा ते बौधनो भक्तिवंत हतो तेना घरें बौधनो गुरु आव्यो तेणे पोताना माथा उपर अति अद्भुत शोभावंत मोरना पीछनुं छत्र धारण कर्युं हतुं राजायें घणो आदर सत्कार आपी आसने बेसाड्यो पछी तेनुं छत्र मोरना चंद्रे करी झगझगाट करतुं राजानी राणीयें दीठुं पछी कुतूहल पामती थकी राणीयें ते छत्र मांग्युं केमके ते देशमां मोर नहता तेथी ते नवाइ जेवुं हतुं माटे ते छत्र बौधना गुरुए आप्युं नहीं अने उठीने पोताने ठेकाणे जतो रह्यो पछी राणीयें भोजन कीधुं नहीं ते वारे राजायें पुछ्युं के शा वास्ते भोजन करती नथी राणी बोली के ए छत्र आवे तो भोजन करुं त्यारे राजाये ते छत्र गुरु पासे मांग्यु पण गुरुयें आप्युं नहीं फरी वारंवार माग्युं पण गुरु आपे नहीं पछे स्नेहराग अति दुर्धर छे माटे राणीना स्नेहें राजायें पोताना सुभटोने हुकम कर्यो जे बलात्कारें पण ए पीछनुं छत्र लेइ आवो ते वारें सुभटो बोल्या जे ए पोते जीवतां तो छत्र आपशे नहीं माटे तमारो हुकम होयतो कांइक प्रहार करी बलात्कारें लावीयें तेवारे राजा बोल्यो जे गुरुनी आशातना न थाय माटे गुरुना पाद स्पर्श करशो नहीं पण दूर उभा रही वाण नाखीने चेष्टारहित करी छत्र लेइ आवो पण पादस्पर्श करशो तो गुरुनी अवज्ञा थशे तेनुं मोहोटुं पाप लागशे ए दृष्टांते जेम शबरराज गुरुनो नाश करतो पण पादस्पर्श करतां वारतो हतो एहवोज विवेक गुरुकुलवास तजीने जे शुद्धआहार गवेषे छे तेहनेपण जाणवो. यतः—"सुद्धुंछाइसु जत्तो, गुरुकुलचागाइणेह विन्नेओ । सबरससरक्खपिछत्थघायपायाछिवणतुल्लो ॥ १ ॥" इति धर्मरत्ने ॥ १३ ॥

गुरुकुलवासें ज्ञानादिक गुण, वाचंयमने वाधेरे ।
तो आहारतणो पण दूषण, खप करतां नवि वाधेरे ॥श्रीजिन०१४॥

अर्थ—वली गुरुकुलवासें वसतां थकां ज्ञान दर्शन चारित्रना गुण ते दिन दिन प्रतें वधे वाचना पृच्छनादिके करी वाचंयमने के० मुनिराजने वाधे हवे पाछला बे पदनो अर्थ अन्वय करी कहीयें छैयें ते ज्ञानादिक गुणनी वद्धि थाय तो आहारनो खप करतां पण दूषण न वाधे इत्यन्वय एटले ज्ञान ध्याननी लेहेरमां बेठा थकां कोइक द्रव्यानुयोगमां अत्यंत मग्न थया छे एवामां गोचरीयें निकल्या थकां कोइक स्थानकें सूक्ष्म दोष देखीने चितवन करे जे ध्याननी

लेहेर हजी चित्तमां अंतरवासनायें छे अने घणा घेर फरवा जइश तो ते लेहेर फरी आवशे नहीं एहवुं विचारी कांइक दूषणसहित आहार लीये तोपण तेहने बाध न करे एटले कर्मबंधनो हेतु न थाय. यतः–"अहाकम्माणि भुंजंति, अन्नमन्ने सकम्मुणा। उवलित्ते विआणिज्जा, अणुवलित्तेति वा पुणो ॥ १ ॥" इत्यादिक सुयगडांगसूत्रे अध्ययन २१ मा मध्ये कह्युं छे. तथा "गुरुकुलवासवसंता मुणीणो वड्ढंति नाणपमुहेहिं जइ एसणाइदोसम्स। लवमवि मन्निजए सुगुणं ॥ १ ॥" इतिभाव. तथा अपवादें गाढ ग्लानादिकना कार्यें अणसरते गच्छमां रह्या गुरुआणा वर्त्तिने असठ भावे वर्त्तता ने आतुर दृष्टांते आधा कर्मादिक आहार ते पण निर्दोष जाणवो तथा चागमः–"संथरणंमि असुद्धं, दुन्हवि गिन्हंतदिंतयाणऽहियं । आउरदिहंतेणं, तं चेव हियं असंथरणे ॥१॥" तथा ॥ "जा जयमाणस्स भवे, विराहणा सुत्तविहिसमग्गस्स। सा होइ निज्जरफला, अज्झप्पविसोहिजुत्तस्स ॥२॥" उत्तराध्ययने ए रीते दूषण सहित आहार ते पण बाध न करे ॥ १४ ॥

धर्मरतन उपदेशपदादिक, जाणी गुरु आदरवोरे।
गच्छ कह्यो तेहनो परिवारो, ते पण नित अनुसरवोरे ॥श्रीजिन०॥

अर्थ–तथा धर्मरत्न अने उपदेश पद प्रमुखग्रंथ जोइने ए ग्रंथोमां गुरुकुलवासना अधिकार घणा छे माटे तेमांथी जाणीने गुरु आदरवो वली गच्छ ते कोने कहीयें ते कहे छे तेहनो परिवारो के० एहवा सुविहित साधुनो परिवार तेहने गच्छ कहीयें. यतः–"गुरुपरिवारो गच्छो" इत्यादिक पंचवस्तु वचनात्. माटे ते गच्छ पण निरंतर अंगीकार करवो अनुसरवो इति यतः–"गुरुगुणजुत्तो गच्छो, गच्छो संविग्गसाहुसमवाओ । मुक्खमग्गत्थिणा सो य, अणुसरियव्वो पयत्तेण ॥ १ ॥" इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारण प्रमुख लहीने, मुक्तिमारग आराधेरे।
सुभवीरय तिहां सुविहित किरिया, देखादेखें वाधेरे ॥श्रीजिन०१६॥

अर्थ–वली सारण के० विसरयुं होय ते संभारी आपे अने वारण के० पापकरणी करताने वारे तथा प्रमुखशब्दें करी चोयणा प्रतिचोयणा पण लेवी ते पण जे गच्छमां रहे तेहने थाय पछी ते ते सारणादिक लहीने के० पामीने मुक्तिमारग आराधे के० मोक्षमार्ग साधे. यतः–"गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थवसंताण निज्जरा विउला। विणयाउ तहा सारणमाईहिं न दोसपडिवत्ति ॥ १॥" इति पंचवस्तुके. तथा श्रीधर्मरत्न प्रकरणनी वृत्ति मध्ये कह्युं छे के सुभवीरय के० भलो वीर्योल्लास वाधे. वली सुविहित किरिया के०आत्मार्थी गीतार्थनी क्रिया व्यवहार ते देखादेखीयें वधे एटले साधुओना समूहने क्रिया तप जपादिक करतां देखीने पोताने पण करवानुं मन थाय तेहथी वधारो थाय ॥ १६ ॥

जलधी तणो संखोभ असहता, जेम नीकलता मीनोरे।
गच्छ सारणादिक अणसहता, तिम मुनि दुखिया दीनोरे ॥श्रीजिन०

अर्थ–जेम जलधी के० समुद्रनो संखोभ के० कल्लोल प्रमुखनी जे क्षोभना तेह्ने अ-सहता के० जे वारें सही शके नहीं ते वारें जेम मीन के० मच्छ होय ते समुद्रमांथी बाहार नीकले तो दुःखी थाय तेम गच्छमां रहेता थका गुरु आदिक जे सारणादिक करे ते सहन करवी पडे अने जे वारें न सहवाय ते वारें गच्छथी बाहार निकले तो ते समुद्रमांथी निक-लेला मच्छनी पेठे दुःखी थाय दीन थाय केमके गत्यंतरे दुर्गतियें जाय माटे दुःखी दीनज थाय इतिभाव. यतः–"जह जलनिहिकल्लोलक्खोभमसहंता य बाहिरं पत्ता। मीणा अमुणिय मूणीणो, सारणपमुहाइअसहंता ॥ १ ॥" इति ओघनिर्युक्तौ । आचारांगपंचमाध्ययनच-तुर्थोद्देशकवृत्तौ पुनर्यथा "जह सायरंमि मीणा, संक्खोहं सायरस्स असहंता । णिंति तओ सुहकामी णिग्गयमित्ता विणस्संति ॥ १ ॥ एवं गच्छसमुद्दे, सारणवीईहिं चोइया संता । णिंति तओ सुहकामी, मीणा व जहा विणस्संति ॥ २ ॥"

काक नर्मदातट जेम मूकी, मृग तृष्णाजल जातारे ।
दुख पास्या तेम गच्छ तजीने आपमति मुनि थातारे श्रीजिन०१८॥

अर्थ–वली दृष्टांत कहे छे–जेम नर्मदा नदीना किनारा उपर रहेनारा काकपक्षी जे कागडा ते तट के० नदीनो कांठो मूकीने ते नदीना कांठाथी दूर पाणी जेवी झाकल देखाय पण पाणी होय नहीं ते भ्रांतिरूप पाणी तेने मृग तृष्णाजल कहीयें ते जलनी भ्रांतियें दो-डता एवा जे स्वेच्छाचारी थवा जाय ते कागडानी पेठे दुःख पामे ॥ १८ ॥

पालविना जेम पाणी न रहे, जीवविना जेम कायारे ।
गीतारथविण तेम मुनि न रहे, जुठ कष्टनी मायारे श्रीजिन०१९॥

अर्थ–माटे जेम सरोवरादिकनुं पाणी ते पाल बांध्या विना रहे नहि तथा जेम जीव विना काया न रहे तेम जे मुनिराज छे ते गीतार्थ विना रहे नहीं. "गीयत्थस्स विहारो, बीओ गीयत्थमीसिओ भणिओ ॥" इत्यादि वचनात् माटे जे गीतार्थ विना जेटला कष्ट करे ते सर्व अज्ञानमां भले अने जे अज्ञान ते मिथ्यात्व छे ते माया के० कपट विना होय नहि ॥ १९ ॥

अंधप्रतें जेम निर्मल लोचन, मारगमां लेई जायरे ।
तेम गीतारथ मूरख मुनिने, दृढ आलंबन थायरे ॥ श्रीजिन २० ॥

अर्थ–वली दृष्टांत कहे छे जेम आंधलाने निर्मल आंखनो धणी ते कांटा प्रमुखें रहित एहवा उत्तम मार्गें लेइ जइने स्थानकें पोहोचाडे तेम गीतार्थ जे छे ते जो कदाचित् मूर्ख मुनि होय तो तेने पण दृढ के० जबरदस्त आधारभूत थाय छे ॥ २१ ॥

समभावी गीतारथनाणी, आगममांहें लहियेंरे ।
आतमअरथी सुभमति सज्जन, कहो ते विण केम रहियेंरे श्रीजिन०

अर्थ—वली समभाषी के० स्याद्वाद वचनना भाषी होय अथवा समभाषी के० गरीवने तथा मातवरने रागद्वेषरहितपणे देशना आपे तथा गीतार्थ होय नाणी के० सम्यक्ज्ञानी होय आगम मांहेथी एहवा गीतार्थ लहियें के० पामीयें छैयें वली आगमअरथी के० पोतानुं आत्मस्वरूप साधवाने उजमाल थया तथा शुभमति के० भली मतिना धणी एटले जेमां कुमति कदाग्रह होय नहीं वली सज्जन के० उत्तम गुणवंत भली शिखामणना आपनारा एहवा गीतार्थ विना इहां सर्व पद संबोधने बोलावीयें हे आत्मार्थि हे शुभमति हे सज्जन तमे कहो के ते एहवा गुरुगीतार्थ पुरुष विना केम रहीयें के० शी रीते रही शकीयें ॥२१

लोचन आलंबन जिनशासन, गीतारथ छे मेढीरे ।
ते विण मुनि चढती संयमनी, आरोहे केम सेढीरे ॥श्रीजिन०२२॥

अर्थ—वली गीतार्थ ते ज्ञानरूप लोचनना आपनारा माटे गीतार्थने जिनशासनने विषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिने विषे पडता प्राणीने आधार थाय माटे गीतार्थने जिनशासनने विषे आलंबन कहीयें वली गीतार्थ ते मेढी बराबर छे एटले जे खेतर खलाना वचमां स्तंभ रोपीने अन्न उपर फेरवे छे तेने मेढी कहीयें उपलक्षणथी स्तंभभूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहे छे तथा यान कहीये जेहने आधारे महाअटवीनो विहामणो मार्ग होय तोपण पार पामीयें. यतः—"मेढी आलंवणं खंभं, दिट्ठी जाणं सुउत्तमं । गीयत्थं गुरुगुणाइणं, सम्मं जाणसु गोयमा ॥ १॥" माटे ते गीतार्थ विना मुनिराज ते संयमनी सेढी के० श्रेणी केम आरोहे एटले केम चढे अने उत्तरोत्तर शुभाध्यवसायें केम वधे ए संयमश्रेणीनो अधिकार ते संयमश्रेणीनुं स्तवन अमारा गुरु श्रीउत्तमविजयजीकृत छे तेथी विस्तारें जाणवुं तथा पंचसंग्रहथी जाणवुं ॥ २२

गीतारथनें मारग पूछी, छांडी जें उन्मादोरे ।
पाले किरिया ते तुज भक्ति. पामे जगजश वाधोरे ॥श्रीजिन०२३॥

अर्थ—ते गीतार्थनें मार्ग पुछीने उन्माद जे स्वेच्छाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं ते छांडवुं ए रीते तमारी आणासहित चाले तेज तमारी भक्ति जाणवी ते तमारी भक्ति करीने जे क्रिया पाले एटले ए भाव के तमारी ए आज्ञा छे जे ज्ञानसहित क्रिया पाले ते प्राणी जगतनेविषे जशवाद पामे ॥ २३ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ रामुडानी देशी अथवा हितशिक्षा छत्रीशीनी देशी ॥

प्रथम ज्ञान ने पछें अहिंसा, दसवैकालिक साखोरे ।
ज्ञानवंत ते कारण भजियें, तुज आणा मन राखोरे ॥साहेवसुणजोरे १॥

अर्थ–हवे आगली ढालमां ज्ञानसहित क्रिया करता संयमश्रेणी आरोहे एम कह्युं तेमां ज्ञानपूर्वक क्रिया करे तो लेखे छे माटे आ ढालमां ज्ञान वर्णवे छे जे प्रथम ज्ञान होय तो पछी अहिंसा के० दया पली शके छे एम श्रीदशवैकालिकसूत्रमां कह्युं छे. यतः–"पढमं नाणं तओ दया एवं चिठ्ठइ सव्वसंजए" ते कारणे ज्ञानवंतने भजीयें के० सेवीयें पण हे परमेश्वर तमारी आज्ञा ते मन राखी के० चित्तमां राखीने एटले ए भाव जे ज्ञानवंतने भजीयें पण साध्यमां एम राखीयें जे ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः "नाणकिरियाहि मुक्खो" इति भाष्यवचनात्, माटे स्याद्वाद दृष्टीयें ज्ञाननी सेवा करीयें हे साहेब सुणजो के० सांभल्यानी पेरे सांभलजो अन्यथा परमेश्वर केवल ज्ञानी छे ते तो सर्व जगतना भाव देखी रह्या छे तेहने शुं सांभलवुं छे पण भक्तिवंत प्राणी उपचारे कहे छे के हे साहेब सांभलजो ॥ १ ॥

द्रव्य खेत्रने काल न जाणे, भाव पुरुष पडिसेवरे ।
नवि उत्सर्ग लहे अपवादह, अगीतारथ नित मेवरे ॥सा० २ ॥

अर्थ–वली जे अगीतार्थ छे ते १ द्रव्य न जाणे २ क्षेत्र न जाणे ३ काल न जाणे ४ अने भाव पण न जाणे ५ तथा योग्य छे के अयोग्य छे एहवा पुरुषने पण न जाणे ६ तथा पडिसेव के० पापनी सेवनाने न जाणे जे एणे स्ववशें पाप करयुं अथवा एणे परवशें पाप करयुं ते अगीतार्थ न जाणे ७ वली छति शक्तियें जेम सिद्धांतमां मार्ग कह्यो तेमज करवुं तेहने उत्सर्ग मार्ग कहीयें ते पण न जाणे ८ तथा रोगादिक कारणे अल्प दोष सेवे ते अपवादमार्गने पण न जाणे, ए (८) वातो नितमेव के० निरंतरपणे जे अगीतार्थ छे ते न जाणे. यतः उपदेशमालायां–"दव्वं खित्तं कालं, भावं पुरिसपडिसेवणाओ य । नवि जाणइ अगीओ, उस्सग्गववाइयं तं चेव ॥ १ ॥" ॥ २ ॥

सचित्त अचित्त मिश्र नवि जाणे, कल्प अकल्प विचाररे ।
योग्य न जाणे निज निज ठामें, द्रव्य यथास्थित साररे ॥सा०३॥

अर्थ–हवे प्रथम गाथा विस्तारतां एहिज द्वारमां प्रथम द्रव्यद्वार कहे छे तेमां द्रव्यथी अगीतार्थ शुं न जाणे ते कहे छे सचित्त वस्तु तथा अचित्त वस्तु तथा मिश्र वस्तुने जाणे नहीं वली कल्पनी खबर न पडे जे आ वस्तु कल्पे छे वा नथी कल्पति अकल्पछे ते विचार अगीतार्थ न जाणे वली योग्यतानी खबर न पडे निज निज ठामे के० पातपोताने स्थानकें योग्यता न जाणे जे आ बालने योग्य के ग्लानने योग्य इत्यादिक न जाणे ए रीतें यथास्थित के० जे द्रव्य जेम होय तेवीज रीते तेहनी अगीतार्थने खबर पडे नहीं. यथास्थित द्रव्य केवुं छे सार के० प्रधान छे. यदुक्तं–"जहठियदव्वं न याणइ, सचित्ताचित्तमीसियं चेव । कप्पाकप्पं च तहा, जुग्गं वा जस्स जं होई ॥ १ ॥" इत्युपदेशमालायां ॥ ३ ॥

खेत्र न जाणे तेह यथास्थित, जन पद अध्वविशेषरे ।
सुभिक्ष दुर्भिक्ष कल्प न जाणे, कालविचार अशेषरे ॥ सा० ४ ॥

अर्थ—हवे क्षेत्रद्वार कहे छे अगीतार्थ यथास्थित के० जेवुं क्षेत्र होय तेहवुं क्षेत्र न समजे के आ भद्रकक्षेत्र छे के अभद्रक छे इति तथा जनपद के० लोकेंव्याप्त देशने विषे विहार करतां आवी विधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवी विधियें करवुं इत्यादिक न जाणे. वली अध्वविशेष के० दूर देशे अटवी प्रमुखें आवी रीते विहार करवो इत्यादिक वातो अगीतार्थ न जाणे. हवे कालद्वार कहे छे जे सुभिक्षमां कल्प न जाणे के० योग्य न जाणे एटले सुभिक्षमां आ रीते विरचवुं वली दुर्भिक्षमां पण कल्प के० योग्य न जाणे जे दुर्भिक्षमां आवी वस्तु होय तोज लेवाय इत्यादिक वातो कालना विचारनी ते अशेष के० समस्त प्रकारें अगीतार्थ न जाणे इतिभाव. यतः—"जहठियखित्तं न जाणइ, अद्धाणे जणवए य जं भणियं । कालंपि य नवि जाणइ, सुभिक्खदुभिक्खजं कप्पं ॥१॥" इत्युपदेशमालायां ॥४॥

भाव हिट्ठ गिलाण न जाणे, गाढ अगाढह कल्परे ।
खमतो अखमतो जन न लहे, वस्तु अवस्तु अनल्परे ॥सा० ५॥

अर्थ—हवे भावद्वार कहे छे जे भाव के० भावना विचारने विषे हिट्ठ के० निरोगीने तथा गिलाण के० रोगाक्रांतने न जाणे एटले निरोगीने आ देवुं तथा रोगीने आ वस्तु देवी ते वातो अगीतार्थ न जाणे अने गाढकल्प के० आकरे कारणें आ रीते करवुं तथा अगाढकल्प के० स्वभावे सेहेज रीतें तो आ प्रमाणे वर्त्तवुं ए अगीतार्थ न जाणे. हवे पुरुष द्वार कहे छे खमतो के० आ पुरुष सामर्थ्यवान शरीरें कठोर छे माटे खमी शकशे तथा अखमतो के० आ पुरुषनुं सुकुमार शरीर छे ते नहीं खमी शके एहवा जन के० प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखे नहीं. वली वस्तु के० आचार्यादिक अवस्तु के० सामान्य साधुने ते अगीतार्थ न ओलखे जे पदस्थने आम घटे तथा सामान्यने आम घटे माटे अनल्प के० इत्यादिक बहु प्रकार ते न जाणे. यतः—"भावे हिट्ठगिलाणं, नवि याणइ गाढगाढकप्पं च। सहुअसहुपुरिसरूवं, वत्थुमवत्थुं च नवि जाणइ ॥ १ ॥" इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जे आकुट्टी प्रमादें दर्पें, पडिसेवा वलि कल्परे ।
नवि जाणे ते तास यथास्थित, पायच्छित विकल्परे ॥ सा० ६ ॥

अर्थ—हवे प्रतिसेवा नामें द्वार कहे छे जे निषेध आचरण तेहने प्रतिसेवा कहीयें तेहना चार प्रकार छे तेमां प्रथम आकुट्टी के० जाणीने पाप सेववुं ते पण कारण विना सेववुं बीजो कंदर्प्पादिकने वशथका जे पाप सेवे ते प्रमाद कहियें त्रीजो धावनवल्गनादिके करी जे पाप लाग्युं ते दर्प्प कहीयें, चोथो आगमोक्त कारणे करी निषेधाचरण करवुं ते

कल्प कहीयें ए चारे भेद पडिसेवाना जाणवा. यतः—"पडिसेवणा चउद्धा, आउट्टिपमायदप्पकप्पेसु। नवि जाणइ अगीओ, पच्छित्तं चेव जं तत्थ ॥१॥" इत्युपदेशमालायां तल्लक्षणगाथा "आउट्टिआउविञ्चा,दप्पो पुण होइ वग्गणाईओ। कंदप्पो इय पमाओ, कप्पो पुण कारणे भणिओ ॥१॥" इत्याचारांगवृत्तौ,ए गाथानो अर्थ कहे छे आउट्टि ते जाणीने पाप करवुं दर्प्प ते धावनवल्गनादिक सोत्कर्षपणें निपजे कंदर्प्प ते प्रमादवशें जाणवुं अने जे ज्ञानादिकने आलंबन हेते आचरवुं ते कारणे जाणवुं ए चार प्रकारनुं जे पाप ते पापनुं यथास्थित के० जेने जेवुं घटे तेवुं प्रायश्चित्तनुं विकल्प जे आ प्रायश्चित्तवालाने आवुं तप देवुं इत्यादिक वातो ते अगीतार्थ न जाणे ॥ ६ ॥

नयणरहित जेम अनिपुणदेशें, पंथ नट्ठ जेम सत्थरे।
जाणे हुं ठामे पोचावुं,। पण नहीं तेह समत्थरे ॥ सा० ७ ॥

अर्थ—जेम कोइक नयनरहित के० अंध पुरुष होय अने वली अनिपुणदेशें के० मार्गनो अजाण छे ते अंधपुरुष एवा मार्गने विषे पंथनष्ट जेम सत्थ के० जेम मार्गमां कोइक साथ नष्ट एटले भूलो पड्यो होय ते साथने आंधलो जाणे जे हुं ठेकाणे पोचाडुं पण पोचाडवाने समर्थ न थाय. यतः—"जह नाम कोइ पुरिसो,नयणविहूणो अदेसकुसलो य । कंताराडविभीमे, मग्गपणट्ठस्स सत्थस्स ॥१॥ इच्छइ य देसियत्तं, किं सो उ सम्मत्थउ देसियत्तस्स । दुग्गई अयाणंतो, नयणविहूणो कहं देसे ॥ २ ॥" ॥ ७ ॥

अगीतार्थ तेम जाणे गरवें, हुं चलवुं सवि गच्छरे।
पण तसपासे गुणगण ग्रासे, होई गलागल मच्छरे ॥ सा० ८ ॥

अर्थ—ते पूर्वोक्त अंधपुरुषनी रीतें अगीतार्थ पण तेम गर्वें के० अहंकारे करी एम जाणे जे हुं वधो गच्छ चलावुं छुं पण तेनी पासे रहेता थकां गुणगण के० गुणना जे समूह ते ग्रासे के० घसाइ जाय एटले अगीतार्थने संगें गुणनो नाश थाय. यतः—"एवमगीयत्थो विहु, जिणवयणपईवचक्खुपरिहीणो। दव्वाई अयाणंतो, उस्सग्गववाइयं चेव ॥१॥ कह सोजयउ अगीओ, कह वा कुणऊ अगीयनिस्साए। कह वा करेउ गच्छं, सबालवुड्ढाउलं सो उ ॥२॥" इत्युपदेशमालायां अगीतार्थने पासे वसतां मच्छ गलागल थाय के० मोहोटा मच्छ नाना मच्छने गली जाय एम धींगामस्तिनी वात थाय पण मार्गनी रीत न रहे ॥८॥

पच्छित्ते अतिमात्र दिए जे, अपच्छित्ते पच्छित्तरे।
आसायण तस सूत्रे बोली, आसायण मिच्छत्तरे ॥ सा० ९ ॥

अर्थ—वली अगीतार्थ होय ते वगर समजणे पच्छित्तें के० प्रायश्चित्त जेटलुं आवे ते

करतां उलटो अतिमात्र के० अधिकुं दिए के० आपे अने जेहने अपच्छित्ते के० प्रायश्चित्त न आवतुं होय तेहने पच्छित्त के० प्रायश्चित्त आपे एटले थोडा प्रायश्चित्तवालाने घणुं आपे अने मूलगुं जेने प्रायश्चित्त लागतुंज न होय तेने कहेशे जे तमने प्रायश्चित्त लाग्युं इत्यादिक असमंजस करे एम करनारने सूत्रने विषे आसायण बोली के० जिनाज्ञानी विराधना करी माटे विराधक कह्यो छे अने आसायण के० जिनाज्ञानी विराधना तेहिज मिच्छत्त के० मिथ्यात्व जाणवुं तथा ते मिथ्यात्वनिर्मितिओ संसार वधारे. यतः—"सुत्ते य इमं भणियं, अपच्छित्ते य देइ पच्छित्तं । पच्छित्ते अइमत्तं, आसायण तस्स महई उ ॥१॥ आसायण मिच्छत्तं, आसायणवज्जणा य सम्मत्तं । आसायणानिमित्तं, कुव्वइ दीहं च संसारं ॥ २ ॥" इत्युपदेशमालायां ॥ ९ ॥

तवसी अवहुश्रुत विचरंतो, करी दोषनी श्रेणिरे ।
नवि जाणे ते कारण तेहने, केम वाधे गुण श्रेणिरे ॥ सा० १० ॥

अर्थ—तवसी के० तपश्चर्या करतो तथा अवहुश्रुत के० अगीतार्थ थको विचरंतो के० विहार करतो थको करी दोपनी श्रेणि के० अनेक दोपनी श्रेणीने करतो एटले अनेक अपराधपद करतो थको पण नवि जाणे के० न जाणे एटले पोताना दोपनी पोताने खवर न पडे ते कारण के० ते हेतुयें ते अगीतार्थ कष्टकरताने गुणश्रेणीनी वृद्धि केम थाय अर्थात् न थाय तेटलीज रहे. यदुक्तं—" अवहुस्सुओ तवस्सी, विहरिउकामो अजाणिऊण पहं । अवराहपयसयाइं, काऊणवि जो न याणेइ ॥ १ ॥ देसियराइयसोहिय, वयाइयारे उ जो न याणेइ । अविसुद्धस्स न वड्ढइ, गुणसेढी तत्तिआ ठाइ ॥ २ ॥" इत्युपदेशमालायां ॥१०॥

मार्गमात्र जाणे जेम पंथी, अलही तास विसेसरे ।
लिंगाचारमात्र ते जाणे, पामे मूढ कलेशरे ॥ सा० ११ ॥

अर्थ—जेम कोइक पंथी होय तेहने कोइ डाह्यो पुरुष मार्ग वतावे तोपण विशेष मार्गनी तेने खवर न पडे केमके पोतें डाह्यो नथी माटे डावो जमणोमार्ग जेम न जाणे एक सामान्य प्रकारें मार्गमात्र जाणे तास के० ते मार्गनी डावी जमणी वाजु ते अलही के० अजाणंतो क्लेश पामे तेमज लिंग के० साधुवेप ने आचार के० साधुनी क्रिया ते लिंगाचारमात्र जाणे एटले मात्र एक सूत्रनाज अक्षर मान्य करी क्रियादिक करतो पण मार्गने अजाणतो एहवो जे मूढ के०मूर्ख अगीतार्थ ते क्लेशने पामे संसार वधारे. यतः—"जह दायंमिवि पहे, तस्स-विसेसे पहस्सऽयाणंतो । पहिओ किलिस्सइ चिय, तह लिंगायारसुअमित्तो ॥ १ ॥ " इत्यु-पदेशमालायां ॥ ११ ॥

भेद लह्याविण नानापरिणति, मुनिमननी गत बोधरे ।
खिणराता खिणताता थाता, अंतें उपाई विरोधरे ॥ सा० १२ ॥

अर्थ–भवबोध के० गयुं छे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जे होय ते मुनीश्वरोना मननी नानापरिणति के० विचित्र प्रकारनी परिणतियोना जे भेद के० प्रकार ते लह्याविण के० जाण्याविना एटले जे मूर्ख मुनिओ होय ते बीजा मुनिओनी विचित्र परिणति अजाणता थका क्षण एकमां राता थाय एटले अंतःकरणनां क्रोधदीप्त थाय तथा क्षण एकमां ताता थाय एटले बाह्यरूपे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एम थातां थकां अथवा राता के० रागी थाय परस्परें क्रीडा करे तथा ताता के० तपी जाय कषायमयी थई जाय अने अंते के० छेवटे विरोधने उपाई के० उपजावे एटले ते मूर्ख मांहोमांहे वढी मरे, पण समाधि न उपजावे॥

पथ्थरसम पामर आदरतां, मणिसम बुध जन छोडिरे ।
लह्याविण आगमथितिनो, ते पासें बहु खोडिरे ॥ सा० १३ ॥

अर्थ–मणिरत्नसमान जे बुधजन के० पंडित लोक तेहने छांडीने पत्थरसम के० पथरा समान जे पामर के० मूर्खजन तेहनेज आदरतां के० अंगीकार करे ते प्राणी ते मूर्ख पासे रहेता थकां आगमनी जे उत्सर्ग अपवादादिरूप थिति के० मर्यादा तेनो भेद के० प्रकार ते अणलेहता थका ते आदरनारा पुरुष घणी खोड पामे एटले संयमरूप शरीर आखुं न रहे जरजर खंडित थाय इतिभाव ॥ १३ ॥

ज्ञानभक्ति भांजी अणलहेता, ज्ञानतणो उपचाररे ।
आरासारें मारग लोपे, चरण करणनो साररे ॥ सा० १४ ॥

अर्थ–एवा जे मूर्ख होय ते ज्ञाननी भक्तिने वो भांजे एटले खंडित करे तथा अणलहेता के० अणआराधता ज्ञानतणो के० ज्ञाननो जे उपचार के० विनय तेने अणजाणता ते प्राणी आरासारें के० जे पांचमो आरो तेने अनुसारें मारग लोपे के० मोक्षमार्गने लोपे छे एटले मूर्खने आदरतां ज्ञानभक्तिने भांजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष होय ते पांचमा आरा प्रमाणे चारित्रने पाले कांतो एकलोज उत्सर्ग मार्गे चाले अथवा कालदोष आदी उत्सर्ग मार्ग बीलकुल मूकीज दे. पण सार के० प्रधान एवो जे चरणसित्तरि तथा करणसित्तरिनो मार्ग तेने पांचमा आराने अनुसारें ते मूर्ख लोपे छे ए रीते प्रभुने भाख्यो ते रीते लख्यो छे वली ए गाथानो अर्थ पंडित लोकोने सुझे ते खरो ॥ १४ ॥

उत्कर्षी तेहने थे शिक्षा, उदासीन जे साररे ।
परुषवचन तेहने ते बोले, अंग कहे आचाररे ॥ सा० १५ ॥

अर्थ–वली उत्कर्षी के० उत्कृष्टाचारक्रिया होय तथा उदासीन के० बेपरवाह होय सार के० उत्तम होय तेवा साधु जो तेओने प्रमाद स्खलनादिक तेनी शिक्षा आपे तेवारें ते जे प्रकारनी गच्छथी निकल्या होय ते पाछो शिक्षा आपनार साधुने परुषवचन के०

कठोर वचन कहे जे मुझने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कर्यो में शुं मारुं कर्युं छे बीजा तो ए रीते करेज छे तो धिकार पडो मारा जीवितने इत्यादिक बोले. एम श्रीआचारांग-मध्ये कह्युं छे तथा च तत्पाठः—"वयसावि एगे बुइया कुप्पंति माणवा उ णयमाणे य नरे महया मोहेण मुज्झइ ॥१॥" इति एम वचनमात्रेज गच्छने छांडि एकला रही अकार्य सेवे इतिभाव ॥ १५ ॥

अमसरिखा हो जो तुम जाणो, नहीं तो स्या तुम बोलरे ।
एम भाषि जात्यादिक दूषण, काढे तेह नीटोलरे ॥ सा० १६ ॥

अर्थ—पछी ते मूर्ख मुनि शिक्षा आपनारने पाछा एवा जवाब आपे के जो अमसरिखा तमे होततो जाणत एटले ए भाव जे अमारे गोचरी पाणी प्रमुख लाववां पडे ते तमने करवुं पडतुं होय तो तमे जाणो नहीं तो बेठा मोटाई करो एटलुंज तमारामां छे पण कांइ भलिवार नथी. जो अमारी पेठे चालो तो तमे जे अमने शिक्षा आपो ते खरी, नहीं तो तमारा बोल शा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकट छे एम भाषी के० एम कहीने जात्यादिकना दूषण काढे एटले एम कहे जे तमे हीणि जातिना उपन्या छो तमारुं कुल केवुं छे इत्यादिक बोले तेह निटोल के० ते पुरुषने निटोल जाणवा पण ते सज्जन उत्तम पुरुषमां न गणाय ॥ १६ ॥

पासत्थादिक दूषण काढी, हिले ज्ञानी तेहरे ।
यथा छंदता विण गुरुआणा, नवि जाणे निजरेहरे ॥ सा० १७ ॥

अर्थ—वली ते मूर्ख प्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्थादिक दूषण काढीने हिले के० हिलना करे एटले एम कहे जे तमारामां शा गुण छे तमे पासत्थाउसन्ना छो एम कहीने ज्ञानी के० पंडित गीतार्थनी हिलना करे ए बे पदनो एकठो अर्थ छे एम विण गुरु-आणा के० गुरुआज्ञा पाल्या विना यथाछंदता के० आपछंदे आचरण करवानी एवी जे निज के० पोतानी रेहा के० रेखा छे एटले हीणा आचरणनी मर्यादा पोतानी छे तेनी पोतानेज न जाणे के० खबर न पडे एटले ज्ञानीना अछता दूषण काढे अने पोताना छता दूषण होय ते उवेखे इतिभाव ॥ १७ ॥

ज्ञानीथी तेम अलगा रहेता, हंसथकी जेम काकरे ।
भेद विनयना बावन भाख्या, न लहे तस परिपाकरे ॥ सा० १८ ॥

अर्थ—ते माटे ज्ञानी के० जे गीतार्थ गुरु आदिक ते थकी अलगा रहेता थका केवा देखाय जेम राजहंस थकी कागडो जूदो देखाय तेवो ते साधु देखाय तथा विनयना बावन भेद शास्त्रमां कह्या छे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक ते कुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रिया ते अस्तिवादरूप ७ खंत्यादिक धर्म ८ मत्यादिक ज्ञान ९ मत्यादिक ज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थविर ते सिदाता साधुने थिर करे १२

उपाध्याय १२ केटलाक साधुना समुदायना अधिपति ते गणी ए तेरनो चार चार भेदे विनय करवो १ अनाशातना ते जात्यादिक दूषण काढीने हीलना न करे २ भक्ति ते उचित उपचाररूप ३ बहुमान ते अंतरप्रीति प्रतिबंधरूप ४ वर्ण संज्वलना ते यश बोलवा ए रीते तेरने चारे गुणतां बावन भेद थाय इति प्रवचन सारोद्धारे पांसठमे द्वारे ए अधिकार जोजो उपलक्षणथी बावन कह्या तेमज ९१ भेद समवायांगे तथा पिस्तालीस भेद तथा दश भेद इत्यादिक अनेक भेद ग्रंथांतरथी जाणवा. ते सर्व भेदनुं शीखवुं तथा ते रीते प्रवर्त्तवुं तेने परिपाक कहीयें ते परिपाकने न लहे के० एकाकी साधु न पामे केमके एकाकी विहार करनार कोना पासेथी शिखे तथा कोनो विनय करे ॥ इतिभाव ॥ १८ ॥

सर्व उद्यमें पण तस बहु फल, पडे कष्ट अन्नाणरे ।
सूत्र अभिन्नतणे अनुसारें, उपदेशमाळा वाणरे ॥ सा० १९ ॥

अर्थ—सर्व क्रिया अनुष्ठाननो उद्यम तेनुं जे बहुफल के० घणुं फल स्वर्गादिक ते पडे-कष्टअन्नाणरे के० अज्ञान कष्टमां पडे एटले निर्ज्जरा न थाय संसारपरित न थाय कोने न थाय ते कहे छे जे अविवृत्तार्थ विशिष्ट व्याख्यानरहित एहवुं जे सूत्र तेहने अभिन्न सूत्र कहीयें ते अभिन्न सूत्रने अनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठान करे ते अज्ञान कष्टमां पडे इतियोग. जे टीका प्रमुख विना विशेष प्रतिपत्ति केम थाय? अन्यथा अनुयोगनुं कथन निरर्थक थाय ए उपदेशमालानी वाणी छे. यदुक्तं तत्सूत्रे—"अपरिच्छियसुयणिहसस्स, केवलमभिन्नसुत्त-चारित्तस्स। सव्वुज्जमेणवि कयं, अन्नाणतवे बहुं पडइ ॥ १ ॥" अर्थ ॥ अपरिच्छिय के० नथी जाण्यो सुयणिहसस्स के० श्रुतरहस्य जेणे शेषं सुगमं ॥ १९ ॥

ते तो ऋजुभावे एकाकी, चाले तेहने जुत्तरे ।
वाम्य कुवासन जे अकुवासन, देशाराधक उत्तरे ॥ सा० २० ॥

अर्थ—हवे ज्ञानीथी अलगा क्यारे थवुं तथा शा कारणे एकाकी रहेवुं पडे ते असिवा-दिक कारण घणां छे. यतः—"असिवे ओमोयरिए, रायभए खुभियउत्तमट्ठे य। फिडियगि-लाणाचेइसए, सढेवया विव आयरिए ॥१॥" एम कारणोना अर्थ विस्तारें लख्या छे पण अहीं लखतां ग्रंथ वधे माटे लखता नथी पण एक अशिवकारण लखीयें छैयें जे साधु बार वर्ष आगलथी ज्ञानादिक अतिशयें करी खबर राखे जे अमुक वर्षे अशिव थशे अने कदाचित बार वर्ष अगाउ उपयोग न रह्यो होय तो इग्यार वर्ष अगाउ, ते नहीं तो दशवर्ष अगाउ, एम यावत् एक वर्ष अगाउ पण उपयोग राखे. ते पण उपयोग न रह्यो होय तो ज्यारें अशिव जाणे ते वारे साधु त्यांथी विहार करे तेमां कोइक ग्लानसाधु होय ते विहार करी शके नहीं ते वारे एवा कारणे एकला ज्ञानी विना पण होय तेमां पण १ साधुभद्रक अने गृहस्थ प्रांत २ तथा साधुप्रांत अने गृहस्थभद्रक ३ तथा साधुभद्रक अने गृहस्थ पण भद्रक ४ तथा

साधुभांत अने गृहस्थ पण भांत एम चोभंगी थाय इत्यादिक सर्व ओघनिर्युक्तिमां विस्तार छे ते जोजो. हवे अक्षरार्थ लखे छे जे साधु ऋजुभावे के० भद्रक थकां पूर्वोक्तरीते एकाकी चाले के० रह्या होय तेहने जुत्त के० कोइक पूर्वोक्त रीते एकाकीपणुं युक्त छे पण अन्यथा नहीं इतिभाव. वली बे प्रकारना घट चाल्या छे एक भावित अने बीजो अभावित तेमां अभावित ते नवा घट अने भावितना बे भेद एक शुभद्रव्यें भावित बीजा अशुभद्रव्यें भावित ते वली एकेकना बे बे भेद एक वाम्य बीजो अवाम्य. जे वाम्य ते वासना टाली शकीयें अने जे अवाम्य ते वासना टाली न शकीयें तेमां कुवासना वामवा योग्य होय ते रुडा जाणवा. ए वाम्य कुवासना एटला पदनो अर्थ थयो अने जे अकुवासना के० कुवासनायें वास्याज नथी ए नवा घट के० घडा छे ते पण रुडा एम विशेषावश्यकमां छे अथवा वाम्य अवाम्य घटनी भावना नंदिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी. उक्तं च पयईहिं भद्दभावा, कुवासनावासियावि नो दुट्ठा । उज्जुमइणो मुकंखा, ते देसाराहगा उत्ता ॥१॥" एवा देसाराधकयुक्त होय ते पूर्वोक्त कारणें एकाकीपणे गीतार्थविना रहे इतिभाव ॥ २० ॥

अज्ञानी गुरुतणे नियोगे, अथवा शुभ परिणामरे ।
कम्मपयडी साखे सुदृष्टी, कहियें एहनो ठामरे ॥ सा० २१ ॥

अर्थ—वली अज्ञानी अगीतार्थने गुरुतणे नियोगे आज्ञा परवशें थकां पण ऋजुमार्गें वर्त्ते छे अथवा शुभ परिणामवंत छे गुणनो रुचीवंत छे तो कम्मपयडीनी साखे तेने सुदृष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक् दृष्टी गुणठाणो जाणवो ॥ २१ ॥ ए गाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेला टबा उपरथी लख्यो छे ॥ २१ ॥

जे तो हठथी गुरुने छांडि, भग्नचरण परिणामरे ।
सर्व उद्यमें पण तस निश्चय, कांइ न आवे ठामरे ॥ सा० २२ ॥

अर्थ—जे तो के० जे वली भग्नचरण परिणाम के० जेहना चारित्रना परिणाम भांग्या छे एहवो थको हठ कदाग्रह थकी गुरुने छांडीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनी पेठे उद्यमें के० कष्ट उद्यम करे छे पण तस के० तेना कष्टप्रमुख सर्व निश्चय करीने कोइ नआवे ठाम के० कांइ लेखे न लागे. यतः—" आणाइ तवो आणाइ संजमो तहय दाणमाणाए । आणारहिओ धम्मो, पलालपुलुव्व पडिहाइ ॥ १ ॥ " इति संबोधसित्तरी मध्ये कह्युं छे ॥ २२ ॥

आणा रुचिविण चरण निषेधें, पंचाशकें हरिभद्ररे ।
व्यवहारें तो थोडुं लेखे, जेह सकारें सद्दरे ॥ सा० २३ ॥

अर्थ—जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचि छे ते तो चारित्रने योग्य छे पण एवी आज्ञारुचिविना चरणनिषेधें के० चारित्रनी ना कही छे शामाटे जे आज्ञारुचि नथी तो बीजो कष्ट

अनुष्ठान कोनी आज्ञायें करे छे. यतः—"आणारुइस्स चरणं, तब्भंगे जाण किं न भग्गंति। आणं च अइक्कंतो, कस्साएसा कुणइ सेसं ॥१॥" इति ते जे आज्ञासहित करे छे ते चारित्र अने आज्ञाविना पंचाशकने विषे हरिभद्रसूरि चारित्रने निषेधे छे व्यवहारें तो के० शुद्ध समाचारीसहित व्यवहार पाले तो पोतानी शक्ति प्रमाणें थोडुंक करे तोपण लेखामां छे एटले आज्ञासहित थोडुं करे ते लेखे छे शामाटे जे थोडुं पण अनुष्ठान ते सत्कारें के० सत्य करे अने सद्द के० शब्द ते आगम कहियें केमके चार प्रमाण कह्यां छे तेमां आगमप्रमाणने शब्दप्रमाण करी बोलाव्युं छे माटे आगम सत्कारे तो थोडो व्यवहार पण प्रमाण छे अने बीजुं घणुं कष्ट ते निष्फल छे ॥ २३ ॥

शिष्य कहे जो गुरु अज्ञानी, भणतां गुणनिधि जाणीरे।
जो सुवासना तो किम त्यजतां, तेने अवगुण जाणीरे ॥ सा० २४ ॥

अर्थ—हवे इहां शिष्य कहे छे के जो गुरु अज्ञानी छे तोपण तेहने भजतां के० सेवतां थकां गुणनिधि जाणवो. जो सुवासना छे तो केवा प्रकारे तेहने अवगुणी जाणीने त्यजीयें ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना टवामांथी लख्यो छे ॥ २४ ॥

गुरु बोले शुभ वासना कहियें, पन्नवणिज्ज स्वभावरे।
ते आयत्तपणे छे आद्यें, जश मने भद्रक भावरे ॥ सा० २५ ॥

अर्थ—गुरु कहे हे शिष्य जे शुभ वासना ते पन्नवणिज्ज स्वभाव छे एटले जे समजाव्यो समजे एवो जेनो स्वभाव छे तो एवो जे होय ते तो आद्यें के प्रथम गुरुने आयत्तपणे के० वशवर्तियें होय वली जश मने के० जेहना मनने विषे भद्रकभाव छे ते शिष्य आज्ञारुचि जाणीयें ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना टवा उपरथी लख्यो छे ॥ २५ ॥

सूधुं मानी सूधुं थातां, चउभंगी आचाररे।
गुरु कहणें तेहमां फल जाणी लहीयें सुजश अपाररे ॥ सा० २६ ॥

अर्थ—एक सूधुं माने अने सूधुं करे, बीजो सूधुं माने अने असूधुं करे, त्रीजो असूधुं माने अने सूधुं करे, चोथो असूधुं माने अने असूधुं करे इत्यादिक शब्दें चउभंगी आचारांगादिक सूत्रमां कही छे तेमां अशुद्धना बे भांगा त्याज्य छे अने शुद्धना बे भांगा ते ग्राह्य छे ते भांगामां फल होय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपार के० घणो सुजश लहीयें ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना टवा उपरथी लख्यो छे ॥ २६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राजगीतानी देशी अथवा सुरति महिनानी ॥

कोइ कहे गुरु गच्छ गीतारथ सारथ शुद्ध,
मानु पण नवि दिसे जोतां कोई विबुद्ध ।
निपुण सहाय विना कह्यो सूत्रें एक विहार,
तेहथी एकाकी रहेतां नहीं दोष लगार ॥ १ ॥

अर्थ—पूर्व ढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरु पासे वसवुं ते आ ढालमां कहे छे. कोइक आगमना रहस्यने अजाणतो थको आगमनुं शरण करी बोले छे जे गुरु के० गुरु आदिक गच्छ के०सुविहितनो समुदाय वली गीतार्थनो सारथ के०समुदाय "संघ-सार्थौ तु देहिनां" इति सामान्य कांड वचनात्, एवा शुद्ध के० पवित्र ते गुरु,गच्छ,गीतार्थ सर्वने मानु के० अंगीकार करुं छुं पण ते जोतां थकां कोइ विबुद्ध के० कोइ डाह्या पंडित नवि दिसे के० देखाता नथी अमारी नजरमां कोइ आवता नथी निपुण सहाय के० डाह्या-नी सखाइ न मले तो ते विना सूत्रें के० उत्तराध्ययनसूत्रने विषे कह्युं छे जे एक विहार के० एकला विहार करीयें. उक्तं च काव्यम्—"न वा लभिज्ज निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा । इक्कोवि पावाइविवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १ ॥" एम ते सूत्रमां एकाकी विहारनी आज्ञा छे माटे एकाकी रहेतां थकां लगार दोष नथी ॥ १ ॥

अणदेखंता आपमां ते सवि गुणनो योग,
किम जाणे परमां व्रत गुणनो मूल वियोग ।
छेद दोष तांई नवि कह्या प्रवचने मुनि दुःशील,
दोष लवें पण थिर परिणामी बकुस कुशील ॥ २ ॥

अर्थ—हवे तेने उत्तर आपेछे जे एम कहेछे ते प्राणी आपमां के० पोतामां सर्व गुणनो योग के० संयोगने अणदेखतो थको एटले ए भाव जे पोते सर्वगुणी तो थयो नथी तो पोते दोषवंत थको केवी रीते परमां के० बीजामां व्रत गुणनो मूल वियोग के० व्रतनो गुण मूलथी नथी ए शीरीतें जाण्युं केमके गुरु आदिकमां तो कांइक गुण हशेज तो दोषनो लेश देखीने गुरुने मूकाय नहीं. गाथा—"इयभावियपरमत्था, मज्झत्था नियगुरुं न मुंचंति । सव्व-गुणसंपओगं, अप्पाणंमिवि अपिच्छंता ॥१॥" इति धर्मरत्न प्रकरणे तथा छेद दोषतांइ के० दश प्रकारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेद दोष लागे तिहां लगें प्रवचने के० सिद्धांतने विषे मुनिने दुःशील के०कुशीलिया हीणा नथी कह्या. यतः—"छेयस्स जाव दाणं, ताव एगंपि नो अइक्कमइ । एगं अइक्कमंतो, अइक्कमे पंच मूलेणं ॥१॥" इति वचनात्, अने थोडो दोष देखीने

गुरुने नहीं आदरे तो सर्वनो त्याग करवो पडशे ते कहे छे. जे पांच प्रकारना निग्रंथ अने चउद प्रकारनी अभ्यंतर गंठी तथा नव प्रकारनी बाह्यग्रंठी तेथी मूकाणा ते निग्रंथ कहीयें. यतः—"गथो मिच्छत्ताई, धणाइओ अंतरो य वज्झो य । दुविहाओ तओ जे,निग्गंथंति ते हुंति निग्गंथा ॥१॥ मिच्छत्तं वेयतियं, हासाई छक्कयं च नायव्वं । कोहाईणं चउक्कं, चउदस अब्भितरा गंथी ॥२॥ धणधन्नखित्तक्कुवयं, वत्थु दुपय कणय रूप चउचरणा । नव वाहिरया गंथी, एवं ते हुंति पुण पंच ॥३॥" सुगमं नवरं चउचरणा के०चतुष्पद इति १ पुलाग २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक एनां लक्षण भगवतिसूत्रना शतक २५ में उद्देशे छट्ठे जोजो ए पांच कह्या तेमां १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक ए त्रण तो प्रतिसेवा रहित जाणवा अने बकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवा छे. गाथा—"मूलुत्तरगुणविसया, पडिसेवा सेवए कुसीलोय । उत्तरगुणेसु बउसो, सेसा पडिसेवणा रहिया ॥ ४ ॥" तेमां पण निग्रंथ तथा सनातक तो श्रेणीविच्छेदगइ तेमां गया तथा पुलाग लब्धि पण विच्छेदगइ ते माटे ए त्रण जंबूस्वामी साथे विछेद गयां ते हेतुयें बकुस तथा कुशील ए बेहुथी तीर्थ चाले छे. यतः— "निग्गंथसिणायाणं, पुलाग सहियाण तिण्ह वुच्छेओ । समणा बकुसकुसीला, जा तित्थं ताव होहिंति ॥ ५।" जे माटे ते छट्ठा सातमा गुणठाणावंत होय ते अंतरमुहूर्त्तें अवश्य परावर्त्त थाय ते वारे छट्ठे गुणठाणे आवे तिहां अवश्य प्रमत्त दोषनो लव मात्र देखीने गुरुनो त्याग केम थाय? अने ते त्याग करीश तो जगतमां आजना कालें निर्दोष कोइ नहीं लाभे. ते माटे लवमात्र दोष लागते पण बकुस तथा कुशील ए बेहु जातिना मुनि ते थिरपरिणामी एटले तेहना परिणाम अति उन्मार्गें नथी चालता अथवा थिरपरिणामी के० ए बे मुनि थिरपरिणामे छे एटले पंचमआराना छेडा लगे एहिज छे माटे न छंडाए इतिभाव एहनो विस्तार धर्मरत्न ग्रंथनी वृत्तिथी जाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिक गुण पण गुरुवादिक माहे जोय,
सर्व प्रकारें निर्गुण नवि आदरवो होय ।
ते छांडे गीतारथ जे जाणे विधि सर्व,
ग्लानौषध दृष्टांते मूढ धरे मन गर्व ॥ ३ ॥

अर्थ—ते माटे ज्ञानादिक के० ज्ञान दर्शन चारित्र मांहेलो हरकोइ उत्कृष्ट गुण पण गुरु आदिकमां जोइयें पण सर्वप्रकारें के० सर्वथा निर्गुण होय तो न आदरीयें माटे जे गीतार्थ होय तथा जे प्राणी उत्सर्ग अपवाद प्रमुखनी सर्व विधि जाणता होय ते छांडे के० गच्छने पण निर्गुण जाणीने छांडे ते उपर दृष्टांत कहे छे—ग्लानौषध के० जेम रोगीने औषध ते जिहां लगें रोग तिहां लगें औषध तेम जिहां लगे अगीतार्थ तिहां लगें औषध सदृश गच्छ अने ज्यारे निरोगी सदृशगीतार्थ थयो त्यारे औषधरूप गच्छनुं काम नहीं ते माटे मूढ के० जे मूर्ख छे ते अहंकार मनमां धरीने गच्छ बाहिर निकळे छे इहां कोइ बीजीरीते

ए दृष्टांत जोडे छे, जेम ग्लानने औषध आपे अने आहार न आपे माटे रोगीने छांड्यो न कहेवाय पण सामो रोगीने उपकार कर्यो कहेवाय तेमज गीतार्थ गच्छ छांडे ते छांड्यो न कहींयें पण उलटो गच्छने उपकार कर्यो एम कहींयें. यतः—"नाणाइगुणविउत्तं, जो चयइ गुरुगणं च गीयत्थो। अनुकंपेइ तमेव य, आउरभेसज्जवित्तीए॥ १॥" इति वचनात् ए बे व्याख्या छे माटे जे गीतार्थनी दृष्टीमां ठरे ते खरुं इतिभाव॥ ३॥

ते कारण गीतारथने छे एक विहार,
अगीतार्थने सर्व प्रकारें ते नहीं सार।
पाप वरजतो काम असजतो भांख्यो जेह,
उत्तराध्ययने गीतारथ एकाकी तेह॥ ४॥

अर्थ—ते कारण के० पूर्वे कह्युं ते कारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञा छे. यतः—"गीयत्थोय विहारो, बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ। इत्तो तइयविहारो, नाणुन्नाओ जिणंदेहिं॥ १॥" इति आवश्यक निर्युक्तौ अने अगीतारथ के० मूर्खने सर्वथा जे एकलो विहार करवो ते सार के० प्रधान नथी रुडो नथी इतिभाव. तथा पापने वर्जतो कामने असजतो एटले कामक्रीडामां जे तत्पर नहीं भांख्यो जेह के० उत्तराध्ययन नामें सिद्धांतमां जे भांख्यो छे के गीतार्थ होय गुणी होय ते एकाकी रहे ते काव्य पूर्वें लख्युं छे "न वा लभिज्ज निउणं सहायं" इत्यादिक विचारी जोजो॥ ४॥

पाप तणो परिवर्जनने वलि काम असंग,
अज्ञानीने नवी हुए ते नवि जाणे भंग।
अज्ञानी सुं करशे शुं लहशे शुभ पाप,
दशवैकालिक वयणे पंचाशक आलाप॥ ५॥

अर्थ—जे एकाकी होय ते पापनुं वर्जन केम करे? वली काम के० कंदर्पना संगनो जे त्याग करवो ते एकाकी मूर्खने केम होय? माटे ए विचार अज्ञानीने न होय ते अज्ञानीने तेना भांगानी खबर न पडे के आ अवसरे शुद्धज लेवुं के आ अवसरे अशुद्ध आहार होय तोपण लइयें इत्यादि भांगानी खबर न पडे वली अज्ञानी पुरुष हशे ते जीव अजीवादिक जाण्या विना शुं करशे एटले संयमानुष्ठान शुं करशे तथा शुभ पाप के० पुण्य अने पाप ते प्रते अज्ञानी शुं जाणशे ते दशवैकालिक वयणे के० दशवैकालिकसूत्रना वचन थकी यदुक्तं॥ "अन्नाणी किं काहि किंवा नाही छेय पावगं" इत्यादि चतुर्थाध्ययने तथा पंचाशक ग्रंथमां पण एवोज आलाप के० आलावो छे एटले वचन छे॥ ५॥

एक विहारे देखो आचारें संवाद,
बहु क्रोधादिक दूषण वली अज्ञान प्रमाद ।
वलिय विशेषे वार्यो छे अव्यक्त विहार,
पंखीपोत दृष्टांते जाणो प्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ—वली एकाकी विहार करे तेहनो आचारें के० आचारांगने विषे संवाद क० वचन छे ते कहे छे जे ते आचारांगना पांचमा अध्ययनना प्रथम उद्देशाने विषे देखो के० जुओ एक विहारीने बहु क्रोध आदि शब्दें मान प्रमुख पण लेवा. यथा—"इह मेगेसिं एगचरिया भवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुरते बहुनडे बहुसठे बहुसंकप्पे आसवसक्की पलिओवछन्ने" एमां विषम पदनो अर्थ लखियें छैयें—बहुरते के०बहुपाप बहुनडे के० नाटकियानी पेठे भोगने अर्थें बहुवेषना करनारा तथा बहुसठे के० अनेक प्रकारें शठ तथा बहु संकल्प उपजे आसव के० आश्रव जे हिंसा प्रमुख तेहनो सक्कि के० सक्त एटले संगी अने पलिओवछन्ने के० पलित एटले कर्में करी अवच्छन्न एटले ढांक्यो इति. वली बीजा दोष कहे छे—अज्ञान प्रमाद थाय एटले ए भाव जे एज आलावे पद छे "उठ्ठियवादं पवयमाणे मा मे केइ अदक्खु अन्नाणपमायदोसेणं" इति. उठ्ठियवादं पवयमाणे के० अमें संयमचारित्रमां उजमाल थया छैयें एम बोलता मा मे केइ अदक्खु के० आश्रवमां प्रवर्त्ततां थकां जाणे मुझने कोइ देखतुं नथी एम अन्नाणपमायदोसेणं के० अज्ञान प्रमाद दोषे सहित प्रवर्त्ते तेने वली विशेषें करीने आचारांगमां अव्यक्त विहार वार्यो छे अव्यक्त के० वय पण पूरी नहीं अने श्रुत पण पूरुं नहीं तेहने अव्यक्त कहीयें आचारांगपंचमाध्ययनने उद्देशे चोथे कह्युं छे. यथा—"गामाणुगामं दुइज्झमाणस्स दुज्जातं दुपरक्कंतं भवति अवियत्तस्स भिक्खुणो" एहनो अर्थ—गामाणुगामं दुइज्झमाणस्स के० एक गामथी बीजे गाम एकाकी विचरवा ने दुज्जातं के० दुष्ट गमन छे अर्हन्नकमुनिनी पेठे दुपरक्कंतं के० दुष्टपर आक्रांत छे थुलिभद्रना ईर्षावंत सिंह गुफावासि मुनिने जेम कोश्यायें आक्रम्या तेम सर्व मुनिने न होय ते माटे विशेषण करे छे अवियत्तस्स भिक्खुणो के० अव्यक्त भिक्षुने एटले अव्यक्त भिक्षु बे प्रकारना छे एक श्रुत अव्यक्त बीजो वय अव्यक्त जे आचारप्रकल्प न भण्या होय अने गच्छमां रह्या होय ते श्रुत अव्यक्त कहीये तथा गच्छथी निकल्या ते नवमां पूर्वनी त्रीजी वस्तु न भण्या होय ते गच्छ निरगत अव्यक्त कहीयें गच्छमां रह्या थका सोल वर्षना थाय तिहां लगें वय अव्यक्त कहीयें अने जे गच्छ निरगत ते त्रीस वर्षना थाय त्यां लगे वय अव्यक्त कहीयें इति इहां चोभंगी छे १ श्रुत अव्यक्त अने वय अव्यक्त होय ते तो एकाकी विहार करेज नहीं केमके संयमात्म विराधना थाय माटे न करे २ श्रुत अव्यक्त अने वय व्यक्त ते पण अगीतार्थ माटे संयमात्म विराधना थाय माटे तेमने एकाकी विहार न कल्पे३ श्रुत व्यक्त अने वयथी अव्यक्त तेहने पण न कल्पे बालपणाथकी कुलिंगी तथा गृहस्थने पराभववनुं स्थानक होय ते माटे ४ श्रुत व्यक्त तथा वय व्यक्त तेहने पण एकलमल्ल प्रतिमा

प्रमुख कारणें एकाकीपणे विचरवानी आज्ञा छे पण कारणविना नहीं इत्यादिक बहु वात छे ते आचारांगवृत्तिथी जाणवी. एटलाज माटे आ स्तवननी मूलगाथामां विशेष पद मूक्युं छे माटे अव्यक्तने तो विशेषें करी सर्वथा वार्यो तथा व्यक्तने पण कारणविना वार्योछे तो अव्यक्तने वार्यो तेनुं शुं कहेवुं ते पंखी पोत दृष्टांतें करी जाणवुं जेम पंखीनो पोत के० बालक तेने पांख आवी न होय अने उडवा जाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रव करे तेम अव्यक्त अगीतार्थ बालक होय तेने परदर्शनी उपद्रव करे जाणो प्रवचनसार के० ए जैनागमनो सार जाणवो. यतः काव्यं–"जहा दिया पोयमपक्खजायं,सवासयापविउमणं मणागं। तमचाइयातरुणपमत्तजाइं, ढंकाइअव्वत्तगमंहरेज्जा ॥१॥" माटे जेम पंखी पोताना बालकने सूंना मूकता नथी तेम मूर्खने गीतार्थ एकला न मूके इतिभावः ॥ ६ ॥

एकाकीने स्त्री रिपु श्वानतणो उपघात,
भिक्षानी नवी शुद्धि महा व्रतनो पण घात ।
एकाकी सच्छंदपणे नवि पामे धर्म,
नवि पामे पृच्छादिक विण ते प्रवचन मर्म ॥ ७ ॥

अर्थ–जे एकाकी विहार करे तेने स्त्रीनो तथा रिपु के० शत्रुनो अने श्वान के० कुतरानो उपघात थाय तथा भिक्षा पण दोषसहित लीये तो तेने कोण निषेध करे माटे भिक्षानी शुद्धि पण न रहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घात थाय. गाथा–"दुहपसुसाणसावय, इत्थी भिक्खाइदोसदुल्लिओ। वयगाइ धम्ममाई, तम्हा रम्मो न एगागी ॥१॥" इति पिंड निर्युक्तौ तथा "एगागियस्स दोसा, इत्थी साणे तहेव पडिणीए। भिक्खविसोहिमहव्वय, तम्हा स विइज्जए गमणं ॥१॥" इति धर्मरत्न वृत्तौ जे एकाकी विहार करे ते स्वच्छंदपणे विचरे पोताने मते उपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानी अपेक्षा न रहे ते माटे जे स्वमति कल्पनावंत ते धर्म न पामे. यतः–"इक्कस्स कओ धम्मो, सच्छंदगईमईपयारस्स।" इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकी होय ते पृच्छा के० वांचना पृच्छनादिक ते पण गुरुविना न पामे अने ते विना प्रवचन के० सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्य ते केम पामे. यतः–"कत्तो सुत्तत्थागमपडि-, पुच्छण चोयणा व इक्कस्स। विणओ वेयावच्चं, आराहणया य मरणंते ॥१॥" इत्युपदेशमालायां ॥७॥

सुमति गुपति पण न धरे एकाकी निःशंक,
भाव परावर्त्ते आलंबन धरे सपंक ।
जुदा जुदा थातां थविर कल्पनो भेद,
डोलाए मन लोकना थाए धर्म उच्छेद ॥ ८ ॥

अर्थ–सुमति के० इर्यासमिति प्रमुख पांचसमिति तथा मनादि त्रण गुप्ति ते पण न धरे

के० न पामी शके केमके जे एकाकी विहार करनार होय ते निःशंक होय कोइनी शंका न राखे एटले अकार्य करवानुं चित्त थाय तो कोइनी शंका नधरे सुखे अकार्य करे. गाथा- "पिल्लिज्जेसणमिक्को, पइन्नपमयाजणाउ निच्च भयं। काउमणोवि अकज्जं, न तरइ काऊण बहुमज्झे ॥१॥" इत्युपदेशमालायां तथा चित्तना अभिप्राय ते भाव कहीयें ते भावनुं जे परावर्त्त के० पलटाववुं तेणेकरी जेवा पोताना अभिप्राय थाय तेवुं कांइक आलंबन पामीने तत्काल ते आलंबन धरे के० अंगीकार करे ते आलंबन केवुं होय ते कहे छे-सपंक के० मेलुं होय एटले ए भाव जे चित्तना अध्यवसाय तो क्षणे क्षणे पलटाय छे ते चित्तना अभिप्राय कोइक अवसरें हीणा थाय अने निमित्त पण तेवुंज मले ते वारें पोते पण तेवोज थाय. यतः— "एगदिवसेण बहुआ, सुहाय असुहाय जीव परिणामा। इक्को असुहपरिणओ, चइज्ज आलंबणं लद्धुं ॥१॥" आलबन हिणु पामीने चइज्ज के० संयमने छांडे इत्युपदेशमालायां वली एक जणे एकलो विहार कीधो एटले बीजाने पण एकला विचरवानुं मन थाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जुदा जुदा थातां एटले अवस्था न रहे तथा थिविर कल्पनो भेद थाय एटले आपमतें कोइक क्रिया एक रीते करे कोइक बीजी रीते करे एम भिन्नभिन्न थाय तेथी लोकनां मन डोलाय जे अमुक साधु करे छे ते खरुं छे के अमुक साधु करे छे ते खरुं छे इत्यादिक विकल्प लोकने उपजे तेथी धर्मनो उच्छेद थाय कोइ उपर प्रतित रहे नहीं ते वारें लोकमूलगो धर्म मूकी आपे. गाथा-"सव्वजिणप्पडिकुट्ठं, अणवत्था थेरकप्पभेओ य।" इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

टोले पण जो भोलें अंध प्रवाह निपात,
आणा विण नवि संघ छे अस्थि तणो संघात।
तो गीतारथ उद्धरे जेम हरी जलथी वेद,
अगीतारथ नवि जाणे ते सवि विधिनो भेद ॥ ९ ॥

अर्थ-वली टोले पण जो भोलें के० कदाचित्त टोळुं होय ने जो भोळुं होय तेमां कोइ गीतार्थ न होय तो ते टोलामां वसवुं ते पण अंध प्रवाह निपात के० आंधलानीज श्रेणीमां पडवुं थयुं एम जाणवुं कारणके आणा विना संघ न कहीयें पण अस्थितणो संघात के० हाडकानो समूह जाणवो. यतः-एगो साहू एगा य, साहुणी सावओ व सड्ढी वा। आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठिसंघाओ ॥१॥" एम संबोधसित्तरीमां कह्युं छे. ते माटे जे गीतार्थ होय तेज संसारसमुद्रमांथी भव्य जीवने उद्धरे के० उद्धार करे जेम हरी जलथी वेद के० जे रीते श्रीकृष्णे समुद्रमांथी वेद उद्धर्या ए दृष्टांते तेनी कथा कहे छे-शंख नामे दैत्य उपज्यो ते ब्रह्मा पासे वेद भणवा बेठो एवामां ब्रह्माने बगासुं आव्युं ते बगासुं छ महीने पुरुं थयुं त्यारें ब्रह्मानुं मुख मोकळुं देखी शंख दैत्यें विचार्युं जे वेद भणतां क्यारे पार पामीशुं माटे ब्रह्माना पेटमां प्रवेश करी वेद लेइ जाउं एम विचारी पेटमां पेसीने वेद लेइ

गयो ने समुद्रमां पातालमां जइ पेठो पछी श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो भूतसरिखा केम देखाय छे एम विचार करतां श्रीकृष्णे जाण्युं जे शंखदैत्य चारे वेद लइ गयो छे हवे हुं लेइ आवुं एम विचार करी मत्स्यावतार धरी शंखासुरना भवनमां गयो त्यां बालकनुं रूप धरी तेनी स्त्री पासे बेठो ते स्त्रीयें जाण्युं जे आपणे मनोहर बालक पाम्या पछी तेने रमाडवा बेठी एटलामां शंखासुरना पेटमां चारे वेद वातो करवा लाग्या जे आपणी बाहार करवा ठाकोरजी आव्या छे ते वात सांभली शंखासुरे जाण्युं जे अनर्थ थयो पछी स्त्रीने कह्युं जे बालक मूकी द्यो पण स्त्रीयें न मूक्युं त्यारें बालकने मारवा दोड्यो तेथी स्त्रीयें बालकने मूकी दीधुं पछी ते बालकें ते दैत्यसाथे युद्ध करी मच्छरूपें थइ दैत्यने मारी तेना पेटमांथी चारे वेद लइ श्रीकृष्ण पाणीमांथी बहार आव्या ते माटे प्रथम मच्छावतार लीधो ए अधिकार शिवमार्गना शासने दशावतार ग्रंथ मध्ये कह्युं छे इहां दृष्टांते लख्युं छे वली जे अगीतार्थ होय ते उत्सर्ग अपवादादिक सर्व विधिओना भेद न जाणे माटे अगीतार्थने एकलो विहार न होय इतिभावः ॥ ९ ॥

कारणथी एकाकीपणुं पण भाष्युं तास,
विषमकालमां तो पण रुडो भेलो वास ।
पंचकल्प भाष्यें भण्युं आतम रक्षण एम,
शालि एरंड तणे एम भांगे लहिए खेम ॥ १० ॥

अर्थ—वली कोइ कहेशे जे श्रीउत्तराध्ययन मध्ये एकाकीपणानी हा केम कही यथा—"इक्कोवि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ।" इति वचनात्. तेने उत्तर जे गीतार्थ होय तास के० तेने कोइक कारणथी एकाकीपणुं पण भाष्यु के० कह्युं छे यथा तिहांज काव्यम्—"न वा लभिज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।"इति वचनात्. तोपण विषमकालमां के० आ पांचमा आरामां हुंडाअवसर्पिणी कालमां रुडो भेलो वास के० भेला वसवुं तेज रुडुं पण एकाकी वसवुं रुडुं नहीं एम पंचकल्प भाष्यने विषे कह्युं छे. आतमरक्षण एम के० जे संयमरूप आत्मा तेनी रक्षा ते एमज थाय अथवा आत्मा ने शरीर अभेद छे माटे आतम के० शरीरनी रक्षा पण एम के० एमज भेला वसतां थकां होय. इहां शालि तथा एरंडनी चोभंगी छे १ शालिनो वृक्ष अने शालिनी वाडी २ शालिनो वृक्ष अने एरंडनी वाडी ३ एरंडनो वृक्ष अने शालिनी वाडी ४ एरंडनो वृक्ष अने एरंडनी वाडी ए चोभंगीमांथी शालि तथा एरंडना त्रण भांगे वसतां तो खेम के०कल्याण छे इति अक्षरार्थ. भावार्थ तो एछे जे शालिसरिखा गीतार्थ एटले आचार्य अने एरंडसरिखा मूर्ख तेनी चोभंगी देखाडे छे—१ गीतार्थ आचार्य अने जे गीतार्थनो परिवार ते वाडी पण गीतार्थनी २ गीतार्थ आचार्य अने मूर्खपरिवारनी वाडी ३ मूर्ख आचार्य अने गीतार्थना परिवारनी वाडी ए त्रण भांगालगे कोइक रीते आज्ञा छे पण मूर्ख आचार्य अने मूर्ख परिवार ए भांगो तो

सर्वथाज निषेध छे. यतः—जत्थ य पंच कुसीला, गणिवायगथविरपवत्तनिग्गंथा। तेण एरंड-समाणं, चउत्थभंगीए नायव्वो ॥ १ ॥" इति ॥ १० ॥

एकाकी पासत्थो सच्छंदो गतयोग,
ठाणवासी उसन्नो बहु दूषण संयोग।
गच्छवासी अणुओगो गुरु सेवी वलि होय,
अनियतवासी आउ तो बहुगुण एम जोय ॥ ११ ॥

अर्थ—१ एकाकी केवल धर्मबंधुरहित ते २ पासत्थो ज्ञानादिक पार्श्ववर्त्ति ३ स्वच्छंदो गुरुआज्ञा विकल एटला माटे गतयोग कहिये ४ ठाणवासी के० स्थानकवासी एकत्रविहारी नित्यवासीत्यर्थः ५ अवसन्न ते आवश्यकादिकें शिथिल मन परिणामी ते उसन्नो ए पांच पद ते बहुदूषण संयोगी होय ते क्यारे कोइकने एक पद क्यारे बे पद क्यारे त्रण पद क्यारे चार पद अथवा पांच पदना संयोगी थाय जेम एक पदस्थानक वधे तेम दोष वृद्धि पण जाणवी एवं २६ भेद थाय इत्यादिक अनेक प्रकारें दोषवृद्धि थाय. यतः—"एगागी पासत्थो, सच्छंदो ठाणवासिय उसन्नो। दुगमाई संयोगा, जह बहुआ तह गुरु हुंति ॥१॥" इत्युपदेशमालायां एना द्विकादि संयोग करतां २६ भेद थाय तेमां द्विक संयोगी १० तथा त्रिकसंयोगी १० चतुःसंयोगी ५ पंचसंयोगी १ एव २६ भांगा दोषवृद्धिना जाणवा तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडे छे—१ गच्छगत २ अनुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आयुक्त एना पण एमज छवीस भेद गुणवृद्धिना थाय जेम जेम गुण वधे तेम तेम विशेष आराधक थाय अने दोषवृद्धियें विराधकपणुं वधे तथा गुणवृद्धियें आराधकपणुं वधे तेमां दोषवृद्धिना २६ भांगा लखियें छैयें.

द्विकसंयोगी १० भांगा १ एकाकी—पासत्थो २ एकाकी—सच्छंदो ३ एकाकी—ठाणवासी ४ एकाकी—उसन्नो ५ पासत्थो—सच्छंदो ६ पासत्थो—ठाणवासी ७ पासत्थो—उसन्नो ८ सच्छंदो—ठाणवासी ९ सच्छंदो—उसन्नो १० ठाणवासी—उसन्नो

त्रिकसंयोगी भांगा १० लखे छे १ एकाकी—पासत्थो—सच्छंदो २ एकाकी—पासत्थो—ठाणवासी ३ एकाकी—पासत्थो—उसन्नो ४ एकाकी—सच्छंदो—ठाणवासी ५ एकाकी—सच्छंदो—उसन्नो ६ एकाकी—पासत्थो—उसन्नो ७ पासत्थो—सच्छंदो—ठाणवासी ८ पासत्थो—सच्छंदो—उसन्नो ९ पासत्थो—ठाणवासी—उसन्नो १० सच्छंदो—ठाणवासी—उसन्नो

चतुसंयोगी भांगा ५ लखे छे १ एकाकी—पासत्थो—सच्छंदो—ठाणवासी २ एकाकी—पासत्थो—सच्छंदो—उसन्नो ३ एकाकी—पासत्थो—ठाणवासी—उसन्नो ४ एकाकी—सच्छंदो—ठाणवासी—उसन्नो ५ पासत्थो—सच्छंदो—ठाणवासी—उसन्नो

तथा पंचसंयोगी १ भांगो थयो एवं २६ थाय ते द्विकसंयोगीथी त्रिकसंयोगी दूषणे भारी तेथी चतुःसंयोगी दूषणे भारी चतुसंयोगीथी पंचसंयोगी दूषणे भारी हवे दोषने व्य-

तिरेके गुणवृद्धिपणो देखाडे छे १ गच्छवासी के० गच्छमां वसे २ अणुओगी के० अर्थ धारे ३ गुरुसेवी के० गुरु आदिकनी सेवा करे ४ अनियतवासी के० उग्रविहारी ५ आयुक्त ते आउत्तो के० उपयोगी होय ए पांच पदमां जेम जेम एकेका पदनी वृद्धि थाय तेम तेम वहुगुण होय अने विशेष आराधक थाय. यतः—"१ गच्छगओ २ अणुओगी ३, गुरुसेवी ४ अनिओ गुणाउत्तो, संजोएण पयाणं, संयमआराहगा भणिया ॥ १ ॥" इत्युपदेश मालायां ॥ ११ ॥

दोषहाणी गुण वृद्धि जयणा भाषें सूरि,
ते शुभ परिवारें हुये विघन टले सवि दूरि ।
देव फले जो आंगणे तुझ करुणा सुर वेलि,
शुभ परिवारें लहियें तो सुख जस रंगरेलि ॥ १२ ॥

अर्थ—एम दोषनी हाणी थाय तथा गुणनी वृद्धि थाय अने जयणा के० जतना थाय एटले वहु लाभ अल्पदोषें प्रवृत्ति थाय ते एहवा गुण क्यारे आवे तेहनो उत्तर भाषे सूरि के० आचार्य भाषे छे के ते शुभपरिवारें हुए के० एवा गुण तो परिवार शुभ होय तिवारे आवे तथा विघ्न सर्व दूर टले ते माटे हे देव तुझ के० तमारी करुणारूप जे सुर वेली के० कल्पवृक्षनी वेलडी ते आंगणे फले के० मारा आत्मरूप जे आंगणुं तिहां जो सफली थाय तो ते शुभपरिवार पामियें एटलाज माटे उपदेशमालाना कर्तायें कहुं छे. यतः—"सिद्दगुरु सुसीसाणं, भद्दं गुरुवयणसद्दहंताणं । वयरो किर दाही वायणत्ति न विकोवियं वयणं ॥१॥" ते माटे शुभपरिवार पामवो दुष्कर छे ते शुभपरिवारें करी सुखयशनी रंगरेल पामियें एटले सेहेजानंदस्वरूपना रंगनी रेल तेहनो प्रवाह पामीयें ए सातमी ढालमां कहुं जे हे देव तमारी करुणारूप सुरवेली जो फले तो सुखयश पामियें ते माटे हवे आठमी ढालमां करुणा विशेष जे दया तेहनुं स्वरूप कहे छे ॥ १२ ॥

॥ ढाळ आठमी ॥

॥ प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुझ वात—ए देशी ॥

कोइ कहे सिद्धांतमांजी, धर्म अहिंसा सार । आदरियें ते एकलीजी,
त्यजीयें वहु उपचार ॥ मनमोहन जीनजी, तुजवयणे मुजरंग ॥१॥

अर्थ—वली कोइक एम कहे छे के सिद्धांतसूत्रने विषे एम कहुं छे जे धर्म अहिंसा के० दया धर्म तेज सार के०प्रधान छे "नत्थि अहिंसा समो धम्मो" इति वचनात्, माटे एकली अहिंसाज आदरीयें वीजा वहु के० अनेक उपचार के० उपायने त्यजीयें के० मूकी दइयें

एम कहे छे माटे हे मनमोहन जिनजी अथवा मनने मोहना उपजावणहार एवा जे जिनेश्वर तेनो संवोधन करियें जे हे मनमोहन जिनजी तुजवयणे के० तमारा वचनने विषे मुझने रंग छे रीझ छे ॥ १ ॥

नवि जाणे ते सर्व त्यजीने, एक अहिंसा रंग ।
केवल लौकिक नीति होवे, लोकोत्तर पंथ भंग ॥ मन० २ ॥

अर्थ—तेहने उत्तर आपे छे के ते अज्ञानी नथी जाणता नथी समजता जे सर्व पूजा प्रभावना सामिवत्सल प्रमुख करणी त्यजीने मात्र एक अहिंसाने विषेज रंग के० रीझ करे छे तेथी केवल लौकिक के० व्यवहार नीति करीने एटले लौकिक व्यवहारमां एक दया दया पोकारे ते सारी लागे पण लोकोत्तर मार्ग जे जिनमार्ग तेहनो भंग थाय छे एटले एकली दयामां जिनशासन नथी पण जिन आज्ञामां शासन प्रवर्त्ते छे एकली दयायें तो पडिक्कमणा पोसह प्रमुख पण न करी शके तो पूजा प्रभावनानी वात तो वेगली रही इति भावः ॥ २ ॥

वनमां वसतो वाल तपस्वी, गुरु निश्राविण साध ।
एक अहिंसायें ते राचे, न लहे मर्म अगाध ॥ मन० ३ ॥

अर्थ—एक तो वाल तपस्वी जे अज्ञान तपस्वी ते पण वनमां वसतो एटले घोर कष्टनो करणहार तथा वीजो गुरुनिश्राविण के० गुरुआणाविना ए वेहु एक अहिंसायें ते राचे के० एक अहिंसा मुखे कहे एटले वाह्यजीवनी रक्षा करवी एटलामांज रीझछे पण ते अहिंसानो अगाध के० ऊंडो मर्म छे ते मूढ न जाणे एटले स्वआत्मा हणाय ते हिंसा अने स्वआत्मा न हणाय ते अहिंसा एहवा मर्मनी तेने खवर नथी ॥ ३ ।

जीवादिक जेम बाल तपस्वी, अणजाणंतो मूढ ।
गुरुलघुभाव तथा अणलहेतो, गुरुवर्जित मुनि गूढ ॥ मन०४ ॥

अर्थ—हवे कोइ कहेशे जे वालतपस्वी तथा साधु ए बे वरावर केम थाय तेने कहे छे के जेम वालतपस्वी ते जीव अजीव पुन्य पाप प्रमुखनुं यथार्थ स्वरूप ते मूढ अजाणंतो के० अणसमजतो थको जेम ते होय तथा के० तेमज गुरुलघुभाव अणलहेतो के० हलका भारे लाभ खोटने अणजाणतो जे आवुं प्रायश्चित्त करशुं ते करतां वीजी करणीमां यद्यपि प्रायश्चित्त छे तोपण लाभ घणोछे इत्यादिक वातोथी अणसमजु छे जे माटे गुरुवर्जित मुनि के० गुरुयेंकरी रहित एहवा जे मुनि ते गूढ के० गुप्त रहस्य जे होय तेवा गुरु अने लघु भावने न लहे इतिभावः ए रीतें गूढ शब्द गुरु लघुभावने जोडीयें ॥ ४ ॥

भाव मोचक परिणाम सरिखो, तेहनो शुभ उद्देश ।
आणारहितपणे जाणीजे, जोइ पद उपदेश ॥ मन० ५ ॥

अर्थ—भावमोचक परिणाम के० बौद्धादिकना परिणाम सरिखो छे एटले बौद्धादिक एम माने छे के जे दुःखी होय तेने मारीयें तो दोष न लागे कारणके तेने मारता नथी पण उलटो दुःखर्थी मूकाविये छैयें ए रीते माठुं कृत्य करीने तेने रुडुं माने छे ते सरिखो तेहनो के० ते ढुंढकादिक अज्ञानीनो शुभ उद्देश के० शुद्ध प्रवर्त्तन जाणवो एटले यद्यपि तेओनी अहिंसा द्रव्यथी छे पण परिणामे हिंसाज जाणवी तिहां हेतु कहे छे जे आणारहित पणे जाणी जे एटले आज्ञारहित माटे. यतः—" आणाइ तवो आणाइ, संयमो तह य दाण माणाए । आणारहिओ धम्मो, पलालपुलुव्व पडिहाइ ॥ १ ॥ " इति वचनात् ए अर्थ उपदेशपदग्रंथमां जोइने जाणी जे के० जाणीयें. यतः—"जं अन्नाणी मूढो, जं च अगीयत्थ. निस्सिओ विहरे । सो कुगयकम्मसरिसो, पावपवचे विलिप्पंति ॥ १ ॥" ॥ ५ ॥

एक वचन झालीने छांडे, बीजा लौकिक नीति ।
सकल वचन निज ठामे जोडे, ए लोकोत्तर नीति ॥ मन० ६ ॥

अर्थ—ए गाथानो अन्वय करी अर्थ करे छे. जे एक लौकिक वचन झालीने बीजा सर्व नीतिनां वचन छांडे छे इत्यन्वयः ते लौकिक वचन ए जे कोइने न हणवो ते उपर आगमना पाठ देखाडे छे जे "सव्वे पाणा सव्वे भूआ सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हंतव्वा" इत्यादिक आगमनुं एहवु वचन छे अने यद्यपि लोक पण मौढमार्गे एम कहे छे जे कोइने न मारवो ते माटे ए वचनने लौकिकवचन कहीयें ते लौकिकवचन पकडीने बीजां सर्व नीतिवचन के० लौकिकथी बीजां जे लोकोत्तरवचन दान देवपूजा साहमीवत्सल प्रमुख ते नीतिवचन कहीयें ते सर्व छांडि दे छे पण ते सर्व खोटुं करे छे केमके जे सकल वचन निजठामे जोडे के० समस्त सिद्धांतना वचन जे छे तेने ठेकाणे जोडे ते.लोकोत्तरनीति जाणवी सकल वचन ए पद बीजीवार जोडवुं एटले ए भाव जे गुणठाणा माफक सहु सहुनी हद प्रमाणे समस्त सिद्धांतना वचन जोडे जे आ वचन ते मुनिराजनेज आश्री छे अने आ वचन ते गृहस्थने आश्री छे ते अपेक्षाओ जैनशासनमां घणी छे ते पोतपोतातानी अपेक्षा प्रमाणे जोडे ए लोकोत्तरनीति ते जिनशासननी नीति छे ॥ ६ ॥

जिनशासन छे एक क्रियामां, अन्य क्रियामां संबंध ।
जेम भाषी जे त्रिविध अहिंसा, हेतु स्वरूप अनुबंध ॥मन०७॥

अर्थ—तथा जिनशासन ते एक क्रियामां अन्य क्रिया संबंध छे जे माटे जे हिंसा तेज अहिंसा अने जे अहिंसा तेज हिंसा अने जे तपस्या तेज जो निस्पृहीपणुं नथी तो अतपस्या छे भोगी छे अने भोगी छतां निस्पृहिपणुं छे, तो तेज तपस्वी छे इत्यादिक जिनशासनमां एकांत नथी स्याद्वाद छे. यतः—" अविधायाऽपि हि हिंसां, हिंसाफलभाजनं भवत्येकः । कृत्वाप्यपरो हिंसां, हिंसाफलभाजनं न स्यात् ॥१॥" इति अहिंसाष्टक वचनात् . ते वली हिंसा तथा अहिंसा अनेक भेदें आगली गाथामां देखाडे छे जेम भाषी जे के० जिनशासन-

मां कही जे त्रिविधे अहिंसा के० त्रण प्रकारनी अहिंसा ते देखाडे छे—१ हेतु अहिंसा २ स्वरूप अहिंसा ३ अनुबंध अहिंसा ए विवरीने देखाडे छे ॥ ७ ॥

हेतु अहिंसा जयणारूपें, जंतु अघात स्वरूप ।
फलरूपे जें तेह परिणामे, ते अनुबंध स्वरूप ॥ मन० ८ ॥

अर्थ—तेमां पहेलो हेतु अहिंसा ते यतना करवी केमके जे जीवयतना करवी ते अहिंसा नो हेतु छे माटे हेतु अहिंसा कहीयें, बीजी जे जंतु अघात के० जीवनें मारवो नहीं प्राण-वियोग न करवो तेहनुं नाम स्वरूप अहिंसा कहीयें, त्रीजी स्वर्गापवर्गादिक फलरूपे जे अ-हिंसा परिणमे ते अनुबंध अहिंसानुं स्वरूप जाणवु ॥ ८ ॥

हेतु स्वरूप अहिंसा आपे, शुभ फल विण अनुबंध ।
दृढ अज्ञान थकी ते आपे, हिंसानो अनुबंध ॥ मन० ९ ॥

अर्थ—हवे त्रणे अहिंसानां फल कहे छे. जे हेतु अहिंसा तथा स्वरूप अहिंसा ए बे अ-हिंसा ते शुभ फल के० पुण्यफल आपे विण अनुबंध के० अनुबंध विना एटले हेतु तथा स्वरूप आ हेतुथी पुण्य बंधाय ते देवता प्रमुखनो भव पामे पण आगलें संलग्न पुण्य परंपरा न चाले माटे पापानुबंधी पुण्य बंधाय जेम अहिंसाना त्रण भेद तेम हिंसाना पण त्रण भेद छे ते कहे छे—१ हेतुहिंसा २ स्वरूपहिंसा ३ अनुबंधहिंसा ए त्रणमां हिंसानुं अनुबंध के० फल ते पण जे हिंसानुंज आपे तेनो हेतु कहे छे के दृढ अज्ञानथकी के० आकरे अज्ञाने करीने एटले ए भाव जे हेतुथी जोड्यें तो अहिंसा तथा स्वरूपथी जोड्यें तोपण अहिंसा अने अनु-बधे जोड्ये तो हिंसा छे तो ते हिंसाथी पण संसार वधे अने अज्ञान अहिंसाथी पण संसार वधे ते माटे जेमां अनुबंध अहिंसा होय ते आदरवी इतिभावः ॥ ९ ॥

निन्हव प्रमुखतणी जेम किरिया, जेह अहिंसारूप ।
सुर दुरगति देइ ते पाडे, दुत्तर भवजल कूप ॥ मन० १० ॥

अर्थ—जेम जमाली प्रमुख निन्हव सर्वजैनलिंगे हता तथा क्रिया पण जैननी करता हता ते श्रीभगवतीमां जमालीनुं महासंयम वखाण्युं. पण जे अहिंसारूप के० ते क्रिया सर्व हेतु-अहिंसा तथा स्वरूप अहिंसारूप हती पण ते सुरगतिदेइ के० देवतानी दुर्गति एटले किल्वि-षिया प्रमुख देवतानी दुर्गति आपीने पछी पाडे के० नाखे दुत्तर भवजल कूप के० दुखें तराय एवो संसाररूप जलनो कूवो तेमां नांखे इति ॥ १० ॥

दुर्ब्बल नग्न मास उपवासी, जो छे माया रंग ।
तोपण गरभ अनंता लेशे, बोले बीजुं अंग ॥ मन० ११ ॥

अर्थ–ते उपर साख देखाडे छे. जेम कोइक शरीरें दुर्बल थयो होय तथा नग्न के० नागो रहेतो होय अने मासखमणनुं पारणुं करतो होय एवो होय अने माया रंग के० मायावंत होय एटले अज्ञान कष्ट करे छे एवो छे तोपण अनंतीवार गर्भमां उपजशे एटले अनंता भव करशे एम बीजुं अंग जे सुयडांगसूत्र ते बोले छे. यतः–"जइ वि य णिगणे किसे चरे, जइ वि य भुंजिय मासमंतसो । जे इह मायावि मज्जई, आगंता गब्भा य णंतसो ॥१॥ इति द्वितीयाध्ययने एटले एनी दया कोइ लेखामां न आवे ॥ ११ ॥

निंदित आचारें जिनशासन, जेहने हीले लोक ।
माया पेहेली तस अज्ञाने, सर्व अहिंसा फोक ॥ मन० १२ ॥

अर्थ–ते निंदित आचारें लोक जिनशासन हीले एटले जे एकली दया माने छे अने अज्ञान कष्ट करे छे ते प्राणीने पूर्वाचार्यना जीतनी खबर नथी के जीत व्यवहारें लोकनिंदा न करे, अने पोतानी मतियें प्रवर्त्ते तेना आचरणनी लोक निंदा करे ते वारे जिनशासननी पण निंदा थाय, के जुओ आवा लोक जिनशासनमां छे माटे जिनशासन पण दुगंच्छा करवा योग्य छे त्यारे जिनशासननी हीनतानुं कारण थाय माटे तस के० ते प्राणीने अज्ञान थयुं ने अज्ञाने करीने माया पहेली के० प्रथम माया थईज अने ज्यां माया ठेरी त्यां सर्व अहिंसा ते फोक के० खोटी निष्फल जाणवी. जे माटे अज्ञानीनी दया ते हिंसाज जाणवी. यतः–"मासे मासे य जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए । न सो सुअक्खायस्स धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥ १ ॥" इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

स्वरूपथी निरवद्य तथा जे, छे किरिया सावद्य ।
ज्ञानशक्तिथी तेह अहिंसा, दिए अनुबंधे सद्य ॥ मन० १३ ॥

अर्थ–आगली गाथामां दया पाले ने फल हिंसानुं आपे एम कह्युं. हवे जे कथंचित् हिंसा थाय ते पण अहिंसानुं फल आपे ते कहे छे. जे स्वरूपथी के० परमार्थें तो निरवद्य छे, निष्पाप छे अने क्रिया सावद्य के० क्रिया देखीति यद्यपि सावद्य छे तोपण ते जे स्वरूपथी हिंसा छे ते ज्ञानशक्तियें करी दिए अनुबंधे के० अनुबंधे आपे अहिंसा के० दया सद्य के० तत्काल एटले ए भाव जे स्वरूप हिंसा जे दानविहार प्रमुख ते मुनि प्रमुखनी छे ते अनुबंधे अहिंसानुंज फल आपे. यतः भगवत्यां–"अणगारस्सणं भंते ! भाविअप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोए वा वट्टपोए वा कुलिंगच्छाए वा परियावज्जेज्जा, तस्सणं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति ? । गोयमा ! णो संपराइया किरिया कज्जइ, ईरियावहिया किरिया कज्जइ । से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ ? जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो ॥ १ ॥" इति अढारमा शतकना आठमा उद्देशामां छे ॥ १३ ॥

जिनपूजा अपवाद पदादिक, शीलव्रतादिक जेम ।
पुण्य अनुत्तर मुनिने आपी, दिए शिवपद बहु खेम ॥मन०१४॥

अर्थ—वली जेम पूर्वे मुनिने हिंसा स्वरूपथी हती ते अनुबंधे अहिंसा कही तेमज जिन पूजा तथा अपवाद पदादिकें वर्त्तता मुनि वली शीलव्रतादिक जेम मुनिने अनुत्तर के० उत्कृष्ट पुण्य आपीनें एटले ए जिनपूजादि करणी यद्यपि किञ्चित मात्र स्वरूपथी सावद्य छे अने शीलव्रतादिक ते स्वरूपथी निरवद्य छे पण ए बेहु भेदवालाने अनुबंधे अहिंसानुंज फल आपे ते माटे एम कह्युं जे अनुत्तर पुण्य आपीने दिए के० आपे शिवपद के० मोक्ष-पद जे बहु खेम के० घणुं क्षेम छे जिहां एटले परंपरायें सर्वसिद्धनुं देनार छे ॥ १४ ॥

एह भेद विण एक अहिंसा, नवि होवे थिर थंभ ।
यावत योग क्रिया छे तावत, बोल्यो छे आरंभ ॥ मन० १५ ॥

अर्थ—ए प्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध ए त्रण भेदे हिंसा तथा ए त्रण भेदे अ-हिंसा ते जाण्या विना एकलीज अहिंसा सामान्य प्रकारें माने ते नवि होवे के० न होय थिरथंभ के० थिरभावे एटले एकली अहिंसा ठेरे नहीं, शामाटे के यावत योग क्रिया छे के० ज्यां लगे मन वचन कायाना योगनी क्रिया ते चलन क्रिया छे तावत के० तिहांलगें बोल्यो छे के० कह्यो छे आरंभ के०कर्मबंध एटले पोतपोताना गुणठाणानी मर्यादा माफक तेरमा गुणठाणा लगें कर्मबंध छे अन्यथा इरियापथिकबंध बे समयनी स्थितिनो केम कह्यो छे ते माटे एकली अहिंसा कहेवी ते काम न आवे पण तेना भेद समजे तो सर्व ठेकाणे जोडे ॥ १५ ॥

लागे पण लगवे नहि हिंसा, मुनि ए माया वाणी ।
शुभ किरिया लागी जे आवे, तेमां तो नहि हाणी ॥ मन० १६ ॥

अर्थ—इहां कोइक एम कहे छे जे मुनि के० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागे छे पण लगावे नहीं एटले हाथे करी जाणीने हिंसा करे नहीं एम कहे छे ते माया वाणी के० कपटनुं वचन छे एटले मारी माता वंध्या तेनी परे माया गाली वात बोले छे पण शुभ किरिया जे विहार पडिलेहण नदी उतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे छे ते पोतानी मेळेज लागे छे एम केम कहेवाय. केमके जे नदी उतरवी विहार करवो ते अजाण्यो थतो नथी ते तो पोते जाणेज छे जे नदी प्रमुख उतरतां हिंसा थशे तोपण उतरे छे प्रभुनी आज्ञा छे ते माटे जे हिंसा शुभ किरिया करतां लागी आवे छे तेमां हाणी के० दोष लागतो नथी ॥ १६ ॥

हिंसा मात्र विना जो मुनिने, होय अहिंसक भावे ।
सूक्ष्म एकेंद्रिनें होवे, तो ते शुद्ध स्वभाव ॥ मन० १७ ॥

अर्थ—हिंसामात्र विना के० एक हिंसाज देखीति न करी एटले देखीतो कोइ जीव न मार्यो एटला मात्रथीज जो मुनिने के० साधुने होय अहिंसकभाव के० अहिंसकपणुं थाय तो सूक्ष्म एकेंद्रिने के० लोकव्यापी पांच थावरना सूक्ष्म एकेंद्रि जीवोने पण शुद्ध स्वभाव होवो जोइयें केमके सूक्ष्म एकेंद्रि जीव ते हिंसा नाम मात्र पण नथी करता माटे ते तमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकभावें परिणम्यो ने तो शुद्ध स्वभावी निरावर्णी थाय पण ते एकेंद्रि तो कोइ निरावर्णी थता देखाता नथी ते माटे मात्र हिंसाने अणकरवेज अहिंसक न थाय. जमालीनी पेरें "अविधायापि हि यो हिंसां, हिंसाफल भाजनं भवत्येकः" इति अहिंसाष्टक वचनात् ॥ १७ ॥

भावें जे अहिंसा माने, ते सवि जोडे ठाम ।
उत्सर्गें अपवादें वाणी, जिननी जाणे जाम ॥ मन० १८ ॥

अर्थ—ते माटे जे प्राणी द्रव्य भाव प्रमुख भेदे करी अनेक प्रकारनी अहिंसा छे तेमां पण भावें के० परिणामें जे प्राणी अहिंसा माने ते के० ते प्राणी सवि जोडे ठाम के० सर्व जिनवाणी पोतपोताने ठेकाणे जोडे ते प्राणीथी आगमवचन एक पण दुपाय नहीं ते भावथी अहिंसा मानीने सर्व आलावा ठेकाणे क्यारे जोडे जाम के० ज्यारे उत्सर्गें अपवादें वाणी के० उत्सर्ग वचन तथा अपवाद वचन ए बेहुयें करीने जिनेश्वरनी वाणी जाणे एटले ए भाव जे उत्सर्ग मार्गें अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांग प्रमुखने विषे तथा साध्वी प्रमुख पाणीमां वहेती जाणे तो काढे तथा एक महिना मध्ये बे नदी उतरवी इत्यादिक अपवाद आज्ञा पण प्रभुयें करी छे तो ए सर्व उत्सर्ग अपवाद भाव जाणे ते सर्व वचन ठामे जोडे पण मूर्ख शुं जाणे ॥

कोइ कहे उत्सर्गें आणा, छांदो छे अपवाद ।
ते मिथ्या अणपामें अर्थें, साधारण विधिवाद ॥ मन० १९ ॥

अर्थ—इहां कोइक एम कहे छे जे उत्सर्ग मार्गें चालवुं तेज आज्ञा छे पण अपवाद ते छांदो छे एटले पोतानी मति कल्पना छे पण जिनाज्ञा नथी एम कहे छे ते मिथ्या के० खोटुं छे अणपामें अर्थें के० अर्थ जाण्या विना एम कहेछे तेनुं कारणके जे विधिवाद होय ते साधारणज होय एटले एम जाणवुं जे उत्सर्ग ने अपवाद ए बन्ने विधिवाद छे ते सर्व जीवने साधारण छे पण एक जीव आश्रयी नथी कह्युं, ते माटे अपवाद पण आज्ञा छे पण छांदो एटले स्वमति कल्पना नथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणे जेम भावे आणा, तेम तस कारण तेह ।
कार्य इच्छतो कारण इच्छे, ए छे शुभ मति रेह ॥ मन० २० ॥

अर्थ—वली एक कहे छे के जंबूद्वीपपन्नतिनी वृत्ति मध्ये एम कह्युं छे के जे अपवाद ते कारण अने उत्सर्ग ते कार्य ते माटे कहे छे जे मुख्यपणे जेम भावे आणा के० उत्सर्गें

आज्ञा छे एटले भाव ते कार्य कहीयें अने जे कार्य ते उत्सर्ग कहीयें ते माटे जेम उत्सर्गे आज्ञा छे तेम तस कारण तेह के० तेमज ते उत्सर्गनुं जे कारण ते अपवाद छे तेनी पण आज्ञा छे केमके कार्यने इच्छतो थको कारण पण इच्छे अने जो कारण ठेरे तो कार्य पण ठेरें जो कारण,नहीं तो कार्य किहांथी आवे ए रीते माने तेनेज शुभ मतिनी रेखा जांणवी. अथवा ए गाथानो अर्थ बीजी रीते करीयें छैयें जे इहां ढुंढक लोक एम कहे छे जे अमारे तो भावनिक्षेप ते वंदना करवा योग्य छे पण नाम तथा स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निक्षेपा वंदना योग्य नथी एम कहे छे तेने शीखामण देछे जे मुख्यपणे जेम भावे आणा के० भाव निक्षेपे आज्ञा छे एटले भाव निक्षेपो वांदवा योग्य छे, तेम तस कारण के० तेमज ते भावनां कारण जे नामादि त्रण निक्षेपा ते पण वांदवा योग्य छे. केमके जे कार्यने इच्छशे ते कारणने इच्छशे अने कारण मान्या विना कार्यने पामशे नहीं एज शुभ मतिनी रेखा छे एटछे जे भाव निक्षेपो मानशे तेने नाम स्थापनादिक पण मानवा जोइयें जो नामादिक नहीं माने तो भाव निक्षेपो पण नहीं मनायो एम थयुं ॥ २० ॥

कल्पें वचन कह्युं अपवादें, ते आणानुं मूल ।
मिश्रपक्ष तो मुनिने न घटे, तेह नहीं अनुकूल ॥ मन० २१ ॥

अर्थ—पंचकल्पमांहे इएवुं वचन कह्युं छे के अपवाद मार्ग ते जिनाज्ञानुं मूल छे. यतः— "अववाओ ववहारो, आणामूलं जओ भवे तित्थं ।" इति वचनात्. माटे मुनिने तो ते मिश्र पक्ष घटे नहीं रुडो नथी ते अनुकूल नथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायें मिश्र पक्षता नथी तेहिज आगली गाथामां देखाडे छे ॥ २१ ॥

अपुनर्बंधकथी मांडीनें, जाव चरम गुणठाण ।
भाव अपेक्षायें जिन आणा, मारग भाखे जाण ॥ मन० २२ ॥

अर्थ—फरी बंधनथी न करवो तेने अपुनर्बंधक कहीये ते अपुनर्बंधक जे चोथुं गुणठाणुं तिहांथी मांडिने जाव चरम के० छेल्ला अयोगी केवली चउदमा गुणठाणा लगें इहां अपुनर्बंधक शब्दें चोथुं गुणठाणुं जाणीयें छैयें जे कारणे अंतः कोडाकोडीनी स्थिति करीने कदापि फरी मिथ्यात्व गुणठाणे आवे तोपण सितेर कोडाकोडीनी स्थिति फरी न बांधे ते माटे अपुनर्बंधक कहीयें तथा उपाध्यायजीयें पण सवासो गाथाना स्तवन मध्ये एवी गाथा कही छे के, "जे जे अंशेरे निरूपाधिकपणुं, ते ते जाणोरे धर्म । सम्यक्दृष्टीरे गुणठाणा थकी, जाव लहे शिव शर्म ॥ १ ॥" ए गाथाने अनुमाने पण एमज जणाय छे पछी तो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुत कहे ते प्रमाण तथा उपाध्यायजीयें स्वकृत अध्यात्मसार ग्रंथमां पण कह्युं छे जे 'अपुनर्बंधका यावत् गुणस्थानं चतुर्दशं' इत्यादिथी स्पष्ट जणाय छे के चोथा गुणठाणाथी चउदमा लगें जिन आणा के० जिनेश्वरनी आज्ञा छे अने जाणपुरुष ते एनेज मार्ग कहे छे ते सर्वभाव भावनी अपेक्षायें जाणवा अन्यथा चोथा गुणठाणा प्रमुखने विषे तो महा विभावमां बेठो छे पण भावनी अपेक्षायें जिन आणा छे. इति भावः ॥ २२ ॥

एक अहिंसामां जे आणा, भाषे पूरव सूरि ।
ते एकांत मति नवि ग्रहियें, तिहां नयविधि छे भूरि ॥मन०२३॥

अर्थ—तथा शास्त्रमां एकली अहिंसामां आज्ञा छे जेम 'सव्वे जीवा न हंतव्वा.' इति आचारांगादिक वचनथी एम पूर्वाचार्य यद्यपि कहेछे तथापि ए पाठ एकांत मति के० एकांत पक्षे नवि ग्रहियें के० अंगीकार न करीयें तेमज ते अहिंसा पण स्याद्वाद मतें अंगीकार करीयें जेम मुनिराज नव कोटि पच्चक्खाण करीने नदी उतरे छे अने पच्चक्खाण करती वखते नदी मोकली तो राखी नथी तो ते पच्चक्खाण स्याद्वादे छे पण एकांते नथी एम जाणवुं. ते माटे इहां नयविधि छे भूरि के० ते अहिंसाने विषे नयनो विधि घणो छे ते तो जे नयनी वात समजे ते जाणे एटले अहिंसा ते अनेक प्रकारनी छे ॥ २४ ॥

आतमभाव हिंसनथी हिंसा, सघला ए पाप स्थान ।
तेहथकी विपरित अहिंसा, तास विरहनुं ध्यान ॥ मन० २४ ॥

अर्थ—वली तेज वात देखाडे छे आतमभाव हिंसनथी के० जे करणी करता पोतानो आत्मभाव हणाणो तो तेमां हिंसा के० हिंसा लागे तथा आत्मभाव हणातां थकां अढारे पापस्थानक लागे अने तेह थकी के० ते आत्मभाव हणाया थकी विपरीत के० आत्मभाव जिहां न हणाय ते अहिंसा के० दया कहीयें तास के० ते पापस्थानकना विरहनुं ध्यान एवी ए भाव अहिंसा छे ए पद अहिंसानुं विशेषण छे ॥ २४ ॥

तस उपाय जे जे आगममां, बहुविध छे व्यवहार ।
ते निःशेप अहिंसा कहियें, कारण फल उपचार ॥ मन० २५ ॥

अर्थ—तस के० ते आत्मभाव न हणवाना उपाय के० प्रकार जे जे आगममां के० सिद्धांतमां कह्या छे एवा व्ययवहार ते बहुविध छे के० अनेक प्रकारना छे. दान, देवपूजा, पडिक्कमणा, पोसह इत्यादि अनेक छे अने जो उपरनी मूलगाथानो पाठ बिहुविध होय तो एम अर्थ करीये जे उत्सर्ग तथा अपवाद ए बे प्रकाररूप व्यवहार छे ते निःशेप के० समस्त जेटला आत्मा न हणवाना प्रकार छे ते अहिंसा कहियें एटले ए भाव जे अपवाद पण आत्मा न हणवानुं कारण छे तथा दान देवपूजा प्रमुख पण आत्मा न हणवाना कारण छे तेने अहिंसा कहीयें एम स्तवन करनारे ठेराव्युं ते वारे अपवाद ते छांदो छे अने उत्सर्ग ते आज्ञा छे ए रीते पूर्वे प्रतिवादियें कह्युं हतुं ते दूर करयुं इति भावः। इहां कोइ कहेशे जे ए अपवाद प्रमुख अनेक आत्माने न हणवाना कारणने अहिंसा केवी रीते कहीयें तेने कहे छे के कारणने विषे फल उपचार के०कार्यनो उपचार करीयें छैयें यथा 'तंदुलान् वर्षति पर्जन्यः " इति न्यायात्. ॥ २५ ॥

जीव अजीव विषय छे हिंसा, नैगमनय मत्त जुत्त ।
संग्रह व्यवहारें षटकायें, प्रति जीवें रूज सत्त ॥ मन० २६ ॥

अर्थ—हवे पूर्वे कह्युं हतुं जे अहिंसामां नयना प्रकार घणा छे ते देखाडे छे तेमां प्रथम नैगमनयआश्री जीवने विषे तथा अजीवने विषे हिंसा कहे छे ते नैगमनय एम कहे छे जे जेम लोकमां अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीव घटने हण्यो घटनो विनाश कर्यो इत्यादिक हिंसा शब्द सघले प्रवर्त्ते छे. तथा संग्रहनय अने व्यवहारनय ए बेहु नयने मते छकायने विषे हिंसा माने पण जे अजीवनी हिंसा तेने हिंसा मानता नथी. इहां संग्रहनयना बे भेद छे एक देशग्राहीसंग्रह बीजो सर्वग्राहीसंग्रह तेमां सर्वग्राहीसंग्रह तो नैगमनयमां भल्यो माटे देशग्राहीसंग्रह इहां लीधो छे. हिंसा शब्द अजीवमां प्रवर्त्ततो लीधो नथी ते माटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तो जे रीतें लोक माने ते रीते माने माटे लोक पण छकायने हिंसा माने छे तेम ए बे नयवादी पण कहे छे. तथा ऋजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवें के० जीव जीव प्रतें भिन्न भिन्न हिंसा माने छे एम ओघनिर्युक्तिनी वृत्ति मध्ये कह्युं छे ते आगल एज गाथामां कहे छे. तथा च तद्देशः "तत्र नैगमस्य जीवेष्वजीवेषु हिंसा तथा च वक्कारो लोके दृष्टाः यदुत जीवोनेन हिंसितो विनाशितः, तथा घटोनेन हिंसितो विनाशितः, ततश्च सर्वत्र हिंसाशब्दानुवर्त्तनात् जीवेष्वजीवेषु च हिंसा नैगमस्य अहिंसाप्येवमेवेति । संग्रहव्यवहारयोः षट्सु जीवनिकायेषु हिंसा, संग्रहश्चात्र देशग्राही द्रष्टव्यः, सामान्यरूपश्च नैगमातंर्भावी, व्यवहारश्च स्थूल विशेष ग्राही लोकव्यवहरणशीलश्चायं तथा च—लोको बाहुल्येन षट्स्वेव जीवनिकायेषु हिंसामिच्छतीति। ऋजुसूत्रश्च प्रत्येकं प्रत्येकं जीवे जीवे हिंसां व्यतिरिक्तामिच्छतीति" हवे शब्दार्थ लखीयें छैयें. जीव अजीवने विषे नैगमनयने मते हिंसा कहेवी ए जुत्त के० युक्त छे अने संग्रह तथा व्यवहारनयने मते छकायने विषेज हिंसा माने छे तथा ऋजुसूत्रने मते जीव जीव प्रते हिंसा जुदी जुदी मानवी ॥२६॥

आतमरूप शब्दनय तिने, माने एम अहिंस ।

ओघवृत्ति जोइने लहियें, सुख जश लील प्रशंस ॥ मन० २७॥

अर्थ—आत्मरूप के० आत्मा तेज स्वरूप छे माटे हिंसा अथवा अहिंसा ते आत्मारूप माने छे शब्दनय तिने के० शब्द छे प्रधान जेने एवा त्रण नय १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत ए त्रण नय माने छे जे पोतानो आत्मा प्रमादी थयो त्यारे आत्मा ते हिंसा अने तेज आत्मा जेवारे अप्रमादी थयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा. यतः—" आया चेव अहिंसा, आया हिंसति निच्छओ एसो । जो होइ अप्पमत्तो, अहिंसओ हिंसओ इयरो ॥१॥" इति ओघनिर्युक्ति वचनात्. पाछला त्रण नय निश्चयना घरना छे माटे ओघनिर्युक्तिनी वृत्तिनो पाठ पण एम छे. यथा—"शब्दसमभिरूढैवंभूताश्च नया आत्मैवाहिंसा आत्मैवहिंसा इति " हिंसा सात नये फलावी तेमज अहिंसा के० अहिंसा पण फलावियें. "अहिंसाप्येवमेवेति" ओघनिर्युक्तिवृत्तिवचनात्. ए हिंसाना तथा अहिंसाना सात प्रकार ते ओघनिर्युक्तिनी वृत्ति जोइने सुख जशनी लीला तथा रुडी प्रशंसा ते लहियें के० पामियें एटले यथार्थ जाणवाथी एटला वानां पामियें ॥ २७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ चैत्री पुनम अनुक्रमे—ए देशी. ॥

कोइक सूत्रज आदरे, अर्थ न माने सार; जिनजी ।
आपमति अवलुं करे, भूला तेह गमार; जिनजी ।
तुझ वयणें मन राखीयें ॥ १ ॥

अर्थ—आठमी ढालने अंते सात नयें करी हिंसा फलावी ते नयें करी हिंसा तो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रोनी टीका चूर्णि तथा भाष्य अने निर्युक्ति मानीये तो समजाय पण केवल सूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी न समजाय केमके जे सूत्र होय ते सूचना मात्र होय माटे जे अर्थने नथी मानता तेने शिक्षा देवा सारु नवमी ढालने आठमी ढाल साथे संबंध करी कहे छे जे कोइक के० जे ढुंढक लुंपाक नाम न देवा योग्य माटे कोइक एवुं नाम कह्युं ते सूत्रज आदरे के० केवल सूत्रज माने छे इहां एवकार ते व्रत्यादिक निषेध वाचक छे तथा अर्थ के० टीका प्रमुख ते नथी मानता जिनजी के० हे रागद्वेषना जीतणहार हे वीतराग ते केवा छे आपमति के० स्वच्छंदे चालणहार छे पण आगमानुयायी चालता नथी अवलुं करे के० जेटलुं कार्य करे तेटलुं अवलुं करे छे माटे ते मूर्ख गमार भूला भमे छे कारणके सूत्र तो गणधरना रच्या अने अर्थ तो तीर्थंकरनो कह्यो. यतः—“ अत्थं भासइ अरहा, सुत्तं गुंत्थंति गणहरा निउणं । ” इति वचनात्. ते माटे अर्थनी ना कहेतां तीर्थंकरनी आशातना करे छे माटे अवलुं करे छे माटे हे प्रभु तमारे वचने मन राखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमा लोपे पापीआ, योग अने उपधान; जि० ।
वास न सिर धरे, मायावी अज्ञान ॥ जि० तुझ० २ ॥

अर्थ—वली ते लोक प्रतिमाने लोपेछे एटले प्रतिमा उथापेछे पण केवा छे जे पापीआ के० पापी छे शामाटे जे श्रीसमवायांग तथा भगवती तथा ज्ञाता अने उपासक राजप्रश्रेणि जीवाभिगम जंबूद्वीपपन्नति प्रमुखने विषे साक्षात् प्रतिमा कही छे तेने लोपी उत्सूत्र बोले छे अने जे उत्सूत्र बोलवुं ते श्रीभगवतीसूत्रमां पाप कहीबोलाव्युं छे ते माटे पापीया कह्या. ते प्रतिमानो अधिकार तो उपाध्यायजीयें ढुंढीना स्तवन मध्ये कह्यो छे माटे इहां नथी कह्यो. वली योग वहेवा तेने लोपे छे कारणके श्रीनंदिसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्र अने उत्तराध्ययन ठाणांग प्रमुख सूत्रने विषे योग पण कह्या छे ते पण उत्सूत्र बोली लोपे छे. उपलक्षणथी श्रावकने सूत्र भणावे ते पण निशीथ तथा ठाणांग सुयगडांग व्यवहार उपासक प्रमुखमां ना कही छे ते वातो पण ढुंढीना स्तवनमां आणी छे तेथी अहीं नथी कहेता माटे पापी छे. वली उपधान लोपे छे केमके श्रीमहानिशीथ प्रमुख सूत्रमां उपधान कह्या छे ते लोप्या माटे पापी

कथा वली गुरुनो वास मस्तकने विषे न धरे एटले ए भाव जे समवायांगसूत्र तथा श्री- अनुयोगद्वारसूत्र प्रमुखने लेखे तथा आवश्यक निर्युक्ति प्रमाण छे तेमां गुरुनो वास कह्योछे ते लोप्यो माटे पापी कहिये. वली मायावीछे कपटे करी लोकने भरममां नाखेछे अक्षरार्थ मरडवो ते वक्रता अने जे वक्रता ते माया वली अज्ञाने भरया छे केमके व्याकरणादिक भण्या विना सूत्र वांचे छे ते न घटे. यतः—"अह केरिसकं पुणाइं सच्चं तु भासियव्वं जं तं दव्वेहिं पज्जवेहिं य गुणेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं सिप्पेहिं आगमेहिं य, नामक्खाय निवाय उवसग्ग तद्धिय समास संधिपद हेउ जोगिय उणादि किरिया विहाण धातु सर विभत्ति वन्न जुत्तं । तिकालं दशविहंपि सच्चं जह भणियं तहय कम्मुणा होइ दुवालस विहाइं होइ भासा- वयणं पिय होइ सोलसविहं" इत्यादि प्रश्न व्याकरणसूत्र मध्ये पाठ छे माटे जे जाणे ते ज्ञानी अन्यथा अज्ञानी कहियें ॥ २ ॥

आचरणा तेहनी नवी, केति कहियें देव; जि० ।
नित त्रुटे छे सांधता, गुरुविण तेहनी टेव ॥ जि० तुझ० ३ ॥

अर्थ— ते ढुंढीआनी आचरणा जे बाह्यक्रिया ते सर्व नवीज छे, मुख बांधी बाहेर नि- कलवुं डांडो राखवोज नहीं वीपाकसूत्रने विरोधी तथा भगवती दशवैकालिक प्रश्न व्याक- रणादिकसूत्र थकी विरोधी आचरणा तेहनी केति के० केटली कहीयें एटले घणी छे माटे हे देव हे आत्माराम हे परमानंदविलासी वली तेने निरंतर सांधतां थकां त्रुटे छे एटले लोक उखाणो छे जे नव सांधे ने तेर त्रुटे ते उखाणो एने घरे छे. वली पूजामां हिंसा बतावे अने पोतें मरे ते वारे शुं करीयें तथा पोताने वांदवा आवे तथा दीक्षामहोत्सव करे तेमां हिंसा थाय के न थाय इत्यादिक बहु अधिकार छे पण केटलो लखाय. एम एक वात सांधवा गयो एटले ठामठामथी त्रुटी गयुं जे माटे गुरु विना तेनी खराब टेव पडी गइ छे. जो गुरु परंपरागत होय तो कांइ अटके नहीं क्यारें खलाय नहीं संप्रदाय विना ठाम ठाम अटके छे एटले ए भाव जे नगुरा छे ज्यारे निकल्यो त्यारे माथे कोइपण गुरु नहोतो ॥३॥

वृत्ति प्रमुख जोइ करी, भाषे आगम आप; जि० ।
तेहज मूढा ओलवे, जेम कुपुत्र निज बाप ॥ जि० तुझ० ४ ॥

अर्थ—वृत्ति के० टीका अने प्रमुखशब्दें चूर्णिनिर्युक्ति आदि लेवा ते जोइ करीने आप के० पोते आगमने भाषे एटले वृत्ति प्रमुख छानी राखी तेना भाव जोइ आगमनो अर्थ ठीक बेसाडे पछी लोक आगल एकलुं सूत्र वांचे. एम ते अज्ञानी टीका प्रमुखने ओलवे कोइ पूछे जे टीका निर्युक्ति मानो छो ते वारें कहेशे जे नथी मानता. जेम कुपुत्र होय ते पोताना बापने ओलवे एटले बाप होए सादो अने पोते होए छेल पछी कोइ पूछे जे आ तमारा शा सगा छे ते वारें आडो अवलो जवाब आपे तेम टीका प्रमुखनो उपकार अने तेनेज न माने ॥ ४ ॥

वृत्त्यादिक अणमानता, सूत्र विराधे दिन; जि० ।
सूत्र अरथ तदुभय थकी, प्रत्यनीक कह्या तीन ॥ जि० तुझ० ५ ॥

अर्थ–वली वृत्त्यादिक के० वृत्ति चूर्णि भाष्यने अनुसारें प्रकरण चरित्रादिकने अणमानताथका ते दीन के० भावदया करवा योग्य सूत्रनेज विराधे छें, सूत्रनीज आशातना करे छे. समवायांगसूत्रें तथा नंदिसूत्रें कह्युं छे–"आयारेणं परित्ता वायणा संक्खेज्जा अणुओगदारा संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ" इत्यादिक कह्यां छे तेमाने नहीं तेवारें सूत्रने विराधेज छे. वली १ सूत्र प्रत्यनीक २ अर्थ प्रत्यनीक ३ तदुभय प्रत्यनीक ए श्रीठाणांगसूत्रें कह्या छे. यत्तः–"सुयं पडुच्च तओ पडिणीया पन्नता तंजहा–सुत्तपडिणीए अत्थपडिणिए तदुभयपडिणीए" ए त्रीजा ठाणाना चोथा उद्देशें कह्युं छे. एमज भगवतीसूत्रना आठमा शतकना आठमा उद्देशामां कह्युं छे, तो अर्थ प्रत्यनीक ते निर्युक्त्यादिक जे नथी मानता तेने कहीयें ते शिवाय अर्थ प्रत्यनीक तथा तदुभय प्रत्यनीक ते बीजा कोने कहीयें ते बतावो ॥ ५ ॥

अक्षर अर्थज एकलो, जो आदरता खेम; जि० ।
भगवइ अंगे भाषिओ, त्रिविध अर्थ तो केम ॥ जि० तुझ० ६ ॥

अर्थ–जो केवल एकलो अक्षरार्थ मानीयें एटले जेटलुं सूत्र तेटलोज शब्दार्थ आदरीयें मानीयें अने नेम मानता तमने खेम के० कुशल छे तो भगवतीसूत्रमां त्रिविध के० त्रण प्रकारे व्याख्यान अर्थ कहेवो कह्यो छे ते केम घटे तथा अनुयोगद्वारें बे प्रकारे अनुगम कह्यो छे "सुत्ताणुगमे य निज्जुत्तिअणुगमे य" तथा "निज्जुत्तिअणुगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा–निक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमे उवग्घायनिज्जुत्ति अणुगमे" इत्यादिक तथा 'उद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसे य' ए गाथा अनुयोगद्वारमां छे तेना अर्थ केम करशो. इति भावः ॥६॥

सूत्र अरथ पहेलो बीजो, निज्जुत्तीये मीस; जि० ।
निरविशेष त्रीजो वली, इम भाषे जगदीश ॥ जि० तुझ० ७ ॥

अर्थ–तेज त्रण प्रकारनुं व्याख्यान देखाडे छे. प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यने देवो, जेम नमो के० नमस्कार थाओ अरिहंताणं के० अरिहंत राग द्वेषरूप शत्रु हण्या माटे. ते शब्दार्थ सारी रीते आवड्यो ते वारें बीजो के० बीजीवार अर्थ कहे ते निज्जुत्तियें मीस के० निर्युक्ति सहित अर्थ कहे हे शिष्य ते अरिहंत चार प्रकारना छे. नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव भेदें. यत्तः–" नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाओ । दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ " इत्यादिक एम बीजी वार अर्थ आवड्यो पछी त्रीजी वार फरी एज पदनो अर्थ निरविशेष के० समस्त रीते कहे एटले प्रसंगे प्रसंगे सर्व कहे नैगमादिक नय पण शक्ति होय तो फलावे तेना साधन कहे. उदाहरण जे अरिहंतने नमस्कारनुं फल कहे इत्यादिक एटले ए भाव जे प्रथम अर्थमां टीका, चूर्णि अने बीजा

अर्थमां निर्युक्ति तथा त्रीजा अर्थमा भाष्य आव्युं एम हे जगदीश तुं भाषे के० भगवतीना शतक २५ माना त्रीजा उद्देशामा कहे छे–" सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमिसओ भणिओ । तइओ य निरविसेसो, एसविहि होइ अणुओगो ॥ १ ॥" ए गाथा नंदिसूत्र मध्ये पण छे ते माटे अर्थ प्रमाण करे तो खेम थाय ॥ ७ ॥

छाया नर चाले चले, रहे थिति तस जेम; जि० ।
सूत्र अरथ चाले चले, रहे थिति तस तेम ॥ जि० तुझ० ८ ॥

अर्थ–जेम नर के० पुरुषनी छाया ते जे वारें पुरुष चाले ते वारे तेनो छांयडो पण चाले अने रहे के० पुरुष उभो रहे ते वारे तस के० ते छायानी पण स्थिति के० रहेवुं थाय जेम ए तेम सूत्र अने अर्थमां पण एमज भाववुं. सूत्रनी चाले अर्थ चले के०चाले रहे के० सूत्र रहे ते वारें तस के० ते अर्थनुं पण थिति के० रहेवुं थाय ॥ ८ ॥

अर्थ कहे विधि वारणा, उभय सूत्र जेम ठाण; जि०
तेम प्रमाण सामान्यथी, नवि प्रमाण अप्रमाण ॥ जि० तुझ० ९॥

अर्थ–वली अर्थ के० टीका प्रमुख होय तेज समजावे अने विधि के० विधिवाद तथा वारणा के०निषेध सूत्र तथा उभय सूत्र के०विधिसूत्र तथा निषेधसूत्र ए बेहु सूत्र जेम ठाण के० ठाणांगसूत्र मध्ये कह्यां छे. यथा–"नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजिताओ पंच महण्णवाओ महानईओ, अंतोमासस्स दुखुत्तो वा तिखुत्तो वा उत्तरिए संतरित्तए वा, तंजहा गंगा जउणा सरऊ एरावती मही" इति ए रीते निषेध करीने वली लगनाज सूत्रमां आज्ञा करी. यथा–"पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तंजहा भयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा पव्वाहेज्ज चणंकोई उदगंसि वा एज्जमाणंसि महता वा अणारिएहिं।" इति ए बे सूत्र कह्यां एक विधिनुं, एक निषेधनुं ए बेमां कयुं सूत्र प्रमाण करियें अने कयुं सूत्र अप्रमाण करियें इहां एके अप्रमाण न थाय इतिभावः. हवे पछवाडाना बे पदनो अर्थ कहेछे तेम के० ते रीते जेम ठाणांग मध्ये बेहु सूत्र देखाड्या तेम सामान्य प्रमाण जे सूत्र छे ते सूत्रथी नवि प्रमाण अप्रमाण के० इहां सामान्य पद छे ते माटे जाणीये छैयें जे विशेष पद बाहारथी लावीयें तेवारे एम अर्थ थाय जे विशेष प्रमाण ते टीका प्रमुख ते नवि अप्रमाण के० अप्रमाण नथी एटले ए भाव जे प्रमाण बे प्रकारना एक सामान्य प्रमाण बीजुं विशेष प्रमाण तेमां सामान्य प्रमाण ते सूत्र कहीयें जेमां सामान्यपणे सूचना मात्रे कह्युं होय अने विशेष प्रमाण ते अर्थ टीका प्रमुखने कहीय जेमां विस्तारीने कह्युं छे ए बे प्रमाण छे तेमां सामान्य प्रमाण खरुं अने विशेष प्रमाण खोटुं एम न कहेवाय, सामान्य प्रमाणथी विशेष प्रमाण ते अप्रमाण केम थाय. इतिभावः ॥ ९ ॥

अंध पंगु जेम बे मले, चाले इच्छित ठाण; जि० ।
सूत्र अरथ तेम जाणीयें, कल्प भाष्यनी वाण ॥ जि० तुझ० १०॥

अर्थ—जेम अंध लोचनहीन अने पंगु के० चरणहीन ए बे मलीने चाले इच्छित ठाण के० वांच्छित स्थानकने विषे चाले तेम सूत्र तथा अर्थ जे टीका प्रमुख मलीने यथार्थ स्थानके अर्थ जोडी शकीयें एम कल्पभाष्यनी वाणी छे ॥ १० ॥

विधि उद्यम भय वर्णना, उत्सर्गह अपवाद; जि० ।
तदुभय अर्थे जाणीयें, सूत्र भेद अविवाद ॥ जि० तुझ० ११ ॥

अर्थ—वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ भयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसूत्र ६ अपवादसूत्र ७ तदुभयसूत्र ए सर्व सूत्रना भेदनी खबर अर्थथी जणाय नहीं तो शी खबर पडे जे आ सूत्र ते शी अपेक्षानुं छे. यथा—"संपत्ते भिक्खु कालंमि, असंभंतो अमुच्छिओ। इम्मेण कम्मजोगेणं, भत्तं पाणं गवेसए ॥१॥" ए दशवैकालिकना पांचमा अध्ययने कह्युं इत्यादिक विधिसूत्र कहीयें तथा "दुमपत्तए पंडुयए, जहा निवडइ राइगणाणअच्चए। एवं मणुआण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए॥१॥"इत्युत्तराध्ययनना दशमाध्ययने कह्युं. इत्यादिक उद्यम सूत्र कहीयें अने नरकने विषे मांस रुधिरादिक वर्णवी कहेवा. यथा—"उत्तराध्ययनना मृगापुत्र अध्ययनमां तथा सुयगडांगना नरक विभत्ति अध्ययनमां ते परमार्थे मांसादिक नथी पण भयसूत्र छे. यतः—"नरएसु मंसरुहिराइ,वज्जं पसिद्धिमित्तेणं। भयहेउं इहरा तेसिं,विउव्वियभावओ न तयं ॥१॥" इत्यादिक भयसूत्र०वर्णवसूत्र यथा 'रिद्धत्थिमिय समिद्धा' इत्यादिक उववाइ ज्ञाताधर्म प्रमुखने विषे प्रायें सूत्र छे ते वर्णव सूत्र छे. वली "इच्चेसिं छन्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा' इत्यादिक छ जीव निकायना रक्षक प्रमुख आचारांगादिक सूत्रने विषे ते उत्सर्गसूत्र जाणवुं तथा छेद ग्रंथ ते प्रायें अपवाद सूत्र छे अथवा "न वा लभिज्जा निउणं सहायं,गुणाहियं वा गुणओ समं वा। इक्कोवि पावाइं विवज्जयंतो,विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१॥" इत्यादिक अपवादसूत्रो जाणवां तथा जेमां उत्सर्ग अने अपवाद साथे कहेवाय ते तदुभय सूत्र कहीयें जेम "अट्टज्झाणाभावे, सम्मं अहिआसियव्वओ वाहि। तब्भावंमि अ विहिणा, पडियारपवत्तणं नेयं॥१॥"इत्यादिक अनेक प्रकारना स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रियादिक नानाप्रकारें नय मतना प्रकाशक सूत्रना जे भेद ते अविवादपणे के० जेमां झगडो न उठे ए रीते स्वस्थानकें अर्थथी जोडाय ॥ ११ ॥

एह भेद जाण्या विना, कंखा मोह लहंत; जि० ।
भंगंतर प्रमुखे करी, भाख्युं भगवई तंत ॥ जि० तुझ० १२ ॥

अर्थ—तो ए पूर्वोक्त भेद जाण्या विना भंगंतर प्रमुखे करीने कंखामोह के० मिथ्यात्व मोहनीने लहंत के० वेदे एम भगवतीसूत्रमां तंत के० निश्चे भाख्युं छे एटले ए भाव जे सूत्र तो विविध आशयना होय ते आशयनी जेवारें मालम पडे तेवारें मनमां शंका उपजे के आ खरुं के आ खरुं एवी शंका थाय अने जे शंका ते मिथ्यात्वमोहनी थाय तथा चोक्तं भगवत्यंगे प्रथम शतके तृतीय उद्देशके "अत्थिणं भंते ! समणा निग्गंथा कंखामोहनीज्जं कम्मं

वेदंति? हंता अत्थि। कहणं भंते! समणा णिग्गंथा कंखामोहनीज्जं कम्मं वेदंति? गोयमा! तेहिं तेहिं नाणंतरेहिं दंसणंतरेहिं चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिं मग्गतरेहिं मतंतरेहिं भंगंतरेहिं णयंतरेहिं णियमंतरेहिं पमाणंतरेहिं संकिया कंखिया वितिगिच्छिया भेयसमावन्ना कलुसमावन्ना एवं खलु समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदंति" इति एनो समाधान भगवतीनी वृत्तिथी जोइ लेजो ते माटे टीका प्रमुख अर्थ जाण्याथीज सर्व समाधान थाय आम्नाय पामियें पण केवल सूत्रेज न पामियें इहां भंगंतर प्रमुखे कह्युं ते 'मध्य ग्रहणे आद्यंतयोर्ग्रहणं' इति न्यायात्। 'णाणंतरेहिं' इत्यादि पदो पण लेवा ॥ १२ ॥

परिवासितवारी करी, लेपन अशन अशेष; जि० ।
कारणथी अति आदर्या, पंचकल्प उपदेश ॥ जि० तुझ० १३ ॥

अर्थ—परिवासित के० रात्रे वासी राखवुं ते वारी करी के० वारीने एटले मुनिने संनिधिमात्रे पण राखवुं ते रात्रे न घटे एहवुं शुं ते कहे छे लेपन के० विलेपन अथवा कुसुमवासित तेल प्रमुख अने अशन के० आहार तथा अशेष शब्दें प्रमुख लेवा ते वारीने वली कारणथी अति के० अत्यंत कारणे आदर्यां के० ते मुनियें अंगीकार कर्यां एटले वासी राखवानी मुनिने आज्ञा करी ते पंचकल्प ग्रंथनो उपदेश छे. उपलक्षणथी निशीथने विषे पण कह्युं छे. यतः—" ननु ओषधादिसंनिधिः क्रियते न वा? उच्यते उत्सर्गेण न कल्पते कारणेतु भवत्यपि तथाहि—वोच्छिन्नमंडवं नामजत्थ दुजोयणभ्यंतरओ गामघोसाइ नत्थि तत्थ तुरिए कज्जे न लब्भइ अओ तत्थ वोच्छिन्नमंडवे ओसहगणो परिवासिज्जइ" इति निशीथे ते माटे ए कारणादिक प्रकार ते टीका प्रमुख विना जणाय नहीं ॥ १३ ॥

वर्षागमन निवारीओ, कारणें भाख्युं तेह; जि० ।
ठाणांगे श्रमणीतणुं, अवलंबादिक जेह ॥ जि० तुझ० १४ ॥

अर्थ—वर्षागमन के० चोमासाने काले विहार करवानुं निवार्युं छे. श्रीठाणांगना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशा मध्ये यतः—"णो कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीणं वा पढमपाउसंमि गामाणुगामं दूइज्जित्तए" इति तथा कारणे भाख्युं तेह के० तेज वर्षाकालमां कारणथी विहार करवानी आज्ञा करी ते पण ठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामां कह्युं छे. यतः—"पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तंजहा—भयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा जाव महता वा अणारिएहिं" इति तथा तत्रैव "वासावासं पज्जोसवियाणं नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा गामाणुगामं दूइज्जित्तए। पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तंजहा—णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरियउवज्झाए वा से विसुभेज्जा आयरियउवज्झायाणं वा वहिता वेयावच्चकरणयाए" इति वली एज श्रीठाणांगने विषे श्रमणी के० साध्वीने अवलंबन के० आलंबे तो प्रभुनी आज्ञा अतिक्रमे नहीं. यतः—"पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे निग्गंथिं गिन्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ। तंजहा—[illegible] अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ निग्गंथे निग्गंथिं गिन्ह-

माणेवा अवलंवमाणेवा णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिंवा गिन्हमाणे वा अवलंवमाणे वा णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणिं वा उवुज्झमाणिंवा गिन्हमाणे वा अवलंवमाणे वा णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं णावं आरुहमाणे वा ओरुहमाणे वा जाव णाइक्कमइ । खेत्तइत्तं जक्खइट्ठं जाव भत्तपाणपडियाइक्खितं निग्गंथे निग्गंथिं गिन्हमाणे वा अवलंवमाणे वा णाइक्कमइ" । इत्यादि ए उपलक्षणथी साधु साध्वी एक स्थानके मेला वसे एवा पण आलावा श्रीठाणांगमध्ये छे ते केटला लखाय अने वली नवमे ठाणे ब्रह्मचेरा कह्या तेमां स्त्रीना अंगोपांग जोवा नहीं तथा भींतने आंतरे वसवुं नहीं एम कह्युं ते वात तो प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें संभारयो नहीं तेथी अमे पण लख्यो नहीं तो वृत्त्यादिक विना केम वध वेसे इतिभावः ॥ २४ ॥

आधाकर्मादिक नहीं, बंधतणो एकंत; जि० ।
सुयगडे ते केम घटे, विण वृत्यादिक तंत ॥ जि० तुझ० १५ ॥

अर्थ—आधाकर्मी आहार करवो ते नहीं के० नथी कह्यो बंधतणो एकंत के० कर्मबंधनो एकांत नथी एटले ए भाव जे श्रीसुयडांगसूत्र मध्ये आधाकर्मी आहार करतां कर्म बंधाय पण खरुं अने वली न बंधाय एम पण कह्युं ते केम घटे. यतः—"आहाकम्माणि भुंजंति, अन्नमन्ने सकम्मुणा । उवलित्ते वियाणज्जा, अणुवलित्ते ति वा पुणो ॥१॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जइ, एएहिं दोहिं ठाणेहिं । अणायारंतु जाणए ॥ २ ॥" ए सुयगडांगना २१ मा अध्ययने छे माटे एवी वातो ते टीका प्रमुख विना सूत्र केम स्पष्ट थाय.

विहरमान गणधर पिता, जिन जनकादिक जेह; जि० ।
क्रम वली आवश्यकतणो, सूत्र मात्र नहीं तेह ॥ ज० तुझ० १६ ॥

अर्थ—वली विहरमान के० विचरता वीस तीर्थंकर तथा तेओना गणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवली प्रमुख ते सूत्रमां जडे नहीं. अथवा जेम वीस विहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी ऋषभादिकना गणधर पण सर्व सूत्रमां नथी तथा गणधरोना पिता प्रमुख सूत्रमात्रे नथी तथा जिन के० चोवीस तीर्थंकरना जनकादि के० मातापिता उपलक्षणथी बीजो पण परिवार ते सर्व सूत्रमां नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यक जे उभयटंक पडिक्कमणुं करवुं तेहनो जे क्रम के० अनुक्रम ते जे अमुक पछी अमुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रे नहीं के० मात्र एकला सूत्रमां न लाभे एवी घणी वातो छे ते केटली लखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिक माने तो पार पडे, नहीं तो गोथांज खाय ॥१६॥

अर्थ विना केम पामियें, भाव सकल अनिबद्ध; जि० ।
गुरुमुख वाणि धारतां, होवे सर्व सुबद्ध ॥ जि० तुझ० १७ ॥

अर्थ—वली अर्थ के० टीका प्रमुख विना केम पामियें सकल के० समस्त अनिवद्ध के० अणीवंद्ध ते घुरथी ते छेडा लगें सर्व वात केम जडे सूत्रमां तो लगारेक नाम मात्र कहे संपूर्ण तो टीका प्रमुखमां लाभे अथवा अनिवद्ध के० सूत्रमां नथी वंधाणा एवा भाव तो घणा रह्या छे, अत्यंत थावरमांथी आवी जेम मरुदेवाजी मोक्षे गयां इत्यादिक वगर वांध्या पांचसो आदेश छे ते सर्व केवल सूत्रेंज केवी रीते गम्यमान थाय ते माटे गुरु आदिकना मुखनी वाणी सांभलीयें जे संप्रदायिक होय ते धारतां थकां होवे.सर्व सुवद्ध के० सर्व सुवद्ध थाय सुयुक्तिवंत थाय ॥ १७ ॥

पुस्तक अर्थ परंपरा, सघली जेहने हाथ; जि० ।
ते सुविहित अणमानतां, केम रहेसे निज आथ ॥ जि० तुझ० १८ ॥

अर्थ—पुस्तक जे अंगोपांगादिक अक्षर न्यासरूप अर्थ टीका प्रमुख जे गुरु संप्रदायनी परंपरा ते सर्व जेने हाथे छे एवा जे सुविहित शुद्ध मार्गना प्ररुपनार तेहने अणमानतां एटले अंगीकार कऱ्या विना केम रहेशे ? निज आथ के० पोतानी समकितरूप जे लक्ष्मी ते शी रीते रहेशे ॥ १८ ॥

सदगुरु पासे शिखतां, अर्थ न मांहे विरोध; जि० ।
हेतु वाद आगमप्रतें, जाणे जेह सुबोध ॥ जि० तुझ० १९ ॥

अर्थ—ते माटे स्वच्छंदपणुं टालीने सद्गुरु पासे विनयादिकें करीने सूत्रना अर्थ जे टीका प्रमुख ते धारवा तेमां कांइ विरोध नथी पण ते मूर्खलोक एम जाणे छे जे सूत्रमां विरोध नथी अने अर्थमां विरोध छे ते खोटुं छे. गुरुमुखे शीखतां थकां कांइ विरोध छेज नहीं तथा ए रीते गुरु पासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारण निमित्तवाद एहवो आगम जे सिद्धांत तेने जाणे जे थकी सुवोध के० भलो वोध थाय ॥ १९ ॥

अर्थें मत भेदादिके, जेह विरोध गणंत; जि० ।
ते सूत्रे पण देखशे, जो होशे एकंत ॥ जि० तुझ० २० ॥

अर्थ—वली अर्थें के० टीका प्रमुखने विषे मतभेदादिकें के० कोइ मतभेदें कोइ वाचनांतर भेदे भेदपणुं देखीने जे विरोध गणे छे अने कहे छे जे टीका प्रमुख विरोधी छे मलती नथी तो केम मानीयें तेहने कहे छे के जे प्राणी टीका प्रमुखमां विरोधपणुं जोशे ते सूत्रमां पण विरोधपणुं देखशे जो एकांते निश्चये करी जोशे तो सूत्रमां पण घणो विरोध छे ते केम नथी जोता. इति भावः ॥ २० ॥

संहरता जाणे नहीं, वीर कहे एम कल्प; जि० ।
संहरता पण नाणनो, प्रथम अंग छे जल्प ॥ जि० तुझ० २१ ॥

अर्थ–हवे तेज सूत्रना विरोधीपणाने देखाडे छे जे देवानंदानी कुखथी लेइने त्रिसला-देवीने कुखे संहरता के० संहरचा ते संहरतां वीरस्वामीयें जाण्यु नहीं एम श्रीकल्पसूत्रमां कह्युं छे. यथा–"साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे न जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ" इति पाठात्. तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीयें संहरचा ते अवसरे प्रथम अंग जे श्रीआचारांग तेमां ज्ञाननो जल्प के० शब्द छे एटले ए भाव जे संहरतां थकां प्रभुयें जाण्युं एम कह्युं छे तथा च तत्सूत्रं–"साहरिज्जस्सामित्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणेवि जाणइ। समणाउसो" इति पंचदशे भावनाध्ययने इति विरोधः ॥ २१ ॥

ऋषभकूट अडजोयणो, जंबूपन्नत्ति सार; जि० ।
वार वली पाठांतरें, मूल कहे विस्तार ॥ जि० तुझ० २२ ॥

अर्थ–वली ऋषभकूटनुं आठ योजन मूल विस्तार छे एम जंबूद्वीप पन्नत्तिसूत्रमां कह्युं छे. यतः–"एत्थणं उसभकूडे नगकूडे पन्नते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दो जोयणाइं उव्वेहेणं मूले अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे छ जोयणाइं विक्खंभेणं उवरि चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं" इत्यादिक जंबूद्वीप पन्नतिनो पाठ छे सार के० प्रधान एहवी जंबूद्वीप पन्नति कहे छे गाथानो अर्थ अन्वय करी करियें एटले एक पाठ तो ए कह्यो वली एज जंबूद्वीप पन्नत्तिमां पाठांतरे बीजो पाठ छे तेमां वार जोजन मूलें विस्तार कह्यो छे ते केम मले एकज सूत्रमां बे पाठ शा? सर्वज्ञना ज्ञानमां फेर नथी तो संदिग्ध वचन केम होय इतिभावः तथा च तत्पाठः "मूले वार जोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं उवरि चत्तारि जोयणाइं विक्खभेणं" इत्यादिक पाठ जोजो केवल सूत्र मेलवी आपजो ॥ २२ ॥

सत्तावन सय मल्लिनें, मन नाणी समवाय; जि० ।
आठ सया ज्ञाता कहे, ए तो अवर उपाय ॥ जि० तुझ० २३ ॥

अर्थ–श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यव ज्ञानी श्रीसमवायांगसूत्र मध्ये कह्या छे यतः–"मल्लिस्सणं अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणी सया होत्था इति।" श्रीज्ञातासूत्र मध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यव ज्ञानी कह्या छे. यथा–"अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं" एम श्रीसमवायांगसूत्र तथा ज्ञातासूत्र मल्युं नहीं ए विरोध ए तो अवरउपाय के० ए मेलववानो उपाय तो अन्यज छे ते तो गीतार्थज्ञानी जाणे ॥ २३ ॥

उत्तराध्ययने स्थिति कही, अंतरमुहूर्त जघन्य; जि० ।
वेदनीयनी वार ते, पन्नवणामा अन्य ॥ जि० तुझ० २४ ॥

अर्थ–तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्र मध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त कही छे. यतः"उदहिसरिनामाणं तीसई कोडाकोडीओ उक्कोसियाठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१॥

आवरणिजाणं दुण्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य। अंतराए य कम्मंमि, ठिई एसा वियाहिया॥२॥" इत्युत्तराध्ययन अध्ययन ३३ मा मध्ये कह्युं छे. वली तेज वेदनी कर्मनी बार मुहूर्त्त जघन्य स्थिति श्रीपन्नवणासूत्र मध्ये कही छे. यथा–"सायावेयणिज्जस्स इरियावहियबंधगं पडुच्च जहन्नमणुक्कोसेणं दो समया, संपराइयबंधगं पडुच्च जहन्नेणं बारसमुहुत्ता उक्कोसेणं पणरस सागरोवमकोडाकोडीओ।" इत्यादिक पन्नवणा मध्ये कह्युं तो ते उत्तराध्ययननी साथे मल्युं नहीं माटे विरोध ते तो अन्य के० जुदीज वात छे ॥ २४ ॥

अनुयोगद्वारें कह्या, जघन निखेपा चार; जि० ।
जीवादिक तो नवि घटे, द्रव्य भेद आधार ॥जि०॥तुझ०२५॥

अर्थ–वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रने विषे एम कह्युं छे के जे वस्तुना जेटला निक्षेपा करवानी तारी बुद्धि थाय ते वस्तुना तेटला निक्षेपा तुं तिहां करजे पण कदाचित घणा निक्षेपा तुं न जाणे तिहां पण चार निखेपा तो अवश्य करजे एटले एम आव्युं जे जघन्यथी चार निक्षेपा तो सर्वत्र करवा पण चारथी ओछा तो होयज नहीं १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव ए चार अवश्य करवा. यतः–"जत्थ य जं जाणिज्जा, निक्खेवं निक्खेवे निरवसेसं। जत्थवि य न जाणिज्जा, चउक्कयं निक्खेवे तत्थ ॥१॥" इत्यनुयोगद्वारसूत्रे. तेवारे जिवादिक शब्दना निक्षेपा नवि घटे के० घटे नहीं शामाटे जे द्रव्य निक्षेपो भेद आधार के० भिन्न आधारें थाय केमके जे भावनुं कारण ते द्रव्य ते वारे जीवनो द्रव्य निक्षेपो केम थाय जे भाव जीव थवानुं कारण होय ते द्रव्यजीव कहेवाय ते तो ज्ञानादिक गुणे हीण तो जीव होय नहीं–"दव्वं पज्जवविजुत्तं, दव्वविजुया य पज्जवा नत्थि।" इति वचनात्. ते माटे मंडूकनी जटाना भारनी पेठे समस्त धर्म रहित कोइ पदार्थज नथी तो ए द्रव्यनिक्षेप जीवादिकमां शून्य छे आदि शब्दथी बीजा पण जीवादिक लीजीयें जेम द्रव्यदेव मुनिराजने कहियें तेम द्रव्यजीव कोने कहेशो तेना समाधान तो पंचांगी प्रमुखथी नीकले अत्रार्थे तत्त्वार्थ वृत्ति जोजो ॥ २५ ॥

एम बहुवचन नयंतरें, कोइ वाचना भेद; जि० ।
एम अर्थें पण जाणीयें, नवि धरीयें मन खेद ॥जि०तुझ०२६॥

अर्थ–ए रीते बहु के० घणा सइकडोगमे वचनविरोध अल्पबुद्धिवालाने लागे एवा पाठ सूत्र मध्ये छे ते कोइ स्थानकें नयभेद भेदें व्याख्या होय अने कोइ स्थानकें वाचनाभेद के० वल्लभी तथा मथुरी ए बे वाचना थइ तेथी भेद थयो एम उपलक्षणथी मतांतर प्रमुख लिपि दोष पण लइये एवी रीते जेम सूत्रमां भेद छे तेमज अर्थें के० टीका प्रमुखने विषे पण नयांतरे करी वाचनांतरे करी कोइ स्थानके भेद आवे ते माटे टीका प्रमुख देखीने मनमां खेद न धरीयें सूत्र तथा अर्थ बराबर छे ॥ २६ ॥

अरथकारथी आजना, अधिका शुभ मति कोण; जि० ॥
तोले अमियतणे नहि, आवे कहियें लुण ॥ जि० तुझ २७ ॥

अर्थ–अर्थकार के० जे निर्युक्तिकार टीकाकार ते थकी आजना जे आधुनिकमां अधिका शुभमतिना धणी कोण थया एटले ए भाव जे समुद्र जेवी बुद्धिना धणी टीकाकार तथा चौदपूर्वना धणी निर्युक्तिकार तेथी शुभमति कोण थया एटले शुभमति नहिज थया इति भावः लोकमां उखाणो छे जे खांडना खानार ते रीतना ए शुभमति जाणवा पण कोइ काले लुण जे निमक ते अमृतने तोले आवे नहीं ॥ २७ ॥

राजा सरिखुं सूत्र छे, मंत्री सरिखो अर्थ; जि० ।
एमां एक हेलीओ, दिये संसार अनर्थ ॥ जि० तुझ० २८ ॥

अर्थ–ते माटे राजा सरिखुं के० चक्रवर्ति बराबर सूत्र छे अने मंत्री सरिखो अर्थ छे एटले राजानो आशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनो आशय अर्थकार कहे बीजो कोइ सूत्रनो आशय जाणे नहीं एमां के० ए बेहुमांथी एके हेलीओ के० एकने निंदतां थकां दिये संसार अनर्थ के० संसारनो अनर्थ आपे भव परंपरा वधारे ॥ २८ ॥

जे समतोलें आचरे, सूत्र अर्थसुं प्रीति; जि० ।
ते तुझ करुणायें वरे, सुखजश निर्मल नीति ॥ जि० तुझ० २९ ॥

अर्थ–माटे जे आत्मार्थी प्राणी ते सूत्र तथा अर्थ बेहुने समतोलें सरिखी रीतें अंगीकार करे प्रीति राखे अवज्ञा न करे तन्मय करी जाणे ते प्राणी हे प्रभु तमारी करुणा के० दयायें करीने सुख ते निराबाधपणुं अने जशकीर्ति तथा निर्मल जे नीति के० न्याय ते वरे के० पामे ॥ २९ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

हवे दशमी ढाल कहे छे तेने नवमी ढाल साथे ए संबंध छे जे पूर्व ढालमां सूत्र तथा अर्थमां एकनी हीलना करे तो तेने संसार वधे एम कह्युं ते सूत्र तथा अर्थ तो ज्ञान स्वरूप छे वास्ते ए दशमी ढालमां ज्ञाननुं वर्णन करे छे.

॥ आप छंदे छबीला छल वरे–ए देशी ॥

ज्ञानविना जे जीवनेरे, क्रियामां छे दोषरे ।
कर्मबंध छे तेहथीरे, नहि सम सुख संतोषरे ॥ १ ॥

प्रभु तुझवाणी मीठडीरे, मुझमन सेहेज सुहायरे ।
अमीयसमी मन धारतारे, पाप ताप सवि जायरे ।
प्रभु तुझवाणी मीठडीरे ए आंकणी० ॥ २ ॥

अर्थ—ज्ञानविना जे जीव केवल क्रियारुचिछे तेमां घणा दोषनी उत्पत्ति छे ते अज्ञान क्रियाथी कर्मबंधज थाय छे. पण समसुख संतोष के० समताना सुख जेमां परभावनी ईहा नहीं एहवो जे संतोष ते अज्ञानी क्रिया करतो होय तेहने थतो नथी. यतः—"नाणगुणेहिं विहिणा, किरिया संसारवड्ढणी भणिया । धम्मरुइपहवमित्ता, नाणसमेया सया हुज्जा ॥१॥" ए योगनी वीसी मध्ये कह्युं छे माटे हे स्वामी तमारी वाणी घणीज मीठी लागे छे मारा मनमां सेहेज सोहाय छे पण कोइना बलात्कारथी नहीं ते अमृतसरिखी तमारी वाणीने मनमां धारतां थकां पापरूप ताप के० उग्रता ते सर्व मटी जाय ने शीतलता थाय ॥ २ ॥

लोकपंति किरिया करेरे, मन मेले अन्नाणरे ।
भवइच्छाना जोरथीरे, विण शिवसुख विन्नाणरे ॥प्रभु० मुझ० ३॥

अर्थ—लोकपंति के० लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रिया करे मन मेले के० शुद्ध अध्यवसाय विना अन्नाण के० अज्ञानी जीव ते भव जे संसार तेनी इच्छाना जोर थकी एटले बहुल संसारी जीव छे शिवसुखना विज्ञान विना एटले जे क्रिया करे ते पण ज्ञान विना जश मान प्रतिष्ठाने अर्थे करे ॥ ३ ॥

कामकुंभसम धर्मनुंरे, मूल करी एम तुच्छरे ।
जनरंजन केवल लहेरे, न लहे शिवतरु गुच्छरे ॥प्रभु०मुझ०४॥

अर्थ—कामकुंभ सरिखो मोक्षसुखनो आपनार एवो जे धर्म तेनुं यश मानादिक तुच्छ मूल करीने ते प्राणी केवल जनरंजन के० लोक रीझे एटलुंज फल पामे पण अज्ञान क्रियाथी मोक्षरूप जे वृक्ष तेनो गुच्छ के० गुच्छो उपलक्षणथी फल लइयें ते न पामे ॥४॥

करुणा न करे हीननीरे, विण पणिहाण सनेहरे ।
द्वेष धरंतां तेहशुंरे, हेठा आवे तेहरे ॥ प्रभु० मुझ० ५ ॥

अर्थ—हवे षोडशकमां पांच गुणआशय विशेष देखाड्या छे यथा तृतीय षोडशके—"१ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोगभेदतः प्रायः । धर्मज्ञैराख्यातः, शुभाशयः पंचधाऽत्र विधौ ॥१॥" आ पांच भेद अन्वय रीतें श्रीहरिभद्रसूरियें देखाड्या छे ते श्री जशोविजय उपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडे छे तेमां प्रथम प्रणिधाननामा आशय कहे छे जे हीन के० पोताथकी हीण गुणी छे एटले हीण गुणठाणे वर्त्ते तेहनी करुणा न करे

विण पणिहाण स्नेह के०प्रणिधाननामा आशय विशेपना स्नेह विना हीननी करुणा न करे वली हीनगुणी उपर द्वेष करतां थकां जे एमां शा गुण छे इत्यादिक द्वेष धरतां ते पोतेज हेठा आवे ॥ ५ ॥

एक काजमां नवि धेरेरे, विण प्रवृत्ति थिर भावरे ।
जिहां तिहां मोहोडुं घालतांरे, धारे ढोर स्वभावरे ॥प्रभु०मुझ०६॥

अर्थ–हवे प्रवृत्तिनामा आशय वखाणे छे विण प्रवृत्ति के० प्रवृत्तिनामागुण विना एक काजमां के० एक जे धर्मकार्य मांडयुं तेमां नवि धरे के० न राखे थिर भाव के० थिरता भाव एटले एक काजमां थिर नहीं अने प्रारंभित कार्यमां तेवो प्रयत्न नहीं एम पण समजवुं जिहां तिहां मुख घालतो एटले जे धर्मस्थानक मांडयुं छे ते मूकीने अकालें फल वांछे अने अकालें फल वांछवुं ते तत्वथी आर्त्तध्यान छे ते वारे जिहां तिहां मोहोडुं घालतां ढोरनो स्वभाव धरे छे जे खावा मूक्युं होय ते मूकीने बीजामां मुख घाले ॥ ६ ॥

विना विघन जय साधुनेरे, नवि अविछिन्न प्रयाणरे ।
किरियाथी शिवपुरी होयरे, केम जाणे अन्नाणरे ॥प्रभु० मुझ०७॥

अर्थ–हवे त्रीजो विघ्नजय बतावे छे विघन के० अंतराय तेनो जय के० जीतवुं ते विघ्न जयनामा गुण विना साधुने मात्र क्रियायें करी अविच्छिन्न प्रयाण केम थाय एटले मोक्ष-मार्ग अविच्छिन्नपणे केम सधाये माटे विघ्नजय विना साधुने क्रियाथी अविच्छिन्न प्रयाणे शिवपुर न होय ए वातो अज्ञानी केम जाणे हवे विघ्न तथा विघ्ननो जय देखाडे छे ॥७॥

शीत ताप मुख विघन छेरे, बाहेर अंतर व्याधिरे ।
मिथ्यादर्शन एहनीरे, मात्रा मृदु मध्याधिरे ॥ प्रभु० मुझ० ८ ॥

अर्थ–ते विघ्नना भेद त्रण छे १ हीन विघ्न २ मध्यम विघ्न ३ उत्कृष्टुं विघ्न एमां हीन विघ्न ते जेम धर्म करतां शीत के० टाढ वाए तथा ताप के० तडको लागे ते धर्ममां विघ्न छे तथा बाह्य व्याधि के० रोग ज्वरकास श्वास प्रमुख जे शरीरना रोग ते मध्यम विघ्न कहियें जे माटे ताढाड तथा तडका करतां शरीरना रोग ते विशेष विघ्न करे तथा त्रीजुं उत्कृष्टुं विघ्न ते अंतरव्याधि मिथ्यादर्शन के० मिथ्यात्व मोहनीय ए उत्कृष्टुं धर्ममां विघ्न छे जे माटे धर्म करतां जो मिथ्यादर्शननो उदय थइ जाय तो धर्ममां महोटुं विघ्न थाय आ विघ्न पूर्वे जे बे विघ्न कह्यां ते करतां आकरुं विघ्न छे माटे उत्कृष्टुं विघ्न कह्युं जेम मार्गमां चालतां जघन्य मध्यम अने उत्कृष्टुं ए त्रण विघ्न छे मार्गमां कांटा लागे ते जघन्य विघ्न, मार्गमां ज्वर प्रमुख ते मध्यमविघ्न, मार्गमां दिग्मूढ थाय ते उत्कृष्टुं विघ्न तेम धर्ममां पण पूर्वोक्त त्रण विघ्न जाणवां तेनी मात्रा के० प्रमाण कहे छे मृदु के० हीन मध्य के० मध्यम अने अधि के०उत्कृष्टुं एम अनुक्रमे जोडवां. ए विघ्नो देखाड्यां हवे विघ्नजय अनुक्रमें देखाडे छे ॥८॥

आसन अशन जयादिकेंरे, गुरुयोगें जय तासरे ।
विघन जोर ए नवि टलेरे, वगर ज्ञान अभ्यासरे ॥प्रभु०मुझ०९॥

अर्थ—आसन के० वीरासनादिके करी पूर्वोक्त शीत तापादिक विघ्ननो जय करे तथा गुरुयोगें करी पूर्वोक्त मिथ्यादर्शनरूप विघ्ननो जय करे केमके गुरुयोगें समकित पामेज ए विघ्ननुं जोर ते ज्ञानाभ्यास विना टले नहीं माटे ज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढ राखे शीत ताप प्रमुखमां चले नहीं अने ज्वर प्रमुखमां कृतकर्म अहियासे एटले एम जाणे जे मारां उदये आव्यां कर्म भोगवुं छुं तथा मिथ्यात्वनुं जोर छते ज्ञाने (जाणे) सम्यक् जिनवचन भावे ॥९॥

विनय अधिक गुण साधुनोरे, मध्यमनो उपगाररे ।
सिद्धिविना होवे नहींरे, कृपा हीननी साररे ॥प्रभु०मुझ० १० ॥

अर्थ—हवे सिद्धिनामा आशय वखाणे छे जे पोता थकी अधिक गुणवंता साधुनो विनय ते सिद्धिनामा आशय विशेष आव्या विना होय नहीं तथा मध्यम के०मध्यम गुणवंता होय तेने उपकार करे ते पण सिद्धियोग विना होय नहीं अने हीननी के० पोताथी हीनगुणी तेनी सार के० प्रधान कृपा के० दया ते पण सिद्धियोग विना न होय ॥ १० ॥

विण विनियोग न संभवेरे, परने धर्मे योगरे ।
तेह विना जनमांतरेरे, नहि संतति संयोगरे ॥ प्रभु० मुझ० ११ ॥

अर्थ—हवे विनियोगनामा पांचमो आशय वखाणे छे विनियोगनामागुण विना परजीवने जे धर्मे जोडवुं ते योग न संभवे के० न होय ते विना के०तेह विनियोग विना जनमांतरें के० परभवने विषे संतति के० परंपरानो संयोग ते नहीं के० न होय एटले सिद्धनुं कार्य ते विनीयोग छे ते यावत् सर्वसंवर थाय तिहां लगे धर्म परंपरा त्रूटे नहीं अने जो विनियोग नामागुण न थयो होय तो त्रूटी जाय ए सर्व गुण ते ज्ञानविना न होय ॥ ११ ॥

किरियामां खेदे करीरे, दृढता मननी नाहिरे।
मुख्य हेतु ते धर्मनोरे, जेम पाणी कृषिमांहिरे ॥प्रभु०मुझ०॥

अर्थ—हवे परमेश्वरनी वाणी मीठी छे ते वाणी स्तवनाद्वारें प्रभुनी स्तवना करे ते प्रभुनी स्तवना तो प्रभुजीनुं ध्यान करियें एटले ते वीतरागनी स्तवनाज थइ ते प्रभुनुं ध्यान वे भेदे छे एक सालंवन वीजुं निरालंवन तेमां सालंवन ते चक्षु प्रमुखें करी जिनप्रतिमादिकनुं आलंवन करीने समवसरणस्थ जिनस्वरूपनुं ध्यान करवुं ते तथा वीतरागना शुद्ध निरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवल ज्ञानादिक स्वभावनुं ध्यान करवुं ते निरालंवन ध्यान कहियें. 'शुद्ध परमात्मगुण ध्यानं निरालंवनं' इति वचनात्. हवे इहां तो सालंवन ध्याननी वात छे सालंवन केम थाय ते कहे छे जे जुदा जुदा जीवनी अपेक्षायें आठ चित्तनो त्याग करेथके

ध्यान थाय ते आठ चित्तना नाम कहे छे. यदुक्तं चतुर्दशे षोडशके—"१ खेदो २ द्वेग ३ क्षेपो ४ स्थान ५ भ्रांत्य ६ न्यमु ७ द्रुगा ८ संगैः । युक्तानि हि चित्तानि प्रबंधतो वर्जयेन्मतिमान् ॥ १ ॥" आ आठ चित्तने दोषे करीने ध्यान करी शके नहीं तेमां प्रथम खेदनामा दोष कहे छे खेद के० थाक जेम पंथे हिंडतां थाके तेनी पेरे खेद दोषे करी क्रियामां मननी दृढता के० एकाग्रपणुं ते न होय एटले क्रियामां प्रणिधान न रहे अने जे प्रणिधान ते धर्म नो मुख्य हेतु छे जेम करशण (खेती)मां पाणी ते मुख्य हेतु छे तेम क्रियामां प्रणिधान ते मुख्य हेतु छे ॥ १२ ॥

वेठा पण जे उपजेरे, किरियामां उद्वेगरे ।
योगद्वेषथी ते क्रियारे, राजवेठसम वेगरे ॥ प्रभु० मुज० १३ ॥

अर्थ—हवे उद्वेगनामा बीजो दोष वखाणे छे खेदविना पण वेठां थकां उद्वेग थाय तेनी पेरे उद्वेगदोषमां पण जाणवुं. वेठां थकां पण जे क्रिया करे तेमां उद्वेग उपजे तो ते क्रिया करतां ते प्राणीने सुख जे चित्तनी प्रसन्नता ते केम उपजे जे वारे क्रियामां उद्वेग थयो ते वारे द्वेप उपनो ते द्वेपथी राजानी वेठनी पेठे कथंचित् क्रिया करे वेग के० उतावलो करे एवी रीतें राजवेठनी पेठे करे तेने जन्मांतरे योगीना कुलने विषे जन्म पण न होय ए अर्थ षोडशकमां जोइ लेवो ॥ १३ ॥

भ्रमथी जेह न सांभरेरे, कांइ अकृत कृत काजरे ।
तेहथी शुभ किरिया थकीरे, अर्थ विरोधी अकाजरे ॥ प्रभु० मुज० १४ ॥

अर्थ—हवे यद्यपि षोडशकमां भ्रांतिनामा पांचमो दोष कह्यो छे तथापि उपाध्यायजीयें इहां त्रीजो भ्रांतिनामा दोष वर्णव्यो छे एम अनानुपूर्वी पण व्याख्याननुं अंग छे हवे भ्रांतिनो अर्थ कहे छे भ्रांति के० वस्तु अन्य होय तिहां अन्य जाणे जेम शुक्तिका (छीप) ने विषे रजतनी भ्रांति थाय तद्वत् भ्रमे करी जे वस्तु सांभरे नहीं जे में धर्मकृत्य कर्युं अथवा नथी कर्युं उपलक्षणथी में पाठ उच्चर्यो के नथी उच्चर्यो इत्यादि ते शुभ क्रिया थकी पण अर्थ विरोधी एवुं जे अकाज के० इष्टफलरूप जे कार्य ते न थाय तेने अकाज कहिये ॥ १४ ॥

शांत वाहिता विण होवेरे, जे योगे उत्थानरे ।
त्याग योग छे तेहथीरे, अणछंडातुं ध्यानरे ॥ प्रभु० मुज० १५ ॥

अर्थ—हवे उत्थाननामा चोथो दोष वर्णवे छे उत्थान के० चित्तनी अप्रशांतता तथा मन प्रमुखनी उत्सुकता थकी जेम कोइक पुरुष मदिरा प्रमुखें करी मदावष्टब्ध थयो होय तेनी पेठे जे योगने उत्थानदोषे करीने शांतवाहिता विण होय के० शांतवाहिता न होय एटले जे क्रिया करे तेमां उद्वेग रहे पण ठरण न होय ते क्रिया केवी छे के त्यागयोग के० त्यागवा योग्य छे पण तेहथी के० ते त्यागयोग क्रियाथी अणछंडातुं ध्यान के० छंडातुं

तंजातुं नथी एवुं ध्यान छे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षा लीधी होय अने सर्वथा मूलोत्तरगुण निर्वाह करवा असमर्थ छे ते प्राणीने विधिपूर्वक जेम श्रावकाचार ग्रहवानो उपदेश आपीयें ते लिंग त्यजवायोग्य छे पण लोकनी निंदा प्रमुखे अणछंडातुं छे उक्तं च उपदेशमालायां–"जइ न तरसि धारेउं, मूलगुणभरं सउत्तरगुणं च । मुत्तूणं तो तिभूमिं, सुसावगत्तं वरतरागं ॥१॥"

विचे विचे बीजा काजमांरे, जाए मन ते खेपरे ।
ऊखणतां जिम शालिनुंरे, फल नहीं तिहां निर्लेपरे ॥प्रभु०मुज०१६॥

अर्थ–हवे पांचमो क्षेपनामा दोष कहे छे. जे क्रिया मांडी होय ते क्रियामां वचे वचे बीजा कार्यमां मन जाय ते खेप कहियें ऊखणतां के० वारंवार उपाडेली एवी जे शालि तेनुं निर्लेप के० चोक्खुं फल नहीं के० न थाय एटले ए भाव जे एकवार शालि उखेडीने वावे तो फल थाय पण वारंवार उखेडीने वावे तो फल न थाय तेम इहां वारं-वार प्रारंभित क्रिया मूकीने अन्य क्रियामां मन जाय ते फल न पामे ॥ १६ ॥

एकज ठामें रंगथीरे, किरियामां आसंगरे ।
तेहज गुणठाणे थितिरे, तेहथी फल नहीं चंगरे ॥ प्रभु०मुज० १७ ॥

अर्थ–हवे आसंगनामा छट्ठो दोष कहे छे. आसंग के० जे क्रिया करतो होय तेमां इद मेवसुंदरं एहवो जे रंग ते आसंगनामा दोष कहीयें जो पण ते अनुष्ठान शास्त्रोक्त छे तोपण तेमां रंगनुं जे घर छे ते दोषरूप छे तेहज गुणठाणे थिति के० तेवेने तेवेज गुणठाणे रहे पण आगल गुणठाणो वधे नहीं जेम श्रीमहावीर उपर गौतमस्वामीने भक्तिराग हतो तेथी तेज गुणठाणे स्थिति रही पण मोहनीकर्मनुं उन्मूलन करीने केवलज्ञानरूप जे फल ते चंग के० मनोहर न थयुं माटे आसंग ते दोषता जाणवी ए अर्थ षोडशकवृत्तिमां जोजो ॥१७॥

मांडी किरिया अवगणीरे, बीजे ठामे हर्षरे ।
इष्ट अर्थमां जाणीयें रे, अंगारानो वर्षरे ॥ प्रभु० मुज० १८ ॥

अर्थ–हवे अन्यमुदनामा सातमो दोष कहे छे. जे प्रारंभित कार्यथकी अन्य स्थानकें हवे ते अन्यमुद् दोष जे मांडी किरिया के० जे क्रिया करे छे ते अवगणी के० तेनो आदर मूकीने बीजे ठामें हर्ष के० बीजी क्रियामां हर्ष राखे एटले चैत्यवंदन करतो होय ने सामायकमां हर्ष करे ते प्राणीने इष्ट अर्थ के० वांछित अर्थमां अंगारानो वर्ष के० अंगारा-नो वरसाद वरसे छे एटले मांडेली क्रियामां जे अनादर छे ते सर्वदोषनुं मूल छे ॥२८॥

रोग होए समजणविनारे, पीडा भंग सुरूपरे ।
शुद्ध क्रिया उच्छेदथीरे, तेह वंध्य फल रूपरे ॥ प्रभु० मुज० १९ ॥

अर्थ–हवे आठमो रोगनामा दोष कहे छे ते पीडा भंग सुरूप के० पीडा सुरूप अथवा

भंग सुरूप एम समजणविना जे पद छे ते शुद्ध क्रियानें जोडीयें तेवारे एवो अर्थ थाय जे समजणविना शुद्ध क्रियानो उच्छेद करे पण अशुद्ध क्रिया करे खरो तेवारे शुद्ध क्रियाने पीडा थयी अथवा शुद्ध क्रियानो भंग थयो ए बे अर्थ रोगना थया एटले रोग दोषथके शुद्ध क्रियानो उच्छेद ते विनाश करे ते वंध्यफल के० ते अशुद्ध क्रिया वांझिया फलरूप थाय ॥ १९ ॥

मानहानीथी दुःख दिएरे, अंगविना जेम भोगरे ।
शांतोदात्तपणाविनारे, तेम किरियानो योगरे ॥ प्रभु० मुझ० २० ॥

अर्थ—ए उपर कह्या आठे दोष रहित जे होय तेने शांतादिक गुण आवे माटे एक शांत बीजो उदात्त ए बे गुण वखाणे छे ते मानी पुरुषने जेम माननी हाणी थाय एटले दुःख उपजे तथा अंगविना के० अंगोपांगे हीन होय अने भोगनी सामग्री स्त्री प्रमुख मली होय ते जेम चित्तने दुःख आपे अथवा जेम भोगनी सामग्री मली होय तोपण मान हानीथी के० प्रमाणहीन अधिका ओछा भोगवे तो दुःख आपे तथा अंगविना पण दुःख थाय तेम शांत अने उदात्त ए बे गुण आव्या विना क्रियानो योग पण एवो जाणवो ॥ २० ॥

शांत ते कषाय अभावथीरे, जे उदात्त ते गंभीररे ।
किरिया दोष त्यजी लहेरे, ते सुखजश भर धीररे ॥ प्रभु० मुझ० २१ ॥

अर्थ—शांत ते कहियें जे कषायनो अभाव अने उदात्त ते गंभीर होय एवा प्राणी जे होय ते क्रियामां लागता दोष त्यजीने लहे के० पामे ते धीर के० धीरपुरुष सुखनो अने यशनो भर के० समूह पामे ॥ २१ ॥

॥ ढाळ अग्यारमी ॥

हवे दशमा ढालमां शांत तथा उदात्त गुण वखाण्या ते शांत उदात्त गुण तो धर्मरूप छे ते धर्मरूप रत्ननी योग्यता कोने होय ते दुहामां कहे छे.

॥ दोहा ॥

एकवीस गुण परिणमे. जास चित्त नितमेव ।
धरम रतननी योग्यता, तास कहे तुं देव ॥ १ ॥

अर्थ—जेना चित्तमां नितमेव के० निरंतर एकवीस गुण परिणम्या होय ते जीवने धर्म जे देशविरति सर्व विरतिरूप रत्न तेनी योग्यता होय एम हे देव तमे कहो छो जे एकवीस गुण द्रव्य श्रावकना छे ते संक्षेपे कहे छे—विस्तारें आगल कहेशे.

१ खुद्द नहीं २ वलि रूपनिधि, ३ सोम्म ४ जनप्रियज धन्य ।
५ क्रूर नहीं ६ भीरुवली, ७ असठ ८ सार दखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ-१ क्षुद्र मति न होय एटले गंभीर होय २ रूपनो निधान होय एटले पंचेंद्रिय स्पष्ट होय ३ सोम्म एटले सौम्य होय ते स्वभावें अपापकर्मी होय ४ जनप्रियज के० लोकने वल्लभ होय ते सदा सर्वदा सदाचारी होय धन्य के० प्रशंसा करवा योग्य छे ५ क्रूर नहीं के० अक्लिष्टचित्त होय एटले संक्लेशपरिणामी न होय ६ आलोक परलोकना अपायथी भीरु के० बीहीतो रहे ७ असठ एटले परने ठगे नहीं ८ सार के० प्रधान दखिन्न के० दाक्षिण्य गुणवंत होय एटले परनी प्रार्थनानो भंग न करे ॥ २ ॥

९ लज्जालुओ १० दयालुओ, ११ सोमदिट्ठि मज्जथ्थ ।
१२ गुणरागी १३ सतकथ १४ सुपख्ख १५ दीरघदरशि अथ्थ ॥३॥

अर्थ-९ लज्जालुओ के० स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटले अकार्यवर्जक १० दयालुओ के० प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टि ते यथावस्थित विचारनी दृष्टि छे अने दूर देशत्यागी ते सौम्यदृष्टि कहियें तेज मज्झत्थ के० मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सौम्यदृष्टि अने मध्यस्थ ए पदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी ते गुणी जीवनो पक्षपाती होय १३ सतकथ ते भली कथानो कहेनार एटले धर्मकथा वाहाली छे जेने १४ सुपक्ख के० सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसी के० अनागतकाल विचारीने परिणामे सुंदर कार्यकारी होय अत्थ के० ए अर्थ छे.

१६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत, १८ विनयवंत १९ कृतजाण ।
२० परहितकारी २१ लब्धलख्ख, गुण एकवीस प्रमाण ॥४॥

अर्थ-१६ विशेषज्ञ के० पक्षपात रहितपणे गुणदोष विशेषनो जाण १७ वृद्धानुगत के० परिणतमति पुरुषने सेवनारो होय १८ विनयवंत के० गुणाधिक पुरुषने विषे गौरवकर्त्ता १९ कृतजाण के० कर्या गुणनो जाण २० परहितकारी के० निर्लोभीथको परोपकार करे एटले जे दाक्षिण्य गुण ते परनो प्राथ्यों उपकार करे अने परहितकारी ते पोताथी उपकार करे एटलुं आठमा गुणथी वीसमा गुणमां विशेष जाणवुं २१ लब्धलक्ष गुण ते धर्माधिकारी तेहनो भावार्थ-'लब्धमिव लब्धं लक्ष्यं शिक्षणीयं धर्मानुष्ठानं येन स लब्धलक्ष्यः सुशिक्षः-सुशिक्षणीयः' इति ए एकवीस गुणसंपन्न जे जीव ते धर्मरत्नने योग्य होय ॥ ४ ॥

खुद नहीं ते जेह मने, अति गंभीर उदार ।
न करे जन उतावलो, निज परनो उपगार ॥ ५ ॥

अर्थ-हवे ए एकवीस गुण अर्थ विस्तारें कहे छे खुद नहीं ते के० अक्षुद्र तेने कहियें जेनुं मन अति गंभीर होय उदार होय तुच्छ न होय केमके जे उतावलो मनुष्य होय ते पोताने तथा परने उपकार करी शके नहीं एटले गंभीर होय ते पोताने तथा परने उपकार करे पण उतावलो होय ते न करी शके ए प्रथम अक्षुद्र गुण ॥ ५ ॥

शुभ संघयणी रूपनिधि, पूरण अंग उपंग ।
ते समरथ सेजें धरे, धर्म प्रभावन चंग ॥ ६ ॥

अर्थ—शुभ के० उत्तम संघयणवंत होय रूपनुं निधान होय संपूर्ण अंगोपांग होय पंचेंद्रिय पूर्ण होय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थ होय, ते धर्मनी प्रभावना करे. इहां नंदिखेण तथा हरिकेशी प्रमुख साथे विरोध न गणवो केमके ते पण संपूर्ण अवयववंत हता तथा आ वचन ते प्रायिक छे. जो विशेष बीजा गुणयुक्त होय तो रूपनुं प्रयोजन नथी ॥६॥

पाप कर्में वरते नहीं, प्रकृति सोम्य जग मित्त ।
सेवनीक होवे सुखे, परने प्रशम निमित्त ॥ ७ ॥

अर्थ—पाप कर्म ते आक्रोश वध हिंसा चोरी प्रमुखने विषे न प्रवर्त्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सौम्यभाव अबीहामणो सर्व जगतनें विषे मित्रता होय एवा पुरुषने सुखे लोक सेवी शके परने प्रशम के० समतानुं कारण होय ए त्रीजो गुण थयो ॥ ७ ॥

जन विरुद्ध सेवे नहीं, जन प्रिय धर्में सूर ।
मलिन भाव मनथी तजी, करी शके अक्रूर ॥ ८ ॥

अर्थ—जन शब्दें लोक कहियें ते लोकमां इहलोक तथा परलोक अने उभयलोक पण आवे एटले ए भाव जे इहलोक विरुद्ध न सेवे.—यदुक्तं "सव्वस्स चेव निंदा, विसेसओ तहय गुणसमिद्धाणं । उजुधम्मकरणहसणं, रीढा जणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥ बहुजणविरुद्धसंगो, देसाचारलंघणं तह य । उव्वणभोगो य तहा, दाणाइवि पयडमनेओ ॥ २ ॥ साहुवसणंमि तोसो सइ सामत्थंमि अपडिआरो अ । एमाइयाइं इत्थं, लोगविरुद्धाइं नेयाइं ॥ ३ ॥" तथा परलोक विरुद्ध जे खर कर्मादि ते पन्नर कर्मादिक तथा उभयलोक विरुद्ध द्यूतादिक सात व्यसन न सेवे तोज जनप्रिय के० लोकने प्रिय तथा धर्में सूर के० धर्मनो अधिकारी होय ए चोथो गुण कह्यो मलिनभाव मनथी तजीने धर्म करी शके एटलुं धर्मपद बहारथी लेवुं ते अक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनुं लक्षण धर्मरत्नप्रकरण मध्ये एमज वखाण्युं छे. यथा—" इह परलोयविरुद्धं, न सेवए दाणविणयशीलड्ढो । लोयप्पिओ जणाणं, जणेइ धम्मंमि बहुमाणं ॥ १ ॥ कूरो किलिट्ठभावो, सम्मं धम्मं न साहिउं तरइ । इइ सो न इत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्रूरो ॥ २ ॥" ए गाथाने अनुसारें अर्थ कर्यो छे वली बुद्धि अविरुद्धपणे सुजे तो विशेष करजो ए पांचमो गुण ॥ ८ ॥

इह परलोक अपायथी, बीहे भीरुक जेह ।
अपयशथी वली धर्मनो, अधिकारी छे तेह ॥ ९ ॥

अर्थ—आलोक तथा परलोकना अपायथी के० कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे ते भीरुक कहियें ते पुरुष धर्मनो अधिकारी जाणवो ए छट्ठो गुण कह्यो ॥ ९ ॥

असठ न वंचे परप्रतें, लहे कीर्त्ति विश्वास ।
भाव सार उद्यम करे, धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥

अर्थ–असठ के० मायावी नहीं एवो गुणवंत ते परने वचे के० ठगे नहीं तिवारे लोकमां कीर्त्ति पामे प्रशंसवा योग्य होय अने लोक पण तेनो विश्वास करे वली भाव सार के० पोतानुं चित्त रीझवे पण परनुं चित्त रीझववा माटे उद्यम न करे तथा चोक्तं–"भूयांसो भूरिलोकस्य, चमत्कारकरा नराः । रंजयंति स्वचित्तं ये, भूतले ते तु पंचषाः ॥ १ ॥" इत्यादिक तथा धर्मठामने विषे खास के० रुडो उद्यम करे ए सातमो गुण ॥ १० ॥

निज कार्य छांडी करी, करे अन्य उपकार ।
सुदखिन्न जन सर्वने, उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ–वली जे पोतानुं कार्य छांडी एटले पडतुं मूकीने पण परउपकार करे जे जे इहलोक परलोकने विषे हितकारी छे तेवा उपकार करे पण पाप हेतुयें न प्रवर्त्ते ते सुदाक्षिण्यनामा आठमो गुण कहियें ते जन० सर्व लोकने उपादेय व्यवहार के० आदेय वाक्य (जेनुं कहेवुं वधा माने एवो) होय व्यवहार ते वाक्य व्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृत न त्यजे त्यजे, लज्जालुओ अकाज ।
धरे दयालु धर्मनी, दया मूलनी लाज ॥ १२ ॥

अर्थ–धर्म कार्य जे अंगीकार कर्युं होय ते न त्यजे अने अकाज के०जे अकार्य होय ते त्यजे तेने लज्जालु नामें नवमो गुण कहियें तथा दसमो दयालु तेने कहियें जे दया मूलधर्म छे तेनी लाज धरे एटले दया मूल धर्म न लोपे ॥ १२ ॥

धर्म मर्म अवितत्थ लहे, सोमदिट्ठि मज्झत्थ ।
गुणसंयोग करे सदा, वरजे दोष अणत्थ ॥ १३ ॥

अर्थ–हवे मध्यस्थ सोमदृष्टिनामा अग्यारमो गुण वखाणे छे मध्यस्थ ते कोइ दर्शन उपर पक्षपात नथी तथा सोमदिट्ठी के० द्वेष रहित दृष्टि दर्शन छे जेने ते मध्यस्थ सोमदृष्टि कहियें तथा धर्मनो जे मर्म ते अवितत्थ के० यथार्थ लहे जाणे एटले सद्गुण निर्गुण अल्पगुण बहुगुण तथा सर्व पाखंडी निरुपित जे धर्म ते कनक परीक्षक पुरुषनी पेठे जाणे अने जे ज्ञानादिक गुण तेनो सदा संबंध करतो रहे तथा अनर्थना करनारा दोष ते सर्व वर्जे ते अग्यारमो गुण ॥ १३ ॥

गुण रागी गुण संग्रहे, दूसे न गुण अनंत ।
उवेखे निर्गुण सदा, बहु माने गुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ—गुणनो रागी होय धर्म उपर राग धरे तथा गुणनो संग्रह करे नवा गुण अंगे आणे गुण अनंत के० घणा गुणवंतने दूसे न के० दुःखवे नहीं एटले ए भाव जे गुण घणा होय अने कदाचित् कोइक दोष होय तोपण तेने दुःखवे नहीं. यतः—"भूरिगुणा विरल चिय, इक्कगुणो वि हु जणो न सवत्थ । निद्दोसाण वि भद्दं, पसंसिमो थोवदोसेवि ॥१॥" इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखे के० दुखवे नहीं तेमज स्तवे पण नहीं अने गुणवंत जे देशविरति सर्व विरतिवंत तेनो बहुमान करे जे धन्य एनो अवतार इत्यादिक गुणरागीनामा ते बारमो गुण थयो ॥ १४ ॥

अशुभ कथा कलुषित मति, नासे रतन विवेक ।
धर्म्मार्थी सतकथा हुए, धर्मनिदान विवेक ॥ १५ ॥

अर्थ—अशुभ कथा जे स्त्रीआदिकनी कथा तेणे करीने कलुषित मति थयी छे जेहनी ते प्राणीने विवेकरूप रत्न सदसद्वस्तुनुं जे परिज्ञान तद्रूप रत्न नासे ते माटे धर्मार्थीथको सत्-कथक होय तीर्थंकर गणधर महर्षि प्रमुखना चरित्र कहे जे धर्मार्थी ते धर्मनो अर्थीथको ए सत्कथाज धर्मनुं निदान छे विवेक के०विभाग छे जे अशुभ कथानो त्याग अने शुभकथा करवी ए तेरमो गुण ॥ १५ ॥

धर्मशील अनुकूल यश, सदाचार परिवार ।
धर्म सुपक्ख विघने रहित, करी शके ते सार ॥ १६ ॥

अर्थ—हवे सुपक्षयुक्तनामा चउदमो गुण कहे छे ते जेनो परिवार ते धर्मशील के० धर्म करवाना आचारवाळो छे अनुकूल के० धर्ममां विघ्न न करे तेवो तथा यशवंत अने सदा-चारी परिवार होय एवो सुपक्ख के० सुपक्ष गुणवंत विघ्ने रहित होय ते पुरुष सार के० प्रधान एवो जे धर्म ते प्रते करी शके ॥ १६ ॥

मांडे सवि परिणाम हित, दीरघदर्शी काम ।
लहे गुण दोष वस्तुना, विशेषज्ञ गुणधाम ॥ १७ ॥

अर्थ—हवे दीर्घदर्शीनामा पन्नरमो गुण कहे छे ते जे काम के० कार्य मांडे ते परिणामे हितकारीज होय उपलक्षणथी तेमां लाभ घणो होय अने क्लेश अल्प होय बहु लोकने प्रशं-सनीक होय. यतः—"आढवइ दीहदंसी, सयलं परिणामसुंदरं कज्जं । बहुलाभमप्पकेसं, सलाहणिज्जं बहुजणाणं ॥१॥" इति धर्मरत्नप्रकरणे. हवे विशेषज्ञनामा सोलमो गुण वखाणे छे जे लहे के० जाणे वस्तुना गुण दोष एटले ए अर्थ जे पक्षपात विना वस्तुना गुण दोष सर्वने जाणे जो पक्षपात होय तो गुणमां दोष काढे अने दोषमां गुण काढे पण मध्यस्थ बुद्धिने यथास्थित भासे एवो विशेषज्ञ ते गुणनुं धाम के० घर होय ॥ १७ ॥

वृद्धानुगत सुसंगते, होवे परिणत बुद्धि ।
विनयवंत नियमा करे, ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १८ ॥

अर्थ—हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुण कहे छे ते जे परिणत बुद्धिवान् परिपक्व बुद्धिनो धणी होय ते पापना आचारने विषे नज प्रवर्त्ते अने गुणवंत जे वृद्ध होय तेने अनुगत के० अनुजायीयें प्रवर्त्ते एटले वृद्धनी संगत करवी ते सुसंगत कहियें ते सुसंगते करी पोते पण परिणत बुद्धिवालो थाय परिपक्व बुद्धिवान् थाय. यतः—"वुड्ढो परिणयबुद्धी, पावायारे पवत्तई नेव । वुड्ढाणुगोवि एव, संसग्गिकया गुणा जेण ॥१॥" इति । हवे विनयनामा अढारमो गुण कहे छे ते विनयवंत प्राणी नियमा के० निश्चें ज्ञानादिकनी शुद्धि करे एटले ए भाव जे सर्व ज्ञानादिक गुणनुं तथा मोक्षनुं मूल ते विनय छे माटे विनयगुण जोइये. यतः—"विणओ सव्वगुणाणं, मूलं सन्नाणदंसणाईणं । मुक्खस्स य ते मूलं, तेण विणओ इह पसत्थो ॥१॥" ॥ १८ ॥

गुण जोडे गुरु आदरें, तत्त्वबुद्धि कृतजाण ।
परहितकारी परप्रतें, थापे मार्ग सुजाण ॥ १९ ॥

अर्थ—हवे कृतज्ञनामा ओगणीसमो गुण कहे छे ते जे गुणने विषे तथा धर्मने विषे बीजाने जोडे तथा धर्मगुरु उपर घणो आदर करे तथा जेने तत्व ग्रहणनी बुद्धि होय तेने कृतजाण के०कृतज्ञ कहियें. हवे वीसमो परहितकारी नामा गुण कहेछे जे पर प्रतें धर्ममार्ग थापे अने सुजाण के० डाह्या होय वली जेने धर्ममार्ग जाण्यो छे एटले गीतार्थ छे केमके जो अगीतार्थ होय अने ते परने हित करवा चाहे तोपण अहित थाय. यतः—" किं इत्तो कट्ठयरं, जं संममनायसमयसब्भावो । अन्नं तु देसणाए, कट्ठयरागंमि पाडेइ ॥१॥" ॥१९॥

शीखे लखे सुखें सकल, लब्धलक्ष शुभकाज ।
एम एकवीस-गुणे वर्यो, लहे धर्मनुं राज ॥ २० ॥

अर्थ—हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुण कहे छे ते जे शीखे के० थोडा कालकमां आगमादिक भणे तथा लखे के० जाणे सुखें के० अनायासें वगरप्रयासें सकल के० समस्त शुभकाज जे धर्मना कार्य तेने लब्धलक्ष कहियें. यतः—"लक्खेइ लद्धलक्खो, सुहेण सयलंपि धम्मकरणिज्ज। "क्खो सुसासणिज्जो, तुरियं च सुसिक्खिओ होइ ॥१॥" इति धर्मरत्नप्रकरणे. ए रीते एकवीस गुणे करी विराजित होय ते धर्मनुं राज्य लहे के० पामे. इति ॥ २० ॥

पूरण गुण उत्तम कह्यो, मध्यम पादें हीन ।
अर्द्धहीन जघन्य जन, अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥

अर्थ—ए पूर्ण एकवीसगुणे सहित होय ते उत्तम कहियें अने पादें के० चोथे भागें हीन

होय ते मध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणे हीन होय ते जघन्य कहियें अपर के० ए अर्द्ध थकी हीनगुणी होय ने दरिद्री दीन जाणवा केमके दरिद्री होय ते पोताना उदर भरवानी चिंतायें व्याकुलपणे करी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंता न करी शके तेम हीनगुणो ते धर्मरत्नना मनोरथ पण न करी शके. यतः—"पायद्धगुणविहिणा, एएसिं मज्झिमाऽवरा नेया। इत्तो परेण हीणा, दरिद्दपाया मुणेयव्वा ॥१॥" ॥ २१ ॥

अरजे वरजी पापने, गृह धर्म सामान्य ।
प्रभु तुझ भक्ति जश लहे, तह होए जन मान्य ॥ २२ ॥

अर्थ—जे पापने वर्जिने ए सामान्य धर्म जे श्रावकधर्म तेने अरजे के० उपार्जे ते प्राणी हे प्रभु तारी भक्ति करीने जश लहे के० जश प्रतिष्ठा पामे एटले एवा गुणवंत होय ते तारी भक्ति करे ज तथा ते प्राणी सर्व लोकने मान्य होय ॥ २२ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

एकवीस गुणे सहित होय ते भावश्रावकपणुं पामे माटे भावश्रावकना गुण वर्णवाने बारमी ढाल कहे छे.

॥ चोपाइनी देशी ॥

एकवीस गुण जेणे लह्या, जे निज मर्यादामां रह्या ।
तेह भावश्रावकना लहे, तस लक्षण ए तुं प्रभु कहे ॥१॥

अर्थ—ए एकवीस गुणने जे पाम्या होय वली जे पोतानी मर्यादामां रह्या होय आचारशीलमां रह्या होय तेज प्राणी भावश्रावकपणुं पामे एटले ए भाव जे पूर्वे द्रव्यश्रावक थयीने उत्तरकाले भावश्रावक थाय ते भावश्रावकना लक्षण ए प्रमाणे हे प्रभु वीतराग परमेश्वर तमे कह्यां छे ते प्रमाणे आगल कहिये छैयें ॥ १ ॥

कृत व्रत कर्मा शीलाधार, गुणवंतो ने ऋजु व्यवहार ।
गुरु सेवीने प्रवचन दक्ष, श्रावक भावें ए प्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ—इहां मार्गानुसारीना पांत्रीस गुण ज्ञानविमलसूरीयें लख्या छे पण विशेष श्रद्धादिकमां प्रयोजन नथी तथा एतुं मूल धर्मरत्नप्रकरणमां कह्युं छे तेमां पण नथी कह्या माटे अमे लख्या नथी १ कर्युं छे व्रतरूप कार्य जेणे ते कृतव्रतकर्मा कहियें २ शीलवंत होय ३ विवक्षित गुणवंत होय ४ ऋजु व्यवहार एटले सरल मन होय ५ गुरुनी शुश्रूषा एटले सेवा करे ६ प्रवचन के० आगममां कुशल होय डाह्यो होय ए छ लक्षण जेमां होय ते

प्रत्यक्षपणे भावश्रावक कहियें. यतः—"कयवयकम्मो तह, शीलवं च गुणवं च उज्जु ववहारी । गुरुसुस्सूसो पयवणकुसलो खलु सावगो भावे ॥ १ ॥ " ॥ २ ॥

श्रवण जाणणा ग्रहण उदार, पडिसेवा ए चार प्रकार ।
प्रथम भेदना मन धारीयें, अर्थ तास इम अवतारीयें ॥३॥

अर्थ—हवे उपरना छ लक्षणमांथी प्रथम कृतव्रतकर्मा नामें लक्षणना चार भेद छे—१ श्रवण के० सांभलवुं २ जाणणा के० जाणवुं ३ ग्रहण के० अंगीकार करवुं उदार के० विस्तारपणे ४ पडिसेवा के० सम्यक् पालवुं ए चार भेद जे कृतव्रतकर्मा नामे तेना अवधारीयें ताम के० तेना अर्थ एम अवतारीयें के० उतारीयें ॥ ३ ॥

वहुमाने निसुणे गीयत्थ, पासे भंगादिक वहु अत्थ ।
जाणगुरु पासें व्रत ग्रहे, पाले उपसर्गादिक सहे ॥ ४ ॥

अर्थ—इहां वहुमान कह्युं पण विनय तथा वहुमान बंने लेवां. यतः—"विणय वहुमाणसारं, गीयत्थाओ करेड वयसवणं । " इति वचनात्. गीयत्थ पासे के० गीतार्थ पासेथी जे निसुणे के० सांभले ते विनय तथा वहुमान सहित सांभले इहां चोभंगी कहे छे—१ कोइक धूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनय तो होय पण गुरुकर्मा के० भारीकर्मी माटे वहुमान अंतरप्रीति न होय २ कोइकमां वहुमान होय पण विनय करवानी शक्ति न होय ते ग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धिया जीवमां विनय तथा वहुमान वेहु होय ४ कोइक आकरा पापकर्मीमां विनय तथा वहुमान एके न होय इहां व्रत सांभलवाने कह्युं. पण उपलक्षणथी सर्व शास्त्र सांभले सूत्र ते गीत अने तेनुं व्याख्यान ते अर्थ अने जे सूत्र तथा अर्थसहित ते गीतार्थ. यतः—"गीयं भन्नइ सुत्तं,अत्थो तस्सेव होइ वक्खाणं । गीएण य अत्थेण य संजुत्तो होइ गीयत्थो ॥१॥" एटले गीतार्थ पासे सांभलीने ए पहेलो भेद भंगादिक वहु अर्थ जाणे के० व्रतना भांगा प्रमुख वहु अर्थ समजे जेम पच्चक्खाणना ४९ भांगाने त्रिकालना गणियें ते वारे १४७ भांगा थाय वली व्रतआश्री गणियें ते वारे एक व्रते ६ बे व्रते ४८ त्रण व्रते ३४२ इत्यादिक यावत् बार व्रते १३८४१२८७२०० भांगा थाय. अत्र गाथा—"तेरस कोडिसयाइं. चुलसीकोडी उ बारस य लक्खा । सगसीइ सहस दो सय. सव्वग्गं छक्कभंगीए ॥१॥" नव भंगीयें एक व्रते ९ बे व्रते ९९ यावत् बार व्रते ९९९९९९९९९९९९ अने एकवीस भंगी करियें ते वारें बारे व्रते १२८५५००२६३१०४९२१५ थाय. ४९ भंगे बारे व्रते २४४१४०६२४९९९९९९९९९९ भांगा थाय. १४७ भांगायें बारे व्रते ११०४४३४६०७७१९६११५३३३५६९५७६९५ भांगा थाय. सर्व अक्षर संचारणायें जाणवा. इत्यादिक भांगानुं ज्ञान करे, आदि शब्दें व्रतना अतिचार जाणे, ए बीजो भेद विस्तारे धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो. पछी गुरु पासेथी व्रत अंगीकार करे. आणंदादिक श्रावकनी पेठे इत्वर ते चोमासा प्रमुखना अथवा यावत्कथिक ते जावजीवना ए त्रीजो भेद थयो, अने पाले के० सम्यक् पाले तथा उपसर्गादिक जे आवे

ते सर्वे कामदेव श्रावकनी पेठे सहे, ए चोथो भेद कह्यो. ए कृतव्रतकर्मांना चार भेद वखाण्या ॥ ४ ॥

सेवे आयतणा उद्देश, परगृह तजे अणुब्भडवेस।
वचन विकार त्यजे शिशुलील, मधुर भणे ए षट विध शील ॥५॥

अर्थ–हवे बीजा शीलव्रतनामा लक्षणना छ भेद कहेछे. सेवे आयतणा के० साधर्मिकने मलवानुं स्थान सेवे. यतः–"जत्थ साहम्मिया बहवे, सीलवंता बहुसुया । चरित्तायारसंपन्ना, आययणं तं वियाणाहि ॥ १ ॥" तेवो उद्देश के० स्थानक सेवे पण भिल्लनी पाली प्रमुख सेवे नहीं, ए पहेलो भेद. वली परगृह तजे के० पारका घरमां पेसतो न फरे, केमके कांइ वस्तु खोवाय त्यारे तेना उपर शंका आवे पण कारणे कोइना घरमां जाय ते वात जूदी छे, ए बीजो भेद. तथा अणुब्भडवेस के० उद्भट वेष न पहेरे जे थकी लांठीआ ठोलीआ आदमीमां गणाय ते न करे, ए त्रीजो भेद. वली वचनविकार त्यजे के० जे थकी रागद्वेष वधे एवा विकारनां वचन बोले नहीं, ए चोथो भेद. अने शिशुलील के० बालक्रीडा, जुगडुं रमवुं इत्यादिक त्यजे, ए पांचमो भेद. वली मधुर भणे के० मीठुं बोले गमेतेवुं कार्य पडे तोपण हे सौम्य, हे सुंदर, आ काम करशो एम कहे ए छ भेद शीलवंतनामा गुणना जाणवा ॥ ५ ॥ हवे एज छ भेद विस्तारी देखाडे छे.

आयतन सेवे गुण पोष, परगृह गमने वाधे दोष ।
उद्भट वेष न शोभा लाग । वचन विकारें जागे राग ॥ ६ ॥

अर्थ–आयतन के० जे साधर्मिनां स्थानक ते सेवतांथकां गुणनी पुष्टि थाय. गाथा–"आयणण सेवणाओ, दोसा छिज्जंति वड्ढइ गुणोहो।" इतिवचनात्. वली परगृहगमने के० पारके घेर जातां वाधे दोष के०दोष वधे. यतः–"परगिहगमणंपि कलंकपंकमूलं सुसीलाणं ।" इति वचनात्. वली उद्भट वेष ते शोभालायक नहीं. गाथा–"सहइ पसंतो धम्मी, उब्भडवेसो न सुंदरो तस्स । " इति वचनात्. सहइ के० शोभे पसंत धम्मी के०प्रशांत धर्मी उद्भटवेष तेने सुंदर नथी इति. तथा वचनना विकारे करीने राग जागे माटे विकारनां वचन कहे नहीं. यतः–"सवियारजंपियाइं, नूणमुईरंति रागग्गिं । " इति वाक्यात्. ते माटे न कहे. यतः–"जं सुणमाणस्स कहं,सुट्ठुयरं जलइ माणसे मयणो । समणेण सावएण वि न सा कहा होइ कहियव्वा ॥१॥" इति वचनात् ॥ ६ ॥

मोहतणो शिशुलीला लिंग, अनर्थ दंड अछे ए चंग ।
कठिन वचननुं जल्पन जेह, धर्मिने नहि सम्मत तेह ॥ ७ ॥

अर्थ–जे शिशुलीला के० बालक्रीडा ते मोहतणो के० मोहनुं लिंग छे वली केवी छे अनर्थ दंड छे ते जीवने चंग के० मनोहर लागे छे. यतः–" बालिसजणकीला वि हु,

मूलं मोहस्स, णत्थदंडाओ ।" इति वचनात्. हवे, छट्ठो भेद कहे छे ते कठिन वचननुं जे बोलवुं ते धर्म्मी जीवने सम्मत के० मान्य नहीं. यतः–"परुसवयणाभियोगो, न सम्मओ सुद्ध धम्माणं ॥" इति वचनात्. ए छ भेदे करी बीजो शीलवंतनामा भेद संपूर्ण थयो ॥७॥

उद्यम करे सदा सज्झाय, करण विनयमां सर्व उपाय ।
अनभिनिवेशी रुचि जिन आण, धरे पंचगुण एह प्रमाण ॥ ८ ॥

अर्थ–हवे गुणवंतनामा भावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षण कहे छे तेमां यद्यपि औदार्य धैर्य गांभीर्य प्रिय बोलवुं इत्यादिक अनेक गुण छे तोपण पांचगुणे करी गुणवंत गीतार्थ कह्याछे १ सज्झाय के० भणवा वांचवा पृच्छनादिकनो उद्यम करे २ करण के० अनुष्ठान क्रिया करे ३ विनयमां के० गुरु आदिक आवे अभ्युत्थानादिक करे सदा उजमालथको जे जे विनयना प्रकार छे ते ते सर्व करे ४ अनभिनिवेशी के० कदाग्रही न होय इहलोक साधवामां कदाग्रह न करे ५ रुचि के० आकरी श्रद्धा जिनआण के० जैनागमने विषे होय ए पांचगुण धरे ते गुणवंत कहियें ते प्रमाण के० मान्य छे ॥ ८ ॥

सज्झायें धारे वैराग, तप नियमादिक करणे राग ।
विनय प्रयुंजे गुणनिधितणो, जेम मन वाधे आदर घणो ॥९॥

अर्थ–हवे ए पांचेनां फल कहे छे. प्रथम सज्झाय करतां जीवने वैराग वधे तथा अनुष्ठानमां सावधान थको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंत होय जे तप ते बारभेदे प्रसिद्ध छे अने नियम ते साधुने विश्रामण उत्तरपारणलोच कराव्यो होय तेने घृतप्रमुखनुं दान देवुं. यतः–"पहसंतगिलाणेसु य, आगमगाहिसु तह य कयलोए। उत्तरपारणगंमि य, दाणं सुबहुफलं होइ ॥ १ ॥" इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुख पण ए गुणमां लेवां ३ तथा गुणनो निधान जे पुरुष तेनो विनय प्रयुंजे के० करे. गुणवंत आवे ते वारे उभो थाय, सामो जाय, मस्तके अंजली करे, आसन आपे, गुरु बेठा पछी बेसे, सेवा करे, जाय त्यारे बोलावा जाय इत्यादिक विनय करे ते विनयवंत देखीने तेना उपर गुरुनो घणो आदर वधे आम्नायादिक गुरु तेने आपे ॥ ९ ॥

अनभिनिवेशी अवितत्थ गणे, गीतारथ भाषीत जे सुणे ।
सद्दहणायें सुणवा चाह, समकितनो मोटो उच्छाह ॥ १० ॥

अर्थ–अनभिनिवेशी जे होय तेने अवितत्थ के० यथार्थ माने अने गीतार्थ जे बोले गीतार्थ कहे ते यथार्थ जाणे तथा गीतार्थ पासे सांभळे श्रद्धापूर्वक सांभळवाने वांछे उपलक्षणथी श्रद्धायें इच्छापूर्वक अनुष्ठान करे एवी श्रद्धा विना समकितनी शुद्धि क्यांथी थाय. यतः–"सवणकरणेसु इच्छा, होइ रुई सद्दहाणसंजुत्ता । एईइ विणा कत्तो, सुद्धी सम्मत्तरयणस्स ॥ १ ॥" इति ए समकेतनो मोहोटो उच्छाह के० हर्ष छे ॥ १० ॥

अवितथ कथन अवंचक क्रिया, पातिक प्रकटन मैत्रीप्रिया ।
वोध वीज सद्भावें सार, चार भेद ए ऋजु ववहार ॥ ११ ॥

अर्थ–हवे भावश्रावकनुं चोथुं ऋजुव्यवहारनामा लक्षण चार भेदे करी कहे छे. १ अवितथ कथन ते यथार्थ बोले धर्म व्यवहारमां परने ठगवाने माटे धर्मने अधर्म न कहे अधर्मने धर्म न कहे क्रय विक्रय व्यवहारमां लेवे देवे जूठुं न बोले तथा साक्षी व्यवहारमां राजदरबारे पण खोटी साहेदी न पूरे तथा धर्मनी हांसी थाय एवु पण न बोले ए प्रथम भेद. २ अवंचकक्रिया के० बीजाने कष्ट उपजे एवी क्रिया न करे सारी वस्तुमां खराब वस्तु भेली न आपे अथवा ताकडी प्रमुख तोलमां अधिकुं ओछुं आपी लेइने परने ठगे नहीं तथा आ भवमां पण वंचनक्रिया ते केवल पापज छे एम देखतो परने ठगवाथी निवर्त्ते यद्यपि अवंचकक्रिया ते पोतानो आत्मा ठगाय नहीं ईहां योगअवंचक क्रियाअवंचक फलअवंचक इत्यादिक पूर्वना टबामां अर्थ लख्यो छे पण धर्मरत्न ग्रंथमां ए रीते नथी माटे अमे नथी लख्यो. ३ कोइक पाप करतो होय तेने प्रकटन के० अपाय कही देखाडे जे हे भद्रे पाप करतां अनर्थ थाय इत्यादिक कहे पण तेने उवेखे नहीं. ४ मैत्रीप्रिया के० निष्कपटपणे मित्राइ करे ते साचे भावे करे पण खोटे भावे न करे माटे एम कह्युं जे सार बोधबीज पामे. ए चार भेदें करी ऋजु के० सरलतानो व्यवहार कहियें अने ए चारे बोलथी विपरीत करे तो बोधबीज जाय एम धर्मरत्नप्रकरणमां कह्युं छे ॥ ११ ॥

गुरु सेवी चउविह सेवना, कारण संपादन भावना ।
सेवे अवसरे गुरुने तेह, ध्यानयोगनो न करे छेह ॥१२॥

अर्थ–हवे भावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रूषा नामे कहे छे ते गुरुसेवा चउविह के० चार प्रकारे छे. १ गुरुनी सेवना करे २ कारण के० बीजा पासे गुरुनी सेवा करावे ३ संपादन के० गुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुं करे ४ भावना के० गुर्वादिकनो बहुमान करे तथा गुरुना परिवारनो बहुमान करे इहां गुरु ते धर्मगुरु लेवा पण मातापितादिक गुरु न लेवा. यतः–"धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मप्रवर्त्तकः । सत्वेभ्यो धर्मशास्त्राणां देशको गुरुरुच्यते ॥१॥" हवे ए चारे भेदनो अर्थ कहे छे. १ अवसर पामीने गुरुनी सेवा करे पण वगर अवसरें न करे ते कहे छे जे ध्यान के० धर्मध्यानादिक योग ते प्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करे छेह के० छेद न करे एटले जीर्णशेठनी पेठे व्याघात न करे ॥१२॥

तिहां प्रवर्तावे परप्रतें, गुरुगुण भाषे निज पर छतें ।
संपादे औषध मुख वली, गुरुभावें चाले अविचली ॥१३॥

अर्थ–२ वली ते परप्रतें के० बीजाने गुरुसेवाने विषे प्रवर्त्तावे तेना आगल गुरुगुण भाषी के० वर्णन करीने एटले ए भाव जे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णन करे तेथी प्रमादी

होय ते पण गुरुसेवामां प्रवर्त्ते इतिभावः ३ तथा निज के० पोताथी अने पर छतें के० पर-थकी संपादे के० आपे अपावे औषधप्रमुखवली के० औषधप्रमुख तेमां एक द्रव्य ते औषध अथवा बाह्यउपयोगी ते औषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां भोगववा योग्य ते भैषज वली प्रमुखशब्दें जे संयमोपकारि वस्तु जोइये ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुभावें चाले के० गुरुने अभिप्रायें चाले गुरुनो बहुमान करे तथा गुरुने अनुजायी चाले अविं-चली के० अविचल थको ॥ १३ ॥

सूत्र अर्थ उस्सग्गववाय, भावें व्यवहारें सोपाय ।
निपुणपणुं पाम्यो छे जेह, प्रवचनदक्ष कहिजे तेह ॥ १४ ॥

अर्थ–हवे भावश्रावकनुं प्रवचनदक्षनामा छठुं लक्षण वखाणे छे ते छ भेदे छे ते माटे श्रावक पण छ भेदे जाणवो ते कहे छे १ सूत्रने विषे कुशल २ अर्थने विषे कुशल ३ उत्सं-र्गने विषे ते सामान्य सूत्रने विषे कुशल ४ अववाय के० अपवाद एटले विशेष सूत्रने विषे कुशल ५ भावें के० विधिपूर्वक धर्मानुष्ठानने विषे कुशल ६ व्यवहारें के० गीतार्थनी आच-रणारूप जे जीतव्यवहार तेने विषे कुशल सोपाय के० उद्यम सहित निपुणपणुं के० कुशल-पणुं पाम्यो छे एवो जे पुरुष तेने प्रवचनदक्ष कहियें ॥ १४ ॥

उचित सूत्र गुरु पासें भणे, अर्थ सुतीर्थे तेहनो सुणे ।
विषय विभाग लहे अविवाद, वली उत्सर्ग तथा अपवाद ॥१५॥

अर्थ–हवे ए छ भेद विस्तारी कहे छे. १ उचित सूत्र के० श्रावकने योग्य सूत्र चौसर-णादिक प्रवचनमाताथी मांडीने छ जीवणीया अध्ययनपर्यंत भणे. उक्तंच–" पवयणमाई छ-जीवणियंता उभओवि इयरस्स ॥ अस्यार्थः–ग्रहण शिक्षा तत्र प्रकृता, उभयतः सूत्रतो अर्थतश्चेतर-स्य श्रावकस्येति ।" ए रीते सूत्र भणे उपलक्षणथी पंचसंग्रह कर्म्मपयडीप्रमुख ग्रंथना समूह ते पोतानी बुद्धिने अनुसारे भणे. २ अर्थ के० ते सूत्रनो अर्थ ते सुतीर्थें के० संविज्ञ गुरु पासेथी सांभले ३–४ हवे उत्सर्ग तथा अपवाद ए बे भेद साथे कहे छे. अविवाद के० विवाद रहितपणे विषयविभाग लहे के० पोतपोताने ठेकाणे जाणे उत्सर्गने उत्सर्ग ठामे जाणे अपवादने अपवादठामे जाणे पण एकलो उत्सर्गज न आलंबे अथवा एकलो अपवादज न आलंबे जे अवसरें जे करवुं घटे ते करे एटले लाभालाभ जोइ कार्य करे ए सर्व चार भेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षभाव विधिमांहे धरे, देशकाल मुख जेम अनुसरे ।
जाणे गीतारथ व्यवहार, तेम सवि प्रवचन कुशल उदार ॥१६॥

अर्थ–५ देववंदनादिक विधिने विषे पक्षभाव के० बहुमान होय तथा बीजो कोइ विधि करतो होय तेहनो पण बहुमान करे विधि सामग्रीना अभावें पण विधि आराधवानो

मनोरथ मूके नहीं इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं. ६ हवे व्यवहारकुशलनामा छट्टो भेद वखाणे छे ते जेम देशकाल प्रमुख होय तेने अनुसरे. एटले ए भाव.जे देश ते सुस्थित दु- स्थितादि तथा काल ते सुकाल दुष्कालादिक प्रमुखशब्दे द्रव्य सुलभ दुर्लभादि भावथी हृष्ट ग्लानादिक ते सर्वने पोतपोतानी हदे जाणे गीतार्थनो व्यवहार सर्व पोते जाणे एटले ए भाव जे उत्सर्ग अपवादना जाण जे गीतार्थ तेणे आचर्यो जे व्यवहार ते पोतानी मते दुखवे नहीं पण ते सर्व व्यवहार तेमज अंगीकार करे. ए छ प्रकारनो प्रवचनकुशल ते उदार के० प्रधान कहियें. ए छ लक्षण भावश्रावकनां जाणवां ॥ १६ ॥

किरियागत ए षटविध लिंग, भाषे तुं जिनराज अभंग ।
ए विधि श्रावक जे आचरे, सुख जश लीला ते आदरे ॥१७॥

अर्थ—षटविध लिंग के० ए छ प्रकारना लिंग ते किरियागत के० क्रियाथी ओलखाय जेम धूम्रथी अग्नि ओलखाय तेनी पेठे एम हे जिनराज सामान्य केवलीमां राजा सरिखा तुं भाषे के० कहे छे अभंग के० समस्तपणे ए विधि जे श्रावक आचरे ते सुख तथा यश तेनी जे लीला तेने आदरे के० पामे ॥ १७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

इहां शिष्य प्रश्न पूछे छे जे हे स्वामी बीजा वली कांइ लिंग छे के तमे ए छ लिंग क्रियागत कह्यां तेटलांज छे. तेने गुरु उत्तर आपे छे जे भावगत लिंग जूदां छे ते तेरमी ढालमां कहे छे ए संबंधे आवी ढाल ते कहे छे.

॥ छट्ठी भावना मन धरो—ए देशी ॥

भाव श्रावकनां भावियें, हवे सत्तर भाव गत तेहोरे ।
नेहोरे, प्रभु तुझ वचने अविचल होजो ए ॥ १ ॥

अर्थ—हवे भावश्रावकना लिंग गणत्रीयें सत्तर छे ते भावगत छे ते कहियें छैयें, माटे हे प्रभु हे स्वयंबुद्ध तारा वचनने विषे चले नहीं एवो मुझने स्नेह होजो ॥ १ ॥

इत्थी चंचल चित्तथी, जे वाट नरकनी मोटीरे ।
खोटीरे, छांडे ए गुण धुरें गणो ए ॥ २ ॥

अर्थ—यतः—"१ इत्थि २ दिय ३ त्थ ४ संसार ५ विसय ६ आरंभ ७ गेह ८ दंसणओ, ९ गड्डरिगाइपवाहे । १० पुरस्सरं आगमपवित्ती ॥ १ ॥ ११ दाणाइ जहासत्ती, पवत्तणं १२ विहि १३ अरत्तदुट्ठेय । १४ मज्झत्थ १५ मसंबद्धे, १६ परत्थकामोवभोगी य ॥ २ ॥

१७ वेसा इव गिहवासं, पालइ सत्तरसपयनिवद्धं तु । भावगयभावसावगलखणमेयं समासेणं ॥ ३ ॥" ए सत्तर गुण कह्या तेमां पहेलुं लक्षण कहे छे इहां इच्छा चंचल चित्तथी एवुं लिपिदोषे घणी प्रतोमा लखायुं छे तेथी पूर्व टवाकारें इच्छा एवो अर्थ कर्यो छे पण ते निर्मूल छे माटे उवेख्यो छे अत्रार्थे धर्मरत्न ग्रंथ जोइने निश्चय करवो. इत्थी के०स्त्री केवी छे जे चित्तथी चंचल के० चपल छे एटले अन्य अन्य पुरुषनी इच्छा करनारी छे वली वाट नरकनी मोटी के० मोटी नरकनी वाट छे एटले नरके जवानो मार्ग छे ते खोटीरे के० हीणी वाट छे माटे स्त्रीने एवी जाणीने मूके ए गुण धुरें गणो के०पहेलो संख्यामां गणो ॥२॥.

इंद्रिय चपल तुरंगने, जे रुंधे ज्ञाननी राशेंरे ।
पासेंरे, ते बीजो गुण श्रावक धरे ए ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे इंद्रिय जे पांच शास्त्रोक्त स्वरूप तद्रूप जे चपल के० शीघ्रगामीपणा माटे दुर्गतिने सन्मुख चालता एहवा जे तुरंग के० घोडा तेने जे ज्ञानरूप राशें के० रासडीयें करीने रुंधे के० रोकी राखे ए बीजो गुण ते श्रावक पोता पासे धरे. यतः–"इंदियचवलतुरंगे, दुग्गइमग्गाणुधाविरे निच्चं । भावियभवस्सरूवो, रुंभइ सन्नाणरस्सीहिं ॥ १ ॥" ॥ ३ ॥

क्लेशतणुं कारण घणुं, जे अर्थ असारज जाणेरे ।
आणेरे, ते त्रीजो गुण निज संनिधि ए ॥ ४ ॥

अर्थ–जे घणुं के० अत्यंत क्लेशनुं कारण एवो जे अर्थ के० द्रव्य तेने असारज जाणे ए त्रीजो गुण निज संनिधि के० पोतानी पासे आणे के० लावे । ४ ॥

भवविडंबनामय अछे, वली दुःखरूपी दुःख हेतोरे ।
चेतोरे, एम चोथो गुण अंगी करे ए ॥ ५ ॥

अर्थ–भव के० जे संसार ते केवो छे जे विटंबनामयी छे वली जन्म, जरा, मरण, रोग, शोकादिक दु खरूपी छे वली जन्मांतरे नरकादिक दुःखनो हेतु छे एम दुःखनीज परंपरा आपे ते चेतो के० जाणो ए चोथो गुण श्रावक अंगीकार करे ॥ ५ ॥

खीण सुख विषय विषोपमा, एम जाणी नवी बहु इहेरे ।
बीहेरे, तेथी पंचम गुण वर्यो ए ॥ ६ ॥

अर्थ–हवे विषय केवा छे जे क्षणिक सुख छे ते पण विषोपमा के० कालकूट सरिखा छे परिणामे दारुण छे एवा विषय जाणीने तेने बहु के० अत्यंतपणे नवी इहे के० न वांछे अने ते विषयने असार जाणे छे माटे तेथी बीहे के० बीतो रहे ए पंचमगुणने वर्योथको शोभे ॥ ६ ॥

तीव्रारंभ तजे सदा, गुण छठानो संभागीरे ।
रागीरे, निरारंभ जननो घणुं ए ॥ ७ ॥

अर्थ–हवे तीव्रारंभ के० घणा प्राणीने पीडाकारी जे खर कर्मादिक व्यापार तेने सदा तजे कदाचित् करे तो सशोकथको करे पण निःशोकथको न करे ते छट्ठा गुणनो संभागी के० भजनारो थाय यद्यपि पण अणचालते कांइक आरंभ पोते सशोकथको करे छे पण रागी तो निरारंभ के० आरंभरहित जे जन के० लोक ते मुनिराजनो होय घणो के० अत्यंत होय ॥ ७ ॥

माने सत्तम गुण वर्यो, जन पास सदृश गृहवासोरे ।
अभ्यासोरे, मोह जितवानो करे ए ॥ ८ ॥

अर्थ–हवे सातमो गेहनामा गुण वखाणे छे ते सातमो गुण वरयोथको माने के० जाणे ते जन के० प्राणी घरवासने पास सदृश के० बंधन सरिखो माने जेम पक्षी पासमां पड्यो उडी न शके अने पोताना आत्माने दुःखी माने एम गृह मातापितादिक संबंधे दीक्षा लेइ न शके पण दुःख माने अने ते प्राणी अभ्यास तो मोहने जितवानोज करे ॥ ८ ॥

अट्टम दंसण गुणभर्यो, बहु भांतें करे गुरु भक्तिरे ।
शक्तिरे, निज सद्दहणानी फोरवे ए ॥ ९ ॥

अर्थ–आठमो दर्शननामा गुणे भर्यो थको गुरु जे धर्माचार्य जेनाथी समकित पाम्यो ते गुरुनी भक्ति बहुभांतें करे अने पोतानी श्रद्धानी शक्ति फोरवे एटले ए भाव जे आस्तिक्यभाव सहित अने अतिचाररहित दर्शनने धरतो शक्तियें प्रभावना तथा वर्णवाद बुद्धिवंत करे. यतः–" अत्थिक्कभावकलिओ, पभावणावन्नवायमाईहिं । गुरुभत्तिजुओ धीमं, धरेइ इय दंसणं विमलं ॥ १ ॥ " ॥ ९ ॥

लोकसन्नाहवि परिहरे, जाणे गाडरिओ परवाहोरे ।
लाहोरे, एम नवमा गुणनो संपजे ए ॥ १० ॥

अर्थ–हवे गाडरीक प्रवाहनामा नवमो भेद वखाणे छे ते लोकसन्नाह के० अविचारित रमणीक तेने परिहरे के० त्यजे अने लोकनी चाल ते गाडरिआ प्रवाह जेवी छे जेम एक गाडरनी पछवाडे बीजुं गाडर चाले उपलक्षणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाह पण कहेवो ते जेम अविचारित छे तेम लोकप्रवाह पण तेवो छे ते माटे वर्जे एम नवमा गुणनो लाहो नीपजे ॥ १० ॥

आगमनें आगल करे, ते विण कुण मारग साखीरे ।
भाषीरे, एम किरिया दशमा गुण थकीए ॥ ११ ॥

अर्थ—हवे दशमो आगमनामा भेद वखाणे छे जे कार्य करे ते आगमने आगल करीने करे एम विचारेजे आगम विना जे परलोक साधवानो मार्ग तेनो कोण साखी एटले वीतरागना आगममांज एवा मार्ग होय भाषी के० एवुं कहीने ए रीतनी क्रिया करे एटले ए भाव जे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूप क्रिया जिनागम तथ्य जाणीने आगमोक्त क्रिया करे ए देववंदनादिक क्रियानो विस्तार धर्मरत्नमां जोइ लेवो ए दशमा गुण थकी क्रिया पामे ॥ ११ ॥

आप अबाधायें करे, दानादिक चार शक्तिरे।
व्यक्तिरे, एम आवे गुण इग्यारमो ए ॥ १२ ॥

अर्थ—हवे दानादिक यथाशक्तियें करे ए अग्यारमो भेद कहे छे आप अबाधायें के० पोताने पीडा न उपजे तेम दानादिक चारे करे जो द्रव्यपात्र होय तो देतो थको थाकेज नहीं अने जो अल्प द्रव्यवान होय तो अति उदार न थाय. उक्तंच—" लाभोचियदाणे, लाभोचियभोयणे। लाभोचियपरिभावे, लाभोचियनिहिकरे सिया ॥१॥ " इत्यादिक एम थोडे काले घणुं आपी शके तेमज शील तप भावनाने विषे पण यथाशक्ति प्रवर्त्ते एम व्यक्ति के० प्रगटपणे अग्यारमो गुण श्रावकने आवे ॥ १२ ॥

चिंतामणि सरिखो लही, नवि मुग्ध हस्यो पण लाजेरे ।
गाजेरे, निज धर्मे ए गुण बारमो ए ॥ १३ ॥

अर्थ—हवे निर्व्रीक नामा बारमो गुण कहे छे. चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानो धर्म लही के० पामीने जे मुग्ध के० मूर्ख लोक तेणे हस्यो थको पण नवि लाजे के० न लाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजे नहीं गाजेरे के० उत्सुक होय हर्षवंत होय निज धर्मे के० पोताना धर्मने विषे ए बारमो गुण जाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमां चिंतामणिरत्नसरिखी क्रिया करतो न लाजे एम कह्युं छे तो इहां चिंतामणिरत्नसरिखो धर्म कह्यो तेमां कांइ विरुद्ध नथी केमके क्रिया ने धर्म कांइ जूदां नथी ॥ १३ ॥

धन भवनादिक भावमां, जेम नवि रागी नवि द्वेषीरे।
समपेषीरे, ते विलसे गुण तेरमे ए ॥ १४ ॥

अर्थ—हवे तेरमो अरक्तद्विष्ट नामा भेद वखाणे छे. शरीरनी स्थिति हेतु छे धन भवन आदि शब्दथी स्वजन, आहार, घर, क्षेत्र, कलत्र, वस्त्र, शस्त्र, यान, वाहन इत्यादिक लेवां. ते पदार्थमां रहेतो थको पण नवि रागी नवि द्वेषी के० राग द्वेष रहितनी पेठे होय एटले मंद आदर होय अन्यथा राग द्वेष रहित तो उपले गुणठाणे होय ते इहां केम घटे अने समपेषी के० मध्यभावनो जोनारो होयजे माटे भावश्रावक एम भावे. यतः—"नय अत्थि कोइ सयणो, न शरीरं नेव भोगउवभोगा। जीवो अन्नभवगइं, गच्छइ सव्वंपि मुत्तूणं ॥१॥"

इत्यादि अविनित लोक उपर द्वेष पण न करे ते श्रावक तेरमा गुणने विलसे ॥ १४ ॥

राग द्वेष मध्यस्थनो, समगुण चउदमे न बाधेरे।
साधेरे, ते हठ छांडी मारग भलो ए ॥ १५ ॥

अर्थ–हवे चउदमो मध्यस्थ नामा गुण वखाणे छे. राग द्वेष मध्यस्थनो के० राग द्वेषमां तणाय नहीं तेमां मध्यस्थपणुं राखे ए राग द्वेष मध्यस्थनो समगुण कहियें एटले ए भाव जे परमार्थ विचार करे जे में मत लीधो ते केम मूकुं अथवा अमुक मारो मत खंडेछे तेने खंडुं एवां राग द्वेष न करे ते प्राणी चौदमा गुणने विषे बाधा न पामे एटले समगुणी पीडाय नहीं ते प्राणी पोतानो हठ के० कदाग्रह छांडीने भलो मार्ग साधे एटले परने तथा पोताने हित वांछक थको कदाग्रह मूकी मध्यस्थ गीतार्थ गुरुने वचने प्रदेशी राजानी पेठे प्रवर्त्ते एटले तेरमा गुणमां धन भवनादिकमां मंद आदर होय अने चौदमा गुणमां धर्ममां कदाग्रह मूके सम्यक् अंगीकार करे ॥ १५ ॥

क्षणभंगुरता भावतो, गुण पन्नरमे सेवंतोरे।
संतोरे, न धनादि संगति करे ए ॥ १६ ॥

अर्थ–हवे असंबंध नामा पन्नरमो भेद वखाणे छे. क्षणभंगुरता भावतो के० सर्व पदार्थ क्षणभंगुर छे अनित्य छे तन मन स्वजन जीवित द्रव्य प्रमुख ए सर्व अनित्य छे एम विचारतो पंन्नरमा गुणने विषे संतो के० सज्जन पुरुषोने सेवंतो के० सेवे न धनादि संगति करे के० धन प्रमुखनी संगत न करे एम विचारे. यतः–"चिच्चा दुपयं चउप्पयं च खित्तं गीहं धणधन्नं च सव्वं। स कम्मप्पवीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुंदर पावगं वा ॥१॥" ॥ १६ ॥

भाव विरति सेवे मनें, भोगादिक पर अनुरोधेरे।
बोधेरे, एम उल्लसे गुण सोलमें ए ॥ १७ ॥

अर्थ–हवे सोलमो परार्थकाम भोगोपभोगी नामा भेद कहे छे. भव जे संसारने विषे विरक्त मन थको भोगादिकने सेवे ते पण परअनुरोधे के० परना दाक्षिण्यादिकें सेवे बोधेरे के० एवाउदासीन ज्ञाने करी सोलमो गुण उल्लास पामे ॥ १७ ॥

आज काल ए छांडिसु, एम वेश्यापरें निसनेहोरे।
गेहोरे, पर माने गुण सत्तरमें ए ॥ १८ ॥

अर्थ–हवे सत्तरमो वेश्यानी पेठे घरवास पाले ए भेद वखाणे छे. जे ए घरवास छे ते आज छांडिशुं अथवा काले छांडिशुं एम वेश्यानी पेठे निस्नेही रहे जेम वेश्या निर्धन देखी विचारे जे हवे आज अथवा काले छाडुं छुं एम विचारे तेम गृहस्थ पण आस्था प्रमुख विना घरमां वसे पण घरने पर करी माने ए सत्तरमे गुणे देशविरतिना अनेक भेद छे माटे नानाभिप्रायवंत होय ते माटे पुनरुक्त दोष कोइ भेदमां न जाणवो ॥ १८ ॥

ए गुणवृंदे जे भर्या, ते श्रावक कहियें भावेंरे।
पावेरे, सुजशपूर तुझ भक्तिथी ए ॥ १९ ॥

अर्थ—ए गुणना वृंद के० समूह तेणे करी जे भरया छे ते भावें के० भावथी श्रावक कहियें. यतः—" इय सत्तरसगुणजुत्तो, जिणागमे भावसावगो भणियो। " इति वचनात्. ते पावे के० पामे सुजश पूर के० भला जशनो पूर पामे तुझ भक्तिथी के० हे वीतराग हे चिदानंदस्वरूपी तारी भक्ति थकी पामे एटले तारी आज्ञायें भावश्रावकपणुं पालवुं ते तारी भक्तिज छे ॥ १९ ॥

॥ ढाळ चउदमी ॥

तेरमी ढाल मध्ये भावश्रावकनुं लक्षण कह्युं ते भावश्रावक जे होय ते द्रव्यसाधु कहियें अने जे द्रव्यसाधु होय ते भाव साधुपणुं पामे ते माटे हवे भावसाधुनां लक्षण चउदमी ढालमां कहे छे.

ते भावसाधुपणुं लहे, जे भावश्रावक सार; तेहनां लक्षण सात छे।
सवि जाणे हो तुं गुणभंडार, साहेबजी साची ताहरी वाणी ॥ १ ॥

अर्थ—जे सार के० प्रधानभाव श्रावक पूर्वें कह्या ते भाव साधुपणुं पामे तेनां वली सात लक्षण छे ते हे ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य सुख दान लाभ भोग उपभोगादिक गुणना भंडार एवा हे परमेश्वर तमे सर्व जाणो छो केवलज्ञान केवलदर्शने करी षट्द्रव्यनुं भासन थाय छे ते माटे हे साहेबजी तमारी वाणी ते साची छे सत्य छे एटले ए भाव जे आचार्य परंपरा तथा जीतआचार तथा प्रकरणादिकमां जे भाव कह्या छे ते तमारीज वाणी छे पण कोइनी कल्पित नथी ॥ १ ॥

किरिया मारग अनुसारणी, श्रद्धा प्रवर अविवाद; रुजुभावे
पन्नवणिज्जता। किरियामां हो नित्यें अप्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ—हवे सात लक्षण कहे छे सर्व क्रिया प्रत्युपेक्षणादि ते मार्गानुसारणी जे मोक्षमार्गने अनुजायी चेष्टा होय ते प्रथम लक्षण तथा धर्मने विषे श्रद्धा के० करवानी इच्छा प्रवर के० प्रधान अविवाद के० विवादरहित ते बीजुं लक्षण अने पन्नवणिज्जता के० प्रज्ञापनीयपणुं एटले परुपणा करवी ते ऋजुभावें के० सरल भावें एटले तेनी परुपणा ते असदभिनिवेश कदाग्रहें न होय ए त्रीजुं लक्षण वली क्रिया जे शुभहित अनुष्ठान तेने विषे निरंतर अप्रमादी होय पण शिथिल न होय ए चोथुं लक्षण ॥ २ ॥

निज शक्ति सारुं काजनो, आरंभ गुण अनुराग; आराधना
गुरु आणनी । जेहथी लहियें हो भवजल ताग ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ—तथा पोतानी शक्ति प्रमाणे तप संयमादिक कार्यनो प्रारंभ करे पण शक्तिने ओ- लंघी तपस्या प्रमुख न करे ए पांचमुं लक्षण अने गुण अनुराग के० गुणीनो पक्षपात होय ए छठुं लक्षण तथा गुरुआज्ञानुं आराधवुं तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवुं गुरुनी आणाथी संसार- समुद्रनो पार लहियें के० पामियें ए सातमु लक्षण ॥ ३ ॥

मार्ग समयनी थिति तथा, संविज्ञ बुधनी नीति ।
ए दोई अनुसारें क्रिया, जे पाले हो ते न लहे भीति ॥सा०॥४॥

अर्थ—हवे उपर कहेला सात भेदमांथी मार्गानुसारिणी क्रिया नामें प्रथम भेद वखाणे छे मार्ग के० समयनी स्थिति एटले आगमनी मर्यादा ते आगम केने कहियें. उक्तंच— "आगमोह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षयाद्विदुः । वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रूयाद्धेत्वसंभवात् ॥१॥" ते आगमनी स्थिति उत्सर्ग अपवादरूप शुद्ध संयमनो उपाय ते मार्ग कहियें अथवा जे संविज्ञ बुधनी नीति के० संविज्ञ जे मोक्षाभिलाषी अने बुध ते गीतार्थ इहां बहुपद अधिकुं कहियें ते वारे एम कहेवुं जे संविज्ञ बहुगीतार्थनी नीति के० जे आचरण क्रियारूप तेने पण मार्ग कहियें ए दोई के० बे अर्थ मार्गना कह्या तेवा मार्गने अनुसारिणी जे क्रिया आगमनी अ- बाधायें संविज्ञ व्यवहाररूप ते मार्गानुसारिणी क्रिया कहियें एवी क्रिया जे पाले तेने भीति के० संसारनी बीक न लहे के० कदापि न पामे. इति गाथार्थ. हवे संविज्ञ गीतार्थनी नीति एना पदच्छेद करियें छैयें संविज्ञ पद कह्युं ते असंविज्ञपणुं टालवा माटे कह्युं तो ते घणा असंविज्ञ मलीने जे आचर्यो होय तोपण प्रमाण न थाय यदुक्तव्यवहारः—"जं जीयमसोहिकरं, पासत्थपमत्तसंजयाईहिं । बहुएहिं वि आयरियं, न पमाणं सुद्धचरणाणं ॥१॥" इहां बहु गीतार्थ पद मूक्युं तेनुं कारण ए जे एक गीतार्थें आचर्युं होय ते कदाचित् अनाभोगें अनव बोधादिक कारणे विपरीतपणे आचर्युं होय ते पण प्रमाण न थाय ते माटे बहु गीतार्थपद मूक्युं तो ते बहु गीतार्थ जे आचरे ते अवितथ होय इहां कोइ प्रश्न करे जे आगममार्ग कहेवो ते तो युक्त छे पण बहुजनाचरण कहेवुं युक्त नथी केमके घणा लोकोयें तो लौकिक मार्ग आचर्यो होय माटे आगम ते तो प्रमाण पण घणा लोकोनुं आचरण प्रमाण नहीं वली आगम ते ज्येष्ठ छे बहुजन आचरण ते अनुज्येष्ठ छे अने लौकिकमां पण ज्येष्ठने मूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्त नथी तेमज आगम तो केवली पण अप्रमाण नकरे. यतः—"आहासु- ओवउत्तो, सुअनाणी जइवि गिण्हइ असुद्धं । तं केवलीवि भुंजइ, अपमाणं सुअं भवे इहरा ॥१॥" तथा आगम छतां जो आचरणा प्रमाण करियें तो आगमनी लघुता थाय हवे गुरु उत्तर कहे छे जे संविज्ञ गीतार्थ छे ते आगमनी अपेक्षा विना आचरेज नहीं ते शुं आचरे नहीं तथा शुं आचरे ते कहे छे. यतः—" दोसा जेण निरुज्झंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।

सो सां मुक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥१॥" इत्यादिक आगम वचन संभारी द्रव्य क्षेत्र काल भाव पुरुषादिक उचित जोइ संयमने वृद्धिकारीज आचरे ते बीजा संविज्ञ गीतार्थ पण अंगीकार करे ते मार्ग कहियें अने बीजा बहु लोके आचर्युं ते तो असंविज्ञ अगीतार्थ माटे अप्रमाण छे वली आचरणा प्रमाण करतां आगम तो अत्यंत प्रतिष्ठा पामे छे श्रीठाणांग सूत्रमां पांच प्रकारना व्यवहार प्ररुप्या छे. उक्तं च-"पंचविहे ववहारे पन्नत्ते तंजहा-आगमववहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जीयववहारे" इहां जीत अने आचरणा ते एकज अर्थ छे ते माटे आचरणा मानतां अत्यंतपणे आगम मान्युं तो आगम अविरोध जे आचरणा ते प्रमाणज छे ॥ ४ ॥

सूत्रे भण्युं पण अन्यथा, जूदुंज बहुगुण जाण ।
संविज्ञ विबुधे आचर्युं, कांइ दिजे हो कालादि प्रमाण ॥सा० ॥५॥

अर्थ-वली एज वात कहे ते सूत्रे भण्युं के० आगमने विषे कह्युं छे तोपण अन्यथा के० हेरफेर करीने बहुगुण जाण के० तेमां घणो गुण जाणीने संविज्ञ गीतार्थ लोके जे आचरण कर्युं तेवी केटलीक वातो दीसे छे पण ते शुं जाणी आचर्युं ते कहे छे जे कालादि प्रमाण के० दुःखमादि काल प्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचर्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुं धरवुं झोलिका, भाजने दवरक दान ।
तिथि पजूसणनी पालटी, भोजन विधि हो इत्यादि प्रमाण ॥ सा० ६॥

अर्थ-वली तेज देखाडे छे कल्पनुं धरवुं के० पूर्वे कल्प जे कपडो ते कारणे ओढता तथा गोचरी प्रमुखने विषे वालीने खंधे मूकी चालता ए आगमनो आचार हतो अने हवे तो गोचरी प्रमुखने विषे पांगरीने जाउं तथा चोलपट्ट प्रमुख पण समजवा पूर्वे कुणीयें राखता हमणा कंदोरे राखियें छेयें तथा पूर्वे झोलिका के० झोली मुठीयें झाली ग्रंथी कुणीयें ठुंकडी बांधता अने हमणां हाथमां झालियें छेयें उपलक्षणथी उपग्राहक कटासणुं संथारीओ दंडासणादिक लेवां तथा तरपणी प्रमुखने विषे दोरा लेवा एम सीकी दोरानो झोलीना आधार विशेष इत्यादिक वली पात्रे लेप देवा तथा पजूसणनी तिथि जे पांचम तेनी चोथ करी उपलक्षणथी चोमासा पुनमनां टाली चउदशना कर्यां तथा भोजनविधि प्रमुख शास्त्रोक्त विना पण आचरित प्रमाण छे भोजनविधि ते मांडलीयें बेसवुं वेंची देवुं इत्यादिक तथा च व्यवहार भाष्ये-"सत्थपरिन्ना छक्काय संयमो पिंड उत्तरज्झाए । रुक्खे वसहे गोवे, जोहे सोही य पुक्खरिणी ॥१॥" एनो लेशथी अर्थ करे छे जे पूर्वे शास्त्रपरिज्ञा अध्ययन सूत्रार्थ भणे के० साधुने उठावणा करता हता अने हमणां दशवैकालिकनुं चोथुं अध्ययन भणे थके उठावणा थाय छे तथा पूर्वे पिंडेषणाध्ययन भण्या पछी उत्तराध्ययन भणावता हमणां वगर भणे पण भणावियें छेयें तिहां दृष्टांत कहे छे पूर्वे कल्पवृक्ष हता हमणां आंबा प्रमुखें काम चालेछे पूर्वे अतुल्य बल धवल वृषभ हता हमणां धुसरेंज काम चाले छे पूर्वे गोप जे करषणी

ते चक्रवर्तिने तेज दिवसे धान्य नीपजावी देता हता आज ते विना पण काम चाले छे तथा पूर्वे सहस्त्रयोधी हता हमणा अल्प पराक्रमी सुभटोथी पण शत्रुनो पराजय करी राज्य पाळे छे तेम साधु हमणां जीतव्यवहारे पण संयम पाळे छे तथा षटमासनुं प्रायश्चित्त होय तेने हमणां पांच उपवास कह्या छे तथा पूर्वे महोटी पुष्करिणीओ हती हमणां नानी छे तेथी काम चाले छे इत्यादिक दृष्टांते जीतव्यवहार पण जाणवो अथवा किं बहुना "जं सव्वहा न सुत्ते, पडिसिद्धं नेव जीववहहेउ । तं सव्वंपि पमाणं, चारित्तधणाणं भणियं च ॥१॥ अवलंबिऊण कज्जं, जं किंचि समायरंति गीयत्था । थोवावराहबहुगुणं, सव्वेसिं तं पमाणं तु ॥२॥" इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीयें आचर्युं ते दुर्बलिका पुष्पमित्रजीयें अंगीकार कर्युं तेमज सुविहीते जे आचर्युं ते सर्व कबूल करे ॥ ६ ॥

व्यवहार पांचे भाषीया, अनुक्रमें जेह प्रधान ।
आज तो तेमां जीत छे, ते तजियें हो केम वगर निदान ॥ सा० ॥७॥

अर्थ—ते माटेज कहे छे जे पांच व्यवहार कह्या छे तथा अनुक्रमें जे प्रधान होय ते आदरवो. यदुक्तं—"कइविहेणं भंते! ववहारे पणत्ते? गोयमा! पंचविहे ववहारे पन्नते तंजहा—आगमे सुए आणा धारणा जीए, जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा । णोय से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा २ । णोय से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा ३ । णोय से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा ४ । णोय से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ५ । इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा तंजहा—आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं । जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा । से किमाहु भंते! आगमबलिया समणा निग्गंथा इच्चेयं पंचविहं ववहारं जदा जदा जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं अणिसितोवस्सयं सम्मं ववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहए भवइ" इति भगवतिसूत्रे शतक आठमे उद्देशे आठमें कह्युं छे. आज तो ते पांच व्यवहारमां जीतव्यवहार मुख्य छे जीतव्यवहारेज काम चालेछे ते जीतव्यवहार वगर निदान के० कोइ पण कारण विना केम त्यजियें एटले जीतव्यवहार जे आचार्ये बांध्यो ते प्रमाण छे ॥ ७ ॥

श्रावक ममत्व अशुद्ध वली, उपकरण वसति आहार ।
सुख शील जे जन ते आचरे, नवि धरियें हो चित्त लगार ॥ सा० ८ ॥

अर्थ—हवे एवी आचरणा ते अप्रमाण छे केमके सिद्धांतमां ना कही छे जे श्रावकनुं ममत्व न करवुं. यतः—"गामे वा कुले वा नगरे वा देसे वा ममत्तं भावं न कहिंचि कुज्जा" इत्यादि श्रावकनुं ममत्व करे ते अप्रमाण छे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहार प्रमुख लेवानी आगममां ना कही छे अने जो लीये तो ते आचार अप्रमाण छे. यतः आगमे—"पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पाय मेव य । अकप्पियं न इच्छिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥१॥"

इति उपलक्षणथी वस्त्र पात्रादिक पण एम जाणवां माटे सुखशील लोके जे आचर्युं एटले पोताना शरीरनी शोभाने अर्थे जे आचर्या ते अप्रमाण वाकी दुर्भिक्षादिक कारणे तो कांइ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोष छे. यतः पिंडनिर्युक्तौ–"एसो आहारविही, जह भणिओ सव्व-भावदंसीहि । धम्मावस्सगजोगा । जेण न हायंति तं कुज्जा ॥१॥" तथा - "कारणपडिसेवा-पुण, भावेणासेवणत्ति दट्ठव्वा । आणाइतीइ भावे, सो सुद्धो मुक्खहेउत्ति ॥२॥" इत्यादि-वली उव्ववाइसूत्रे शुद्धेसणीए एवा अभिग्रह मुनियें कर्या तेथी जाणीये छैयें जे पूर्वे अशुद्ध पण कोइक कारणे लेता दीसे छे ए अपवाद तो प्रमाण छे पण सुशील लोके जे आचर्युं ते चित्तमां लगार पण न धरियें एटले ए भाव जे दुप्पसह आचार्य लगें तो चारित्र सिद्धांतमां सांभलियें छैयें अने जो मार्गानुसारी क्रिया कही ते रीते यत्न करता होय तेने चारित्रीया न मानियें तो एथी वीजा चारित्रीया तो देखाता नथी ते वारे चारित्र विच्छेद गयो एम ठर्युं तो ते चारित्र विना तीर्थ पण विच्छेद गयुं एम ठर्युं एम करतां तो आगम विरुद्ध थाय छे. यतः व्यवहारभाष्ये–"जो भणइ नत्थि धम्मो, नय सामाइयं न चेव य वयाइं। सो समण-संघवज्झो, कायव्वो समणसंघेण ॥१॥" इत्यादि वचने तो मार्गानुसारी क्रियानो करनार ते भावसाधु छे एम ठर्युं ए प्रथम क्रियानामा भेद थयो ॥ ८ ॥

विधि सेवना अवितृप्ति शुभ, देशना खलित विशुद्धि ।
श्रद्धा धर्म इच्छा घणी, चउ भेदें हो एम जाणे सुबुद्धि ॥सा० ॥९॥

अर्थ–हवे वीजुं लिंग श्रद्धाप्रवरनामा कहे छे तेना भेद चार छे ते कहे छे–१ विधि-सेवना २ अवितृप्ति के० अतृप्ति ३ शुभदेशना के० शुद्ध देशना ४ खलित परिशुद्धिनामा चोथुं लिंग. ते श्रद्धाप्रवरनो अर्थ कहे छे श्रद्धा के० धर्मनी इच्छा घणी के० अत्यंत होय पण वालकने रत्न ग्रहवानी अभिलाषानी पेठे सामान्यपणे विषयप्रति भास मात्र न होय ते एम उपर कहेला चार भेदे ए लिंग होय ते सुबुद्धि के० बुद्धिवंत होय ते जाणे ॥९॥

दृढ राग छे शुभभोज्यमां, जेम सेवतायें विरुद्ध ।
आपदामां रस जाणने, तेम मुनिने हो चरण ते शुध्ध ॥ सा० ॥१०॥

अर्थ–हवे ए श्रद्धाप्रवरना चार भेदमां प्रथम विधिसेवना नामे भेद ओलखावे छे जे शक्तिवत होय ते श्रद्धावंत थको विधि प्रधान शक्तिवंत प्रत्युपेक्षणादिक क्रिया करे अने जे शक्तिरहित होय ते द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावे करी जो तादृश क्रिया करी न शके तोपण प्रतिबंध ते विधि अनुष्ठानने विषेज होय. यतः–"विहिसारं चिय सेवइ, सद्धालू सत्तिमं अणुट्ठाणं । दव्वाइदोसनिहओवि, पक्खवायं वहइ तंमि ॥१॥" इहां कोइ पूछे जे शक्तिरहित जे होय ते अनुष्ठान न करे अने विधि अनुष्ठानमां पक्षपाति केम होय तेने अन्वय सहित गाथाना अर्थथी कहे छे. जेम कोइक पुरुष होय ते दुकाल अथवा दरिद्रपणुं पाम्यो तो ते पुरुष गवार अरणीपत्र तथा वृक्षनी छाल प्रमुख खाइने दिवस व्यतिक्रमे पण तेवा भोजनमां

लपटाय नहीं केमके पोते उत्तम आहारनो स्वाद जाणे छे तेथी तेनो राग तो उत्तम भोजनमांज होय छे जे उत्तम भोजन वखारे मळशे ते मळे तो वावरियें एवो अत्यंत राग होय हवे अक्षरार्थ कहे छे जे शुभ भोज्यमां दृढ राग छे तथा रसनो जाण ते केम जे पूर्वे पटरस वावरया छे ते स्वादनो जाण छे ते आपदामां के० दुकालादिक आपदामां विरुद्ध सेवतो एटले कुधान्य खातो थको पण तेनो राग सुधान्यमां होय ए दृष्टांते मुनिने पण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपि द्रव्य क्षेत्रादिक कारण पामीने विरुद्ध सेवे तोपण शुद्ध चारित्रनो रसिओ छे तेथी भावचारित्रने ओलंगे नहीं तेने भावथी चारित्रीयाज संगमाचार्यनी पेठे कहियें इत्यादिक बहु वक्तव्यता छे इति प्रथम भेदः ॥ १० ॥

जेम तृप्ति जग पामे नहीं, धनहीन लेतो रत्न ।
तप विनय वैयावच्च प्रमुख, तेम करतो हो मुनिवर बहु यत्न ॥ सा०११ ॥

अर्थ—हवे अतृप्तिनामा बीजुं लक्षण कहे छे जेम धनहीन के० दरिद्री होय तेने रत्ननो ढगलो मळ्यो तेवारें ते रत्न लेतां जगतमां तृप्ति के० संतोष पामेज नहीं तेम मुनि पण तप विनय वैयावच्च तथा प्रमुख शब्दे ज्ञान चारित्र तेहने विषे घणो यत्न करे यत्न करतो थाकेज नहीं तृप्ति पामेज नहीं तेमां तप करतांथकां तो निर्ज्जरा थाय तथा शासन दीपे ते प्रसिद्ध छे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पहेला अध्ययनथी जाणवो अने वैयावच पण निर्ज्जराने अर्थे अनेक प्रकारनुं करे ते प्रश्न व्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञान भणतां पण नवनवो वैराग उपजे. यतः—"जह जह सुयमवगाहइ, अइसयरसपसरसंजुयमउव्वं । तह तह पल्हाइ मुणी, नवनवसंवेगसद्धाए ॥ १ ॥" इत्यादि तथा चारित्रमां पण विशुद्ध विशुद्धतर संयम स्थानक पामवाने सर्व अनुष्ठान करे उत्तरोत्तर संयम कंडक आरोहतां अप्रमादपणे केवलज्ञानना लाभभणी थाय. यतः—"जोगे जोगे जिणसासणंमि, दुक्खक्खया पउंजंति । इक्किकंमि अणंता, वट्टंता केवली जाया ॥१॥" इत्यादि बीजो भेद कह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनी अनुज्ञा लेइने, जाणतो पात्र कुपात्र ।
तेम देशना शुद्धि दिए, जेम दीपे हो निज संयम गात्र ॥ सा०॥१२॥

अर्थ—हवे शुद्ध देशनानामा त्रीजुं लक्षण कहे छे गुरुनी अनुज्ञा के० आज्ञा लेइ तेमज शुद्ध देशना आपे ते पण पात्र कुपात्रने जाणतो थको जेम संयमरूप गात्र के० शरीर ते दीपे के० शोभे निज के० पोतानुं संयमरूप गात्र शोभे इत्यक्षरार्थ. एटले ए भाव जे सद्गुरु पासेथी सिद्धांतनो सार जाणी गीतार्थ थया होय तोपण गुरुनी आज्ञा लेइने पण पोतानी मेळे नहीं. पोते धन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूत देशना आपे पण पात्र कुपात्र ओलखीने देशना आपे ते पात्रना त्रण भेद छे. १ बाल २ मध्यम ३ बुद्ध. यतः—"बालः पश्यति लिंगं, मध्यमबुद्धिर्विचारयेत् वृत्तं । आगम तत्वं तु बुधः, परीक्षते सर्व यत्नेन ॥ १ ॥" इत्यादिक तेनी देशनानो विधि बीजा षोडशकथकी जाणवी इहां विस्तार थाय माटे नथी ।

लखता ते माटे जे पात्रने जेम उपगार थाय तेम ते पात्रने देशना आपे अन्यथा संसार वधारे इत्यादिक त्रीजुं लक्षण. ए त्रीजा लक्षणमां पात्रापात्र विचार प्रमुखनी चर्चा घणी छे ते धर्मरत्न ग्रंथथी जोजो जेम पोतानुं संयमगात्र शोभे ॥ १२ ॥

जे कदाचित लागे व्रतें, अतिचार पंक कलंक ।
आलोयणें ते शोधतां, मुनि धरे हो श्रद्धा निःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ–हवे खलित परिशुद्धिनामा चोथुं लक्षण कहे छे ते जे कदाचित व्रत पालतांथकां कोइ अतिचाररूप पंक के० कचरो तद्रूप कलंक जो व्रतने विषे अनाभोगे करी अतिचार लागे ते पण १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प ए त्रण रीते लागे अने चोथो आकुट्टिये तो माय चारित्रीयाने संभवेज नहीं ते आकुट्टि प्रमुखनुं स्वरूप कहे छे. यतः–" आउट्टिया उ तिव्वा, दप्पो पुण होइ वग्गणाईओ । विगहाइओ पमाओ, कप्पो पुण कारणे करणं ॥१॥" उपलक्षणथी अनेक प्रकारनी प्रतिसेवा छे ते सर्व एमां समाय ते प्रायश्चित्तादिक लेइने शुद्ध थाय ए रीते करतो मुनिराज निःशंकपणे श्रद्धा धारे ए चोथो भेद थयो ॥ १३ ॥

श्रद्धा थकी जे सर्व लहे, गंभीर आगम भाव ।
गुरुवचने पन्नवणिज्ज ते, आराधक हो होवे सरल स्वभाव ॥सा० १४॥

अर्थ–हवे बीजा लक्षणनो उपसंहार करतां त्रीजुं लक्षण कहे छे आखी गाथानो अर्थ भेलो लखियें छैयें १ विधि २ उद्यम ३ भय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तदुभय इत्यादिक आगमना जे गंभीर भाव छे ते श्रद्धाथकी सर्व जाणे जो ए सर्व भाव न जाणे तो जमालीनी पेठे मिथ्यात्वी थइ जाय ए बीजा लक्षणनो उपसंहार थयो. हवे त्रीजुं लक्षण कहे छे जे एवा भावनो जाण होय ते गुरुने वचने पन्नवणिज्ज के० प्रज्ञापनीय एटले परूपवा योग्य पदार्थनो सरल स्वभावे उपदेश करतो थको आराधक होय ए त्रीजुं लक्षण ॥

षटकाय घात प्रमत्तने, पडिलेहणादिक योग ।
जाणी पमादी नवि होए, किरियामां हो मुनि शुभ संयोग ॥सा०१५॥

अर्थ–हवे क्रियाने विषे अप्रमादनामा चोथुं लक्षण कहे छे प्रमत्त के० प्रमादीने पडिलेहणादिक योगवंतने पृथिव्यादिक छकायनो घात थाय छे एटले ए भाव जे उपयोगविना प्रमादी थको पडिलेहणादिक करतो छकायनो विराधक थाय अने उपयोगे करे तो आराधक थाय. यतः–"पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा । देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ १ ॥ पुढवीआउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सइतसाणं । पडिलेहणापमत्तो, छन्हंपि विराहओ होइ ॥ २ ॥ पुढवीआउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सइतसाणं । पडिलेहणाआउत्तो, छन्हंपि आराहओ होइ ॥३॥" इत्युत्तराध्ययनना छत्रीसमें अध्ययने माटे एवुं जाणी पडिलेहणादिक योगमां प्रमादी न होय प्रमाद करतां जैन दिक्षावंत पण आर्य-

मंगुनी पेठे संसार भमे माटे क्रियामां मुनिराज ते शुभ संयोग के० भला योगवंत होय भली क्रियानो संयोग करे आगममां अनेक प्रकारनी क्रिया कहीछे ते सर्व भली रीते करे ए चोथुं लिंग ॥ १५ ॥

जेम गुरु आर्य महागिरि, तेम उजमे बलवंत ।
बल अविषय नवी उजमें, शिवभूति हो जेम तरु हीलंत॥ सा० ॥१६॥

अर्थ—हवे शक्ति अनुष्ठाननामा पांचमुं लक्षण कहेछे ते जेम गुरु श्रीआर्य महागिरिजीयें उद्यम करयो तेम बलवंत थको उजमे० के० उजमाल थाय एटले ए भाव जे संघयण धृति प्रमाणे निरवाही शके ते क्रियानेज सुसाधु प्रारंभे पण प्रतिज्ञा भंग थाय तेवुं प्रारंभे नहीं बल अविषय के० जे क्रियामां पोतानुं बल न चाले तेमां उद्यम न करे अने करे तो उलटी खोट आवे. यतः—"सो हु तवो कायव्वो, जेण मणो मंगुलं न चिंतेई । जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न हायंति ॥ १ ॥" इति जेम शिवभूतियें शक्ति उलंघन करी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदा करवा लाग्यो ते रीते उत्तम साधु न करे इहां आर्यमहागिरि तथा शिवभूतिनो अधिकार धर्मरत्न ग्रंथमां लख्यो छे तेथी जाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनी संगति करे, चित्त धरत राग अनुराग ।
गुण लेश पण परनुं थुणे, निज देखे हो अवगुण वडभाग॥ सा० ॥१७॥

अर्थ—हवे छट्ठं गुणानुरागनामा भावसाधुनुं लिंग कहे छे जे एवा चारित्रीया होय ते गुणवंतनीज संगत करे अने पोताना चित्तने विषे गुणनोज अनुराग के० राग धरे. यतः—वयसमणधम्मसंयमवेयावच्चं च बंभगुत्तीओ । नाणाइतियं तवकोहनिग्गहाइंचरणमेयं ॥१॥" ए चरणसित्तरी कही तथा "पिंडविसोही समिई, भावणपडिमा य इंदियनिरोहो । पडिलेहणगुत्तीओ, अभिग्गहा चेव करणं तु ॥१॥" ए करणसित्तरी इत्यादिक गुणनो राग धरे अने श्रीकृष्णे जेम काला कुतराना दांत वखाण्या तेनी पेठे बीजामां गुणनो लेश होय ते पण स्तवे तथा निज के० पोताना अवगुण देखे वडभाग के० मोहोटा भागनो धणी जेम बे श्रावक काला देहेरामां पेठा तेम पोताना अवगुण देखे ॥ १७ ॥

गुरु चरण सेवा रत्त होइ, आराधतो गुरु आण ।
आचार सर्वना मूल गुरु, ते जाणे हो चतुर सुजाण॥ सा० ॥१८॥

अर्थ—हवे गुरुआणा आराधननामा सातमुं लक्षण कहेछे इहां कोइ पूछे जे भावसाधुनां लिंग शास्त्रांतरमां तो छ कह्यां छे. यतः—"मग्गाणुसारी सद्धो, पन्नवणिज्जो किरियावरो चेव । गुणरागी सक्कारंभसंगओ तहय चारित्ती ॥ १ ॥" ए छ गुण कह्या छे तो तमे सातमो गुण क्यांथी कहो छो तेने उत्तर कहे छे जे चौदसें चुमालीस प्रकरणरूप प्रसादने विषे सूत्रधार सरिखा श्रीहरिभद्रसूरि तेणे उपदेशपदनामा ग्रंथने विषे सातमुं लिंग पण कह्युं छे. तथा च

तत्सूत्रं—"एयं च अत्थि लक्खणमिमस्स निसेस मेव धम्मस्स। तह गुरुआणासंपाडणं च गमगं इइं लिंगं ॥१॥" इत्यलं विस्तरेण माटे सात कहियें छैयें हवे सातमा लक्षणनुं स्वरूप कहे छे गुरु जे छत्रीस छत्रीसी गुणे विराजमान तेना चरणनी सेवाने विषे रक्त होय तथा गुरु आदिकनी आज्ञा आराधतो थको वली ते साधु एम जाणे जे सर्व आचारनुं मूल ते गुरु छे गुरुथी सर्व प्रगट थाय ते चतुरसुजाण एम जाणे ए सातमो गुण कह्यो ॥ १८ ॥

ए सात गुण लक्षण वर्यो, जे भावसाधु उदार।
ते वरे सुखजश संपदा, तुजचरणे हो जश भक्ति अपार ॥ सा०॥१९॥

अर्थ—ए सात लक्षणने गुणे करी वर्यो थको एवो जे भावसाधु उदार के० प्रधान ते सुख जशनी संपदाने वरे के० पामे एटले उत्कृष्ट जे मोक्षसुख तेने तो ते वरे जे हे सर्वज्ञ केवलज्ञान भास्कर तमारा चरणने विषे जश के० जेने अपार भक्ति होय ते वरे ॥ १९ ॥



॥ ढाल पन्नरमी ॥

चौदमी ढालमां प्रथमथी मांडीने जेटली वात लखी छे ते सर्व धर्मरत्नसूत्र वृत्तिथी लखी छे पण ते ग्रंथमां विस्तार घणो छे ते जोइ लेजो ए चउदमी ढालमां साधुनां लक्षण कह्यां ते लक्षण कहेतां मुनिराज उपर बहुमान उपनुं ते बहुमानना हर्षे करी पन्नरमी ढाल मध्ये साधुना गुण वर्णन करे छे ए संबंधे पन्नरमी ढाल कहे छे.

॥ आज मारे एकादशीरे, नणदल मौन करी मुख रहीयें—ए देशी. ॥

धन्य ते मुनिवरारे, जे चाले समभावें।
भवसायर लीलाए उतरे, संयम किरिया नावें ॥ धन्य० १॥

अर्थ—जे मुनिमां प्रधान सरिखा समभावे चालनारा राग द्वेष रहितपणे विचरे ते मुनिराजने धन्य छे ते मुनि संयम जे चारित्र तेनी जे क्रिया तद्रूप नावें के० नावायें करीने भवसायर के० संसारसमुद्रनो लीलायें के० सेहेजमां पार उतरे छे ॥ १ ॥

भोग पंक तजी उपर बेठा, पंकज परें जे न्यारा ॥
सिंहपरें निज विक्रम शूरा, त्रिभुवन जन आधारा ॥ धन्य० २ ॥

अर्थ—भोग जे पंचेंद्रीना विषय तद्रूप जे पंक के० कचरो ते तजीने उपर बेठा के० अलगा रह्या अने पंकज के० कमलनी पेठे जे न्यारा छे एटले कमल ते कचराथी उपनो अने कचराथी न्यारो रहे तेम मुनिराज पण भोगरूप कचरामां उपना अने ते भोग छांडीने अलगा रह्या इतिभावः वली सिंहनी पेठे पोतानो विक्रम के० पराक्रम फोरववाने शूरवीर छे वली स्वर्ग मृत्यु ने पातालरूप जे त्रणभुवनना लोकने आधाररूप छे ॥ २ ॥

ज्ञानवंत ज्ञानीशुं मळता, तन मन वचने साचा ।
द्रव्य भाव सुधा जे भाषे, साची जिननी वाचा ॥ धन्य० ३ ॥

अर्थ–हवे स्याद्वाद शैली देखाडतां थकां मुनिराजनुं वर्णन करे छे. पोते ज्ञानवंत छे तथा ज्ञानी पुरुष साथे मळी रहे छे पण खेद धरता नथी. वली तन के० काया अने मन तथा वचने करी साचा छे पण जूठी प्रवृत्ति नथी. वली जे मुनि द्रव्यथी तथा भावथी सुधा भाषे के० सत्य बोले एटले द्रव्य ते षट् द्रव्यादिक अने भाव ते तेना पर्याय अथवा द्रव्यथी बाह्य वस्तु अने भावथी अभ्यंतर वस्तु ते सत्य कहे. इत्यादिक अनेक प्रकारे ते जिनेश्वरनी वाणी कहियें तेने साची कहे एटले शुद्ध परुपक होय. इतिभावः ॥ ३ ॥

मूल उत्तर गुण संग्रह करता, तजता भिक्षा दोषो ।
पग पग व्रत दूषण परिहरंता, करता संयम पोषो ॥ धन्य० ४ ॥

अर्थ–मूलगुण जे पंच महाव्रतादिक अने उत्तरगुण पिंडविशुद्ध्यादिक तेनो संग्रह करता के० राखता. वली भिक्षा जे गोचरी तेना बेंतालीश दोष तेने तजता के० छांडता. पग पग के० क्षणे क्षणे व्रतनां दूषण जे अतिचार तेने परिहरताथका ए रीते संयमने पोषे के० पुष्ट करता रहे छे ॥ ४ ॥

मोह प्रतें हणता नित आगम, भणता सद्गुरु पासें ।
दूषम कालें पण गुणवंता, वरते शुभ अभ्यासें ॥ धन्य० ५ ॥

अर्थ–तथा शुभ अध्यवसायें करी मोहरूप शत्रुने हणता तथा नित के० निरंतर आगम के० सिद्धांतने सद्गुरु पासेथी भणता एवा विषम काळे पंचम आरे पण गुणवंता पुरुष छे ते रुडे अभ्यासे वर्तेछे एटले पूर्वार्द्धमां ज्ञान कह्युं अने पश्चिमार्द्धमां क्रिया कही ॥५॥

छट्ठं गुणठाणुं भव अडवी, उलंघण जेणे लहिउं ।
तस सोभाग सकल मुख एके, केम करि जाए कहिउं ॥ धन्य०६॥

अर्थ–प्रमत्तनामा छट्ठुं गुणठाणुं ते केवुं छे? जे भवअटवी उलंघण के० संसाररूप अटवीनो पार पमाडनारुं छे ते जेणे लहिउं के० पुरुषे पाम्युं. यतः–"भवाटवीलंघनतुल्यमेतत्, प्रमत्तनाम क्रिययासमेतम् । गुणगणस्थानमसंख्यवृद्ध्या, प्रमादहानैः प्रवरं प्रभाप्त्या ॥ १ ॥" ते मुनिराजनुं समस्त सौभाग्य ते एके मुखे शी रीते कह्युं जाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानी परिणति जेहनी, न छीपे भव जंजाले ।
रहे शेलडी ढांकी राखी, केतो काल पराळें ॥ धन्य० ७ ॥

अर्थ–जे पुरुषने गुणठाणानी परिणति थइ होय एटले गुणठाणुं परगम्युं होय तेनी

परिणति भव जंजाळ के० संसार विटंबनामां छीपे नहीं के० छानी रहे नहीं. ते पुरुष संसारमां रह्योथको पण उदासीनज देखाय केनी पेठे जेम शेलडीने पराळे करी ढांकी राखी होय ते केटलोक काळ रहे. आगळ जतां अंकुरा फूटे त्यारे प्रगट थाय पण छानी न रहे ॥८॥

तेहवा गुण धरवा अणधीरा, जो पण सूधुं भाषी ।
जिनशासन शोभावे ते पण, सुधा संवेग पाखी ॥ धन्य० ८ ॥

अर्थ–ते मुनिराजना पूर्वोक्त गुण धरवाने जे अणधीरा के० असमर्थ होय एटले एवा गुण जे साधु धरी शके नहीं तोपण सूधुं भाषी के०शुद्ध परुपक होय अने देशना प्रमुख गुणे करीने जिनशासनने शोभावे तेने पण सुधा के० शुद्ध संवेगपक्षी कहीयें यतः–"संविग्गपक्खियाणं, लक्खणमेयं समासओ भणिअं । ओसन्नचरणकरणावि, जेण कम्मं विसोहंति ॥१॥ सुद्धं सुसाहुधम्मं, कहेइ निंदइ य निययमायारं । सुतवस्सियाण पुरओ, होइ सव्वोमराइणिओ ॥२॥" इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणा अनुमोदन कारण, गुणथी संयम किरिया ।
व्यवहारें रहिया ते फरसे, जे निश्चय नय दरिया ॥ धन्य० ९ ॥

अर्थ–सद्दहणा के० तत्वश्रद्धा अनुमोदन के० गुणवंतनी प्रशंसा करवी तथा कारण के० मोक्ष साध्यनां साधन इत्यादिक गुणथी के० पूर्वोक्त गुणे करीने जे व्यवहारमार्गे रह्या एवा जे पुरुष तेणे फरसे के० संयमक्रिया फरसीज एम जाणवुं केमके ते निश्चयनयरूप मतना समुद्र छे. यतः–"सद्दहणाजाणणणुमोयणकारणगुणा परेसिं जे ॥ णिच्छयववहारविऊ, तेसिं किरिया भवे भावा ॥१॥" इति संमतिवृत्तौ ॥ ९ ॥

दुःकरकारथकी पण अधिका, ज्ञान गुणे इम तेहो ।
धर्मदास गणी वचने लहियें, जेहने प्रवचन नेहो ॥ धन्य० १० ॥

अर्थ–दुःकरकारथकी के० दुख थाय एवा कष्टना करनारा होय अने अल्प आगमना धणी होय तो शा काम आवे तथा कष्टादिक थोडुं ओछुं होय अने ज्ञानी पुरुष होय तो ते ज्ञान गुणे करी कष्टना करनारथी अधिका कह्या छे एम धर्मदास गणीए उपदेशमाला मध्ये कह्युं छे यतः–"नाणाहिओ वरतरं, हीणोवि हु पवयणं पभावंतो । नय दुक्करं करंतो सुठुवि अप्पागमो पुरिसो ॥१॥" ॥ इति वचनात्. ते धर्मदासगणी केवा छे, जेने प्रवचन के० आगमने विषे घणो स्नेह हतो ॥ १० ॥

सुविहित गच्छ किरियानो धोरी, श्री हरिभद्र कहाय ।
एह भाव धरतो ते कारण, मुझ मन तेह सुहाय ॥ धन्य० ११ ॥

अर्थ–सुविहित के० भला आचारवंत गच्छ छे जेहनो वली क्रियावंतमां धोरी समान एवा श्री हरिभद्रसूरि १४४४ ग्रंथना कर्त्ता शास्त्रकारे कह्या छे ते एह भाव के० ए संवेग-

पक्षीना भावने धरनार हता ते कारणे मारा चित्तमां पण ते सुहाय छे गमे छे एटले ते संवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तियें क्रियावंत हता माटे मारा मनमां ते घणा गमेछे ॥११॥

संयमठाण विचारी जोतां, जो न लहे निज साखें ।
तो जूठुं बोलीने दुरमती, शुं साधे गुण पाखे ॥ धन्य० १२ ॥

अर्थ–वली संयमठाण के० संयमनां स्थानक असंख्याता छे ते विचारी जोतां के० विचारतां जो पोतानी साखें न लहे के० न देखे संयमनी वात तो मोहोटी छे ते आगमने मेले जुए तो पोतामां क्यांथी देखे तो जूठुं बोलीने संयम विना संयमी नाम धरावीने दुरमति के० हे दुष्टमतिना धणी गुणपाखे के० गुण विना शुं साधे छे टाली महेनत क्यां करे छे. यतः–"असंजए संजयमण्णमाणे, पावसमणेत्ति वुच्चइ" । इत्युत्तराध्ययन वचनात् ॥१२॥

नवि माया धर्मे नवि कहेवुं, परजननी अनुवृत्ति ।
धर्म वचन आगमसां कहियें, कपट रहित मन वृत्ति ॥ धन्य० १३ ॥

अर्थ–नवि मायाधर्मे के० धर्मने विषे माया नथी एटले माया करतां धर्म न होय वली परजननी अनुवृत्ति के० परना अनुजायीपणे अथवा परने आवर्जनअर्थे नवि कहेवुं के० धर्मदेशना प्रमुख धर्मवचन न कहेवुं एम आगम जे उपदेशमाला तेमां कहियें के० वक्रोक्तियें कहियें छैयें एटले कह्युं छे. यतः–"धम्मंमि नत्थि माया, नय कवडं आणुवत्तिभणियं वा । फुडपागडमकुडिलं, धम्मवयणमुज्जुयं जाण ॥ १ ॥" इत्युपदेशमालायां. ते धर्मवचन केवुं छे जे कपटरहित सरल मननी वृत्ति होय ए रीते धर्मवचन कहे ॥ १३ ॥

संयम विण संयतता थापे, पाप श्रमण ते भाख्यो ।
उत्तराध्ययने सरल स्वभावे, शुद्ध परुपक दाख्यो ॥ धन्य० १४ ॥

अर्थ–वली पोतामां संयम न होय अने संयमता थापे एटले साधुपणुं ठेरावे जे अमे साधु छैयें ते मुनिने पाप साधु कह्यो छे तेमाटे सरल के० ऋजुस्वभावनो धणी ते ऋजुस्वभावें करीने शुद्ध प्ररुपक कह्यो छे एटले सरल स्वभावी होय ते शुद्ध कहे माटे होय तेवुंज कहेवुं. यतः–"सम्मद्दमाणि पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य । असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणे त्ति वुचइ ॥ १ ॥" इत्युत्तराध्ययने सतरमे अध्ययने ॥ १४ ॥

एक बाल पण किरियानयें ते, ज्ञान नयें नवि बाला ।
सेवा योग्य सुसंयतने ते, बोले उपदेश माला ॥ धन्य० १५ ॥

अर्थ–एक बाल के० कोइक बाल छे पण किरियानयें के० क्रियामां शिथिल छे एटले क्रियानये बाल छे पण ज्ञाननयनी अपेक्षायें तो बाल नथी के० गीतार्थ शुद्ध भाषी छे ते गीतार्थ सुसंयत के० भला क्रियावंत साधुने पण सेववा योग्य छे एटले क्रियावंत मुनि ते

क्रिया रहित गीतार्थनो वैयावच्च करे एम उपदेशमाला मध्ये कह्युंछे. यतः–"हीणस्सवि सुद्ध-परुवगस्स, नाणाहियस्स कायव्वं । जणचित्तग्गहणत्थं, करिति लिंगावसेसेवि ॥१॥"॥१५॥

किरियानयें पण एक बालते, जे लिंगी मुनि रागी ।
ज्ञानयोगमां जस मन वरते, ते किरिया सोभागी ॥ धन्य० १६ ॥

अर्थ–जे क्रियानयनी अपेक्षायें बाल छे एटले क्रियावंत नथी शिथिल क्रियावंत छे एवा जे लिंगी के० केवल साधुनुं लिंग मात्र राखे छे पण जो मुनि रागी के० गुणवंत मुनिना रागी छे एटले पोते गुणवंत नथी पण गुणीना रागी छे ते पोते पण ज्ञानी थाय ते माटे कहे छे जे ज्ञानयोगमां जस मन वरते के० ए रीते जेनुं मन ज्ञानयोगमां वर्ते छे तेनी अल्प क्रिया पण सोभागी के० सोभाग्यवंत जाणवी. इहां अल्प क्रिया एवो अर्थ करियें तो पूर्वापर संबंध मले एटले ए भाव जे पोते अल्प क्रियावंत होय पण मुनिनो रागी छे तो ए रीते ज्ञानयोगमां वर्त्ततां अल्पक्रिया पण सौभाग्यवंती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिक अनुकूल क्रियाथी, आपें इच्छा योगी ।
अध्यात्म मुख योग अभ्यासें, केम नवि कहियें योगी ॥ धन्य० १७ ॥

अर्थ–आपें के० पोते इच्छायोगीथको रहे एटले योग त्रण प्रकारना कह्या छे १ इच्छा योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथा पुनः "१ श्रद्धानाविकलो २ वाक्याविकलं ३ शक्त्यनतिक्रम" इति योगनिर्णये. ए त्रण योगमां प्रथम इच्छायोग ते श्रद्धा अविकलथकां आपें के० पोते श्रद्धावंत अने क्रियावंत होय तो ते क्रियाथी बालादिक अनुकूल के० बालजीव मार्गना रागी थाय एटलामां एवडो गुण छे तो अध्यात्ममुख के० अध्यात्मप्रमुख योगसाधनना ग्रंथोनो अभ्यास करे एटले अहोरात्री अध्यात्ममां मग्न रहे ते पुरुषने योगीश्वर केम न कहियें एटले श्रद्धावंतथको क्रिया करतो बालजीवने उपकारी थाय छे अने साधु कहेवाय छे तो अध्यात्ममां मग्न रहेतां साधुमुनिने योगी केम न कहीयें ॥ १७ ॥

उचित क्रिया निज शक्ति छांडि, जे अति वेगे चढतो ।
ते भवथिति परिपाक थया विण, जगमां दिसे पडतो ॥ धन्य० १८ ॥

अर्थ–वली अध्यात्ममार्ग पण पोतानी उचित शक्तियें क्रिया करतो साधे अने यथाशक्ति क्रिया मूकीने शक्ति उल्लंघन करे तो तेने गुण न थाय माटे जेटली पोतानी शक्ति होय तेटलीज क्रिया करवी एवुं नाम उचित क्रिया कहियें ते रीते न करे अने जे अति वेगे चढतो के० शक्तिथी अधिक करे एटले ए भाव जे शक्तिने अभावें उपवास करे छठ प्रमुख करे अथवा आतापना लेवे इत्यादिक काम करतो ते प्राणी पण भवस्थिति परिपाक थया विना जगतमां पडता देखीयें छैयें एटले ए भाव जे शक्ति उल्लंघन करीने अधिक क-

रवा जाय अने भवस्थिति पाकी नथी तेथी तेने शुकमालिका प्रमुखनी पेठे परिणाम टकेज नहीं परिणाम पडताज होय. इतिभावः ॥ १८ ॥

माचे मोटाइमां जे मुनि, चलवे डाकडमाला।
शुद्ध परुपण गुण विण न घटे, तस भव अरहटमाला॥ धन्य० १९॥

अर्थ—वली जे मुनि पोतानी मोटाइमां माचे के० रीझ पामे एटले थोडी क्रिया प्रमुख आवडी होय तेमां मग्न रहे जे अमे समजु छैयें तथा डाकडमाल चलावे एटले लोकमां आडंबर घणो देखाडे पण शुद्धपरुपक गुण विना तेनी भव के० संसाररूप अरहटनी माला ते घटे नहीं ओछी थाय नहीं एटले शुद्धपरुपक गुण विना संसार ओछो न थाय ॥ १९ ॥

निज गण संचे मन नवि खंचे, ग्रंथ भणी जन वंचे।
लुंचे केश न मुंचे माया, तो व्रत न रहे पंचे॥ धन्य० २० ॥

अर्थ—निजगण के० पोतानो जे गच्छ समुदाय तेने संचे के० भेला करे जे अमारा श्रावक श्राविका साधु साध्वी इत्यादिक उपर ममत्व करे मन नवी खंचे के० पोतानुं मन हीणी प्रवृत्तिथी खेंची राखेज नहीं ग्रंथभणी के० द्रव्यने अर्थे जनवंचे के० लोकने ठगे अथवा ग्रंथ के० सिद्धांतशास्त्र भणी के० अध्ययन करीने लोकने ठगे उत्सूत्र परुपणा करी लोकने दुर्गतियें लेइ जाय ए रीते जे लुंचे केश के० मस्तके केशनुं लोच करे अने न मुंचे माया के० कपट मूके नहीं तो ते प्राणीना पांच महाव्रतमां एके न रहे ॥ २० ॥

योग ग्रंथना भाव न जाणे, जाणे तो न प्रकाशे।
फोकट मोटाइ मन राखे, तस गुण दूरें नासे ॥ धन्य० २१ ॥

अर्थ—जे थकी आत्मस्वरूप सधाय एवा जे योग ग्रंथ के० परमार्थना शास्त्र तेना भाव के० रहस्यने न जाणे के० ओलखे नहीं समजे नहीं अने कदाचित् जाणे तो प्रकाशे नहीं भव्यजीवने ते ग्रंथोनी वातो कहे नहीं कारण के जो तेवी वातो कहे तो पोताने तेमज करवुं पडे वली फोकट मोटाइ के० मिथ्या अभिमान राखे जे अमे मोटा छैयें अमारा जेवो कोइ नथी एवो अहंकार राखे तस गुण के० ते प्राणीमां जो कोइ गुण होय तो ते पण दूर नाशी जाय. एम छता गुण पण जाय तो अणछतानुं कहेवुंज शुं ॥ २१ ॥

मेले वेशें महियल म्हाले, बक परें नीचो चाले।
ज्ञान विना जग धंधे घाले, ते केम मारग चाले ॥ धन्य० २२ ॥

अर्थ—मेले वेशें के० वस्त्रादिक मलिन राखे अने महियल के० पृथ्वीने विषे म्हाले मलपतां फरे वली बगलानी पेठे नीचुं जोइने चाले जेथी लोक जाणे ईर्या जूवे छे एवा

होय अने जो ज्ञानी होय तो सर्व लेखे छे पण ज्ञान विना एटले अज्ञानीथका जगतने धंधे के० क्लेशमां घालता फरे एवी कष्टक्रिया करनारनां वचन लोक माने अने ते पोतेतो ज्ञान विनानो छे माटे अशुद्ध प्ररूपे ते वारे लोकने पण अज्ञान उपदेश लागे माटे जगतने.कदाग्रह रूप क्लेशमां नाख्युंज. इतिभाव. तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्ग केम चाले यतः-"मासे मासे य जो वालो, कुसग्गेणं तु भुंजए। न सो सुअक्खायधम्मस्स, कलिं अग्घइ सोलसिं ॥१॥" तथा "अन्नाणी किं काहि" इत्यादि उत्तराध्ययन नवम अध्ययन वचनात् ॥ २२ ॥

पर परिणति पोतानी माने, वरते आरत ध्याने।
बंध मोक्ष कारण न पीछाने, ते पहिले गुणठाणे ॥ धन्य० २३ ॥

अर्थ–पर परिणति के० पारकी समजण ते पोतानी करी माने एटले पर अज्ञानीनी मते चाले अथवा पर परिणति के० पुद्गल शरीर वस्त्रपात्रादिकना जे परिणमन ते अज्ञाने करीने तन्मयपणे परिणमतो सर्व पोतानीज परिणति माने अथवा पर जे स्वव्यतिरिक्त लोकनां घर तेना जे परिणमन के० घर व्यापारनुं चिंतवनुं ते पोतानुं करी माने अने तेथी आर्तध्याननो विकल्प करे यतः–"सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावडे।" इत्युत्तराध्ययन वचनात्. माटे पोतानुं घर मुकी परघरनी चिंता करे तो पापश्रमण कह्यो छे इतिभावः। अने बंध मोक्ष कारण के० बंधनां कारण जे मिथ्यात्व अविरति कषाय योग प्रमाद प्रमुख जे बंधना हेतु ते न पीछाने के० न जाणे मोक्षनां कारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रिया प्रमुख एटले 'नाणकिरिया मुक्खो' इति वचनात् ॥ इत्यादिक मोक्षना हेतु छे ते पण न पीछाने के० न जाणे एवा अज्ञानी प्राणी ते गमे तेटला कष्टादिक करे तोपण अज्ञानी छे माटे पहेले गुणठाणे जाणवा. यदुक्तं "नाणेण विणा चरणं, पढमगुणट्ठाणपुट्ठिकरं।" इत्युपदेशमालावृत्तौ ॥ २३ ॥

किरिया लव पण जे ज्ञानीनो, दृष्टि थिरादिक लागे।
तेथी सुजश लहिजें साहिब, सीमंधर तुझ रागे ॥ धन्य० २४ ॥

अर्थ–ते माटे ज्ञानीनो के० ज्ञानवंतनो क्रियानो लव के० एक अंशमात्र पण जे पांचमी थिरानामा दृष्टि तिहां लागतो होय एटले सम्यक्त सहित होय आदि शब्दथी कांता प्रभा परा ए त्रण दृष्टि लइयें तेथी के० ते ज्ञानसहित क्रियाना अंशथी हे साहेब सुजश लहिजे के० भलो जश पामियें मोक्षरूप उत्कृष्टो जश पामियें पण ते हे श्रीमंधर परमात्मा तुझ रागे के० तारे स्नेहे करीने पामियें ॥ २४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥



ए पन्नरमी ढालनी कोइक गाथामां ज्ञाननी मुख्यता करी कोइक गाथामां चारित्रनी मुख्यता करी तथा कोइक गाथामां बेहुनो स्याद्वाद कह्यो ते सांभली कोइक शिष्यने व्यामोह उपजे जे तेवारे स्थितपक्ष ते शो हशे ते शंका टालवाने सोलमी ढालमां स्याद्वाद मार्गनो स्थितपक्ष देखाडे छे ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

स्वामी सीमंधरा तुं भले ध्याइयें, आपणो आतमा जेम प्रकट पाइयें। द्रव्यगुणपज्जवा तुझ यथा निर्मला, तेम मुझ शक्तिथी जइवि भव सामला १

अर्थ—हे सीमंधरसाहेब तुझने मनमां ध्याइयें एज भले के० भलुं छे जेम तमारा ध्याननथी आपणो के० पोतानो आत्मा ते प्रगट पामियें तमारा ध्याननथी ज्ञानी थइयें ते ज्ञाने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मभाव पाम्याज इति भावः। तेवारे यथा के० जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुझ के० तमारा निर्मल छे ए त्रणनां लक्षण कहे छे. यथा "गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा। लक्खणं पज्जवाणंतु, उभओ निस्सिया भवे ॥ १ ॥" इत्युत्तराध्ययने २८ मोक्षमार्गाध्ययने. अथवा गुणपर्यायनुं भाजन ते द्रव्य सहभावी धर्म ते गुण क्रमभावी ते पर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथांतरथी जाणवुं. ए रीते जेम तमारुं आत्मद्रव्य असंख्यात प्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञान दर्शन चारित्रादिक अनंत गुण तेमां समय समय उत्पाद व्ययपणानुं परणमवुं तथा अनंत अगुरु लघु प्रमुख जे पर्याय ते सर्व निर्मल थया निरावरण थया ते रीते मारे पण शक्तिथी के० (यद्यपि व्यक्तिथी नथी तोपण) शक्तिये छे ते जइवि के० यद्यपि भवके० संसारने विषे सामला के० मेला छे एटले आवरण सहित छे एटलो फेर छे ॥ १ ॥

चार छे चेतनानी दशा अवितथा, बहुशयन शयन
जागरण चोथी तथा। मिच्छ अविरत्त सुयत तेरमें
तेहनी, आदि गुणठाणे नयचक्र मांहे मुणी ॥ २ ॥

अर्थ—ते माटे चेतनानी अवस्था वर्णवे छे चेतनानी अवितथा के० साचीदशा चार छे ते देखाडे छे १ बहु शयन के० घोर निद्रारूप ते पहेली २ शयन के० चक्षु मिचवारूप बीजी ३ जागरण के० कांइक जागवारूप त्रीजी ४ चोथी तथा के० पूर्वे कही तेमज एटले बहु जागरणरूप इतिभावः। हवे ए चार अवस्थाने गुणठाणे फलावे छे आदि गुणठाणे ए पद सर्वत्र जोडियें एटले बहु शयननी आदि मिच्छ के० मिथ्यात्व गुणठाणो अने बीजी

शयन अवस्थानी आदि ते अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणो तथा त्रीजी जागरण अवस्थानी आदि ते सुयत के० अप्रमत्त सातमो गुणठाणो ४ बहु जागरण अवस्थानी आदि ते सयोगी केवलीनामा तेरमो गुणठाणो छे तेहनी के० ते अवस्थाना आदि गुणठाणा ते प्रथम धुर गुणठाणा ए रीते जोडजो एटले ए अर्थ जे बहुशयन दशा ते १–२–३ गुणठाणे कहेवी अने शयन दशा ते ४–५–६ ए त्रण गुणठाणे कहेवी अने जागरण दशा ते ७–८–९–१०–११ –१२ ए छ गुणठाणे कहेवी अने बहु जागरण ते १३–१४ ए बे गुणठाणे कहेवी ए रीते अमने सुज्यो तेवो अर्थ लख्यो वली जे बहुश्रुत होय जेणे नयचक्र ग्रंथ जोयी यथार्थ करवुं स्तवनकर्त्ताए तो नयचक्रमां सुणी के० नयचक्रमां गुणठाणानी आदि जाणी एम कह्युं ते नयचक्र ग्रंथ हमणां अमारी पासे नथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

भाव संयोगजा कर्म उदयागता, करम नवि जीव
नवि मूलते नवि छता। खडीयथी भित्तिमां जेम होए
श्वेतता, भित्ति नवि खडीय नवि तेह भ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ–भावपदार्थ जे संयोग संबंधथी उपना कर्मने उदये आव्या ते भाव कर्म नथी जीव नथी मूलथी ते छतापणे नथी जेम भित्ति के० भींतमांहे खडीय के० खडीथी श्वेतता धवलता थाय छे तो ते धवलतामां भींत नथी अने खडी पण नथी अन्योन्ये भिन्न छे पण भ्रमे करी संगती ऐक्यता मलति थाय छे ॥ ३ ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना टबा उपरथी लख्यो छे ॥ ३ ॥

देह नवि वचन नवि जीव नवि चित्तछे, कर्म नवि
राग नवि द्वेष न विचित्तछे। पुद्गली भाव पुद्गलपणे
परिणमें, द्रव्य नवि जूडं जूडं एक होवे किमे ॥ ४ ॥

अर्थ–देह के० शरीर नथी ऐक्यतापणे वचन वाचिक योग नथी जीव नथी चित्त नथी कर्म नथी राग नथी द्वेष नथी विचित्त छे के० विचित्रता अनेक जाति छे ए सर्व पुद्गलिक भाव छे ते पुद्गलपणे परिणमे.केमके पुद्गलनुं अनेक प्रकारे परिणमन धर्म छे 'पूरणगलणधर्माणः' पुद्गलनुं ए लक्षण छे ते माटे जीवादिक जे द्रव्य छे ते सर्वथकी जूदोजूदो छे ते एक केम होय ? उपचारे एक कहियें ॥ ४ ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमल सूरिना टबाथी लख्यो छे ॥ ४ ॥

पंथी जन लुंटतां चोरने जेम भणे, वाटें को लुंटियें
तेमज मूढो गिणे। एक क्षेत्रे मल्या अणुतणी
देखतो, विकृतिए जीवनी प्रकृति उवेखतो ॥ ५ ॥

अर्थ–जेमं पंथी लोकने लुंटतांथकां चोरने कोइ के०कोइक पुरुष एम कहे जे वाट लुंटे छे पण ते चोर वाटने लुंटता नथी पण वाटें के० वाट जे मार्ग तेने विषे रह्या जे लोक ते लुंटाय छे पण लक्षणे एम कहे छे जे वाट लुंटी. तेमज मूढो के० मूर्ख ते शरीर तथा आत्मा प्रमुखने एक करी गणे छे शा माटे जे एक क्षेत्रे मल्या के० जे क्षेत्रे आत्मा तेज आकाश प्रदेशे मल्या परस्पर संबंध थयो एवा जे अणुतणी के० परमाणुनी विकृति के० विकारने देखतो के० देखीने मूर्ख एम गणे छे. अने जीवनी प्रकृति जे स्वभाव तेने उवेखतो के० लेखामां अणगणतो थको जीव तथा शरीरादिकने एकपणे गणे छे पण एम जाणतो नथी जे पुद्गल ने जड छे अचेतन छे, अने आत्मा तो ज्ञानस्वरुपी छे ते एक केम थाय. इतिभावः ॥ ५ ॥

देह कर्मादि सविकाज पुद्गलतणां, जीवना तेह व्यव-
हार माने घणां । सयल गुणठाण जीअठाण संयोगथी,
शुद्ध परिणाम विण जीव कारय नथी ॥ ६ ॥

अर्थ–ते माटे देह के० शरीर तथा ज्ञानावरणादि कर्म अने आदि शब्दथी घरबार प्रमुख ए सर्व पुद्गलनां कार्य छे पुद्गलथी नीपनां छे ते पुद्गलनां कार्यने जीवनां कार्य कही बोलावें छे ते व्यवहार माने घणां के० ते व्यवहार नयथी जीवनां कार्य कहीयें पण निश्चय नये तो सर्व पुद्गलस्वरूप छे. सयल गुणठाण के०समस्त मिथ्यात्वादिक गुणस्थानक तथा जीअठाण के० समस्त एकेंद्रियादिक जीवस्थानक इत्यादिक सर्व प्रकार ते संयोगथी के० पुद्गल कर्मादिकना संयोगथी जाणवा पण ए आत्मस्वरूप नहीं केमके शुद्ध परिणाम के० समस्त उपाधि रहित जेना प्रदेशने विषे एक अणुमात्र पण भेल नथी एवुं जे शुद्ध स्वरूप ते विना जीव कारय नथी के० जीवरूप कार्य नथी ॥ ६ ॥

नाण दंसण चरण शुद्ध परिणाम जे, तंत जोता न छे
जीवथी भिन्न ते । रत्न जेम ज्योतिथी काज कारण
पणे, रहित एम एकता सहज नाणी मुणे ॥ ७ ॥

अर्थ–ज्ञान दर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंत जे शुद्ध आत्माना परिणाम छे ते तंत के० नियतपणाथी जोइयें तो कांइ जीव थकी भिन्न नथी केमके ज्ञानादिक गुण जो भिन्न होय तो आत्मा निर्गुण जडपणे मानवो जोइयें ते तो नथी माटे जीवथी ज्ञानादिक गुण भिन्न नथी, जेम स्फटिक रत्न प्रमुख पोतानी ज्योतिथी भिन्न नथी. शा माटे जे काज कारणपणे कहेतां कांइ पूरवलुं नथी केमके जो रत्नथी ज्योति थइ एम कहियेंतो ज्योति विना रत्न हतुंज नहीं माटे रत्नथी ज्योति थइ एम कहेवाय नहीं. तथा ज्योतिथी रत्न थयुं एम पण

न कहेवाय केमके रत्न विना ज्योति पण क्यां हती ते माटे कार्य कारणपणे रहित छे. एम के० ए रीते आत्मा तथा आत्मगुण ते भिन्न नथी सहज के०सहज स्वभावे अभेद छे ऐक्यता छे ए वात नाणी मुणे के० जे ज्ञानी होय ते जाणे पण मूर्ख समजे नहीं ॥ ७ ॥

अंश पण नवि घटे पूरण द्रव्यना, द्रव्य पण केम कहुं द्रव्यना गुण विना । अकल ने अलख एम जीव अति तंतथी, प्रथम अंगे वंदिउं अपदने पद नथी ॥ ८ ॥

अर्थ—संपूर्ण द्रव्यना जे अंश कहेवा ते पण युक्त नथी केमके जे वारें अंश कहीयें ते वारें द्रव्य पण शानुं. " एगं निचं निरवयवं, अक्रियं सव्वगं च सामन्नं " इति महाभाष्य वचनात्. जे द्रव्य ते सामान्य छे अने जे सामान्य ते निरवयव छे तथा द्रव्य पण केम कहुं द्रव्यना गुण विना के० द्रव्य संबंधी जे गुण ते विना द्रव्य पण केम कहेवाय ? कारण के "गुणाणमासओ दव्वं." इत्युत्तराध्ययने २८ मे अध्ययने द्रव्य लक्षणं. तथा "गुण पर्याय वद्द्रव्यं" इति तत्वार्थवचनात्. तथा पर्याय नयवालानी युक्तियें तो द्रव्य छेज नहीं परमार्थें पर्यायज स्वतंत्र छे यथा उत्फण विफणादिक द्रव्य ना कहेवाय ते माटे द्रव्य नथी तो द्रव्यना गुण क्यांथी होय जेम गाम न होय तो ते गामनी सीम क्यांथी. इत्यादिवत् महा भाष्यमां जोजो एटले ए भाव जे अंश पण न कहुं अने द्रव्य पण न कहेवाय युक्तियें तो एम आव्युं अने आगममां तो अंश सहित पण द्रव्य कहियें एम छे गुण पर्यायवत् द्रव्यं ए वचन सुचवे छे ते माटे अकल के० कल्यो न जाय अने अलख के० लख्यो न जाय ए रीतनो जीव० के० आत्मा ते अति तंतथी के० अत्यंतपणे निश्चयथकी जाणवो एटले कांइ कहेवाय नहीं. यतः—"विक्खातरए सव्वे सरा नियट्टंति, तक्का जत्थ विज्ज इ मई तत्थ न गहिया ओए अप्पइट्ठाणस्स खेयन्ने से ण दीहे ण हस्से न वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमंडले न किन्हे न नीले न लोहिए न हालिद्दे न सुकिल्ले न सुरभिगंधे न दुरभिगंधे न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न कक्खडे न मउए न गरुए न लहुए न सीए न उन्हे न निद्धे न लुक्खे न काओ न रूहे न संगे न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा परिन्ने सन्ने उवमा न विज्जए. अरूवी सत्ता अपयस्स पयं नत्थि" ॥ इत्यादिक आचारांग पंचमाध्ययने छट्ठे उदेशे कह्युं छे ते मांहेला विषम पदोनो अर्थ करियें छैयें विक्खात के० मोक्ष तेने विषे रए के० राता सव्वे सरा के० ते मोक्ष स्वरूप केवुं छे ते कहे छे सर्व स्वर निवृत्या छे एटले कोइ शब्दें वाच्य नथी तक्का के० विचार जे आम हशे के आम हशे ते कहेवाय नहीं मति जे औत्पातकी प्रमुख तेनो ग्रह जेने विषे नथी ते पण ओए के० एकलुं छे पण कर्म कलंक सहित नथी अप्पइट्ठाणस्स के० उदारिकादिक शरीरनुं प्रतिष्ठान नथी तथा खेअन्ने के० लोकालोकनुं ज्ञायक छे तथा न काओ के० काय नथी न रूहे के० संसारमां उगवुं नथी अन्नहा के० नपुंसक नथी परिन्ने के० समस्त प्रकारे जाण छे सन्ने के० सम्यक् जाणे छे तथा अ-

पयस्स पयं नत्थि के० अवस्था विशेष जे पद ते नथी जेने ते अपद कहिये एटले अपद ते सिद्धने पद के० जे अभिधान ते नथी एटले सिद्धने कोइ नामे कही बोलावीयें ते नथी. इति भावः ॥ ८ ॥

शुद्धता ध्यान एम निश्चयें आपनुं, तुझ समापत्ति
औषध सकल पापनुं । द्रव्य अनुयोग संमति प्रमुखथी
लही, भक्ति वैराग्यने ज्ञान धरियें सही ॥ ९ ॥

अर्थ—शुद्धता के० शुद्ध स्वरूपनुं जे ध्यान तेहिज पोतानुं निश्चयरूपें जाणवुं. माटे हे प्रभु सर्व पापनुं समापत्ति औषध सर्व दोष नाशन रसायन ते एकहिज छे जे शुद्ध उपयोग लक्षण ते. अने षट द्रव्यनी विचारणा रूप अनुयोग संमतिमहातर्कादि ग्रंथथकी जाणीने साहिबनी विधि सेवा पूर्वक निराशंसतारूप भक्ति वैराग के० विषय विमुखता ज्ञान ते शुद्ध उपयोग निश्चयथकी एहीज चित्तमां धरीयें कार्य साधकता एहिज छे एटले भक्ति दशा, वैराग्यदशा, ज्ञानदशा ए त्रण कार्य साधकता छे तिहां चोथो गुणठाणो भक्ति मुख्ये पांचमो छट्टो गुणठाणो वैराग्यदशा मुख्ये क्षीणमोहादिक गुणठाणो ज्ञानदशा मुख्ये इत्यादि द्रव्यभावें सर्व जाणवी. मुख्यता गुणतायें एकें त्रणे एक इत्यादि व्यक्तता ग्रंथांतरथी जाणवी ॥ ९ ॥ आ गाथानो अर्थ ज्ञानविमल सूरिना टवा उपरथी लख्यो छे. ॥ ९ ॥

जेह अहंकार ममकारनुं बंधनं, शुद्ध नय ते दहे दहन
जेम इंधनं । शुद्ध नय दीपिका मुक्ति मारग भणी,
शुद्ध नय आथि छे साधुने आपणी ॥ १० ॥

अर्थ—जे अहंकार के० मान ममकार के० ममत्व तेनुं बंधनं के० कारण एटले अहंकार तथा ममकारनुं मूल राग द्वेष छे ते राग द्वेषथी अहंकार तथा ममकार होय ते राग द्वेषने दहन जेम इंधन के० जेम अग्नि लाकडांने बाली नाखे तेनी पेठें शुद्ध नय के० आत्मतत्व चिंतनरूप ध्यान ते दहे के० बाले एटले शुद्ध ध्यानथी राग द्वेष बली भस्म थाय. शुद्ध नय के० निश्चय नय ते मोक्षमार्गनो दीवो छे केमके मोक्षमार्गें गमन करतां अजवालुं करें माटे जे शुद्धनय तेज साधुने आपणी के० पोतानी आथी के० संपत्ति छे. यतः—" दीपिका खलु निर्वाणे, निर्वाणपथदर्शिनी । शुद्धात्मचेतना या च, साधूनामक्षयो निधिः ॥१॥" इति योगनिर्णये ॥ १० ॥

सकल गणी पिटकनुं सार जेणे लह्युं, तेहने पण परम
सार एहज कह्युं । ओघनिर्युक्तिमां एह विण नवि
मिटे, दुःख सवि वचन ए प्रथम अंगे घटे ॥ ११ ॥

अर्थ–गणी के० आचार्य तेना सकल के० समग्र गुणरूप रत्ननी पिटक के० पेटी एटले द्वादशांगीरूप जे गणीनी पेटी तेनो सार के० प्राधान्यपणुं ते जेणे लह्युं के० जाण्युं छे एहवा समस्त द्वादशांगीना जाणने पण परम सार के० प्रधान रहस्य परम सार ते एज शुद्ध नय परिणमनरूप कह्युं छे ए द्वादशांगीना जाणने पण निश्चय नयज सार कह्युं छे तो बीजानी शी वात एम श्री ओघनिर्युक्तिमध्ये कह्युं छे. यतः–" परमरहस्समिसीणं, समत्तगणिपिडगझरियसाराणं । परिणामियं पमाणं निच्छयमवलंबमाणाणं ॥१॥" इति. तो एह विण के० ए निश्चयनय समज्या विना दुःख के० पाप ते नवि मिटे के० न टले तथा कोइक मतमां एह विण न घटे एम लख्युं छे ते नवि घटे के० दुःख ओछुं न थाय माटे बेहुनो भावार्थ एकज छे ए सर्व वचन प्रथम अंगे घटे के०श्री आचारांग सूत्रमां घटमान छे युक्त छे 'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ' इत्यादि पाठात् ॥११॥

शुद्ध नय ध्यान तेहने सदा परिणमे, जेहने शुद्ध
व्यवहार हीयडे रमे ॥ मलिन वस्त्रे यथा राग कुंकुम-
तणो, हीन व्यवहार चित्त एहथी नवि गुणो ॥ १२ ॥

अर्थ–एटलीवार शुद्धनयनी मुख्यतायें वात कही हवे कोइक एम सांभलीने एकांत निश्चयनयज अंगीकार करे अने व्यवहारनय लेखामां गणेज नहीं तेने शिक्षा करे छे जे पूर्वोक्त प्रकारें शुद्धनयनुं जे ध्यान तेतो ते प्राणीने सदा निरंतर परिणमे जे प्राणीने शुद्ध व्यवहार संयमानुष्ठान प्रवृत्तिरूप हीयडे रमे के० हृदयने विषे रमे तेना उपर दृष्टांत कहे छे जेम मेलां वस्त्रने विषे कंकुनो अथवा केसरनो रंग न लागे तेमज हीणा व्यवहारवंतना चित्तने नवि गुणो के० गुण न होय एटले व्यवहार विना निश्चय परिणमे नहीं ॥ १२ ॥

जेह व्यवहार सेढी प्रथम छांडता, एक ए आदरे
आप मत मांडतां । तास उतावले नवि टले आपदा,
क्षुधित इच्छायें उंबर न पाचे कदा ॥ १३ ॥

अर्थ–जे प्राणी व्यवहार श्रेणीरूप जे अनुक्रम ते तो प्रथम छांडे छे तथा एक ए आदरे के० एकलो ए निश्चय नयज आदरे छे आप मत मांडतां के० पोतानुं मत दृढ करतां एक भवस्थिति उपर दृढ थया छे पण उद्यम करता नथी तो तेनी उतावले आपदा टले नहीं एटले एकलो निश्चय पोकारवाथी संसार परिभ्रमणरूप आपदा टले नहीं जेम क्षुधित के० भूख्यानी इच्छायें उंबरना फल कदापि न पाके एटले उंबरफल ते जलसेवादिक क्रियाये पाके पण इच्छा मात्रें न पाके. इतिभावः ॥ १३ ॥

भाव लव जेह व्यवहार गुणथी भले, शुद्ध नय भावना तेहथी नवि चले। शुद्ध व्यवहार गुरुयोग परिणतपणुं, तेह विण शुद्ध नयमां नहि ते घणुं ॥ १४ ॥

अर्थ–भाव के० रुडा अध्यवसायनो लव के० अंश ते पण व्यवहार परनालिकारूप गुणथी भलतो होय एटले व्यवहारसहित होय तो शुद्ध नयभावना के० शुभ अध्यवसायनी जे भावना घोलना ते ते प्राणीथी नवि चले के० खसे नहीं एटले शुद्ध नयनी भावना ते तो तेवारे स्थिर थाय के जो व्यवहारयुक्त होय. अन्यथा क्षण तोलो क्षण मासो थाय ते शुद्ध व्यवहार तो गुरुयोग के० गुरुना संयोगे एटले गुरुकुलवासें निर्मल व्यवहार थाय ते शुद्ध व्यवहारथी परिणतपणुं के० परिपक्वपणुं होय एटले शुद्ध नयमां परिपक्व तो जे शुद्ध व्यवहारवंत होय तेहज थाय अन्यथा शुद्ध व्यवहारविना शुद्ध नय ठेरी शके नहीं. अने तेह विण के० ते गुरुयोग शुद्ध व्यवहारविना शुद्ध नयमां के० अध्यात्ममां नहीं ते घणुं के० ते जे परिणितपणुं ते घणुं न होय एटले गुरुकुलवासे शुद्ध व्यवहार अने शुद्धव्यवहारे परिपक्वपणुं निश्चयमां निश्चलपणुं होय इति. एटले जो गुरुयोग व्यवहार शुद्ध होय तो शुद्ध नयमां परिपक्वता होय ॥ १४ ॥

केइ नवि भेद जाणे अपरिणतमति, शुद्ध नय अतिहि गंभीर छे ते वती। भेद लव जाणतां केइ मारग तजे, होय अति परिणति परसमय स्थिति भजे ॥ १५ ॥

अर्थ–ए रीते केटलाक प्राणी अपरिणतमति के० अपरिणामी तेने नवि भेद जाणे के० अनेक प्रकारनी खबर न पडे इहां भेद ते अपवाद उत्सर्ग निश्चय व्यवहार प्रमुख जाणवा ते न जाणे अपरिणतमति शब्दे व्यवहारनयवाला लीजियें ते केम न जाणे जे शुद्धनय अतिहि गंभीर छे के० उपला नय ते अत्यंत गंभीर छे एटले ए भाव जे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ए त्रण नय यद्यपि अपरिणतमति जाणे पण निश्चय नय तो अति गंभीर उपयोगरूप नयमां खबर न पडे. इति भावः। एटले जे व्यवहार नय एकलो माने तेने ठपको दीधो हवे एकलो निश्चयनय माने तेने ठपको दे छे. केटलाक प्राणी भेद लव जाणतां के० भेदनो अंशमात्र जाणतां मार्गने तजे के० छांडी दे एटले अंशमात्र कांइक शिख्युं सांभल्युं छे ते वचन जाणे तेथी महा अहंकार धरता एम जाणे जे निश्चय स्वरूपनी वातो आपणे जाणिये छैयें एवी बीजो कोण जाणे छे अने आपणे आत्मस्वरूप जाण्युं एटले क्रियानुं शुं काम छे क्रिया तो ज्ञाननी दासी छे इत्यादिक वचन बोली क्रिया न करे अने मार्ग छांडे एवी रीते जे अति परिणामि थाय ते शुं करे ते कहे छे. जे समय जे सिद्धांत तेनी पर. के० उत्कृष्ट स्थिति ते मर्यादा तेने भजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति

जे निश्चयनयनी वातो करवी ते भजे के० करे अथवा परसमयस्थिति भजे के०अन्यदर्शननी स्थिति भजे एटले एकांत निश्चय नयवादी दिगंवरादिक ते परदर्शनी कहियें ते वारे पण परदर्शनी स्थिचि भजी. इति भावः ॥ १५ ॥

तेह कारण थकी सर्व नय नवि कह्या, कालिकश्रुत
मांहें तीन प्रायें लह्या। देखी आवश्यकें शुद्ध नय धुरें
भणी, जाणियें उलटी रीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ--ते कारणथकी निश्चय परिणामी ते एकली परिणामनी वातो करीने मार्ग उपाडी नांखशे एवुं जाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ रूजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत ए सर्व नय नथी कह्या, केम नथी कह्या ते कहे छे कालिकश्रुत मांहे के० आचारांगादिक कालिकश्रुतने विषे तीन प्रायें लह्या के० बहुलतायें १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ए त्रण नय लख्या छे. ए वात ग्रंथकार शिष्यने कहे छे जे देखी आवश्यके के०आवश्यक निर्युक्तिमां देखजो एटले कालिकश्रुतमां प्राये त्रण नय कह्या छे एम आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे. यतः–" एएहिं दिट्ठिवाए, परुवणा सुत्तअत्थकहणाए । इह पुण अणब्भुवगमो, अहिगारो तीहिं ओसन्न ॥१॥ पायं संववहारो, ववहारं तेहिं तिहिं उ जं लोए, तेणं परिकम्मणत्थं कालियसुत्ते तदहिगारो ॥२॥" इत्यावश्यके. ए रीततो श्वेतांवर पक्षे छे. जे पूर्वें व्यवहार समजावीने पछे निश्चयनी वात समजावे इति. तथा हवे दिगंवरनी प्रक्रिया दूखवे छे जे शुद्ध नय धूरें के० निश्चय नय धूरे छे ते माटे बोटिक के० दिगंवरनी रीति ते उलटी के० विपरीत जाणीयें जे माटे पहेलांथी निश्चय नय समजावे एटले व्यवहारमां दृष्टि ठेरेज नहीं माटे विपरीत कहि. इति भावः ॥ १६ ॥

शुद्ध व्यवहार छे गच्छ किरिया थिति, दुप्पसह जाव
तीरथ कह्युं छे नीति ॥ तेह संविज्ञ गीतार्थथी संभवे,
अवर एरंड सम कोण जग लेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ–ते माटे व्यवहार ते प्रधान छे ते शुद्ध व्यवहार तो सुविहित गच्छ जे साधुसमुदाय तेनी क्रियानी जे स्थिति तेमां छे एटले शुद्धव्यवहार ते सुविहित गच्छमां होय दुःप्रसहनामा आचार्य जे पांचमा आराने छेडे थशे जाव के० तिहां लगें नीति के० निरंतर तीर्थ कह्युं छे. यतः–" इय सव्वोदयजुगपवरसूरिणो चरणसंजुए वंदे। चउरुत्तरदुसहस्स, दुप्पसहंते सुहम्माइ ॥१॥ " इति दुसम संघ स्तोत्रे. तथा "वासाण वीससहसा, नवसय ति मास पंच दिण पहरा। इका घडिया दो पल, अक्खरइगुआल जिणधम्मो ॥१॥" इति दीवाली कल्पे ॥ ते तीर्थ तो गीतारथ संविज्ञ होय तेथीज संभवे एटले "नाणकिरियाहिं मुक्खो" ॥इति भाष्य वचनात्. एटले ज्ञानक्रियाथी मोक्ष ते ज्ञानक्रिया तो गुण छे अने जे गुण छे ते गुणीथी

अभेदरूप छे माटे संविज्ञ शब्दे क्रियावंत आव्या अने गीतार्थ शब्दे ज्ञानवंत आव्या ते संविज्ञ गीतार्थथी जे बीजा ते एरंडा सरिखा जाणवा तेने जगतने विषे कोण लेखामां गणे छे ॥ १७ ॥

शास्त्र अनुसार जे नवि हठे ताणियें, नीति तपगच्छनी
ते भली जाणियें ॥ जीत दाखे जिहां समय सारु
बुधा, नामने ठाम कुमते नहीं जस मुधा ॥ १८ ॥

अर्थ—ते संविज्ञ गीतार्थ परमार्थ तो तेने कहिये जे शास्त्रने अनुसारे हठें ताणे नहीं शास्त्रना अक्षर देखे एटले पोतानो कदाग्रह मूकी आपे एवी रीती तो तप गच्छनी भली के० घणी उत्तम छे एटले तप गच्छमां पंचांगी प्रकरणादिक जे सुविहितना करया ग्रंथ ते सर्व प्रमाण छे एम जाणिये इति भावः । जिहां के० जे तप गच्छने विषे बुधा के० पंडित लोक ते समय सारु के० सिद्धांत प्रमाणे जीत दाखे के० वर्त्तमान कालनो जीत देखाडे छे जे तप गच्छनां नाम अने ठाम के० स्थानक ते कुमते के० कदाग्रहे मुधा के० फांकट जस के० जेना नहीं के० नथी एटले ए तप गच्छनां जे नाम ठाम ते सर्व गुण निष्पन्न छे ॥ १८ ॥

नाम निर्ग्रंथ छे प्रथम एहनुं कह्युं, प्रथम अडपाट
लगें गुरु गुणे संग्रह्युं । मंत्र कोटी जपी नवम पाटे
यदा, तेह कारण थयुं नाम कोटिक तदा ॥ १९ ॥

अर्थ—हवे तप गच्छनां नाम धुरथकी अनुक्रमे निष्पन्न छे ते कहे छे प्रथम श्री सुधर्मास्वामीथी निर्ग्रंथ एहवुं नाम प्रथम कह्युं ते प्रथमना आठ पाट लगें गुरु गुणे के० मोहोटे गुणे निस्पृहतारूप गुणे करी संग्रह्युं के० ग्रह्युं छे पछे नवमे पाटे सुस्थित सुप्रतिबद्ध आचार्यें कोटीवार सूरिमंत्र जपीने रह्या बीजा आचार्य ते चारलाख तथा सवालाख मंत्र जपे एटले सूरिमंत्र पुरो थयो अने ए बे आचार्यें कोटीवार जप्यो ते कारण के० ते हेतुयें तेवारे कोटीक नाम कहेवाणुं एटले ए नाम पण गुण निष्पन्न छे पण कोइ मत कदाग्रहे नथी ॥१९॥

पंनरमे पाटें श्री चंद्रसूरें कह्युं, चंद्र गच्छ नाम
निर्मलपणें विस्तर्युं । सोलमे पाट वनवास निर्मम
मति, नाम वनवासी सामंतभद्रो यति ॥ २० ॥

अर्थ—ते कोटिक गच्छ चउद पाट लगें चाल्युं ते वार पछी पनरमे पाटें श्री वज्रसेनाचार्यना शिष्य चार थया ते लक्षमूलनी हांडी व्यवहारीयाने घरे चडी तेवारे बीजे दिने

मुकालि थशे एम कही जीवाडया ते व्यवहारीयें तथा तेना चारपुत्रे उपकार जाणी चारित्र लीधुं ते चार शिष्यनां नाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति ए चार थया ते चारे आचार्य पद पाम्या तेमां चंद्रनामा आचार्य पन्नरमे पाटे थया तेओथी त्रीजो चंद्रगच्छ एवुं नाम निर्मलपणे विस्तार पाम्युं ते पण गुण निष्पन्न थयुं पण मत कदाग्रहे थयुं नथी. पछे सोलमे पाटे वनमां वस्या ममतरहित जेनी मति हति एवा आचार्य थया माटे वनवासी नाम चोथुं कहेवाणुं ते आचार्यनुं नाम सामंतभद्र यति के० जितेंद्रिय हतुं ॥ २० ॥

पाट छत्रीसमें सर्वदेवाभिधा, सूरि वडगच्छ तिहा
नाम श्रवणे सुधा। वडतलें सूरिपद आपीउं ते वती
वलीयं तस बहु गुणे जेह वाध्या यति ॥ २१ ॥

अर्थ—तथा छत्रीशमे पाटे सर्वदेवाभिध नामे सूरि थकी वडना झाडतलें सूरिपद आप्युं माटे वड गच्छ विरुद थयुं ते श्रवणने विषे सुधा के० अमृतसमान जाणवुं एटले वडना झाड हेठें आचार्यपद आप्युं माटे वड गच्छ अने वली ते आचार्यने गुणवंत यतिनो समुदाय बहु वृद्धि पाम्यो एटले साधुनो समुदाय ते वडनी पेठे विस्तार पाम्यो तेथी वडगच्छ कहेवाणो ए नाम पण गुण निष्पन्न छे ते माटे वड गच्छ नाम थयुं ॥ २१ ॥

सूरि जगचंद जग समरस चंद्रमा, जेह गुरु पाटे चउ
अधिक चालीसमां ॥ तेह पाम्युं तपा नाम बहु तप
करी, प्रगट आघाट पुरी विजयकमला वरी ॥ २२ ॥

अर्थ—पछे जगतचंद्रसूरि जे जगतने विषे उपशम रसे करी चंद्रमा सरिखा थया एटले चंद्रमा अमृतरसे भर्यो तेम आचार्य ते समतारसे भरेला मोटा पाटना धणी चउ अधिक चालीसमां के० चुम्मालीसमे पाटे थया तेणे श्री आंबिल वर्द्धमानादिक बहु तप करीने प्रगटपणें आघाट के०उदयपुर (चीत्तोड)ने विषे राणोजी हस्ती उपर चडी आवता हता तेवारें श्री जगचंद्र सूरि वर्द्धमान तप लागट करता दुर्बल शरीरना धणी सन्मुख आवता हता त्यारें राणें प्रधानने पूछयुं जे ए कोण आवे छे प्रधाने कह्युं हे महाराज घणा मोहोटा तपना करनार आचार्य आवे छे त्यारे राणोजी हस्ति उपरथी हेठा उतरी नमस्कार करीने महातपा एवुं विरुद दीधुं त्यारे प्रधाने कह्युं महाराज महापद काढी नाखो नहीतर लोक महा तपाने ठेकाणे महात्मा कहेशे ते माटे महा पद न कहो ते सांभली राणाजीयें तपा नाम दीधुं ए पण गुण निष्पन्न छठुं नाम थयुं पण तपा एवुं नाम कदाग्रहथी थयुं नथी. तथा विजय कमला वरी के० राणाजीनी सभामां चौर्यासी वादीयोने जीतीने जय लक्ष्मी वर्या त्यारे राणे हीरला जगचंद्र सूरि कही बोलाव्या ॥ २२ ॥

एह षट नाम गुण ठाम तप गणतणा, शुद्ध सद्दहण
गुण रयण एहमां घणा ॥ एह अनुगत परंपर भणी
सेवता, ज्ञानयोगी विबुध प्रगट जग देवता ॥ २३ ॥

अर्थ–ए षट नाम के० ए पूर्वोक्त छ नाम ते केवां छे जे गुणनां स्थानक छे ते तप गण तणा के० तपगच्छना जाणवा शुद्ध सद्दहणा के० शुद्ध श्रद्धावंत गुणरयण के० गुणरूप रत्न ते ए तप गच्छमां घणा छे एटले श्रद्धावंत गुणवंत घणा छे ए अनुगत परंपर के० स्वतंत्र परंपरा आवी एटले जेनी परंपरामां त्रुट पडी नथी तेनुं नाम अनुगत परंपरा कहियें तेभणी के० ते माटे सेवतां के० सेवा करता एवा कोण छे जे ज्ञानयोगी विबुध के० ज्ञान संयोगवंता पंडित अनुगत परंपरानी सेवा करे छे. इति योगः। प्रगट जग देवता के० ए जगतने विषे प्रगटपणे देवताज छे एटले पंडित लोक शुद्ध परंपरानीज सेवा करे ॥ २३ ॥

कोइ कहे मुक्ति छे विणतां चिथरां, कोइ कहे सहज
जमतां घर दहिथरां ॥ मूढ ए दोय तस भेद जाणे
नही, ज्ञान योगे क्रिया साधतां ते सही ॥ २४ ॥

अर्थ–हवे सर्व अधिकार कहीने छेडे निश्चय तथा व्यवहार नय फलाववा ते फलावे छे. कोइक व्यवहार नय वादी कहे छे जे विणतां चिथरां के० पडिलेहणा पडिकमणादिक तथा फाटां तुटां वस्त्रादिक पहेरतां इत्यादिक कष्ट करतां मुक्ति छे के० मुक्ति पामियें तथा कोइक निश्चयवादी एम कहे छे जे सेहेज रीते घरने विषे दहिथरां जमतां उपलक्षणथी प्रवर मोदक प्रमुख लेवा एटले निश्चय नयवाला कहे छे जे कष्ट करे शुं थाय खुब खावुं पीवुं पण तत्व ज्ञान थयुं एटले सिद्धि जाणवी. एवी जूदी जूदी रीतना बोलनारा ते बेहु मूढ के० मूर्ख छे एटले ते मोक्ष साधवानो भेद के० प्रकार जाणता नथी केमके ज्ञानने संयोगे क्रिया साधतां सही के० ते मुक्ति सत्य छे. यतः–"नाणकिरियाहिं मुक्खो" इति वचनात्. तथा– "हयं नाणं कियाहिणं, हया अन्नाणओ किया ॥ पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो अ अंधओ ॥१॥ एवं सव्वे वि नया, मिच्छादिट्ठी सपक्खपडिवद्धा ॥ अन्नोन्ननिस्सिया उण, हवंति ते चेव सम्मत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक आवश्यक निर्युक्ति वचनात् ॥ २४ ॥

सरल भावें प्रभो शुद्ध एम जाणतां, हुं लहुं सुजश,
तुझ वचन मन आणतां ॥ पूर्व सुविहिततणा ग्रंथ जाणी
करी, मुझ होजो तुझ कृपा भव पयोनिधि तरी ॥ २५ ॥

अर्थ–माटे हे प्रभो एम के० ए रीतें सरल स्वभावें करी बेहु नये सिद्धि छे ए रीते

जाणतां पण कपटे नहीं जे कहे एक अने चित्तमां बीजुं होय एम कपटसहित नहीं तथा तुझ वचन मन आणतां के० पूर्वे ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः एम जाणतां तथा मन आणतां के० प्रतित करतां थकां सुजश के० भलो जे जश ते हुं पामुं एटले मुनिराज प्रमुख सुविहित लोक भलो जश बोले एवी स्याद्वाददृष्टि केम थयी ते कहे छे जे पूर्व सुविहिततणा के० पूर्वाचार्य श्री हरिभद्रसूरि तथा धर्मदासगणी भाष्यकारजी उमास्वाति वाचक प्रमुखना जे ग्रंथ ते जाणी करीने सम्यक् ज्ञाने करी स्याद्वाददृष्टि थयी ते एवी दृष्टितो प्रभुकृपाथी थाय ते माटे प्रभु पासे प्रार्थना करे छे जे भव पयोनिधि के० जे संसारसमुद्र तेने विषे तुझ कृपा के० तमारी दया तद्रूप तरी के० जहाज ते मुझ होजो के० मारे थजो एटले संसारसमुद्रमां तमारी कृपारूप जहाज मारे थजो ॥ २५ ॥



॥ ढाल सतरमी ॥

—✻—

ए सोलमी ढालने अंते स्याद्वाददृष्टिनी सिद्धि कही एवी दृष्टि पोतानी थयी तेथी उपनो जे हर्ष ते हर्षे करी सतरमी ढालमां बोले छे.

॥ कडखानी देशी ॥

आज जिनराज मुज काज सिद्धां सवे, विनति माहरी
चित्त धारी ॥ मार्ग जो में लह्यो तुझ कृपा रसथकी ॥
तो हुइ संपदा प्रगट सारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ–हे जिनराज आज के० जे दिवसे स्याद्वाददृष्टियें ओलखाण थयुं ते दिवसे कविश्वरनुं वर्तमान छे ते माटे आज कहियें ते आजे मारां जे कार्य ते सर्व सिद्ध थयां शा माटे जे मारी विनति चित्तमां परमेश्वरे धारी यद्यपि परमेश्वर तो वीतराग छे कोइनी विनति चित्तमां धरता नथी तोपण परमेश्वरनी भक्तिज निज कार्य भक्त लोकने थयुं माटे कारणे कार्योपचार करीने कहेछे के जो तुज कृपारूप रसथकी में मार्ग लह्यो के० हुं मार्ग लह्यो के० हुं मार्ग पाम्यो अने ते मार्ग रूप सारी के० मनोहर संपदा माहरे प्रगट थयी ॥ १ ॥

वेगलो मत हुजे देव मुझ मन थकी, कमलना वन
थकी जेम परागो । चमकपाषाण जेम लोहने खेंच-
से, मुक्तिने सेहेज तुझ भक्तिरागो ॥ आज० ॥ २ ॥

अर्थ—माटे मारा मनथकी वेगला मत थजो एटले घटमां रहेजो जेम कमलना वनथकी परागो के० वासना दूर रहेती नथी एटले जेम कमलनी वासना ते कमलना वनमां रहे तेम तमे मारा चित्तमां रहेजो चमक जातीनो कोइ पत्थर विशेष ते जेम लोहने खेंचसे के० जेम लोढाने खेंचे एटले ए पत्थरनो एवो सेहेज स्वभावछे जे लोढुं वेगळुं होय तोपण तिहांथी पोतानी मेले आवीने पत्थरने वलगे ते रीते तमारा उपर माहरो जे भक्तिराग छे ते स्वभावे मुक्तिने खेंचशे ॥ २ ॥

तुं वसे जो प्रभो हर्षभर हीयडले, तो सकल पापना बंध तूटे ॥
उगते गगन सूरयतणे मंडले, दह दिशि जेम तिमिर पडल फूटे ॥ आ० ॥३॥

अर्थ—हे प्रभो हर्ष भर्युं जे मारुं हीयुं तेने विषे जो तुं वसे तो समस्त जे भवांतरे पापना बंध कर्या छे ते तूटी जाय. तिहां दृष्टांत कहे छे जे गगन के० आकाशनेविषे सूर्यना विमाननुं मंडल ते उगे थके दहदिशि के० दशे दिशाने विषे जेम तिमिर के० अंधकार ने पडल जे समूह ते फूटे के० नाश पामे तद्वत् पाप पडल तूटे ॥ ३ ॥

सींचजे तुं सदा विपुल करुणारसें, मुझ मने शुद्धमति कल्पवेली ।
नाण दंसण कुसुम चरण वर मंजरी, मुक्ति फल आपशे ते एकेली ॥आ०॥४॥

अर्थ—विपुल करुणा रसें के० विस्तारवान करुणारूप रसें करीने माहारा मनने विषे शुद्ध मतिरूप कल्पवृक्षनी वेली ते हे स्वामी तुं सिंचजे इति भावः । ते सिंच्यां थकां ज्ञान दर्शनरूपतो फूल आवशे तथा प्रधान चारित्ररूप मंजरी के० मांजर लागशे तेवार पछे मुक्तिरूप फलने आपशे ते एकली के० ते शुद्ध मतिरूप कल्प वेलडी एकली आपशे ॥४॥

लोक सन्नाथकी लोक बहु वाउलो, राउलो दास ते सवि उवेखे ।
एक तुझ आणसुं जेह राता रहे, तेहने एह निज मित्र देखे ॥ आज० ॥५॥

अर्थ—लोकसंज्ञा जे गाडरियो प्रवाह ते थकी लोक बहु वाउलो के० घणो लोक घेलो थयो छे पण राउलो दास के० राजानो दास एटले तमारो दास एवो जे हुं ते सर्व गाडरिया प्रवाहने उवेखुं छुं एटले गणतरीमां आणतो नथी मात्र एक अद्वितिय तुझ आणसुं जे राता रहे के० तमारी आज्ञाथी जे रंगाणा छे तेने ए मारो आत्मा ते पोतानो मित्र करी जाणे छे एटले तमारी आणाथी जे बाह्य छे तेने उवेखु छुं पण तमारी आज्ञावंतने साधर्मिक संबंधपणा माटे मित्र करी जाणुं छुं. इति भावः ॥ ५ ॥

आण जिन व्राण तुझ एक हुं शिर धरुं, अवरनी वाणी नवि काने सुणियें ॥
सर्व दर्शन तणुं मूल तुझ शासनं, तेण ते एक सुविवेक थुणियें ॥ आज० ॥६॥

अर्थ—हे जिन के० सामान्य केवलीमां भाण के० सूर्य सरिखा तारी एक अद्वितीय आज्ञा ते हुं मस्तके धरुं अने अवर के० वीजानी वाणी ते काने सांभलियें नहीं एटले वीतरागनी आज्ञा आदरीयें पण अवर जे राजी द्वेपी तेनां वचन काने न धरियें. इति भावः॥ सर्व दर्शन के० सम्यक्त केमके सकल नय श्रद्धायें सम्यक्त. यदुक्तं महाभाष्ये—"यावइया वयणपहा, तावइया वा नया विससद्दाओ। ते चेव य परसमया, सम्मतं समुदिया सव्वे ॥१॥". इति वचनात्. ते माटे समकितनुं मूल ते तुझ शासन के० तमारी आज्ञा छे अथवा षटदर्शननुं मूल ते तुझ शासन एटले सर्व दर्शन ते तमारा दर्शनना अंश छे ते माटे तमारी आज्ञा तेज एक अद्वितीय भला विवेके करी स्तवियें छैयें एटले सर्व दर्शननुं मूल छांडी अवरनी स्तवना कोण करे. इति भावः ॥ ६ ॥

तुझ वचन राग सुखसागर हुं गणुं, सकल सुर मनुज सुख एक बिंदु ।
सार करजो सदा देव सेवकतणी, तुं सुमति कमलिनी वन दिणिंदु ॥आ०॥७॥

अर्थ—तमारा वचन उपर जें राग एटले जैनागमनो जे राग तद्रूप जे सुख समुद्रना समूह ते आगल समस्त देवता तथा समस्त मनुष्य चक्रवर्त्यादिकनां सुख ते एक बिंदु समान हुं गणुं के० हुं मानुं छुं ते माटे हे देव सदा सर्वदा तमारो हुं सेवक छुं तेनी सार के० संभाल करजो एटले तमारा सरिखो करजो तमे सुमतिरूप जे कमलिनी तेनुं जे वन तेने विषे दिणिंदु के० सूर्य सरिखा छो एटले सूर्य जेम कमलिनीने विकस्वर करे तेम सुमतिरूप कमलिनीने तमे विकस्वर करो एटले तमाराथी सुमति आवे. इति भावः ॥

ज्ञान योगे धरी तृप्ति नवि लाजियें, गाजियें एक तुझ वंचन रागें ।
शक्ति उल्लास अधिको हुसे तुझथकी, तुं सदा सकल सुख हेत जागे ॥आ०॥८॥

अर्थ—ज्ञानयोगमां तृप्ति धरीने एटले ज्ञानमां मग्न रहीने क्रियानुष्ठान करतां लाजियें नहीं पण सावधान थयीने एक तमारा वचनने रागें करी गाजियें एटले कोइक ज्ञानवादी क्रियानुष्ठान उथापतो होय तेने आगम वचने करी गाजीने जवाब आपियें ए रीते प्रवर्त्ततां तुझ थकी के० तमारा वचन थकी एटले तमारी आज्ञा थकी शक्तिनो उल्लास पण अधिको थशे पण गलियां थयीने वेशी रहेतां वीर्योल्लास नहि वाधे उलटुं आलस वधसे. इति भावः। एवी रीते प्रवर्तन करतां कारणद्वारे कर्त्ताने फल देखाडे छे तुं सदा सकल के० तमे सदा निरंतर समस्त सुख जें सिद्धिनां सुख तेनो हेतु के० कारण ते जागे के० जागतो छे एटले 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' ए प्रभुनुं वचन छे ते वचन थकी भव्यप्राणी अजरामर सुखनुं भाजन थाय ते माटे सिद्धिनो हेतु पण तुंहिज थयो. इति भावः ॥ ८ ॥

वड तपागच्छ नंदनवने सुरतरू, हीरविजयो जयो सूरिराया ।
तास पाटें विजयसेन सूरिसरू, नित नमे नरपति जास पाया ॥ आ०॥९॥

अर्थ—श्री जगचंद्रसूरियें तपा विरुद धराव्युं ए मोहोटो तप गच्छ तद्रूप नंदनवनने विषे सुरतरु के० कल्पवृक्ष समान श्री हीरविजयसूरि जयो के० जयवंतो वर्तो सूरिराया के० बीजा आचार्यमां राजा सरिखा थया तेहने पाटें श्री विजयसेनसूरि सर्व आचार्योमां ईश्वर तुल्य थया जेमना चरणकमलने नरपति के० पादशाह ते निरंतर नमस्कार करता हता. एटले ए भाव जे पादशाह झहांगीरे षट्दर्शन परीक्षाने अर्थें सर्व दर्शनीने तेडाव्या तेमां जैन दर्शन मांहेला श्री विजयसेनसूरि गया हता तेमणे सर्व दर्शननो पराजय कर्यो तेवारें पादशाहे कह्युं जे श्री हीरविजय ते गुरु अने तमे सवाइ गुरु थया इति भावः ॥ ९ ॥

तास पाटे विजयदेव सूरिसरू, पाट तस गुरु विजय-
सिंह धोरी । जास हित सीखथी मार्ग ए अनुसर्यो,
जेहथी सवि टली कुमति चोरी ॥ आज० ॥ १० ॥

अर्थ—तेने पाटे श्री विजयदेवसूरि थया तथा तेमना पाटें श्री विजयसिंहसूरि ते गच्छनो भार वेहेवाने वृषभ समान धोरी थया जेमनी हीत सीख के० में ए संवेगमार्ग आदर्यो एटले ए भाव जे श्री यशोविजयजी उपाध्यायें पण एवनी आज्ञा पामीने क्रिया-उद्धार कर्यो तथा श्री विजयसिंहसूरिना शिष्य अनेक हता तेमां सत्तर शिष्य सरस्वति विरुद धारी हता ते सर्वमां मोहोटा शिष्य पंडित श्री सत्यविजय गणी हता तेमणे श्री-पूज्यनी आज्ञा पामी क्रियाउद्धार कीधो ते माटे कह्युं जे मार्ग ए अनुसर्यो के० ए संवेग मार्ग आदर्यो जे आदरवा थकी तीर्थंकर अदत्त गुरु अदत्त इत्यादिक कुमति कदाग्रहरूप चोरी टली गयी ए श्री तपगच्छना आचार्योनी परंपरा कही ॥ १० ॥

हीर गुरु शीस अवतंस मोटो हुओ, वाचकां राज क-
ल्याण विजयो ॥ हेम गुरु समवडे शब्द अनुशासने,
शीस तस विबुध वर लाभ विजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ—हवे उपाध्यायजी पोतानी परंपरा कहे छे ते पूर्वे कह्या श्री विजयहीरसूरि तेना शिष्य समुदायमां अवतंस के० मुकुट समान महोटा थया वाचकां राज के० उपाध्यायोमां राजा सरिखा एवा श्री कल्याणविजय उपाध्याय थया ते शब्द अनुशासने के० व्याकरण शास्त्रमां तो हेम गुरु समवडे के० श्री हेमाचार्य सरिखा थया वली तेमना शिष्य विबधवर के० सर्व पंडितमां शिरोमणि एवा श्री लाभविजय गणी थया ॥ ११ ॥

शिस तस जितविजयो जयो विबुध वर, नयविजय विबु
ध तस गुरु भाया ॥ रहिअ काशी मठें जेहथी में भलें,
न्याय दर्शन विपुल भाव पाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ–वली तेमना शिष्य एक श्री जितविजयजी जयवंता पंडितोमां प्रधान सरिखा तथा बीजा श्री नयविजयजी पंडित प्रधान थया ते श्री जितविजयजीना रुडा गुरुभाइज थया जेहथी के० वेहु गुरुना पसायथी हुं रहिअ काशी मठें के० काशीना मठने विषे रहीने भली रीते न्याय दर्शन के० न्याय शास्त्रना भाव ते विपुल के० विस्तार पणे पाम्यो ॥ १२ ॥

जेहथी शुद्ध लहियें सकल नय निपुण, सिद्धसेनादि
कृत शास्त्र भावा ॥ तेह ए सुगुरु करुणाप्रभो तुझ सु
गुण, वयण रयणायरी मुझ नावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ–जे गुरुना प्रसाद थकी श्री सिद्धसेन दिवाकर तथा आदि शब्दथी हरिभद्रसूरि उमास्वाति वाचक प्रमुख पंडितोनां करेलां जे शास्त्र तेमां कह्या जे भाव तेना शुद्ध लहियें के० शुद्ध रहस्य पामियें ते भाव केवा छे जे सयल नय निपुण के० समस्त जे न्याय तेमां निपुण अथवा समस्त जैनागमादिक नय तेमां निपुण एवा जे संमति तत्वार्थ, षड्दर्शन-समुच्चय, नयचक्रसार, धर्मसंग्रहणी, अनेकांतजयपताका प्रमुख ग्रंथोना भाव तेना शुद्ध रहस्यने हुं पाम्यो माटे ए गुर्वादिकनी जे करुणा के० कृपा ते केवी छे जे हे प्रभो तुझ के० तमारुं सुगुण वयण के० गुणवंत जे वचन तद्रूप रयणा यरी के० समुद्रने विषे नावा के० जहाज सरिखी छे एटले ए भाव जे जो गुर्वादिकनी करुणारूप नावा होय तो तमारा वचनरूप समुद्रनो पार ते पामिये, ते मारा गुरुनी कृपारूप नावा मारे थई ॥१३॥

॥ कलस ॥

इम सकल सुखकर दुरित भयहर स्वामी सीमंधर तणी ।
ए विनती जे सुणे भावें ते लहे लीला घणी ॥
श्री नयविजय बुध चरण सेवक जसविजय बुध आपणी ।
रुचि शक्ति सारु प्रगट कीधी शास्त्र मर्यादा भणी ॥ १ ॥

॥ इति श्री सीमंधर जिन विज्ञप्तिः संपूर्णा ॥

अर्थ–हवे जेम नवो प्रासाद करावे तेने माथे कलश चढावे ते वारे संपूर्ण थाय तेम आ स्तवनरूप प्रासादनीपणुं ते संपूर्ण करवा माटे कलश कहे छे ए रीते सकल सुखना करनारा तथा दुरित के० पापनुं जे भय तेना हरवावाला एवा स्वामी के० नायक श्री सीमंधर प्रभुनी अमे विनति कही ते जे प्राणी भक्तिभावें करी सांभळे ते प्राणी घणी सुख लीला पामे. ए रीते श्री नयविजयजी पंडितना चरणकमळनी सेवना करनार श्री यशो-

विजयजी पंडित तेमणे पोतानी शक्ति प्रमाणे श्रद्धाभावनी जे रुचि हती एटले स्याद्वाद मार्गनी रुचि जे पोताना चित्तमां हती ते शास्त्रनी मर्यादाए प्रगट करी कही देखाडी इति ॥ १ ॥

॥ इति श्री सीमंधरजिनस्तवन टबार्थः समाप्तः ॥

केदं कर्त्तुर्वचः शस्तं, नानाशास्त्रार्थगर्भितं। क्व मेऽल्पविषया प्रज्ञा, सुसला गोपमा खलु ॥१॥ यदत्र वितथं प्रोक्तं, मंदबुद्ध्यादिहेतुना। तद्धीधनैः कृपां कृत्वा, मयि शोध्यममत्सरैः ॥२॥ श्रीमद्विजयसिंहाव्हः, सूरिराड्विजितेंद्रियः। तस्यांतेवासी सत्यादिविजयः सान्वयः सुधीः ॥ ३ ॥ कर्पूरविजयस्तस्य, शिष्यो गुणगणैर्युतः। तस्यापि क्षमया युक्तः, क्षमाविजय इत्यभूत् ॥४॥ जिनादिविजयस्तस्य, शिष्योभूद् भूरिशिष्यकः। शास्त्रज्ञः सज्जनो धीमान्, कर्मठो धर्मकर्मणि ॥५॥ उत्तमादिजयस्तस्य, शिष्यः शिष्यौघसत्तमः। सर्वोत्तमगुणैर्व्याप्तः, कर्मशास्त्रकुशाग्रधीः ॥६॥ तस्यांह्रिपंकजे पद्मविजयो भ्रमरोपमः। नभाग्निवसुचंद्रेन्दे १८३०, तेनेदं वार्तिकं कृतं ॥ ७ ॥

इति श्रीसीमंधरजिनस्तवन कवि महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी कृत शार्द्धत्रिशत गाथा प्रबंधे तस्य कवि श्रीपद्मविजय गणी कृत बालावबोधः समाप्तः ॥